अनुवादक — डॉ० नारायणदास खन्ना

संपादक — यशवन्त

विषय-सूची

पहला भाग

दूसरा भाग

पहला भाग

पहला अध्याय

बात सन् १४६६ के वसन्त की है। त्वेर का एक धनी व्यापारी, वसीली काशीन, व्यापारियो के सरक्षक, सेन्ट निकोलाई के गिरजे से निकला ही था कि उसे कोई प्रेत जैसी आकृति दिखाई पडी। यद्यपि मौसम नम और गर्म था फिर भी वह आकृति फेल्ट के बूट, भेड की खाल का बडा कोट और कुत्ते के फ़र की टोपी पहने थी। उसके बायें हाथ में दस्ताने थे और दाया हाथ गझी हुई भूरी-सी दाढी के नीचे गला खुजा रहा था।

"अरे वसीली! नमस्ते!" काशीन को जडवत् खडे देख वह आकृति बोली, "मुझे नही पहचाना तुमने? अच्छा, ठीक से देखो, हा, हा, ठीक से, शायद पहचान लो।"

"ठहरो, ठहरो " सलीब का निशान बनाते हुए काशीन बडबडाया, "लेकिन लोग तो कहते हैं तुम्हे मार डाला गया था "

"और तुमने उसपर यकीन भी कर लिया! व्यग्यपूर्ण ढग से आखें झपकाते हुए दाढीवाली आकृति बोली, "त्वेर के लोग जिन्दा

ही दफ़ना देने को तैयार है! और तुमने मुझे मेरा हुआ समझकर गिरजे में बत्ती जलायी थी क्या?"

"नहीं" जैसे घबराकर फ़ाशीन ने उत्तर दिया।

"चलो, इतने ही खर्च से बच गये। तुम हो बड़े धूर्त। भला तुम्हारे हाथ से ऐसे ही पैसा थोड़े ही छूटेगा? तुम जानते थे कि निकीतिन परिवार के लोगों को मौत के घाट उतारना आसान काम नहीं, है न?"

"हां" अप्रत्याशित भेंट के बाद जैसे होश में आते हुए फ़ाशीन मुट्ठी में दाढ़ी पकड़े पकड़े, बड़बड़ा उठा, "हां, तुम्हें मौत के घाट तो न उतारा गया, लेकिन तुम्हें खूब अच्छा पिटा दिया गया। तुम तो लोगों पर मुर्गे की तरह झपटते हो। नोवगोरद में तुम्हारी खातिर-दारि नहीं हुई क्या?"

"और मैंने भी तो उन्हें कोई मिठाई खिलाने का वादा नहीं किया था। लगता है, तुमने मेरे बारे में सुन रखा है?"

"जरूर सुन रखा है। मैंने न सुना! कहो, लौट तो आये! बहुत दिन रहोगे क्या?"

"यह तो भगवान ही जाने। तुम तो जानते ही हो कि मैं तुम लोगों के साथ अधिक नहीं रह सकता। मुझे गंदे लोगों से नफ़रत है।"

"धत् है तुम पर अपरागी!" फ़ाशीन जमीन पर थूकते हुए बोला, "भगवान तुम्हें कभी न कभी जरूर दंड देगा। तुम अभी तक इतना भी न सीख सके कि बड़ों की इज्जत करनी चाहिए। अब तो तुम्हारी जबान भी पहले से ज्यादा खराब हो गयी है।"

"लोगों ने ही तो मुझे सिखाया है तुमने गिरजे में कपिलोव को तो नहीं देखा?"

"तुम खुद ही वहा जाओ, सलीब का निशान बनाओ और उसे ढूढो।"

इतना कहकर क्रोध से हाथ झुलाता और पानी और कीचड से मिली बर्फ को पैरो से रौंदता हुआ वसीली काशीन वहा से चल दिया।

यह वार्ता तीन व्यक्तियो के कानो में पडी। ये थे–गिरजे का प्राय चक्कर लगानेवाली एक नगर-भक्तिनी, प्रार्थना के पश्चात् अपनी एक परिचिता के पास जानेवाला एक घटिया और दूर के एक महल की छत पर बैठे हुए कौवो को गिननेवाला एक निठल्ला दूकानदार।

दिन समाप्त होते होते त्वेर की सभी छोटी-बड़ी गलियो और वहा के एक एक मकान में यह अफवाह बिजली की तरह फैल गयी कि नगर में कही से अफनासी निकीतिन नाम का व्यापारी लौट आया है जो सारी धन-दौलत खो बैठा है। वह न सिर्फ़ व्यापारियो के मुखिया को बल्कि गिरजे के मुखिया, मालदार काशीन को भी फटकारता है। यह है बुद्धि की, पुस्तको की कृपा।

किन्तु दो महीने भी न बीते होगें कि सभी को यह देखकर और भी आश्चर्य हुआ कि वही वसीली काशीन निकीतिन को उधार माल देता है ताकि वह और लोगो के साथ कही जाकर व्यापार करे। बात तो यह भी सुनने में आयी थी कि काशीन ने निकीतिन से यह वादा किया है कि वह अपनी पुत्री ओलेना का विवाह उसके साथ कर देगा। ओलेना निश्चय ही उस नगर की सबसे अच्छी लडकी थी।

पहले पहल तो लोगो को यकीन न आया क्योकि कहते थे कि बरीकोव नामक एक धनी परिवार में ओलेना की मगनी हो चुकी थी। किन्तु जब उन्होने देखा कि किनारे पर अफनासी कारीगरो से एक नयी नाव बनवा रहा है और स्वय काशीन भी प्राय वही रहता

है तो उन्हें विश्वास हो गया कि ओलेना के साथ अफनासी का विवाह जरूर होगा। घटिये और भक्तिनी को लोग बड़े वातूनी कहने लगे— ये दोनों राई से पहाड़ जो बनाते थे। क्या इस प्रकार लोगों को बदनाम करना उचित है? ईसाइयों और धर्म में विश्वास करने-वालों को तो ऐसा कभी न करना चाहिए।

किन्तु किसी को निश्चित रूप से कुछ भी पता न चला।

उस समय तक गर्मी पूरे जोरों से पड़ने लगी थी। जून में ही चरागाहों के नाले सूख गये थे और दलदली स्थानों के आसपास की घास पीली पड़ गयी थी। जंगली बत्तखें दूर दूर की झीलों को भाग गयी थीं। वन-मुर्ग और काले मुर्ग घनी घनी झाड़ियों में छिप गये थे और छिछली पड़ी नदियों में गोमक्खियों से परेशान पशु पुकार रहे थे रंभा रहे थे। किसान लोग देवताओं की प्रतिमाएं लिये खेतों में घूम रहे थे और पादरी पौधों पर पवित्र जल छिड़क रहे थे। किन्तु भगवान ने उनकी प्रार्थनाएं न सुनीं। जुलाई-भर जमीन पहले जैसी ही धूप से झुलसती रही और वसन्त-नाज पड़ भी गयी। रातों में, जैसे लोगों को चिढ़ाने के निमित्त, कभी एकाध क्षण के लिए विद्युत् जैसी कोई लपक कहीं दूर से दिखाई पड़ जाती और उसे बिजली, बादलों की गड़गड़ाहट और वर्षा भी शुरू हो जाती। किन्तु वर्षा न हुई। नोवगोरद और प्स्कोव में तो लोग भूखों मरने लगे थे। उत्तरी रूस में पिछले दो वर्षों से फ़सल मारी गयी थी। इस वर्ष भी वहां भुखमरी के लक्षण दिखाई पड़ रहे थे।

नीज्नी नोवगोरद से लेकर त्वेर तक, अर्थात् वोल्गा के समस्त तट पर कुल्हाड़ियां बज रही थीं, उड़ती हुई चिनगियां, तटवर्ती बालू और छोटे छोटे पत्थरों पर गिर रही थीं और लट्ठों पर लगी हुई राल तेज धूप के कारण पिघल पिघलकर, बूंद बूंद करके, जमीन पर

झर रही थी। वोल्गा नदी पर जहाज़ और तरह तरह की छोटी-बडी नावें बनायी जा रही थी। उनके मालिक उत्तरी इलाको के साथ अनाज का व्यापार करने की तैयारी कर रहे थे। उन्हे विश्वास था कि वहा उनके सामान की अच्छी बिक्री होगी और वे अच्छा-खासा मुनाफ़ा कमा सकेंगे।

उस दिन प्रात काल से ही मौसम गर्म और सुहावना लग रहा था। साफ नीले आकाश में हल्के हल्के बादल तैरते हुए दिखाई दे रहें थे। वायु बायें तट से पीली घास की सुगन्धि बहाकर ला रही थी। हल्की रुपहली तरगों से ढका हुआ नदी का चौडा पाट चमचमा रहा था। यद्यपि अभी सवेरा था फिर भी तट पर ढेरो लोग जमा हो चुके थे। नोवगोरद से आये हुए जहाज़ो पर से सामानो के गट्ठर, बडे बडे कनस्तर और छाल के बक्से उतारे जा रहे थे। बरीकोव, काशीन और वसीलियेव की खत्तियो के शहतीरो पर कुल्हाडिया बज रही थी और बढई एक दूसरे से चिल्ला चिल्लाकर गुहार कर रहे थे। किनारे पर जगह जगह अलाव जलते दिखाई दे रहे थे। पास ही राल इकट्ठा करनेवाले भी दौड-धूप में लगे हुए थे। लट्ठो का बेडा किसानों के एक छकडे को लादे लिये जा रहा था। त्वेरत्सा नदी के मुहाने के पास, जहा पुराना दुर्ग सिर उठाये खडा था, सहसा सफेद धुआ दिखाई पडने लगा और एक तेज़ आवाज़ सुनाई दी। तोपचियो ने नयी तोप की परीक्षा की थी। बन्दरगाह से दाहिनी ओर कुछ दूरी पर कतिपय निर्माणाधीन नावें भी दिखाई पड रही थीं। इनमें से एक यात्रा पर चल देने के लिए तैयार भी की जा चुकी थी। उसपर रस्से कसे जा चुके थे, चौरस तल के नीचे लट्ठे बिछाये जा चुके थे और लोग नाव को नदी में उतार रहे

थे। नाव हिलने-डुलने लगी। यह नोवगोरद की क़िस्म की एक मस्तूलवाली भारी नाव थी जो दूर की यात्रा के लिए उपयुक्त थी।

कारीगर नाव को पानी में ढकेल रहे थे और एक दूसरे का उत्साह बढाने के लिए चीख-पुकार रहे थे। नाव का तल लट्ठो से रगडता और खडखडा उठता। नाव ढकेलनेवाले कारीगरो की सूती कमीजें पसीने से तर हो चुकी थीं। नाव धीरे धीरे पानी में उतर रही थी। उसके अगले भाग पर मोर का सिर बना हुआ था जो मानो आसपास सन्देह से देख रहा था। लग रहा था जैसे नाव पानी में उतरने में हिचकिचा रही है।

एक पहाडी पर दो त्वेर निवासी बैठे हुए थे और नाव को पानी में उतरती हुई देख रहे थे। जो बडा था गहरे नीले रग का कोट पहने था, और दूसरा बिना पेटीवाली पीली और लम्बी-चौडी क़मीज़। सम्भवत दोनो ही कुजडे थे क्योंकि वे देर से उगनेवाले खीरो, बन्दगोभी की बीमारी और फ़ोल नामक किसी व्यक्ति की बढिया शलगम और दालो आदि के विषय में बातचीत कर रहे थे। नदी किनारे पर इन कुजडो के इतने तडके आने का उद्देश्य था— मछलिया मारना। किन्तु इस समय मछलिया चारे की ओर आख

उठाकर भी न देखती थी। अत वे धूप का आनन्द लेते हुए मजे से सुस्ता रहे थे। उनकी अपनी बाते भी समाप्त हो चुकी थी। अब वे चुप थे।

"निकीतिन तो ऐसी दौड-धूप कर रहा है जैसे नाव उसकी अपनी है," बडे ने द्वेषपूर्ण ढग से अपनी मोटी मोटी पलके झपकाते हुए कहा।

"निकीतिन है कौन?" छोटे कुजडे ने गरदन उचकाते हुए पूछा।

"वह जो बायी तरफ खीच रहा है। देख रहे हो, कैसे चिल्ला रहा है, जैसे मालिक हो। हे-हे! नाव तो है काशीन की, लेकिन उसपर जान देता है निकीतिन। पक्का बेवकूफ है।"

"वह इसी में अपना लाभ देखता है।"

"कैसा लाभ! कहते है कि वह काशीन का माल लिये जा रहा है।"

"अनाज लिये जा रहा है, ऊपर की ओर?"

"शायद। खुद तो अपना सब कुछ गवा बैठा है, अब दूसरो का माल ले जा रहा है। हे-हे!"

कुजडो के पीछे से घटो की आवाजें आ रही थी। स्पास्क गिरजे की शहद जैसी मोटी, मिकूलिस्क गिरजे की वन-निर्झर जैसी मादक और दर्जनो दूसरे गिरजो की आवाजें—ये गिरजे त्वेर के गौरव जो थे।

नाव, नासिका के बल सरकती, शोर-सी करती, कभी रुकती, कभी डगमगाती, रस्सो पर थमी थमी अपनी छाती से धारा को चीरती हुई पानी में घुस चुकी थी। अब कारीगर सलीब का निशान बनाने लगे। हा, यह जरूर ठीक समझ में न आ रहा था कि वे लोग

राल से काली अपनी उगलिया धूप के कारण सावले पड़े अपने मस्तक पर क्यो लगा रहे थे—शायद इसलिए कि गिरजे के घंटे बज रहे थे, या शायद इसलिए कि एक नयी नाव बनकर तैयार हुई थी।

"भगवान हमारा भला करे! चलें, देखें कैसी बनी है," निकीतिन ने अपने साथियो को पुकारा।

कारीगर नाव में चढ आये। डाड चलने लगे, पाल खोल दिया गया, और नाव प्रवाह के साथ आसानी से आगे बढने लगी।

"कितनी अच्छी नाव है!" पीली कमीजवाला कुबड़ा बोल उठा, "सुनो कोज्मा, निकीतिन को भी इससे काफी लाभ रहेगा।"

कोज्मा मायूसो की तरह बढती हुई नाव की पिछाडी देख रहा था। नाव-उतराई नीरस-सी लग रही थी—न कोई फिसल गया और न पानी में गिर ही पडा।

"मुझे तुम्हारे निकीतिन की कोई चिन्ता नहीं," उसने उदासीन भाव से उत्तर दिया, "मरे या जिये, मुझे कोई चिन्ता नहीं। यहा मछलिया तो सो रही हैं। चलो, चलने का समय हो गया।" वह हाफते हुए खडा हो गया।

नाव झुकती-झुकाती पाल के सहारे प्रवाह की उल्टी दिशा में चलती रही। नदी की तरगें नासिका से टकराती, टूटती और मुह पर छींटो के रूप में टूट पडती। हवा बालो को उलझा रही थी और पसीने से तर बदन को छू रही थी।

अफनासी निकीतिन, सतुलन सभाले, सीधा खडा हो गया। वह बोला पर पडती हुई सूर्य की किरणो, ऊचे आकाश, निकट आते हुए वनो और नाव के पार्श्वों से आती हुई राल की तेज गन्ध का अनुभव करता हुआ मुस्करा रहा था। उसके मन में गाने की तरग उठी। उसने घूमकर अपने निकटस्थ कारीगर को देखा, हाथ हिला

दिया और चमचमाते हुए झरने की कलकल के साथ होड लगाते हुए गाना शुरू कर दिया—

आसमान में बाज़ उडा
वोल्गा की धारा के ऊपर
हहराती लहरो के ऊपर
इठलाती हसिनी के ऊपर
चकराता, मडराता, तिरता!

लोगो ने भी तेज़ आवाज़ में गाना आरम्भ किया—

नील गगन में बाज़ उडा,
नील गगन में बाज़ उडा!

निकीतिन का चेहरा लाल हो उठा, गरदन की रगें तन गयी, आखें साहस और शरारत से चमक उठी। उसने फिर गाना शुरू किया—

तिरो हमिनी मभल सभल कर

और फिर लोगो की तेज धुन हवा में गूजने लगी—

बचो, बाज है सिर के ऊपर!

पानी के छींटे उटते रहे, हवा सीटी-सी बजाने लगी, तरगें उठती-गिरती रहीं, मधुर सगीत का आरोह-अवरोह आरम्भ हो गया— भागती हुई नाव की तरह।

निकीतिन गा रहा था, अलाप रहा था। उसके चेहरे की एक एक रग, हाथ की एक एक गति और शक्तिशाली शरीर की एक एक हरकत मुस्करा रही थी, खिली जा रही थी। वह गा रहा था और हस रहा था। वह प्रसन्न था स्वर्णिम प्रभात पर, नाव की गति पर, धनी काशीन के साथ हुए सफल समझौते पर, काशीन की पुत्री ओलेना की मुस्कान और कातर दृष्टि पर और इस विचार पर कि जीवन और सफलता में उसका विश्वास फिर जमने लगा है।

लोगो ने उसे बहुत समय से इतना प्रसन्न न देखा था। दो वर्षों की अनुपस्थिति के बाद जब वह कहीं से इस वसन्त में त्वेर आया था तभी से वह उदास दिखाई पड रहा था। उसके विषय में लोग तरह तरह की बातें करते थे—लोग चाहे जो बक सकते हैं। किन्तु सच क्या था इसे कोई न जान सका। हा, एक बात साफ थी—वह ग़रीब हो गया था। इसके बारे में भी तरह तरह की ऊटपटाग बातें उडायी जा रही थी। निकीतिन का परिवार त्वेर में एक सम्भ्रान्त परिवार समझा जाता था।

किन्तु सत्य अधिक कठोर, अधिक कटु था—जितना उसके कुछ शत्रु समझते थे उससे भी अधिक कठोर।

दो वर्ष पहले जव नदी से अभी अभी वर्फ हट चुकी थी—अफनासी निकीतिन तीन नावें लेकर उत्तर की ओर गया था। त्वेर का यह व्यापारी उस समय तैंतीसवें वर्ष में कदम रख चुका था। उसे अपनी इस यात्रा से वडे वडे लाभ की आशाए थी। अभी तक तो वह व्यापार के सिलसिले में अपने पिता के साथ ही आता-जाता रहा था। किन्तु स्वर्गीय प्योत्र निकीतिन समय के साथ वहुत कुछ सतर्क हो गया था। लम्वी यात्राओ पर जाना उसने छोड दिया था। और उसने अपने अशान्त और नये नये अनुभवो के लिए व्याकुल पुत्र को उत्तराधिकार से वचित करने की धमकी देकर और भर्त्सना का भय दिखाकर रोके रखने की पूरी चेष्टा की थी।

"जव मरूगा तो सव तुम्हारे लिए छोड जाऊगा, जैसा चाहना करना, लेकिन इस समय मै तुम्हे कही न जाने दूगा। मै वूढा हो चुका हू और अव कोई जोखिम नही उठाना चाहता।"

वेटा चुप रहा। पिता का कहना सच था। वेटा जानता था कि लम्वी यात्राओ में कितने कष्ट, कितनी मुसीवते उठानी पडती है। इसमें सन्देह नही कि ऐसी यात्राओ में वडे वडे लाभ होते है, अनेकानेक आश्चर्यजनक चीजें, अभूतपूर्व सौन्दर्य और चमत्कार देखने में आते है। लेकिन यह भी तो है कि अगर आदमी मौत से वच गया तो फिर विनाश के क्षण उसके लिए मुह वाये खडे रहते है। स्वय अफनासी तीन वार अपने पिता के साथ विदेशो में गया था—एक वार जर्मन प्रदेशो में, एक वार सराय में और एक वार प्रसिद्ध जारग्राद में समुद्र के उस पार। और तीनो ही वार उसे खतरो का सामना करना पडा था, दुष्टो से लडना पडा था—माल-असवाव और जिन्दगी के लिए।

किन्तु उसके दिल में नये नये अनुभव प्राप्त करने की जो लालसा घर कर चुकी थी उसका दमन कोई भी काल्पनिक कष्ट न कर सका। वह अपने जन्मस्थान–त्वेर–में अधिक समय तक न रह सका, उस त्वेर में जहा बचपन मे ही किसी ईस्टर के दिन उसे किसी सामन्त ने इसलिए पीटा था कि वह उसके पैरों के पास से निकलकर पहले ही गिरजे में पहुच जाना चाहता था, उस त्वेर में जहा उसे पहले पहल आकृष्ट करनेवाली एक युवती की सगनी उधर से गुजरते हुए लिथुआनिया के एक धनी से कर ली गयी थी। वह अपने बाप-दादो के उस मकान में भी न ठहर सका जहा लोग पहले अपने राजा के स्वास्थ्य के लिए और फिर अपने स्वास्थ्य के लिए भगवान से प्रार्थना करते थे।

अपनी बात के पक्के अफनासी को दूसरे लोगों के कहने पर कोई भरोसा न था। वह धनियो को अपने से अधिक बडा न मानता था।

"अफनासी," उसका पिता तेज आवाज से बोला, "ठहरो! अभी भी तुमने सामन्तों का सम्मान करना नहीं सीखा।"

"सामन्त!" बेटे ने व्यग्य किया, "जिसे अपना नाम लिखना भी नही आता।"

"तो तुमसे इससे क्या मतलब! तुम पढे-लिखे हो मगर इसका घमड न करना। तुम्हारी इतनी खबर ली जायेगी कि ककहरा तक भूल जाओगे।"

पिता ने जो बात कही थी उसके सत्य से इनकार करना सम्भव न था। बेशक वे लोग उसे दड देने में समर्थ थे। किन्तु उसे अपने भाग्य पर तरस आ रहा था। क्या वह उस सामन्त के धमघूसर बेटे से भी गया-बीता था, जिसका यश उसके कन्धे पर पडे हुए सेबल के फर के कोट के मूल्य तक ही सीमित था?

किन्तु त्वेर में रहते रहते वह उक्त सत्य का पता चलाने की वात भी न सोच सकता था। उसने देखा था कि यहा लोग वेईमानी करके मालदार बने थें। ईमानदार लोगो के लिए तो एक ही रास्ता था–सारी उम्र दूसरो की जी-हुजरी करना। जर्मन प्रदेशो में भी यही बात थी। जारग्राद की स्थिति भी बहुत कुछ ऐसी ही थी। सेन्ट सोफिया के गिरजे के गुम्बदो की चमचमाहट और युस्तीनियान की मूर्ति की विशालता ने अफनासी की आखो में कोई चकाचौंध न पैदा की थी। उसने जारग्राद नाम के वर्णनातीत धनी नगर में भी न जाने कितने गरीब देखे थे। परन्तु पता नही क्यो उसे इस वात का विश्वास था कि कोई ऐसी भूमि जरूर है जहा वेईमानी का नामोनिशान भी नही।

वह बुजुर्गो की कहानियो, गरीब खानाबदोशो की दास्तानो और अधे गवैयो के गीतो को बडे ध्यान से सुना करता। इन सभी में सुखद जीवन के स्वप्न थे। सभी में उसकी खोज थी और सभी में यह विश्वास प्रकट किया गया था कि उन्हे सत्य के दर्शन होगे।

एक वार सराय में अफनासी ने अद्भुत वस्त्र देखे। कहा जाता था कि वे भारत से लाये गये है। तभी उसे उस गाने की याद आयी जिसमें वसीली व्यापारी का वर्णन किया गया था। यह व्यापारी विदेशी समुद्रो को पार कर अद्भुत भारत की भूमि पर गया था और स्वतत्र जिन्दगी व्यतीत करने लगा था।

अफनासी उन महीन और चमचमाते हुए वस्त्रों को देखकर गदगद हो उठा था।

जारग्राद के बाजार में मसाले भी विक रहे थे, जिनकी कीमतें आसमान छू रही थी। उसने पूछा था–"ये मसाले है कहा के?"

"भारत के "

भारत के। उसे उसके एक परिचित पादरी के पास इन्दीकोप्लोव की 'कास्मोग्राफ़ी' नामक एक पुस्तक मिल गयी थी जो उसने एक ही बार में समाप्त कर डाली थी।

इस पुस्तक के यूनानी लेखक ने भारत के चमत्कारों का वर्णन किया था। इससे एक बात स्पष्ट हो गयी थी—भारत नाम का कोई देश है अवश्य, भले ही वहा तक पहुचना दुःसाध्य हो। वहा सोना ज़मीन पर लोटता है और वहा के निवासियो की निगाहो में उसका कोई मूल्य नही।

उस समय से अज्ञात भारत देश अफ़नासी के लिए स्वप्नो की दुनिया बन गया।

पिता की मृत्यु के बाद तो उसे एक क्षण के लिए भी चैन न मिला, उसकी आत्मा अशान्त हो उठी। अन्तत उसने निश्चय किया—आरम्भ में जर्मन प्रदेश जाऊगा—वहा का रास्ता जाना-बूझा है—वहा कुछ धन सग्रह करूगा, फिर ख्वालीन* तक जाने के लिए क़ाफ़िला तैयार करूगा। उसने सुना था कि ख्वालीन के उस पार दूर, बहुत दूर, सपनो का वह देश है—भारत।

निकोतिन तीन नावें लेकर उत्तर की ओर चल पडा। नावो पर माल भरा था जिसे उसने अपनी सारी पूजी लगाकर खरीदा था।

एक नाव पर विविध वस्त्र, धातु की चीज़ें और मास्को की देवताओ की प्रतिमाए और बाक़ी दोनो पर चमडे और चरबी लादी गयी।

आरम्भ में उसने नोवगोरद में व्यापार करने का निश्चय किया था, परन्तु वहा पहुचकर उसने अपना इरादा बदल दिया और

---

*कास्पियन सागर।

वोल्खोव तथा लदोगा होते हुए रीगा पहुचा और वहा से ल्यूवेक के लिए रवाना हो गया। वह इतनी लम्बी यात्रा पर केवल इसलिए नही निकला था कि धन कमाना चाहता था।

नोवगोरद में निकीतिन के पिता का एक पुराना दोस्त दनीला रेप्यीन नामक धनी व्यापारी रहता था। उसका एक वेटा अलेक्सेई, अफनासी की ही उम्र का था। अफनासी ने नोवगोरद की अपनी पहली यात्राओ में ही अलेक्सेई से मित्रता पैदा कर ली थी।

अफनासी को दनीला रेप्यीन से पता चला कि अलेक्सेई का विवाह हो चुका है और अव वह जर्मन प्रदेश गया हुआ है। अफनासी ने उससे वहा जाकर मिलने और उसके साथ फिर लौट आने का निश्चय किया।

अन्तत निकीतिन की अलेक्सेई से भेंट हुई, परन्तु जिस मित्र पर उसने इतना विश्वास किया था उसने उसके साथ गद्दारी की—वह जर्मन व्यापारियो से मिल गया और अफनासी को धोखा देने में उनका दाहिना हाथ वन गया।

हानि उठा चुकने के वाद निकीतिन अलेक्सेई से मिलने गया किन्तु उस समय तक वह गायव हो चुका था।

निकीतिन को जैसे काठ मार गया। उसके दिमाग में एक विचार कौंव गया किन्तु उसका दिल उसपर विश्वास करने को तैयार न हुआ। हा जव वह नोवगोरद लौटा और वहा अलेक्सेई को देखा तो उसका माथा ठनका—उसे देखते ही अलेक्सेई इतना घवडा गया कि हडवडी में अपने जल्दी चले आने का कारण वताने लगा। अफनासी सव कुछ समझ चुका था। उसके हृदय में एक तूफान उठ रहा था। उसे धिक्कारते हुए वह चल दिया।

"क्यो, अलेक्सेई, आखिर वेच दिया न तूने मुझे। कितने

पैसे मिले तुझे?" मुट्ठी भीचते हुए उसने सोचा। उसकी आत्मा व्यथित हो रही थी।

अफनासी को दुख केवल इस बात का न था कि उसके धन की हानि हुई थी, यद्यपि हानि गहरी थी, बल्कि इस बात का था कि उसकी भावनाओं को ठेस लगी थी। उसने इस धोखेबाजी का बदला लेने का निश्चय किया। वह उसके अपराध को सिद्ध करने में असमर्थ था। वहा नोवगोरद में अलेक्सेई को कौन बेईमान समझता? अगर अफनासी वहा यह बात उठाता भी तो लोग उसी पर हसते।

नहीं, किसी से कहने-सुनने से कोई लाभ नही। निकीतिन ने किसी दूसरे ढग से बदला लेने की बात सोची। वह जानता था कि रेप्यीन परिवार के लोग जवोलोच्ये में नगर के मुखिया से व्यापार के लिए फर खरीदता था। हा, यहा वह उसे नुक्सान पहुचाकर अपनी हानि पूरी कर सकता था।

निकीतिन ने लोहे का सामान खरीदा और चुपचाप ओनेगा
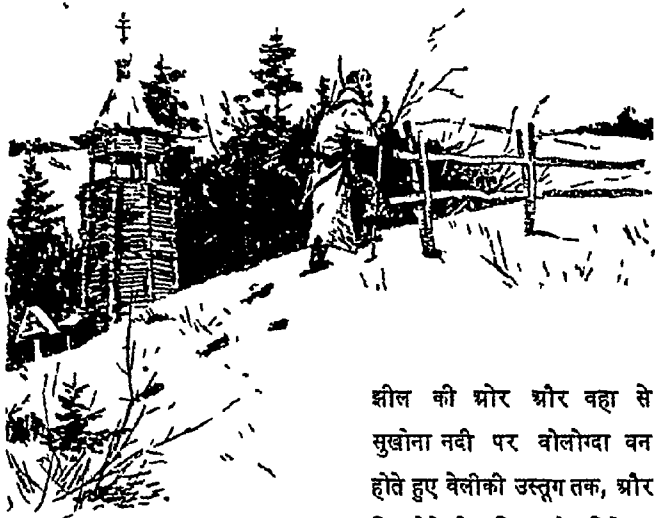
झील की ओर और वहा से सुखोना नदी पर वोलोग्दा वन होते हुए वेलीकी उस्तूग तक, और फिर सेवेर्नाया द्विना और विचेग्दा पर होते हुए पेचोरा की समृद्ध भूमि पर पहुच गया। उसकी यात्रा सफल रही। जब तक वह सबसे दूर के स्थानो पर न पहुच गया तब तक उसने लेन-देन न शुरू किया। उन स्थानो तक पहुचकर वह शीघ्र ही लौट पडा और नोवगोरद के व्यापारियो के सामने मनमाना मूल्य दे देकर, अच्छे से अच्छा फर लेने लगा। नोवगोरद के व्यापारी एक एक कुल्हाडी के वदले सेवल की उतनी खाले पाते थे जितनी कुल्हाडी के मूठ जडने के सूराख से होकर निकल पाती थी। अफनासी ने फर की किस्म के मुताबिक कभी कभी तो दो दो कुल्हाडिया तक दे दी। गरीव शिकारी उसके पास पचास पचास मील से अपना फर लेकर लेन-देन के लिए आते और यदि किसी का फर वह उस समय न खरीद पाता तो इस आशा में अगले साल तक के लिए वचाये रखते कि जब अफनासी लौटेगा तो अच्छे दामो पर सौदा करेगा।

शीघ्र हीनिकीतिन अपनी स्लेज पर मूल्यवान फ़र के गट्ठर लादकर वहां से चल दिया।

त्वेर के इस सदय व्यापारी की चर्चा केवल शिकारियों के शिविरों तक ही नहीं सीमित रही अपितु नोवगोरद के इर्द-गिर्द वाली रक्षक बस्तियों में भी जा पहुंची। फलतः रेप्यीन, वोरेत्स्की और दूसरे धनी परिवारों के मुख़तारों के भी कान खड़े हुए। युगों युगों से चली आयी नोवगोरद की भूमि पर एक अजनबी जो आया था! उसे पकड़ लेने की आज्ञा निकाल दी गयी। अफ़नासी जानता था कि नोवगोरद के उन व्यापारियों से लोहा लेना कितना ख़तरनाक है जिन्होंने किसी को भी इन प्रदेशों में क़दम तक न रखने दिया था। वह अपने को बचाता-छिपाता निकल रहा था, किन्तु वहां की सड़कें ऐसी थीं जिन्हें सभी जानते थे और उनसे होकर जाना ख़तरे से ख़ाली न था। फ़र्वरी की एक तूफ़ानी रात में वोलोग्दा के रास्ते वह पहरेदारों के हत्थे चढ़ गया। उन्होंने उसे जूतों, तलवार की मूठों से मारा-पीटा, उसके हाथों को मरोड़ा और उन लोगों और शिकारियों के नाम बताने को कहा जिनके साथ उसने सौदा किया था। किन्तु वह चुप रहा। यह भी एक करिश्मा ही था कि वहां के किसानों की मदद से उसकी जान बच गयी और वह पहरेदारों की गिरफ़्त से निकल भागा।

एक हफ़्ते से अधिक समय तक वह घने जंगलों में मारा मारा फिरता रहा—बर्फ़ पर रात बिताता और उन चिड़ियों का कच्चा गोश्त खाकर पेट भरता जिन्हें वह अपने हाथ के बने तीर-कमान से गिराया करता था।

अन्ततः वह उस गांव में पहुंच गया जहां केवल तीन ही घर थे। यह गांव जाड़े के दिनों में बाक़ी दुनिया से एकदम कट-सा जाता

था। अफनासी हड्डी का ढाचा मात्र रह गया था। हा वसन्त समाप्त होते होते उसका स्वास्थ्य कुछ सुधरा और वह त्वेर की ओर रवाना हुआ।

उसी समय उसे काशीन की फटकार खानी पड़ी।

निकीतिन खाली हाथ लौटा था। वह बराबर विचारो में डूबा दिखाई देता था। अब उसकी ज़बान पहले से अधिक कटु हो चुकी थी।

उसकी परिस्थितिया अब भी प्रतिकूल थी। गोश्त की दूकान खोल देने-भर के लिए उसने जैसे-तैसे कुछ पैसा जुटाया। त्वेर में तो राह चलते लोग तक उसकी ओर उगली उठाते। पीठ पीछे लोग उसपर हसते किन्तु सामने पड़ने पर उसे रास्ता दे देते। सच पूछो तो लोग उससे डरने लगे थे। ऐसा आदमी क्या नही कर सकता! और इस भय का कारण था उन लोगो का पापी मन। पर ऐसा लगता था जैसे उसने इन सब बातो पर कोई ध्यान न दिया। वह एकान्त में रहता, रात रात-भर धर्म-ग्रन्थो का पाठ करता, दुनियादारी की पुस्तके भी पढ़ता। मेहमान बनकर दावते उडाने कही न जाता। अफनासी का एक पुराना शिक्षक, पादरी इओना ही उसके विचारो और उसकी इच्छाओ को अच्छी तरह जानता था, समझता था।

अफनासी के ये विचार बड़े ही साहसपूर्ण थे। इन विचारो ने इओना को खिन्न कर दिया था।

"सुनो," आह भरते हुए इओना बोला—"इन विचारो से तुम कही के न रहोगे। इन्हे छोडो-छाडो और सीधी-सादी ज़िन्दगी बसर करो।"

"कैसे? कुत्तो की तरह? जो उसके सामने हड्डी फेंके उसके आगे तो वह पूछ हिलाये और जो हड्डी न फेंके उसपर गुर्राये?"

"जैसे और लोग रहते है "

"वे कैसे रहते है? दोस्त, क्या तुम्हे दिखाई नहीं देता? वे भी कोई आदमी है, वे तो जगली है जगली, गन्दे लोग! यह भी कोई जिन्दगी है? एक महल में रहता है, दूसरे को गज-भर जमीन नही मिलती।"

"भगवान की इच्छा "

"क्या? वरीकोव परिवार के लोगो ने ससुर का काम तमाम कर दिया। क्यो? इसी लिए न कि उन्ह उसकी दौलत मिल जाय। सामन्तो को ही देख लो! क्या करते है? किसानो पर अत्याचार करते है। शराब पीते है, छोकरियो को लिये लिये घूमते है, तातारो के साथ करार और समझौते करते है, फिर भी उनकी इज्जत है, सफलता उनके कदम चूमती है। और तुम—तुम अपनी ही दुम के पीछे दौडनेवाले कुत्ते की तरह इधर-उधर चक्कर काटते हो! वाह री भगवान की इच्छा!"

"भगवान उस दुनिया में सबका न्याय करेगे। समझे। अपना फैसला खुद न करो "

"ओ-हो! तो कोई मेरा फैसला करे और मै चुप रहू? मैं कच्ची मिट्टी का पुतला थोडे ही हू? भगवान ने मुझे भी दात दिये है। मैं दूध ही नही पीता, हड्डी भी चूस सकता हू। तुम मुझसे वहस न करो। मै तो इन भेडियो के झुड में रहते रहते तग आ गया हू। मेरे लिए सब बराबर है—जल्द ही चला जाऊगा "

"फिर वही? इतनी घुमक्कडी तो कर चुके, लेकिन मिला क्या? या फिर भी तुम्हे विश्वास है ..."

"हा, है। बस एक ही ख्याल और है। जहा अब मेरा जाने का इरादा है यदि वहा भी मुझे दौलत और सत्य नही मिलता तो बस, मेरा फातिहा पढो। तब यह सिद्ध होगा कि धरती पर सत्य है ही नही।"

"दूर जाना चाहते हो?"

"हा।"

"और तिजारती सामान?"

"उधार ले लूगा।"

"तुम्हें मिल जायेंगे?"

"मिल जायेंगे। आदमी का लोभ क्या नही करा लेता। मै एक एक के बदले दस दस लौटाने का वादा जो करूगा।"

"और दौलत तुम्हे मिलेगी कहा से? ज़मीन पर पडी हुई है क्या?"

"एक बार तुमने भी तो अनुमान ठीक लगाया। जहा मैं जा रहा हू वहा सोना ज़मीन पर बिछा है।"

इओना आख फाडकर देखने लगा। उसने हाथ पर हाथ मारा और पादरियो वाले उसके लबादे की चौडी चौडी आस्तीनें ऊपर चढी।

"फिर तुमने क्या तय किया? कहो, क्या तय किया?" निकीतिन के और भी निकट आते हुए वह धीरे से बोला, "इस सबकी जड किताबें है, किताबें! तुमने किताबो की बकवास पर विश्वास कर लिया न? हे भगवान! इसी लिए तो तुम्हारी मेज़ पर इन्दीकोप्लोव की किताब है ... दोस्त, अपने दिमाग से ये सारी खुराफाते निकाल फेंको!"

"क्यों ?"

"हे भगवान   वहा कभी कोई नही गया, उन   "

"डरो नही, कहो न—भारत में।"

"हे भगवान, हे भगवान, रहम कर, रक्षा कर   भारत में   हो सकता है यह देश पृथ्वी पर है ही नही।"

"वहा से लोग माल लाते हैं।"

"कौन लोग लाते हैं? ईसाई लोग?"

"नही, तूरेज के व्यापारी, मुसलमानो से   "

"हा, तो मुसलमानों से! और तुम अपनी नाक कहा अडाओगे? अच्छा, तो भारत है कहा? जानते हो?"

"जान लूगा! कहते हैं भारत के निवासी सराय में आये थे। इसके माने यह हैं कि पहले मुझे वोल्गा पर यात्रा करनी होगी।"

"अरे इस सब के चक्कर में न पडो! वहा शैतान, देव, दैत्य, जाने कौन कौन रहते हैं। यह बात इन्दीकोप्लोव ने भी लिखी है। मारो गोली उस सोने को। भगवान की प्रार्थना करो कि इस मोह से छूट जाओ!"

"प्रार्थना करना तुम्हारा काम है, दोस्त। मेरा काम है रास्ता ढूढना। अपनी आत्मा को सुख दो और चुप रहो। मैं चाहता हू कि मेरे विचारो को कोई न जान पाये। अगर मैंने सुना कि तुमने मेरे बारे में ऐरी-गैरी बाते फैलायी तो मैं तुम्हे दिल से निकाल दूगा!"

"हे भगवान! यह तुम क्या कह रहे हो अफनासी! तुम तो मेरे बेटे की तरह हो।"

"अगर मैं तुम्हारे बेटे की तरह हू तो मेरे मामले में टाग मत अड़ाओ   देखो, त्वेर में अकेले तुम ही तो मेरे दोस्त हो जो

मुझे समझ सकते हो। लेकिन तुम भी मुझे नही समझना चाहते। खैर बहुत हो चुका, हम बहुत कुछ कह-सुन चुके।"

चिन्तित मुद्रा से इग्नोना ने सलीब का निशान बनाया और पीले पड़े हुए निकीतिन की सूजी हुई आखो की ओर देखने लगा।

शीघ्र ही अफनासी के मित्रो ने उसमें एक परिवर्तन और देखा। मामला क्या है इसका अनुमान सबसे पहले नौकरानी मार्या ने ही लगाया था, किन्तु इससे उसे प्रसन्नता नही हुई थी।

"अफनासी, कशीन की बेटी ओलेना को ताकता रहता है, मीठी मीठी नज़रो से।" उदास होकर उसने इग्नोना से कहा।

"क्या सच? हे भगवान तेरे बड़े बड़े हाथ हैं," इग्नोना गदगद हो उठा।

"पादरी, आप इस तरह खुश क्यो हो रहे हैं," सिर हिलाती हुई मार्या बोली, "त्वेर में वही तो एक लड़की है, खूबसूरत भी और मालदार भी। लेकिन उसे यह लड़की देगा कौन? कहा राजा भोज कहा गगू तेली।"

"कोई बात नही, भगवान की इच्छा!" बूढा इग्नोना आखे नचाते हुए खुशी से बोला, "मुझे आशा है कि शीघ्र ही उसके पास पैसा हो जायेगा, वह अपने दिमाग से सारी खुराफाते निकाल फेंकेगा।"

मार्या चली गयी। इग्नोना खुश होकर अफनासी के विवाह के सपने देखने लगा।

और अच्छे मूड में इग्नोना ने निकीतिन पर छीटाकशी करने की सोची, किन्तु जैसे ही उसने उस राजहसिनी की बात छेडी कि अफनासी ताव में आ गया—

"क्या बक रहे हो? किस राजहसिनी के सपने देख रहे हो?" वह बोला।

इओना चुप हो गया।

और सच बात तो यह थी कि निकीतिन सचमुच धनी वसीली काशीन की बेटी के ही बारे में सोच रहा था। उसके समक्ष ओलेना का लम्बा-सा मुख-मडल, गालो की कुछ उभरी हुई हड्डिया, धसी हुई कनपटिया और ठुड्ढी का गड्ढा साकार हो उठा। उसने ऐसी सुन्दरता कभी न देखी थी।

एक बार गिरजे से लौटते हुए उसे ओलेना अधेरे में जलते हुए चिराग की तरह दिखाई पडी थी।

वह मन ही मन कहने लगा—"उसकी सराहना मत करो। वह तुम्हारे लिए नही।" उसने उसका ख्याल अपने दिल से निकाल देने का प्रयत्न किया और अपने पर खीझ उठा—वह स्वय अपने को ही न सभाल सका। आखिर उसे फिर क्रोध आ गया—"क्यो वह मेरे लिए नही? मुझे मिलन-सुख बदा ही नही है क्या? या फिर ओलेना को प्राप्त करना मेरे लिए सम्भव ही नही?"

उसने अपने को और अपने जीवन को एक नयी दृष्टि से देखा। वह जैसे माद में रह रहा था, सारी दुनिया से अलग। यह जिन्दगी भी कोई जिन्दगी है? उसकी आत्मा में एक हाहाकार-सा मचा हुआ था, जैसे उसे अपने अन्तस् में यही आवाज सुनाई पड रही थी—"निराश होने की कोई बात नही! मै दुनिया को दिखा दूगा कि मै कौन हू! निकीतिन ऐसा-वैसा आदमी नही!"

और उस अद्भुत देश की यात्रा करने का विचार उसके हृदय में और भी अधिक तेजी से उठने लगा।

दूर की यात्रा के लिए न तो उसके पास पैसा ही था और न व्यापारिक सामान ही तो भी क्या हुआ? वह कर्ज लेगा। और यद्यपि उसे त्वेर के थैलीपतियो के पास हाथ फैलाने जाना पसद न था फिर भी उसने ऐसा करने का निश्चय कर लिया। किन्तु उसका

भाग्य वली था। वसीली काशीन ने, अप्रत्याशित रूप से, स्वय ही अफनासी को बुला भेजा उस दिन से जैसे सब कुछ बदल गया। दिन यो उडने लगे जैसें डरी हुई चिडिया उडती है। ज़िन्दगी फिर से निकीतिन के समक्ष मुस्करा रही थी।

नाव घाट से काफी दूर जा चुकी थी। गाना बन्द हो चुका था और उसकी अन्तिम धुन वोल्गा के जल पर थिरक थिरककर विलीन हो रही थी।

"अफनासी, अब हम लौटें न?" निकीतिन से प्रश्न किया गया, "हम इतनी दूर तो चले आये।"

निकीतिन ने चारो ओर निगाह डाली। सचमुच लौटन का समय हो चुका था। उसने पाल उतारने की आज्ञा दी और नाव धीरे धीरे मुडने लगी। फिर वह बेंच के पास आया और एक कारीगर को एक ओर हटाते हुए स्वय डाड का खुरदरा हत्था थाम लिया। डाड से पानी की बूदें अर्द्धवृत्त के रूप में टपकती हुई दिखाई पड रही थी।

नाव किनारे पर लग गयी। निकीतिन ने उसे जजीरो से बाधा और हाथ हिलाया—

"चलो, दोस्तो। अभी तुम सब की मजूरी दूगा।"

कोट कन्धे पर डाले वह सब्ज़ी बागो से होता हुआ घर की ओर बढने लगा।

कारीगर कुल्हाडिया और रस्सिया साथ लिये उसके पीछे पीछे चल दिये।

वसीली काशीन के अभ्रक की खिडकियो वाले दुमजिले मकान में उस दिन सवेरे से ही चहल-पहल थी। स्वय मालिक काशीन,

जैसे ही उठा, कि गिरजे में गया, माता मरियम की प्रतिमा के आगे मोमवत्ती जलायी, फिर घाट की ओर, खत्तियो की तरफ और यह देखने के लिए गया कि नौकर घोडो को कैसे नहला रहे हैं, और इसके वाद घर के हर कोने का चक्कर लगाने के वाद वडवडाता हुआ ऊपर की मज़िल में एक कमरे में चला गया जहा विना किसी खास कारण के घर के लोगो का न जाना ही ठीक रहता था। प्राथमिक प्रार्थना के घटो की आवाज़ मुश्किल से ही विलीन हुई होगी कि पीले-से चेहरेवाला एक चुस्त व्यापारी मिकेशिन अन्दर आया और मालिक के पास आकर न जाने उसके कानो में क्या फुसफुसाने लगा। उसे भी यात्रा पर जाना था। घर के लोग पहले से ही इधर-उधर भाग-दौड कर रहे थे। वसीली काशीन, प्रथानुसार, यात्रियो के लिए खाना तैयार कराने में लगा था।

काशीन की चौरस वक्षा पत्नी, अग्राफेना, का चेहरा उतरा-सा लग रहा था। उसके पतले-से ओठ भिचकर रह गये थे। वह वहुत ही व्यस्त नज़र आ रही थी। टिकिया भी वननी चाहिए, मास भी भुनना चाहिए और फिर चटनी-अचार भी कायदे का होना चाहिए।

चारो ओर उसी की तेज़ डाट-फटकार सुनाई पड रही थी। अग्राफेना का ख्याल था कि काशीन ने जो यह नया काम उठाया है वह विल्कुल वेकार है और उसकी तरफ से होनेवाली इस सारी दावत का कोई परिणाम न होगा। किन्तु उसे पति की अवज्ञा का साहस न हुआ और इसी लिए वह अपना सारा गुस्सा घरवालो पर उतारती रही। कभी कभी वह वुदवुदाती रही—

"हे दयामय, तुम मुझे किन पापो की सज़ा दे रहे हो? वह वसीली तो सठिया गया है। जिन्दगी में कई वार वाज़ी लगा चुका है और अव, जव खुद उससे कुछ करते-धरते नही वन पडता, तो

उसने सामान निकीतिन को सौंप दिया है! देने के लिए आदमी भी ऐसा चुना जो शैतान है, अपने को अक्ल का खजाना समझता है और है किताबी कीडा हे भगवान! जो आदमी अपने बाप के मरने के बाद अपना ही माल-मता न बचा सका वह दूसरे का कैसे बचायेगा! लोगो की इज्जत करना तो दूर ही रहा वह तो अपनी हरकतो से शरीफ व्यापारियो तक की नाक नीची करता है। मेरे पति को जाल में फसा लिया है और मेरी बिटिया पर भी जादू कर रखा है—सदा उस बदमाश की टोह में है!"

बेटी का ध्यान आते ही अग्राफेना ने उसे पुकारा। किन्तु कोई जवाब न मिला। अग्राफेना ने ओलेना के कमरे में झाककर देखा—कमरा खाली था। बेटी आगन में भी न दिखाई पडी। वह घबडाकर उत्तेजित हो उठी—घर से अकेली बाहर निकल पडी! कहा? किस लिए? कभी किसी ने ऐसी बात देखी-सुनी थी?

पीली पडती हुई अग्राफेना ने बूढी आया को आवाज दी—

"दौडकर गिरजे में तो देख आ शाल रास्ते में ही लपेट लेना! उसे ढूढ ला, यहा ले आ "

आया आह भरते हुए लगडाती लगडाती सडक पर निकल गयी।

वसीली काशीन ने मिकेशिन को चले जाने के लिए कहा। ऐसा लग रहा था जैसे उसने घर में चलनेवाली इस चिल्ल-पो को सुना ही न हो। वह खुली हुई खिडकी के पास बैठा आराम कर रहा था और बाहर सडक की ओर देखता हुआ अपने गठिया-ग्रस्त हाथ से अपनी लम्बी सफेद दाढी सहलाता जा रहा था।

कभी काशीन भी एक सुन्दर जवान था। किन्तु अब बुढापे और गम्भीर रोग ने उसकी शक्ल विकृत कर दी थी—झुर्रीदार ऊचा माथा, पतली और टेढी नाक, पोपले गाल। पहले की तरह उसकी

आखें तो बडी बडी ही थी किन्तु उनकी चमकती हुई नीलिमा जाती रही थी।

वमीली काशीन निकीतिन और उन दूमरे व्यापारियो की प्रतीक्षा कर रहा था जो उमके माथ यात्रा पर जाते थे। उन्हे सनद लेने के लिए जाना था।

वमीली खुश था। उमे विश्वास था कि उमने जिम काम में हाथ लगाने का निश्चय किया है उममें उमे अवश्य मफलता मिलेगी। नही, उमने निकीतिन को न तो उत्तर में ही भेजा था और न अनाज के माथ ही।

जिन दो वर्षो में फम्ल कम हुई थी उनमे काशीन ने बहुत-मा फर खरीदा था—मेवल, लोमडी और एर्माइन का फर। मारे फर काशीन के मकान ही में पडे थे और जैमा कि घर के मालिक का कहना था वे पडे थे "किमी उपयुक्त अवमर पर काम आने के लिए"। किन्तु बहुत ममय मे वह "उपयुक्त अवमर" न आया था और फर की कीमत बढने के बजाय घटती ही गयी थी।

बेशक, यह माग मामान वगीकोव के हाथ या माम्को के बाजार में बेचा जा मकता था किन्तु जब कभी वमीली काशीन को इसका ध्यान आता तो वह खीझ उठता। अगर उमने अपना माल इम प्रकार बेच दिया तो उसे बहुत ही थोडा लाभ होगा।

इमी लिए काशीन ने विचार किया कि वह अपना मारा माल वोल्गा के दहाने पर तातारो के हाथ बेचेगा या फिर ख्वालीन में।

किन्तु वह म्वय कही आता-जाता भी न था। फलत वह मारा मामान या तो अपने मुखतारो को देता या फिर उधार दूसरे लोगो को। काशीन जानता था कि मुखतार चोरी करते हैं,

और उधार माल लेनेवाले भी उसके माल से अपनी ही जेबें भरते हैं। किन्तु उसने यह सोचकर सन्तोष किया कि जब वह स्वय माल बेचने जाता था तो अनाज बैठ जाने अथवा ऊनी कपडा खराब हो जाने के कारण उसे स्वय दामो में छूट देनी पडती थी, रिआयत करनी पडती थी। वह समझ लेगा कि इस बार भी उसने वैसी ही छूट दे दी है।

काशीन बहुत समय तक ऐसे व्यक्ति की तलाश करता रहा जिसे पूरे विश्वास के साथ दहाने तक ले जाने के लिए माल दिया जा सके। किन्तु बहुत समय तक कोई कायदे का आदमी न मिला। उसके मुखतारो में से न तो पढे-लिखे लोग ही थे और न अनुभवी ही। क्लाज्मा नदी पर शहद, सेस्त्रा नदी पर पटसन खरीदने और गावो में घूम घूमकर हसिये और लम्बे लम्बे खुरपे या नोवगोरद में चमडा बेचने के लिए तो उसे आसानी से लोग मिल जाया करते किन्तु ये लोग तातारो के साथ अथवा विदेशो की भूमि में व्यापार करने के काबिल न थे। इस कार्य के लिए सिर्फ अनुभवी, बुद्धिमान और व्यापार में कुशल आदमी की ही जरूरत न थी, जरूरत थी ऐसे आदमी की भी जो मौका पडने पर मरने-मारने को भी तैयार रहे किन्तु ऐसा आदमी मिलता कहा ? पढे-लिखे व्यापारी तो गिने-चुने ही थे और अपने अपने कामो में लगे थे। वे दूसरो का काम अपने हाथ में लेने को तैयार न थे।

ऐसे ही समय काशीन को निकीतिन की याद आयी।

ऐसा लग रहा था कि जब निकीतिन त्वेर लौटा तो उसकी जेब में एक पाई तक न थी। मगर व्यापारी का काम ही ऐसा है— कभी अमीर कभी फकीर। वह चिडचिडा है और गुस्सैल भी किन्तु

यह स्वाभाविक है। जब कोई आपके मुह मे रोटी छीनेगा तो आपको गुस्सा आयेगा ही।

दूसरो की तुलना में अफनामी निकीतिन कही अच्छा पढा-लिखा है। और एक बार तो उसने प्रेग्रोब्राजेन्स्क मठ के मुखिया को बहस में इतना छका मारा था कि उसका मुह लटक आया था। त्वेर के व्यापारी इस घटना का जिक्र प्राय मजे ले लेकर किया करते थे। वह तातारी भाषा जानता है, जर्मन जानता है, मजबूत है, बहादुर है और तलवार और बन्दूक इस्तेमाल कर सकता है।

अफनामी पहली बार अपने पिता के साथ रीगा गया था। तब वह उन्नीस साल का था। लौटते समय रूमी काफिले पर कुछ डाकुओं ने हमला किया था। व्यापारियो ने डाकुओ से मोर्चा लिया था और उन्हे भगा दिया था। तभी निकीतिन ने यह साबित कर दिया था कि वह कितना बहादुर है—उस समय घायल हो जाने पर भी वह अन्त तक लडता रहा था। उस मुठभेड में उसने अपना खून बहाया था और फिर मुश्किल मे ठीक हुआ था

ऐसे व्यापारी को अपना माल-मता अवश्य सौंपा जा सकता है।

इन सभी बातो पर मनन कर चुकने के बाद काशीन ने अफनामी को बुलाया। बडी बारीकी के साथ बातचीत होती रही। उसने उससे अपनी और उसके पिता की मित्रता की चर्चा की, उसके कामो के बारे में पूछ-ताछ की, लोगो की बेरहमी की शिकायत की और पूछा—"अब फिर तिजारत पर जाने का इरादा नही है क्या?"

निकीतिन अपने इरादे न छिपा सका—यह ठीक था कि वह उधार माल लेना चाहता था।

काशीन ने एक आह भरी और फिर, जैसे निकीतिन पर तरस खाकर, सिर खुजाते हुए कहने लगा—

"खैर माल मैं तुम्हें दे दूगा। इस वक्त सराय जाने का अच्छा मौका है। शेमाखा का राजदूत शीघ्र ही मास्को से वापस आनेवाला है। तुम उसके साथ बेखटके जा सकते हो। मगर मैं नही जानता कि हमारा-तुम्हारा समझौता भी हो सकेगा या नही।"

निकीतिन क्या कहता! काशीन ने एर्माइन और सेवल के हर चालीस फरो पर मास्को के बाजार के दामो की तुलना में पचीस रूबल बढा दिये थे और दूसरे जानवरो के फरो पर भी काफी दाम बढाने का मन ही मन निश्चय किया था।

किन्तु इस समझौते के बारे मे निकीतिन के अपने विचार थे जिन्हें उसने काशीन से कहना उचित न समझा। दोनो में बात पक्की हुई। यात्रा के असफल रह जाने का भय काशीन को व्यग्र नही कर रहा था। वह यह जरूर जानता था कि निकीतिन की सम्पत्ति अपने माल की जमानत में लिखा ले तो उससे उसका घाटा लगभग पूरा हो सकता है। और फिर वह व्यापार ही क्या जिसमें खतरा न हो।

उसने निकीतिन के साथ मिकेशिन व्यापारी के जाने की भी व्यवस्था कर दी। मिकेशिन पहले से ही काशीन का कर्जदार था, अत वह उसके लिए सब कुछ करने को तैयार था। वह बिना कुछ अधिक कहे-सुने इस बात के लिए राजी हो गया कि वह निकीतिन के व्यापार की देख-रेख करेगा और यदि निकीतिन मुनाफे को छिपाने लगे, तो बाद में काशीन को सब कुछ बता देगा।

आज सुबह मिकेशिन ने अपने सबधियो के लिए कोई चार मन आटा काशीन से पेशगी ही ले लिया था। ले भी लेने दो, क्या बात है! एक नक्काशीदार जर्मन कुर्सी पर बैठे बैठे काशीन मुस्कुराया और सोचने लगा। उसका ध्यान आकाश में भागते हुए बादलो की ओर आकृष्ट हुआ। लम्बा पतला बादल, एक छोटे बादल के

पीछे दौडा। उसके पास पहुचा, उसपर झपट्टा मारा, छोटा बादल कुडमुडाया और दोनो तरफ से बडे की लपेट में आ गया   वडा छोटे को खा गया।

वसीली काशीन ने दाढी सहलायी। बादलवाली वात तो भगवान के हाथ है लेकिन यह भी सच है कि दुनिया में छोटे बनकर रहने में कोई मजा नही—छोटे वनो तो सब की वाते सहो। जिसकी लाठी उसकी भैंस। अरे भाई मान-अपमान शरीर में कोई चिपका थोडे ही रहता है? काशीन को उन पिछले वर्षो की याद हो आयी जब उसने ज़िन्दगी में कदम रखा था। कभी उसने, व्यापारी मतवेई ज्वोन्त्सोव और दूसरे मित्रो के साथ मिलकर कुछ व्यापारियो पर हमला किया था और उनकी बहुत-सी सम्पत्ति हडप ली थी। कहना मुश्किल है कि पहल किसने की थी। मतवेई तो वता नही सकता—वह मर गया है और बाकी लोगो का क्या हुआ, त्वेर में कोई नही जानता।

तब से वसीली काशीन के पास पैसा बढता ही गया। उसने वढिया घर बनवाया, उम्दा घोडे खरीदे, छोटे छोटे व्यापारियो को उधार सामान देने और आस्त्रखान और नोवगोरद में अपनी नावें भेजने लगा। उसका नाम प्स्कोव और मास्को के प्रसिद्ध व्यापारियो की ज़बान पर नाचने लगा। जर्मन प्रदेशो में भी उसकी तूती बोलती थी।

सहसा इस बूढे व्यापारी की कल्पना के समक्ष मूरोम के निकट की वह वन्य सडक घूम गयी जहा सनोवर के वृक्षो की दमघोट गध भरी हुई थी और मरे हुए लोगो की लाशें पडी हुई थी। उसके कानो में जैसे आवाज सुनाई पडी—

"बढो, हमला करो!" वसीली के मस्तिष्क में ऐसे ही अप्रिय विचार घूम रहे थे, जिनसे ऊबकर उसने सलीब बनाना शुरू किया।

ऐसा कभी नही हुआ था, कभी नही हुआ था! ओफ, मैंने जैसे यह सब कुछ एक दु स्वप्न में देखा-भर था!

वसीली हाफता हुआ उठा और कमरे में टहलने लगा। उसका हृदय धक-धक कर रहा था। जैसे-तैसे उसने अपने को सभाला और शान्त रहने का प्रयत्न करने लगा। जो हुआ उसपर खाक पड गयी। और फिर उस समय उसकी भी तो हत्या की जा सकती थी। जो लोग मरे थे उनके लिए उसने मोमबत्तिया जलायी थी, गिरजे मे दान-दक्षिणा दी थी। अब कोई परेशानी न रही थी।

वह देवताओ की प्रतिमाओ के पास गया और शमादान में मोमवत्ती ठीक कर दी। पवित्रात्माओ के इन विचारमग्न चेहरो से उसे कोई डर न लग रहा था। वे भी कभी पापी रहे थे, किन्तु फिर भी उन्हें पवित्रात्माओ की श्रेणी में रख दिया गया था। सब कुछ भगवान के हाथो में है, शायद धर्म की सेवा के लिए ईश्वर ने उसे भी चुना है।

वह आह भरते हुए वहा से लौटा। सचमुच इस ससार में किसी चीज की भी पूर्वकल्पना नही की जा सकती। इसमें न जाने कितने रहस्य, कितने आश्चर्य भरे पडे है। हाल ही में नोवगोरद मे कुछ व्यापारी आये थे, कह रहे थे कि कुछ लोगो ने पेचोरा नदी के उस पार छोटे छोटे हिरन वादलो मे जमीन पर गिरते देखे थे। वे गिरते ही उठने लगते और भाग खडे होते। और कहते हैं कि दुनिया में ऐसे ऐसे देश भी है जहा स्त्रियो के मुखडो वाली चिडिया पेडो पर बैठी दिखाई देती है। वे गुजरते हुए लोगो को अपनी ओर बुलाती हैं, और अगर कोई उनकी बात सुनता है तो वह मर जाता है। कहते है कि वही एक अद्भुत जानवर रहता है जो बडा विचित्र है, दूसरे जानवरो से एकदम उल्टा—उसकी दुम उसके मुह पर होती

है और तुम ही से वह खाना मुह में रखता है। शायद यह बात सच हो, शायद झूठ। वे देश बहुत दूर हैं। सूरोज और जर्मन प्रदेशो के व्यापारी वहा का माल लाते हैं। और इसमें बरसो लग जाते हैं। माल भी अजीब क़िस्म का होता है—ममाले, अद्भुत फल, डिज़ाइनदार कपडे—इतने महीन तथा पारदर्शक कि लज्जा तक नही ढकते। और यह सभी चीज़ें बडी महगी होती हैं। हे भगवान, तू निकीतिन के सराय तक जाने और वापस आने में हमारी मदद कर! वह अच्छी अच्छी चीज़ें लायेगा

काशीन की भौंहो पर बल पड गये। निकीतिन को देर हो गयी थी। "नाव को कहीं कुछ हो तो नही गया?" व्यापारी चिन्तातुर सोचने लगा। वह दरवाज़े की ओर बढा किन्तु चौखटे पर कुछ ऐसी आवाज़ सुनाई दी मानो कोई चूहा भडभडाया हो। उसने मुह बिचकाया। वह जान गया था कि उसकी पत्नी दरवाज़ा खटखटा रही है।

"अन्दर आ जा!" काशीन जैसे भन्नाता हुआ बोला। अग्राफेना ने दरवाज़ा खोला और पीछे टरकते हुए शाल को ठीक करने लगी। काशीन अपनी अस्थिपजर और डरी हुई सी पत्नी को कभी प्यार न करता था। उससे उसने ब्याह रचाया था पैसे के लालच से और उसे लम्बा दहेज भी मिला था। वह मन ही मन कहा करता था कि प्यार-व्यार मनगढन्त चीज़ है। आदमी औरत का आदी हो जाता है। किन्तु वर्ष पर वर्ष बीतते गये लेकिन अग्राफेना उसके मन के निकट कभी न आ सकी। इसके विपरीत, बसीली के हृदय में अपनी पत्नी के प्रति द्वेष ही बढता गया।

"इस ब्याह में मेरा बडा नुक्सान हुआ!" उसने कुछ कटुता के साथ सोचा, "मैं पैसे पर गिरा था और एक चुडैल को घर

में उठा लाया   ओफ, दूसरी भी तो कितनी अच्छी अच्छी लडकिया थी!"

और ऐसे ही क्षण उसकी कल्पना के समक्ष एक कृपक कन्या मार्फा आकर खडी हो गयी—मतवाली आखें, मोती जैसे दात, ढालदार कधे। एक जमाना हुआ होगा—यह लडकी काशीन को प्यार भरी निगाहो से देखती थी। वसीली का दिल उसकी ओर आकृष्ट हुआ था किन्तु उसने अपने मन की वात न मानी और अपना विचार वदल दिया। मार्फा गरीव थी। काशीन ने उसके समक्ष विवाह का प्रस्ताव नही रखा। कहते थे कि उसका विवाह किसी कुवारे के साथ कर दिया गया, उसकी जिन्दगी गरीवी में कट रही है। वह अपने पति को प्यार नही करती   काशीन ने कभी किसी से यह पता लगाने की कोशिश न की कि वाद में मार्फा का हुआ क्या। जो हो गया, हो गया

"यहा क्यो आयी?" काशीन ने, वडी वेरुखी से, पत्नी से पूछा।

"वसीली," अपनी पुरानी कमीज की चौडी आस्तीनो से अपना मूह ढापते हुए वह जैसे चिल्ला पडी—"वसीली शायद तुम अपना विचार वदल दो। मुझपर तरस खाओ। मेरे मन में कुछ अशकुन उठ रहे हैं। तुमने जो कुछ करने का विचार किया है वह उचित नही है   "

"यह सव तुमसे किसने पूछा!" काशीन चिल्ला पडा। पत्नी ने उसके क्रोध को और भी भडका दिया, "यह तुम्हारा काम नही। जाओ, अगीठी के पास वैठो।"

"हे भगवान! क्या मैं तुम्हारी इच्छा के खिलाफ कुछ कह रही हू? निकीतिन को कोई लूट ले तो? हो सकता है कुछ और

भी हो जाये मुझे उसका कोई विश्वास नही, जरा भी विश्वास नही। लोग कहते है वह छलिया है, जादूगर है।"

"वेवकूफ!" काशीन चिल्लाया, "क्यो काव काव कर रही हो? आखिर क्यो? सच पूछो तो तुम्हारे ऐसा कहने मे ही कोई मुसीवत आ सकती है," उसने सलीव का निशान वनाया और फिर धीरे धीरे कहने लगा, "निकोतिन जैसा आदमी तो चिराग लेकर भी ढूढो तो न मिलेगा। तुम्हारी समझ में कुछ आता है ही नही। अच्छा, टलो तो यहा से!"

किन्तु अग्राफेना न गयी।

"वसीली, मेरे मालिक," सिसकी लेती हुई वह वोली, मुझसे नाराज मत हो। ठीक है मैं मूर्ख हू, अव तक चुप रही हू दोष मेरा ही सही अफनासी ओलेना को तो घूरता है "

"ओह!" काशीन हसा, "तो क्या हुआ? वह मर तो नहीं गयी, उसका कुछ छिन तो नही गया?"

अग्राफेना रो रही थी।

"वह ठहरा नगा दरिद्री! और मैं हू मा "

"वन्द भी करो यह वकवक!" काशीन ने पत्नी को रोका, "मैने अफनासी का व्याह रचाने का तो ठेका नही लिया, मैने करार किया है रोजगार का "

"हा और ओलेना यह भी तो "

"यह भी क्या?"

"तुम्हे अपनी आखो से तो कुछ दिखाई नही देता? लडकी सयानी हो गयी है। और अफनासी उसपर डोरे डाल रहा है। आज भी देखो न, विटिया की आखें उसकी राह देखते देखते पथरा गयी है "

"झूठ मत बोलो, झूठ मत बोलो!" दाढी सहलाता हुआ काशीन कहने लगा, "यह काम तुम्हारी बिटिया का नही कि अपने लिए खसम ढूढती फिरे।"

"हा, मैं जानती हू। बिटिया सूखती जा रही है। मैं कहती हू कि तुम निकीतिन को निकाल बाहर करो   यही अच्छा होता कि   इससे बरीकोव परिवार के लोग नाराज हो रहे हैं। हमने उस खानदान में अपनी बेटी व्याहने का वादा किया है न।"

"बन्द करो यह अपनी टें टें," जैसे ही उसकी पत्नी ने उसके काम-धाम के बारे में कहना शुरू किया कि काशीन चिल्ला उठा, "बस, बस। और हा, कान खोलकर सुन लो अगर मैं चाहूगा तो निकीतिन के साथ ओलेना का व्याह कर दूगा!"

अग्राफेना ने एक आह भरी, मुह खोला और दहलीज के पास खडी हो गयी। उसमें जवाब देने का भी साहस न रह गया था। पत्नी की यह उतरी-सी शकल देखकर काशीन को बेहद खुशी हुई। उसे कुछ और सताने के उद्देश्य से काशीन ने इतना और कह डाला—

"जरूर अपनी ओलेना निकीतिन को दे दूगा। जब वह मुनाफा कमाकर वापस आयेगा तो मैं उससे कहूगा कि वह अपने व्याह के प्रस्ताव के लिए मेरे पास बिचौलिये भेजे। और मै उस प्रस्ताव को नही ठुकराऊगा, नही ठुकराऊगा   "

मगर वह तुरन्त चुप हो गया और अग्राफेना के निकट आ गया।

"क्या बात है? क्या बात है?"

वह चीखती हुई उसके पैरो के पास आ गिरी—

"ओलेना का कही पता नही! सुबह से ही वह घर में नही है!"

"हो सकता है गिरजे में हो?"

"नहीं है वहां ..."

"मेरा कोट तो देना। वान्का को बुलाओ! घोड़े को पुकारो ... घोड़ा तैयार कराओ! बदमाश, बेशर्म! कहां जा सकती है! शैतान कहीं की इसी छड़ी से तेरी खबर लूंगा!"

"तुम कहां जा रहे हो? यहां व्यापारी जो आयेंगे!"

यह सीधी-सी बात सुनकर कारीन वहीं बैठ गया। ठीक तो है अपनी मनमौजी बिटिया के पीछे मैं कहां दौड़ूं? वह मुझे एक न एक चिन्ता में डाले ही रहती है। लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे? व्यापारी आ ही रहे हैं।

"जाओ, निकल जाओ!" वह पत्नी पर बरस पड़ा, "ओलेना को ... ओलेना को ..." कारीन के शब्द उसके मुंह में ही अटक गये।

"अच्छा, मैं ही सब कुछ ठीक कर लूंगा," आखिर वह बोल उठा, "जैसे ही वह आये उसे ताले में डाल देना! फिर उसकी अच्छी तरह खबर लूंगा ..."

पिता के घर से चुपके से निकलकर ओलेना एक मिनट के लिए रुकी, फिर बाड़े के साथ पीठ टेकती और हांफती हुई कुछ सुनने लगी। इसके पश्चात् कदम बढ़ाती, और पीछे मुड़कर न देखती हुई, सीधी एक गली में घुसी और एक नुक्कड़ पर मुड़ गयी।

वह शाल में मुंह ढककर चलती रही। वह कांप-सी रही थी। प्रातःकाल सड़कें सुनसान थीं—सिवा किसी इक्की-दुक्की बूढ़ी या ऊंघते हुए चौकीदार के कोई नहीं दिखाई दे रहा था। फिर भी ओलेना को लगा कि रास्ता चलनेवाले सभी लोग जानते हैं कि वह कौन है, कहां

और क्यो जा रही है और सभी जैसे उसे तिरस्कार और द्वेष की भावना से देख रहे हैं।

किन्तु उसने अपनी चाल न धीमी की और जब रास्ते में, सयोगवश गिरजे से निकलकर आती हुई एक भक्तिनी पर उसकी नज़र पडी तो ओलेना ने उसे कुछ इस तरह घूरा कि बूढी एकदम पीछे हटकर सलीब का निशान बनाने लगी।

एक क्षण के लिए ओलेना के दिमाग में यह विचार भी कौंध गया कि वह गिरजे में क्यो न चली जाये, किन्तु उसी क्षण उसने यह ख्याल छोड दिया और उसके अपने पिता जैसे पतले नथुने गुस्से से फूल गये और सिर ऊपर उठ गया।

उसका रास्ता नज़दीक का न था। उसे जाना था सारे त्वेर का चक्कर लगाते हुए याम्स्काया बस्ती तक। उसे बडी जल्दी थी क्योंकि उसे शीघ्र ही घर लौटना था।

अग्राफेना कावीना को पुत्री के प्रति शकित होने का कारण भी था। ये सारी बाते बसन्त ऋतु के उन दिनो में शुरू हुई थी जब पेडो की डाल डाल मुस्कराती है और कन्याए, अपनी मनोकामनाओ की पूर्त्ति के लिए बर्च के पेडो के नीचे उबले हुए अडें रखती हैं और गाती हुई पेड की परिक्रमाए करती हैं।

एक दिन ओलेना अपनी मा के साथ गिरजे से निकलकर घर जा रही थी। दोना, अपने लम्बे लम्बे फर-कोटो के किनारे उठाये, पानी से भरे गड्ढो से होती हुई अपने रास्ते चली जा रही थी। अभी घर पास ही था कि उन्हें सहसा रुकना पडा। गली मे किसी किसान का घोडा माल से भरी एक गाडी को कीचड में से खीच ले जाने का असफल प्रयत्न कर रहा था। पेडो की छाल के फटे-पुराने जूते पहने हुए गाडीवान की आवाज़ घोडे को डाटते-चिल्लाते बैठ-सी गयी थी और

वह इर्द-गिर्द एकत्र लोगो को भयभीत निगाहो से देखता हुआ घोडे को कोडे से पीट रहा था। मक्खियो की खायी हुई घोडे की खाल के नीचे पसलिया जैसे तेज़ी मे चलती हुई दिखाई दे रही थीं।

"बदमाश के कान पर दो न एक घसा!"

"घोडे को कोडे लगाओ! यहा दया दिखाने से काम न चलेगा!"

"यह कोडा अगर इसी बदमाश पर पडे तभी ठीक रहेगा यह!" भीड मे मे किसी की आवाज़ सुनाई दी।

"हट जाओ, हट जाओ!" सहसा ओलेना को एक आवाज़ सुनाई दी और फर की टोपी तथा खुले बटनो वाला फर-कोट डाटे नीली आखो वाला एक लम्बा-तडगा आदमी कही मे आकर, उन उत्सुक व्यक्तियो को एक ओर हटाता और कीचड में मे गुज़रता हुआ गाडी की ओर बढने लगा। उसने इतना कसकर अपने कधो का ज़ोर लगाया

कि गाडी कुछ आगे खिसकी और घोडा, जैसे इस सहायता से उत्साहित होकर, गाडी को आसानी से सूखी जगह ले आया। गाडीवान खुश होकर, घोडे को टिटकारता हुआ, गाडी हाकता रहा और अपने सहायक को धन्यवाद देना भी भूल गया।

"निकीतिन।" ओलेना के पास ही एक आवाज सुनाई दी। इस आवाज़ से मित्रता का कोई बोध न हो रहा था।

ओलेना, उत्सुकता के साथ, इस व्यक्ति को बडे ध्यान से देखती रही जिसके बारे में लोग तरह तरह की बातें कर रहे थे। सहसा ओलेना की आखें उसकी चमचमाती हुई आखो से मिली और वह शर्म से गड गयी।

निकीतिन ने बूटो पर से कीचड झाडा और साश्चर्य अपनी काली काली भौंहे ऊपर उठाते हुए सीधा खडा हो गया। किन्तु तभी उसकी निगाह अग्राफेना काशीना पर पडी और उसने मुस्कराते हुए उसका अभिवादन किया।

"आपकी बेटी है? मैंने नही पहचाना। कितनी बडी हो गयी है!"

"हा, तुम लगाते हो दुनिया-भर का चक्कर, हम त्वेरवालों को कैसे पहचानोगे,!" बातो में विष घोलते हुए अग्राफेना ने जवाब दिया और उसके पास से होकर निकल गयी।

मा की बातो से बेटी की गरदन नीची हो गयी। वह घबडाकर पीछे देखने लगी और एक बार फिर अपनी ओर ताकती हुई उन दो चमचमाती और विस्मित आखो मे डूब गयी

मई के आरम्भ में ओलेना सोलह की हो चुकी थी।

"अरे अब तो लडकी पूरी जवान हो गयी है! पूरी जवान," लोग कहा करते।

ओलेना की कई सहेलियो के विवाह पहले ही हो चुके थे। वह कितने ही 'सहेली सम्मेलनो' में भाग ले चुकी थी, कितनी ही बार विवाह समारोहो में सम्मिलित होने के लिए गिरजो में गयी थी, जहा उसने लोहबान की सुगध के बीच आसू बहाती हुई अपनी सहेलियो को देखा था, बेशर्मी से भरी हुई लोगो की फुसफुसाहट सुनी थी और शराब के नशे में धुत्त बिचौलियो को देखा था। और इन सबने जैसे उसे भयभीत कर दिया था। वह बडी परवशता से उस घडी का इन्तजार करती रही जब उसके मा-बाप भी ऐसे ही उसका हाथ किसी दूसरे को पकडा देंगे और वह उसका घर बसायेगी। किन्तु जब कभी वह अपने भावी पति की बात सोचती तो उसका मन निराशा से भर जाता, सतप्त हो उठता। उसने जीवन से कोई बडी बडी आशाए नही लगा रखी थी।

उसके हृदय की गहराइयो में एक अस्पष्ट-सी आशा अगडाइया ले रही थी किन्तु वह न जानती थी कि यह आशा किस बात की है। उसके हृदय के एक कोने में विषाद की भी छाया थी किन्तु यह किस बात का विषाद था इसे भी वह न समझ सकती थी।

सहसा उसे अनुभव होने लगा था—प्यार की करवटो का। वह किसी के प्यार की प्रतीक्षा कर रही थी। और उसे यह प्यार मिलने की आशा थी इसी के लिए वह तडप रही थी। उसे लग रहा था जैसे अफनासी उसे प्यार करता है। और वह उस प्यार की ओर बढ रही थी, खिच रही थी। उसके हृदय में सिहरन, उल्लास, भय, विजय की अनुभूति और प्रथम प्रेम के अकुर पनप रहे थे।

अफनासी क्या सोचता है, ओलेना यह भी न जानती थी। उसने लोगो के सामने कुछेक बार ही अफनासी के साथ बाते की थी और उसे

कभी पता न चला कि अफनासी के जीवन में उसका स्थान क्या है। उसने अफनासी की निगाहें देखी और खुश होकर अपनी गदराती हुई जवानी के भार से दबकर धीरे से मुस्करायी भी थी।

ओलेना को अफनासी की भावी यात्रा का पता चल गया था। उसे यह भी मालूम था कि उसका पिता अफनासी को उधार माल दे रहा है। फलत उसे खुशी भी हुई और दुख भी।

खुशी इसलिए कि उसका हाथ किसी गरीब को नही पकडाया जायेगा, और दुख इसलिए कि बूढे और अनुभवी लोगो की बाते सुन सुनकर उसे यकीन हो गया था कि दूर देशो में जाकर व्यापार करना कितना खतरनाक है।

जैसे ही जैसे अफनासी की यात्रा का समय निकट आता जा रहा था वैसे ही वैसे ओलेना की व्यग्रता बढती जा रही थी। यात्रा के पहले की रात, उसने निराश होकर एक विलक्षण कदम उठाने का निश्चय किया।

वह अपने प्रेम की रक्षा करना चाहती थी। उसकी इस अदम्य आकाक्षा के आगे बाकी सभी बाते पिछड गयी – पिता के क्रोध का भय, पडोसियो की अपमानजनक बाते, दुष्टात्माओ का डर

ओलेना बाजार के चौक से होती हुई सेन्ट प्योत्र के गिरजे से होकर गुजरी और टेढी-मेढी तथा उल्टी-सीधी गलियो से होती हुई याम्स्काया बस्ती पहुच गयी।

4*

दूसरे मकानो से दूर पर स्थित बूढी जिगाल्का की लकडी की कुटिया ऐसी लग रही थी मानो उसे लोगों का डर लग रहा हो। वक्षो की शाखो के बाडे से घिरे हुए एक छोटे-से बाग़ में ओलेना ने चेरी के तथा अन्य झुरमुट और खिले हुए पीले पीले फूल देखे। उसे लगा जैसे बाग की फूल-पत्तियो तक से टोटकों की गन्ध आ रही थी—बाग तो चेटकी का था।

ओलेना ने कपडे से ढका हुआ एक नन्हा-सा दरवाजा खोला और देहली पार कर अन्दर चली गयी। जैसे ही उसने पहलेवाले छोटे-से कमरे में कदम रखा कि सूखी घास की गन्ध और आर्द्रता ने उसका स्वागत किया।

दीवार के पीछे से किसी के कदमों की आहट सुनाई दी। ओलेना जल्दी जल्दी सलीब का निशान बनाने लगी।

उसने सोचा था कि जिगाल्का एक दुष्ट, कुरूपी डायन होगी पर बात ऐसी न थी। जिगाल्का की मुखमुद्रा शान्त और मुस्कराहट लिये थी। उसने बेंच पर बैठी हुई बिल्ली को खदेडा और ओलेना को उसी बेंच पर बिठा दिया। फिर आखें सिकराते हुए उसके सामने खडी हो गयी। ऐसा लग रहा था जैसे वह कुछ याद करने की कोशिश कर रही हो।

कुटिया के कोनों में और छत की शहतीर पर से कुछ सूखी घास लटक रही थी और कमरे में उसकी गन्ध भरती जा रही थी जो ओलेना के दिमाग़ में घुसकर उसे बुढिया के जादू-टोने की याद दिला रही थी।

जिगाल्का के बारे में कहा जाता था कि वह मन्त्र फूककर किसी का बुरा कर सकती है, तरह तरह की जडी-बूटिया उबालकर वशीकरण की औषधि बनाती है और भविष्य बताती है। पादरी लोग इस बुढिया

के बारे में कहा करते थे कि वह कुधर्मी है लेकिन लडकिया तथा जवान औरते उसे तारणहार कहकर पुकारती थी।

ओलेना ने जल्दी जल्दी अपनी पोटरी खोली और उसमें से दस अडे, थोडा-सा मक्खन और तीन सिक्के निकाल लिये।

"बाई, मेरी मदद करो," इतना कहकर वह जैसे डरकर पीली पड गयी।

बूढी ने ओलेना को अपनी बात न पूरी करने दी। वह अपनी जगह पर ही, हिलती-डुलती हुई, कहने लगी—

"सुन्दरी, मैं जानती हू, सब कुछ जानती हू। तुम्हारे आने का मतलब मैं समझती हू।"

"तुमने कैसे जाना?" ओलेना फुसफुसाती हुई बोली।

बूढी हसती हुई ओलेना के पास आयी और उसके सिर पर पडा शाल ऊपर उठाती और उसके सिर के काले काले बालो को सहलाती हुई बोली—

"मैं सब कुछ जानती हू बेटी! तू मुझसे मत डर जिधर बाज उडता है उधर दिल दौडता है, जिधर नदी बहती है उधर नाव तिरती है तेरा वर्च है हरा-भरा पर चिन्ता ने उसको घेरा तेरी माला सदाबहार "

ओलेना लज्जा से लाल हो उठी। उसका दिल ज़ोरो से धडक रहा था। बूढी ने एक आह भरी और हाथ नीचे डाल दिया।

"मैं तुम्हे तावीज दूगी "

अगीठी के पीछे रखे हुए लकडी के एक डिब्बे में से जिगाल्का ने एक छोटी-सी प्रतिमा निकाली। प्रतिमा के एक ओर ईसा मसीह का चेहरा बना था और दूसरी ओर मरे हुए काले विषधर का।

बूढ़ी ने प्रतिमा पर कोई मंत्र फूंका, बायें कन्धे के ऊपर से तीन बार थूका और फिर प्रतिमा ओलेना को देकर कहने लगी—

"अब तुम मेरे साथ कहो पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम में "

ओलेना ने आज्ञाकारिणी की भांति दुहराया—

"मैं भगवान की दासी ओलेना, मसीह का निशान बनाती और आशीर्वाद प्राप्त करती हुई द्वार में होकर, घर में और फाटक में होकर, आंगन में जा रही हूं और खुले मैदान के सामने सिर नवाती हूं "

जिगाल्का सिर हिलाती आगे कह रही थी—

" तातारों के तीरों में, ऐ लौह पुरुष, उठ "

"कष्टों और बीमारियों, भाग जाओ," कांपती हुई आवाज़ में ओलेना ने दुहराया— "हाड़-मांस से, रक्त की नाड़ियों से, गुलाबी चेहरे से, चंचल आंखों और हाथों से, घने वनों के उस पार, भूरी काई के उस पार, ठंढे दलदलों के उस पार भाग जाओ, भाग जाओ "

"आमीन!" बूढ़ी ने अपनी बात पूरी की।

'आमीन!" ओलेना ने भी दुहराया।

ओलेना सफ़ेद उंगलियों में प्रतिमा पकड़े डरी डरी-सी बैठी रही। बूढ़ी की वाणी सुनकर ओलेना होश में आयी।

'बस, बस। इस प्रतिमा को छिपा देना कि उसे कोई देख न सके। और जिसे तुम प्यार करती हो उसे अपने ही हाथों से दे देना।"

"अपने ही हाथों से?" ओलेना मुंह बाती हुई जैसे होश में आयी, "और दूसरे नहीं दे सकते?"

"नहीं, मेरी बेटी, नहीं। तब तो इसका असर ही जाता रहेगा।"

ओलेना लज्जा से लाल पड़ गयी। निकीतिन ने उसे कभी भी

तो अपने प्यार की बात नही बतायी। वह यह प्रतिमा उसे देगी कैसे ? कितनी बेशर्मी की बात है।

"तुम डरो मत," जिगाल्का बडे प्यार से बोली, "सब ठीक हो जायेगा। वह तो तुम्हारा दीवाना हो रहा है "

"ओफ, मै नही जानती, मै नही जानती, बूढी मा," घबडाकर ओलेना उठ खडी हुई।

जिगाल्का उसे दरवाजे तक पहुचाने आयी और यह देखने के लिए बाहर झाकी कि आसपास कोई है तो नही। फिर धीरे से कहने लगी—

"चली जाओ, चली जाओ, लोग घर में तुम्हे ढूढ रहे होगे कैसी निडर हो!"

ओलेना को पहुचा आने के बाद बूढी भीतर लौट आयी और भेंट में मिली चीजें समेटने लगी। वह मुस्करायी। बूढी ने तुरन्त ही ताड लिया था कि यह लडकी काशीन की बेटी है। कहते है कि काशीन निकीतिन को माल-मता देकर समुद्र पार भेज रहा है। मै जानती हू यह प्रतिमा किसके लिए है! अच्छा ही है। आदमी आदमी को ढूढता है, वह जिन्दगी में सुख चाहता है। फिर उसकी मदद क्यो न की जाये? इसी लिए तो उसने ओलेना से कहा था कि वही इस प्रतिमा को अफनासी के हाथ में दे। दोनो एक दूसरे के मन की बात जान जायें

बिल्ली फिर कूदकर अपनी जगह बैठ गयी और मक्खन की ओर लपकी।

"क्या है!" बूढी बोली, "तू आदमी की मुसीबतो से फायदा उठाती है, जीभ चाटती है? धिक्कार है तुझे! यह रहा तेरा टुकडा "

घर पर पहले पहल ओलेना की निगाह बूढी आया पर पडी। वह आह-ऊह करती तथा लगडाती हुई उससे मिलने के लिए बढी।

उसका परेशान चेहरा देखकर ओलेना समझ गयी कि जरूर उसे घर में किसी मुसीबत का सामना करना पडेगा।

अस्तबल में लाल बालों वाला गाडीवान फेदोत्का आता हुआ दिखाई दिया। वह मालिक के मकान की ओर देख देखकर हस रहा था। उसे अनूत्का का जिज्ञासु चेहरा भी दीख पडा। ओलेना के पैर मन मन-भर के हो रहे थे। बेजान जैसी वह ड्योढी पर चढ गयी।

अग्राफेना उसका रास्ते में ही इन्तजार कर रही थी।

"कहा गयी थी?"

"गिरजे में, मा "

"गिरजे में? गिरजे में? कलमुही कही की!"

ये शब्द सुनते ही ओलेना के हाथ स्वत ऊपर उठ गये, मानो वह इन अपमानजनक शब्दो से अपनी रक्षा करने का प्रयत्न कर रही हो।

अग्राफेना ने उसे ग़लत समझा था।

"आ-हा!" वह चिल्लायी और बेटी के पास तक दौडकर उसकी चोटी पकडकर खींच ली, "मेरे दिल ने पहले ही कह दिया था, मै जानती थी, डाइन, तू यही करेगी!"

ओलेना, अग्राफेना को ढकेलती हुई वहा से हट गयी।

"क्या कह रही हो मा, क्या कह रही हो?!"

उसकी बडी बडी नीली आखो में आसू छलक आये।

"मैं तुम्हे मार डालूगी!" अग्राफेना चिल्लायी और दोनो हाथ सामने करके उसकी ओर बढी, "किसके साथ थी? बता! अफनासी के साथ?"

ओलेना हाथो से चेहरा ढकती हुई कुछ कदम पीछे हट गयी।

"पिता जी, पिता जी!" उसने पिता को खासते हुए सुना और उन्हें पुकारने लगी।

"कहा गयी थी?" ज़ीने के जगले से झुकते हुए काशीन चिल्लाया।

बूढी आया ओलेना की मदद को आ गयी और गलियारे में आकर चिल्लाने लगी—

"वसीली, व्यापारी आये है!"

अग्राफेना तुरन्त चुप हो गयी। काशीन ने ओलेना का कधा पकडा।

"इसे ताले में वद कर दो   चले जाओ यहा से!"

ओलेना सिसकती हुई सीढियो पर चढी और पलग पर गिरकर, तकिये में मुह ढापकर, रोने लगी। दरवाज़े पर ताला लगा दिया गया।

कामगारो को पैसा दे चुकने के वाद निकीतिन ने गर्म पानी से मुह धोया, साफ कपडे पहने और कमरे में चला गया। यहा कमरे की दीवाल पर एक धुधला-सा शीशा लगा था—कभी इस मकान में ऐसे वहुत-से शीशे लटकते थे किन्तु आज अकेला यही रह गया था। उसने तावे के कघे से वालो को सवारा, उनमें तेल लगाया। उसकी नौकरानी मार्या ने मेज पर खाना लगा दिया।

इन कुछ दिनो में निकीतिन आराम से बैठ तक न सका था। उसने नाव बनाने के लिए खुद ही लकडिया छाटी थी, सुवह से शाम तक किनारे पर खडे खडे काम की देखभाल की थी और लोगो को यह समझाया और यह दिखाया था कि गन्धाते हुए रालदार लट्ठो को कैसे काटना और ठीक करना चाहिए। उसने स्वय ही कुल्हाडी और आरे ले लेकर लोगो की सहायता की थी ताकि काम जल्दी समाप्त हो जाये।

उसने गोदाम में जाकर कपडे के थानो को देखा था और उनमें से ऐसे ऐसे मजवूत और हल्के कपडे छाटे थे कि उनसे वना पाल ठीक

में काम कर सके और थैले की तरह न लटका रहे। उसने गाव मे मरी हुई ढेरो गिलहरिया इकट्ठी की, मायाल्म, नमकीन मछलिया और दाले खरीदी और उन्हें बड़े बड़े गट्ठरों में बाँध लिया। उसने बन्दूको के लिए सीसा, गोला-बारूद और बन्दूको के लिए तोपो की भी व्यवस्था कर ली।

इन सब के लिए काफ़ी मेहनत की आवश्यकता थी। लेकिन सिर्फ़ आज सारा काम समाप्त हो जाने पर निकीतिन को बेहद थकान मालूम पड़ रही थी। उसकी पीठ दर्द कर रही थी और हथेलिया जल रही थी—इस वर्ष उसने पहली बार डाड चलाया था। वह मेज पर बैठा और बदगोमी के शोरबे से भरी हुई तश्तरी खींच ली। मेज पर एक पुराना मेज़पोश बिछा था।

"कपिलोव नहीं आया?"

"आया था, उसने कहा है कि उसने सारा काम तुम्हारे मन माफ़िक़ पूरा कर दिया है। और नप्योव व्यापारी भी आये थे।"

"अच्छा... उन्होंने इल्या के बारे में कुछ नहीं कहा?"

"इल्या सीधे वसीली के यहा जायेगा और वहा इन्तज़ार करेगा।"

निकीतिन ने गोश्त के कुछ टुकडे निगले, मेज़पोश से हाथ पोंछा और लपसी पर जुट पड़ा। लपसी गर्म थी जिससे उसके ओठ तक जल गये। वह उसे चम्मच से फूक फूककर खा रहा था।

"हम कल अपना सफ़र शुरू करेंगे। सफर लम्बा होगा। पर यह भगवान के हाथ है। मेरे हमसफ़र अगले बसन्त तक लौट आना चाहते हैं। यदि तातारो ने कोई अड़गा न लगाया तो आऊगा वरना शायद गर्मियों से पहले आना नामुमकिन है। बसन्त में तातारो की चादी रहती है न... अच्छा... यहा सब कुछ मैं तुम्हारे भरोसे छोड़ता हू। मैं तुम्हें पेत्रोव दिवस तक तीन कोपेक रोज़ देता रहूगा। फिर, तरकारियो का बाग़ है ही। तुम्हें कोई तकलीफ़ न होगी। ज्यादा कुछ, मेरे पास है ही

नही। भडारे में करीव डेढ मन आटा रख दिया है, लगभग एक मन दूसरे अनाज हैं और नमक भी। हसो को वाद में मार लेना जव वे काफी मोटे-ताजे हो जायेंगे। यदि फिर भी तुम्हे कुछ जरूरत पडे तो काशीन से ले लेना। जव मैं लौटूगा तो उसे वापस कर दूगा। लकडी काटनी हो तो इओना से कहो ... "

मार्था गाल पर कालिख भरे हाथ रखे कुर्सी पर वैठी वैठी चुपचाप सव कुछ सुनती रही।

निकीतिन ने उसपर एक उडती-सी नज़र डाली और चम्मच रखकर फिर कहने लगा—

"और अगर ... तो मिकोलिस्क गिरजे में मेरे लिए प्रार्थना करवा देना। लेकिन ज्यादा पैसा न खर्च करना। हा, एक रूवल जरूर दे देना। इसके लिए मैं तुम्हे अलग से दे जाऊगा।"

मार्था रोने लगी और अपने शाल के छोर से आसू पोछने लगी। "ओह, कैसी वेचैनी है ... और सपना भी कितना वुरा।"

"मार्था, रो मत।"

निकीतिन खडा हो गया और वडे स्नेह से अपना हाथ वूढी के कधे पर रख दिया।

"लगता है तुम सव के एक ही जैसे विचार हैं। अग्राफेना काशीना को भी ऐसे ही भ्रम हो रहे है।"

"मारो भी गोली उस अग्राफेना को! वह कोई औरत है, गुस्सैल कुतिया है, कुतिया!"

"तुमसे अग्राफेना से क्या लेना-देना! कुछ देर वाद मैं आकर तुम्हे अच्छा फर-कोट पहनाऊगा और मोती के हार भी। अग्राफेना का कलेजा फट जायेगा तुम्हे देखकर!"

"मुझसे हसी मत करो। मोती मुझपर नही फबेंगे। सफर पर जाते समय लौटने की बात करना ठीक नही!"

"तो चुप हो जाता हू   चलो सन्दूक देखें। शायद हम कुछ रखना ही भूल गये हो।"

परन्तु उन्हे सन्दूक की चीजो पर निगाह डालने का भी समय न मिला। दरवाजे पर दस्तक हुई और मिकेशिन का पीला-सा चेहरा दिखाई पडा।

निकीतिन ने स्वय ही उन लोगो को चुना जिन्हे उसके साथ यात्रा करनी थी। उसने अपनी ही तरह बदकिस्मत कपिलोव को, जिरहसाज इल्या कोजलोव को–जिसने पहली बार व्यापार में तकदीर आजमाने का निश्चय किया था, और युवक इवान लप्शोव को अपने साथ लिया। इवान के पिता ने निकीतिन से इवान को ले जाने का अनुरोध किया था। अगर काशीन की जिद न होती तो अफनासी मिकेशिन को कभी न ले जाता क्योंकि उसे उसकी लम्बी जबान पसन्द न थी।

इस समय भी मिकेशिन ने प्रवेश किया और बैठने के साथ ही कहने लगा–

"हे-हे-हे! मै आटा लेने काशीन के यहा गया था   वहा तो आफत मची हुई थी जैसे आग लगी हो, दौडते दौडते लोगो का दम फूल रहा था   "

"हा, तो?" निकीतिन ने अनमनेपन से पूछा। वह सोच रहा था कि यह व्यापारी भी कैसे बेवक्त आ गया है।

मिकेशिन मेज पर झुका और फुसफुसाने लगा–

"ओलेना सुबह से ही अकेली घर से निकल गयी है। सचमुच हे-हे! यह रही सबसे अच्छी लडकी! अभी तक उसका कोई पता नही चला। यह सब वसीली की लापरवाही का दोष है।"

"झूठ बोलते हो!" निकीतिन ने रुखाई से उसे टोका।

मिकेशिन ने उत्सुकता से निकीतिन की ओर देखा। वह जैसे उसकी फटकार भूल-सा गया था।

"भगवान की कसम और तुमसे तुमसे क्या मतलब? तुम उसके कौन हो—भाई या भतीजे?"

निकीतिन समझ गया कि उसके सामने बैठा हुआ व्यक्ति है कौन, और शान्ति से जवाब देने लगा—

"मालिक की लडकी पराई नही होती।"

मिकेशिन हसने लगा—

"आखिर सबध जोड ही लिया न वसीली तो आग बबूला ही हो उठा है!"

निकीतिन तो मिकेशिन का सिर ही तोड डालना चाहता था, बल्कि अगर उसका बस चलता तो जमीन में गाड देता कि उसके कानो में उसकी हसी तो न पडती।

"मीत्का, दूसरो की मुसीबतो पर हसा नही करते," ओठ भीचते हुए मार्या बोली, "शायद तुम्हे भी वैसी ही मुसीबते उठानी पडें।"

निकीतिन ने भौंहें घुमायी और कोट ले लिया—

"हमें ये सब बाते सुनने की फुरसत नही, चलो चले।"

"अभी तो बहुत समय है न?"

"नही, चलने का समय हो गया।"

काशीन का घर दूर न था। निकीतिन ने शान्तिपूर्वक रास्ता तय करने का प्रयत्न किया यद्यपि वह चाहता यह था कि दौडकर काशीन के घर पहुच जाये। ओलेना कहा चली गयी, वह शीघ्र से शीघ्र इस बात का पता लगाना चाहता था। उसने मिकेशिन की भी एक न सुनी। शायद ओलेना अपनी सहेली के यहा चली गयी हो, शायद दूर

के किसी गिरजे में चली गयी हो या शायद बाजार में उसका मन कहीं फीतों पर अटक गया हो।

रास्ते पर कपिलोव भी उनके साथ हो लिया।

"टें टें मत करो!" उसने मिकेशिन को चुप कराते हुए कहा।

काशीन के मकान में कदम रखते ही निकीतिन को अग्राफेना की चिल्लाहट सुनाई दी और ओलेना की डरी हुई आवाज़ भी। निकीतिन का मन शान्त हो गया—आख़िर वह घर पर ही तो है!

"तुमने झूठ कहा था न?" कपिलोव ने धीरे से मीत्का से कहा।

"और यह शोर-गुल नहीं सुनते?" मीत्का ने जैसे चिढ़कर जवाब दिया।

काशीन व्यापारियों से ड्योढ़ी पर ही आकर मिला और निकीतिन की ओर तिरछी नज़रों से घूरते हुए कहने लगा—

"आप लोग अन्दर आयें, दूसरे भी आते ही होंगे।"

व्यापारी कमरे में चले गये।

"नाव ठीक है न?" निकीतिन के बूटों की ओर देखते हुए काशीन ने पूछा, "तुमने उसकी जाच तो कर ली?"

निकीतिन को लगा जैसे वसीली उससे नाराज़ है।

उसने कधे झुलाते हुए कहा—

"कर ली! अच्छी चलती है

"कहा तक ले गये थे उसे?'

"नदी की प्रवाह की उल्टी दिशा में हरे तट तक।"

"और फिर घर वापस आ गये?" काशीन ने निगाहें ऊपर उठायी, "बड़ी जल्दी और कामगार कहा हैं?"

"उन्हें मजदूरी दे दी गयी और वे चले गये।"

काशीन अपना निचला ओंठ बाहर निकाले और दाढ़ी हिलाते

हुए चुप बैठा रहा। नही, निकीतिन झूठ नही बोलता। काशीन कामगारों को जानता था। वह एक एक शब्द की जाच करा सकता था और फिर मिकेशिन भी तो कहता था कि मैने नाव देखी है और मै निकीतिन के साथ ही साथ आया हू। नही, निकीतिन का कोई दोष नही। फिर यह पगली लडकी गयी कहा थी? शायद गिरजे में गयी हो और इस कुतिया अग्राफेना ने ही बिना वजह आसमान सिर पर उठा लिया था।

काशीन ने व्यापारियो पर एक पैनी-सी दृष्टि डाली। उसने मिकेगिन की निगाहे देखते ही जान लिया था कि उसके घर की घटना सभी जानते हैं। आखिर वे घर में होनेवाला शोर-गुल बाहर से भी तो सुन सकते थे। हे भगवान! बूढे व्यापारी को अपनी बेवकूफ पत्नी पर गुस्सा आ रहा था—चुडैल ने तिल का ताड बना दिया।

"अग्राफेना!" वह चिल्लाया, "शहद लाओ! तुम्हारा दिमाग तो नही खराब हो गया?"

वसीली काशीन बडा होशियार और दृढ निश्चयी था। घर के सब लोग चुप रहेगे और ये व्यापारी कल चले जायेंगे इसलिए अधिक से अधिक वे आज-भर चें चें कर सकते हैं, तो आज मैं उन्हें जाने ही न दूगा, यही रखूगा, उन्हे खब पिलाऊगा, इतनी ज्यादा कि अपना नाम-तक न ले सकेगे वे। लेकिन इस समय चुप रहना ही ठीक होगा जैसे कि घर में कुछ हुआ ही न हो। और शाम को ओलेना इन्ही मेहमानो की खातिर करेगी। वह भाग तो जायेगी नही। उसने कटोरो मे खुद ही शहद उडेला।

"जाने से पहले एक एक कटोरा हो जाये "

शीघ्र ही लप्शोव पिता-पुत्र और जिरहसाज कोजलोव भी आ गये।

"समय हो गया।" निकीतिन बोला, "शहद कोई भाग तो जायेगा नही।"

"अग्राफेना, टोपी लाओ।" काशीन चिल्लाया।

शाम होने को थी। आखिरी गाडिया बाजार के चौको से जा चुकी थी और झक्की तथा पगु भी वहा से चले गये थे। केवल गौरैया और कौवे ही सूखी घास और गोबर के ढेरो पर उड उडकर बिखरा हुआ अनाज चुग रहे थे। दूकानें बन्द हो चुकी थी। वोल्गा पर, जहाजो के पास सिर्फ चौकीदार खडे थे। सभी घर पहुचने की जल्दी में थे। किले के द्वारो और मीनारो में पहरेदार बदले जा चुके थे।

दिन समाप्त होते होते ठढक पडने लगी थी। धमिल पडते हुए आकाश में बादल मडरा रहे थे और शीत एव उदासीन सन्ध्या धीरे धीरे जमीन पर उतर रही थी। चहारदीवारियो के पास लगी हुई बेंत की झाडिया और एकाकी खडे हुए बर्च-वृक्ष सायकालीन बयार के झोको में सरसरा रहे थे। यात्रा पर जानेवाले व्यापारी काशीन के मकान में लम्बी-सी मेज़ के इर्द-गिर्द बैठे हुए मगलमय यात्रा और कार्यों की सफलता की कामना में जाम पर जाम खाली कर रहे थे।

काशीन खुश था। सभी कुछ उसकी इच्छानुसार हुआ था, ठीक वैसा ही जैसा उसने सोच रखा था। उसने दफ्तर में जाकर परिचित मुशी को आख मारी, थैली का मुह खोला और दूसरे ही दिन सनद तैयार हो गयी। मुशी को यह काम कर देने में कोई समय न लगा।

क्रेमलिन से लौटकर उसने सभी यात्रियो को अपने यहा बुलाया। केवल निकीतिन ही मा की कब्र पर गया था। निकीतिन ऐसा आदमी नहीं जो दूसरो की उन बातो को ले उडे जिनसे किसी की नाक नीची होती हो। फिर वह भी शीघ्र ही आ गया।

काशीन ने दिल खोलकर मेहमानो की खातिर की। उनके सामने हसा, उनके साथ हसी-मजाक़ किया, बूढे लप्शोव के कन्धे थपथपाये।

अफनामी ने थोडा-सा खाया-पिया। प्रथानुसार, पहले अग्राफेना और ओलेना मेहमानो के सामने कटोरे लायी और अफनासी के आने के पहले पहले ही वहा से चली गयी। निकीतिन को यह दुख हो रहा था कि जाने से पहले वह ओलेना से न मिल सकेगा। उसने ओलेना के बारे में जो खबरे उडती हुई सुनी थी उनसे उसे बडा सताप हो रहा था। हो सकता है उसे कोई ऐसा मिल गया हो जिसे वह दिल दे बैठी हो? आखिर उसे ऐसा आदमी क्यो न मिले? और मेरा ओलेना पर हक़ ही क्या? मुझे देखकर मुस्करायी थी और लज्जा से लाल भी पड गयी थी? और कौन जाने यह उसका भ्रम ही रहा हो? आखिर मुझमें ऐसा है ही क्या जिससे कोई लडकी मेरी ओर आकृष्ट हो? मैं जवान नही, इवान लप्शोव की तरह, मालदार नही . काशीन ने उसे आवाज़ दी—

"अफनासी, तुम पीते क्यो नही? यह इतालवी शराब है!"

निकीतिन ने शराब का कटोरा ओठो से लगाया। बूढा लप्शोव आकर उसके पास बैठ गया। वह निकीतिन के पिता का पुराना दोस्त था।

"सुनो अफ़नासी," लप्योव निकीतिन के पास झुककर कहने लगा—"कभी तुम मेरे साथ जाया करते थे लेकिन आज मैं अपने बेटे को तुम्हारे सुपुर्द कर रहा हूं। इसका ध्यान रखना "

"चिन्ता न करें। मुझसे जो भी हो सकेगा करूंगा।"

"इसकी मां तो अपने बेटे के लिए आठ आठ आंसू रोती है। शायद तुम्हें याद हो, तुम्हारी मां भी कैसा रोती थी? औरतों का दिल कच्चा होता ही है। मेरा बेटा सचमुच अच्छा है, है न?"

"बड़ा अच्छा है!" इवान की नीली आंखों और भूरे-से बालों की ओर देखता हुआ निकीतिन मुस्करा दिया।

बूढ़ा लप्योव अपनी नाक मलता और दाढ़ी हिलाता हुआ बोल उठा—

"अच्छा तो अच्छा, लेकिन है ज़रा-सा बेवकूफ़। तुम ज़रा इवान का खास ध्यान रखना, व्यापार में इसकी मदद कर दिया करना। वह कुछ विचित्र-सा लड़का है।"

निकीतिन पूछना ही चाहता था कि लप्योव अपने बेटे को बेवकूफ़ क्यों समझता है कि मेज़ के एक सिरे पर कुछ शोर-गुल सुनाई दिया। बूढ़ा लप्योव तुरन्त ही उस ओर झुक गया।

सेरेगा कपिलोव लम्बा कोट डाटे कटोरों के ऊपर से निकीतिन पर झुका और अपना खुरदरा हाथ फैलाते हुए कहने लगा—

"यह रहा मेरा हाथ!" वह चिल्लाया, "यही देता है मुझे खाना! हां, यही! मैं तुम्हारी तरह दूसरे पर सवारी नहीं गांठता, किसी को धोखा नहीं देना। और न ही सामन्तों के तलवे चाटता हूं!"

पास बैठे हुए लोग कपिलोव को शान्त करने लगे और वह उनकी उपेक्षा करता हुआ भयभीत निकीतिन को खरी-खोटी सुनाता रहा—

"देखो, मुझे राजा-सामन्तो का डर न दिखाना। हम उनकी नस नस पहचानते हैं। हमने ऐसे बहुत-से देखे है।"

यह झगडा क्यो शुरू हुआ निकीतिन न जानता था। हा, वह यह जानता था कि अगर कपिलोव सामन्तो को सुनाने पर आ ही गया है तो उसे चुप कराना आसान नही है। पिछले जाडे में जब कपिलोव अपने सामान के साथ मास्को से जाता था तो सामन्त कोलोक ने अपने आदमियो की मदद से उसपर हमला बोल दिया था और उसका सारा माल-असबाब लूट लेने के बाद उसे मारा भी था। यही नही कोलोक ने उसे यह धमकी भी दी थी—"अगर तुम किसी से इसकी शिकायत करोगे तो नतीजा और खराब होगा।" कपिलोव एक एक पैसे से खाली हो गया और अपनी पत्नी और तीन छोटे बच्चो के साथ गरीबी में गुजर-बसर करने लगा। चालीस वर्ष की उम्र में उसे सब कुछ नये सिरे से करना पडा।

कपिलोव का मुह तमतमा रहा था—

"तुम मास्को को गालिया दे रहे हो? लेकिन तुमने मास्को देखा है? तुम वहा गये हो? वहा जार इवान की कठोर व्यवस्था है। वहा के लोग एक दूसरे का गला नही काटते, एक दूसरे को लूटते नही। आज वहा का बाजार हमारा जैसा नही रहा। विदेशी व्यापारी हमारे यहा से होते हुए मास्को जाते हैं। वह ऐसी जगह है जहा सारी दुनिया के लोग इकट्ठा होते हैं। लेकिन हम पर कौन ध्यान देता है? समय के साथ साथ मास्को की सेनाए वोल्गा के निचले क्षेत्र पर कब्जा करेंगी तब हम लोगो को आटे-दाल का भाव मालूम होगा। क्या नोवगोरद में अपनी टाग अडाओगे? नागरिको को तो अपनी जेब प्यारी है। वे हमारे कारण मास्को से झगडा मोल

लेने को तैयार नहीं। क्या तुम लिथुआनिया का, कुधर्मियों का मुंह जो होगे? ईसाइयों के साथ विश्वासघात करोगे?"

"हमारे राजा को फटकारने..." मिकेशिन ने कहना ही शुरू किया।

"आ!" कपिलोव गरज पड़ा, "भौंको, दौड़ो और उनके कानों में फूंक आओ! लेकिन मैं सच कहता हूं। इन सामन्तों और उनकी लड़ाइयों के कारण हमारी तो ज़िन्दगी दूभर हो गयी है। यहां हम सब रूसी हैं और एक ही भगवान की प्रार्थना करते हैं। लेकिन यहां से कुछ ही दूर कुकुरमुत्ते तोड़ने तो जाओ कि दूसरों की ज़मीन पर पहुंच जाओगे—फिर चुंगी अदा करते करते नानी याद आ जायेगी। नोवगोरद में पैसा ऐंठेंगे फिर प्स्कोव में, ल्यावाज़ में और मास्को में भी। इतना ही नहीं तातार भी..."

"लेकिन तुम चाहते क्या हो?" चापलूसी-सी करते हुए मिकेशिन ने पूछा।

बातचीत गरमागरमी पर आ गयी थी। कपिलोव की धुंधली आंखों में घृणा की झलक दिखाई पड़ी। वह मिकेशिन को घूर रहा था। गुस्से के कारण उसके लिए सांस लेना तक दूभर हो रहा था। हर क्षण वह जैसे बेक़ाबू होता जा रहा था।

मिकेशिन उठकर खड़ा हो गया। उसने बलूत के कटोरे से मेज़ थपथपायी और शहद नीचे छलक पड़ा।

"सेरेगा, बैठ जाओ! सुनो, मुझे कुछ कहना है। मिकेशिन, तुमने उसे छेड़ ही क्यों दिया? चुप हो जाओ! जब तुम यहीं लड़-झगड़ रहे हो तो सराय तक कैसे पहुंचोगे? तुमने मुझे सरदार माना है—बस, अब चुप हो जाओ! मैं किसी तरह का लड़ाई-झगड़ा नहीं चाहता। नाव में यह फ़ैसला करने का समय नहीं कि कौन ठीक

कहता है कौन गलत। या तो अपने झगडे वन्द करो या फिर मैं दोनो में से एक को ही ले चलूगा। वस मुझे यही कहना है।"

निकीतिन पूरे विश्वास के साथ अधिकार के स्वर में वोल रहा था। कपिलोव किसी पर भी निगाह न टिकाते हुए वेंच पर वैठ गया। मिकेशिन कुछ नाराजगी के साथ कहने लगा—

"ये वाते मैंने तो नही शुरू की थी "

"अच्छा अब आम कटोरा उठाओ!" निकीतिन ने आज्ञा दी, "हम अपनी मगलमय यात्रा की कामना में पियेंगे!"

एक एक करके सवने आम कटोरे से शहद पी ली। दोनो प्रतिद्वन्द्वियो ने भी, अनिच्छा से, उसे ओठो से लगाया।

फिर वैठते हुए निकीतिन कहने लगा—

"एक वात में सेरेगा विल्कुल ठीक है। व्यापारियो को जरूरत होती है व्यापार के खुले रास्तो की। अगर हमें ऐसे रास्ते मिल जायें तो हम दिखा देंगे कि हम रूसी क्या कर सकते है! हम अपना व्यापार वढा सकते है और सभी के साथ तिजारत शुरू कर सकते है। हमारा माल लो और अपना हमें दो—दोस्तो की तरह।"

वूढा लप्शोव निकीतिन के कन्धे पकडकर उससे लिपट गया—

"मालिक!"

मिकेशिन चुप हो गया, किन्तु सेरेगा कपिलोव अफनासी की ओर देखते हुए उदास-सी हसी हस दिया।

"लेकिन ऐसे रास्ते हमें मिलेगे कहा और कैसे?"

"कभी मिल ही जायेंगे," विश्वास से निकीतिन ने उत्तर दिया, "तातारो और हमारे दूसरे दुश्मनो के पख हम तोड डालेगे। फिर तुम जहा चाहो तिजारत कर सकते हो!"

वह हसा और आगे कहने लगा—

"भारत भी जा सकते हो।"

लप्शोव का पिता कहकहे लगाकर हंसने लगा। काशीन मुस्करा दिया और कपिलोव के ओंठों पर भी हल्की-सी मुस्कान बिखर गयी।

"कहां?" इवान लप्शोव ने पूछा।

निकीतिन ने जाम चांदी की सुराही के नीचे लगाते हुए प्रसन्नता से जवाब दिया—

"पता है धरती है कहां? बड़े महासागर के बीच तैर रही है। और भारत देश पृथ्वी के बिल्कुल छोर पर है।"

इवान जैसे सकपका गया और शंकित तिरछी नज़रों से लाल लाल, मुस्कराते हुए चेहरों की ओर देखने लगा। फिर उसकी भौंहों में बल पड़े, त्योंरियां चढ़ीं और उसने जैसे अशिष्टता से सिर झुका लिया।

"अफ़नासी, इसे तुम्हारा यक़ीन नहीं," सिकेरिन हंसने लगा।

"क्या सच?" शहद की चुस्की लेते हुए निकीतिन गम्भीर हो गया, "तुम मुझपर नाराज़ मत हो, इवान। मैं हंसी नहीं करता। लोग कहते हैं सचमुच ऐसी धरती है। ख़ैर, कल तो हम सफर कर ही रहे हैं। जानते हो यह बात कोज़मा इन्दीकोप्लोव ने लिखी है अपनी किताब में। मैं तुम्हें दिखा दूंगा। वह बड़ा योग्य आदमी है। उसने भारत के बारे में बड़ी बड़ी अद्भुत बातें कही हैं।"

"फिर तुम सराय की तरफ़ क्यों जा रहे हो?" सिकेरिन बोला, "सीधे भारत ही क्यों नहीं चले जाते? हो-हो! अगर पतलून नुचाकर ही लौटना है तो कहीं से भी लौटो, एक ही बात है।"

निकीतिन ने उसकी ओर पैनी दृष्टि से देखा। सिकेरिन ने जिस चीज़ का संकेत किया था वह निशाने पर बैठ चुका था। पर

निकीतिन ने मिकेशिन को कुछ भी न कहा वल्कि सिर्फ हाथ हिलाकर कह दिया—

"अगर ऐसी नौबत आयी तो मैं वही रह जाऊगा। भारत की गर्मी में पतलून की जरूरत ही न पडेगी!"

उसकी वात सुनकर सभी व्यापारी खिलखिलाकर हस पडे। सवसे तेज कहकहा लगाया था जिरहसाज इल्या ने—

"खूव कहा! खूव कहा!"

इल्या कोजलोव व्यापारियो की सगत में रहने का आदी न था। और यद्यपि उसे अपने वच्चे और पत्नी के साथ अन्तिम वार भोजन करने की जल्दी थी, फिर भी यहा की मजेदार वातें सुनकर वह वही रह गया। वह अफनासी निकीतिन को चाहता था। इल्या ने अपना चौडा सीना मेज से सटाते हुए वडे विश्वास से व्यापारी की ओर देखा।

धीरे धीरे शोर-गुल वन्द हुआ और वातचीत कई विषयो में वट गयी। आखिर इवान लप्शोव को गाने के लिए मना ही लिया गया।

इवान उठा और एक क्षण तक हिचकिचाने के वाद उसने धीरे धीरे, किन्तु साफ आवाज में, गाना शुरु किया—

नीले सागर की लहरो पर
सफेद पालो को फडकाता
इठलाता, हिलता, डुलता
दौड रहा व्यापारी वेडा

वातावरण में शान्ति छा गयी। जिरहसाज गाल पर हाथ रखे वठा था, मिकेशिन मेजपोश पर के शराव के धव्वे पर आखें गडाये

था और कपिलोव की नज़रो में उदासी झलक रही थी। काशीन हाथो में सिर पकडे बैठा था और भगवान जाने उस शोकगीत को सुनते हुए क्या सोच रहा था। इस गीत में उन युवक व्यापारियो के बारे में कहा गया था जो सुख की तलाश में घर से निकले थे किन्तु जिन्हें गले लगाना पडा था मौत को।

निकीतिन अकेला रहना चाहता था। वह चुपचाप उठा और दरवाज़े की ओर चल दिया। अधेरा हो चुका था। घरो के ऊपर चाद मन्द मन्द चादनी बिखेर रहा था। ऐसा लगता था कि उसका अग्राह्य-सा प्रकाश वस्तुओ में से होकर निकल जाता है और उनकी रूप-रेखाए, किसी रहस्यपूर्ण स्वप्न की भाति, शान्त नीलिमा में बिखर जाती हैं। बेंत के पेडो में सरसराहट सुनाई देती थी और फिर नीरवता छा जाती थी। निचाई पर कोई रात्रिचर पछी उडा और आखो से ओझल हो गया।

निकीतिन बडी देर तक खडा खडा रात्रि की नीरवता की ओर कान लगाये रहा।

उसे तरह तरह की चिन्ताए सता रही थी। दूर-दराज़ रास्ता! वह अपनी मजिल तक पहुच भी सकेगा? एक बार फिर वह अपने वतन, उज्ज्वल वोल्गा और त्वेर के चहचहाते हुए वनो को छोड रहा है। और यदि भाग्य उसे दूरस्थ प्रदेशो मे लौटाकर न लाया तो किसी को भी उसकी याद न आयेगी, कोई भी उसके लिए आसू न बहायेगा। सचमुच, धरती पर तनहा रहना कितना मुश्किल है। और शायद ओलेना के बारे में भी सोचना-विचारना व्यर्थ है सहसा दरवाज़े पर कुछ आहट हुई, पर उसने घूमकर न देखा। उसके मस्तिष्क में चित्त को उद्विग्न करनेवाले वैसे ही विचार उठते रहे। शायद कोई व्यापारी होगा

जब काशीन सनद के लिए गया था, तभी अग्राफेना कमरे में अपनी बेटी के पास आयी—

"उठ, उठ, सारे शहर में तो हमारा ढिढोरा पिटा चुकी और अब पें पें कर रही है! उठ, उठ, तेरे बाप ने हुक्म दिया है कि कपडे पहनकर तैयार हो जा!"

ओलेना ने प्रतिमा चुपके से तकिये के नीचे छिपायी, धीरे धीरे पलग से उठी और स्वय ही रेशमी कम्बल ठीक करने लगी।

मा ने उसे बनाने-सवारने में मदद दी। नीले रेशम की कमीज, मोतियो से कढा हुआ लाल कुर्ता और लाल चमडे के नीली डिज़ाइनवाले बूट।

ओलेना ने अपने ओठ काटे अपनी प्रसन्नता को छिपाते हुए, अग्राफेना के सिर के ऊपर देखा। उसे डर था कि अगर उसे ताले में बन्द कर दिया गया तो वह अफनासी से मिल भी न सकेगी। उसे मुक्त कर दिया गया है—लगता है कोई उसके बारे में कुछ भी न भाप सका।

ओलेना जानती थी—चुपके से अकेले घर से निकल जाना किसी भी लडकी के लिए कलक का टीका है, बदनामी की बात है। लेकिन इस समय उसे इसका भी डर न था। वह कुछ और ही सोच रही थी—प्रतिमा निकीतिन को कैसे दी जाये।

उसने चमचमाते हुए पुखराजो वाले अपने प्रिय कर्णफूल कानो में और सुन्दर-सी नेकलेस गले में पहनी और गालो में लाली लगायी। बेटी की इस सुन्दरता ने अग्राफेना को और भी परेशान कर रखा था।

"बेशर्म कही की! मा-बाप तो उसके लिए जान दें और वह मटरगश्ती करती रहे, नाक कटाती फिरे "

"मा!" ओलेना ने चौंकते हुए कहा—"अगर तुम यों डाँटो-फटकारोगी तो मैं मेहमानों के पास न जाऊंगी!"

"नहीं जाओगी! कैसे नहीं जाओगी?" भयभीत-सी अग्राफेना चिनचिना उठी, "बड़ी लाट साहब हो गयी हो न! ठहरो तो!"

किन्तु उसने डाट-फटकार बन्द कर दी और ओलेना को बूढ़ी आया के हवाले करके वहां से चल दी।

पिता के कमरे में आते ही ओलेना को पता चल गया कि मेहमानों में निकीतिन है ही नहीं। सिर झुकाये हुए उसने मेहमानों की खातिर की। उसने न तो मिकेशिन की ज़लील मुस्कराहट ही देखी और न इवान लप्शोव की प्रसन्नता ही, जो उसे मुंह बाये ताक रहा था। अन्ततः वह उदासचित्त वहां से चली गयी—आखिर किसके लिए उसने यह साज-सिंगार किया था, गालों पर लाली लगायी थी? फिर उसने सुना—अफनासी आ गया। उसकी समझ ही में न आ रहा था कि वह क्या करे। कैसे उसे एक क्षण की मुहलत मिले और वह अफनासी से भेंट करे? आखिर उसने तरकीब निकाल ही ली। जो होना हो, हो! उसने प्रतिमा अपनी छाती के पास छिपायी, धीरे धीरे नीचे उतरी और छिपकर गलियारे में खड़ी हो गयी। अगर यहां से होकर निकीतिन निकला तो हाथ फैलाकर प्रतिमा उसे दे दूंगी वह देर तक इन्तज़ार करती रही और हर क्षण डरती जा रही थी कि कहीं उसकी मा न पुकार ले, क्षण क्षण पर बैठक-खाने में जानेवाले घर के लोग न देख लें। ओलेना के पैर सुन्न हो रहे थे और वह इन्तजार करते करते इतनी थक गयी थी कि जब सचमुच वह उसके पास से होकर निकला तो उसका दिमाग कट-सा गया और वह प्रतिमा निकालकर उसके हाथों में न दे सकी।

उसका सिर घूमने लगा। उसके हाथ उसके वश में न रहे और पैर जहा के तहा जड हो गये। उसने आखें बन्द की, मन ही मन भगवान की प्रार्थना की और फिर मुश्किल से कदम बढाती हुई ड्योढी पर आ गयी।

अफनासी उसकी ओर पीठ किये, सिर झुकाये और खम्भे के चारो ओर हाथ डाले खडा था।

ओलेना ने उसे देखा और जैसे उसके पैरो के नीचे की धरती खिसक गयी। अनिच्छित ही उसका जी रोने रोने को हुआ। उसमें अपनी अनुभूतियो तक को वश में रखने की शक्ति बाकी न रही। उसके दिमाग में एक ही विचार कौंध गया—"मैं क्या कर रही हू? मैं क्या कर रही हू?" उसे अपने सामने सिवा निकीतिन की चौडी-सी पीठ के और कुछ भी दिखाई न दे रहा था। वह उमी से लिपट गयी।

ढकेले जाने का डर, कातर आशा, लज्जा, अपने मुक्त हृदय पर तरस और प्रेमी से मिलने की उत्कट आकाक्षा—इन सभी अनुभूतियो ने ओलेना को झकझोरकर रख दिया। उसने सिर उठाया और जैसे लकडी की तरह जड हो गयी।

उमी समय उसके कानो में कही से आती हुई एक उत्तेजित-सी आवाज पडी—

"ओलेना!"

उसे लगा जैसे कोई किसी और को पुकार रहा है। पर यही आवाज एक बार फिर सुनाई दी और दो मजबूत हाथो ने उसे आलिगन में ले लिया। उसे लगा कि धरती घूम रही है पर वे मजबूत हाथ उसे पकडे हुए है जिससे वह गिरने से बच रही हो।

उसने अपनी व्यथित आखें ऊपर उठा दी। अपने ऊपर अफनासी का झुका हुआ प्रसन्न चेहरा देखकर जैसे उसकी जान में जान आयी।

ओलेना के ओंठ स्वय ही अफ़्नासी के ओठों से मिले और उसके हाथों ने अफ़नासी का सिर थाम लिया.

"निकीतिन, अरे कहां हो तुम?" खुली हुई खिड़की में से उसे आवाज़ सुनाई दी।

ओलेना ने अफ्नासी के हाथों से अपने को मुक्त कर लिया—

"जाओ, तुम्हें बुला रहे हैं. "

अफ्नासी ने उसे फिर अपनी बाहों में भर लिया। उसकी आवाज़ भारी हो रही थी—

"पुकारने भी दो उन्हें मुझे इसकी बिल्कुल आशा न थी, मैंने कभी सोचा तक न था। हे भगवान! मुझे अपनी ओर आंख भरकर देख तो लेने दो! मैं तो समझता था तुम मुझे नहीं चाहती थी खैर, जब लौटूंगा तो सब ठीक हो जायेगा—हमारे रास्ते में कोई बाधाएं न रहेंगी मेरी प्यारी, मेरी जान, मेरी दुलारी, मेरा इन्तज़ार करोगी न? मैं बहुत समय के लिए "

"तुम्हारा इन्तज़ार करूंगी!"

और वह एक बार फिर अफनासी से लिपटकर चुप हो गयी। फिर आलिंगन से हटती हुई बोल उठी—

"जाओ याद रखना। और यह लो "

निकीतिन को लगा कि उसके हाथों में कोई सख्त-सी चीज़ आ गयी। उसने उसे देखा—यह थी तावीज़।

अब उसकी समझ में आया—ओलेना घर से क्यों निकली थी।

अफ़नासी ओलेना की ओर बढ़ा लेकिन वह दरवाज़े के पीछे चली गयी और सीढ़ियों पर से आती हुई उसके पैरों की आहट सुनाई देने लगी। खिड़की में से फिर किसी की आवाज़ उसके कानों में पड़ी—

"अरे कहां हो तुम?"

निकीतिन अपना हाथ माथे तक ले गया और प्रतिमा को छिपा लिया। और, जैसे बेहोशी में कमरे में चला गया।

"ज्यादा पी गये थे क्या?" कपिलोव ने धीरे से उससे पूछा।

अफनासी ने अपनी धूमिल और शून्य-सी आखें ऊपर उठा दी और हस दिया।

कपिलोव ने सिर हिला दिया।

यद्यपि लोगो को बडे तडके ही घाट पर पहुचना था फिर भी वे रात में देर से ही काशीन के घर से वाहर निकले। घर पहुचकर निकीतिन सीधे पलग पर लेट गया। उसने सिवा बूटो के और कुछ भी न उतारा था।

"तुम्हे कब जगाऊ?" मार्या ने पूछा।

"जब दूसरी बार मुर्गा बोले!" उसने उत्तर दिया, "मेरा ख्याल है आज मुझे नीद ही न आयेगी "

वह आख बन्द किये किये देर तक पडा पडा मुस्कराता रहा लेकिन वह इतना थक गया था कि सुबह होने के पहले पहले उसकी खूब आख लगी।

ओलेना ने आखें बिल्कुल नही बन्द की—कभी हसती, कभी तकिये में मुह ढापकर रोने लगती। यह सब देखकर उसकी बूढी आया तो परेशान ही हो उठी थी।

सुबह को जब उसका पिता घर से चला गया तो कमीज ही पहने पहने वह खिडकी तक आयी, उसे खोलकर मुस्करायी और सामने वोल्गा पर मुडती हुई नक्काशीदार नासिकावाली नाव को देखकर उसकी दिशा में सलीब का निशान बनाया।

दूसरा अध्याय

"धुआ!"

पतवार पर बैठा हुआ कपिलोव नाव की दाहिनी ओर झुका ताकि वह सब कुछ साफ साफ़ देख सके।

उसकी आवाज़ सुनकर निकीतिन ने सिर ऊपर उठाया और उसके विचारों की शृखला टूट गयी। इवान लप्शोव को कोई खबर न हुई—वह नाव के तल में खुर्राटे ले रहा था। ज़िरहसाज़ नाव की नासिका पर आराम से बैठा था और मुह पाल की ओर किये औरतो जैसी महीन आवाज़ में गाना गा रहा था। जो लोग इल्या की भारी और गम्भीर आवाज़ से परिचित थे वे विशेप रूप से उसकी ज़नानी आवाज़ सुनकर खिलखिला पडते थे। सहसा उसने गाना बन्द कर दिया।

मिकेशिन सन्दूक खखोल रहा था। वह सिर हिला हिलाकर पूछने लगा—

"कहा? कहा?"

उन्हें नाव पर यात्रा करते करते कोई तीन घटे हो चुके थे। उनकी निगाहो के सामने से किले की दीवाले और स्पास्क गिरजे के कलापूर्ण गुम्बद कब के ओझल हो चुके थे। नाव के दोनो ओर नदी के वीरान किनारे तेज़ी से भाग रहे थे। गाव तो बस यदा-कदा ही दीखते थे। कही नदी के पानी से लगा लगा कोई वन शुरू हो जाता और कही मीलो तक फैला हुआ कोई चरागाह धुध में से दिखाई पड जाता। नदी के निकट पानी पर झुकी हुई बेंत की झाडियो की पत्तिया वोल्गा पर छोटी छोटी नावो की तरह मडराती और छिछले पानी में चिकने और चमकीले पत्थर दिखाई पड जाते।

जब लोग बोरो और बक्सो के बीच नाव में बैठे और नाव खुली, तब निकीतिन के हृदय में यात्रा की परिचित एव उत्तेजक अनुभूतिया हिलोरे लेने लगी थी—दूर जाने का शोक और आशाओ से उत्पन्न होनेवाली खुशी, कभी किसी की याद में होनेवाला दुख, कभी सुख, बीते हुए दिनो की स्मृतिया, भविष्य के स्वप्न, और अज्ञात को जानने की अटूट लगन! उसे लगा जैसे दूरस्थ वनो की रूप-रेखा और नीले क्षितिज के उस पार उसकी वह प्रसन्नता खेलती है जिसे उसे अभी भी प्राप्त करना है। उसे लगा कि वह बेंतो की झाडिया और बडे बडे जल-क्षेत्र ही पीछे नही छोड आया अपितु अपनी सारी असफलताए, सारे दुख भी छोड आया है, और अब उसके सामने है एक अनन्त, उल्लासपूर्ण और आह्लादभरा जीवन। बस, हाथ बढाने-भर की देर है कि वह उसका होगा।

उसे विदा करने के लिए आये हुए लोगो की सख्या अधिक न थी—काशीन, जो हर समय फर के बक्स को सावधानी से धरने-उठाने में ही परेशान था कि कही वह भीग न जाये, कपिलोव और इल्या कोज़लोव की पत्निया, जिनके गालो पर अब भी आसू की बूदें ढरक रही थी, बूढा लप्शोव, जो रात के नशे से छुट्टी पाने के लिए सुबह भी थोडी-सी चढा आया था और अब बार बार सब को चूम रहा था और एक उदासीन-सा दिखाई पडनेवाला मिकेशिन का दूर का सबधी, जो उसका सामान लाया था। इओना भी आया था। वह अलग एक तरफ खडा रहा इस डर से कि कही उसके आने-जाने से यात्रियो के कार्यों में बाधा न पडे। निकीतिन को उसी से गले मिलने का मौका न मिला और उसे उसका ध्यान तब आया जब नाव चल चुकी थी। उसने इओना को देखकर अपनी टोपी हिलायी। उस समय वहा एकाकी खडे हुए इओना का चेहरा

खिल उठा। वह भी निकीतिन को देखकर सिर झुका झुकाकर उसकी दिशा में सलीब बनाने लगा निकीतिन को मन ही मन सन्ताप हो रहा था कि उसने अपने पुराने दोस्त को नाराज़ किया है। घाट पर वही एक आदमी तो था जो उसे सबसे अधिक प्यारा था।

नाव के पिछले भाग में लेटा हुआ निकीतिन ओलेना के बारे में सोचने लगा। फिर उसकी कल्पना के समक्ष उसकी मा का चित्र घूम गया बेचारी मेरे सुदिन आने तक ज़िन्दा न रही। मैं लौटूगा, अपने पुराने मकान को नया बनाऊगा, अच्छी और खूबसूरत चीज़ें और महगे बरतन खरीदूगा और युवा पत्नी के साथ मज़े की ज़िन्दगी बसर करूगा। लेकिन मा को ये सारे सुख नही बदे थे। पिता के साथ भी उसे बहुत ही कम सुख मिला अब उसकी कल्पना के समक्ष बीते दिनों का एक और चित्र घूम गया—मा बराबर डरती रहती है कि उसका बेटा कही गिर न पडे, कही उसके गूमड न फूल आये, कही वह वोल्गा में न डूब जाये वह देर तक जगती रहती है इस इन्तज़ार में कि कब उसका बेटा घुमक्कडी के बाद घर आये। जब पहली बार वह पीकर घर आया था तो मा कितनी रोयी थी वह हर समय उसी की फिक्र करती है और वह है कि मा की कोई चिन्ता नही करता अपने आखिरी वर्षों में बीमार मा घुप्प कमरे में पडी रहती है लेकिन वह बडा व्यस्त है—काम, काम, काम नही, मा से कोई पुत्र उऋण नही हो सकता!

और तट भागते रहे, भागते रहे। यात्रा शुरू हो चुकी थी। ओलेना त्वेर में इन्तज़ार कर रही है और वह उसके साथ सुख के सपने देख रहा है सफलता मिलेगी, ज़रूर मिलेगी! इल्या गा रहा है, मिकेशिन सन्दूक खोल रहा है—इसके माने है कि हम नाव पर सफर कर रहे हैं, और इसके माने है कि हमें सफलता मिलेगी!

और निकीतिन इन्ही सुखकर विचारो में डूबा हुआ था कि उसे सेरेगा की आवाज़ सुनाई दी।

सचमुच दाहिनी ओर, सामने से धुआ उठ रहा था।

मिकेशिन भयभीत निकीतिन की ओर मुडा—

"ये तातार तो नही?"

"यहा तातार कैसे होंगे!" निकीतिन ने उत्तर दिया, "वे यहा होते तो हमें उनकी खबर कभी की लग गयी होती। वे कोई सुई तो है नहीं जो दिखाई न दे "

"शायद, आग लगी हो?" सेरेगा बोला।

"धुआ तो ज़बरदस्त है। हो सकता है कि सारे गाव में आग लगी है "

सभी दाहिने तट की ओर देखने लगे। सूर्य चढ चुका था, धुध छट गयी थी, नाव तेज़ी से भाग रही थी। सभी किनारे की पहाडी पर उठते हुए धुए की ओर ताक रहे थे।

"इपात्येव्स्की का मठ? नहीं वह अभी दूर है फिर यह कौन गाव हो सकता है?" निकीतिन सोचने लगा।

उसने तट की ओर एक उडती-सी नज़र डाली, जैसे उसे किसी चीज़ की याद आ गयी हो—यही है वह खिसकी हुई ज़मीन, उधर सामने सरकडे की झाडिया और कुछ आगे—चीढ के तीन वृक्ष, जो एकसाथ जैसे घुलमिल कर बढ रहे हैं

"यह क्यातिनो गाव है!" निकीतिन को याद आयी, "हा, वेशक क्यातिनो गाव ही। मै यहा कोई तीन साल पहले आया था जब मैं नीज्नी नोवगोरद से लौट रहा था।"

"लेकिन यह आग कैसी है? सारा गाव ही उसकी लपटो में आ गया है," कपिलोव ने हाथ हिलाते हुए कहा।

"ऊह!" मिकेशिन हसते हुए बोला, "पिछले साल मास्को में ऐसी आग लगी थी कि कुछ न पूछो, और तुम क्यातिनो की बात कर रहे हो!"

नाव धुए में ढकी पहाडी की ओर बढ रही थी। गाव के किनारे की एक कुटिया दिखाई दी जिसकी छत पर आग की लपटें लपलपा रही थीं।

"देखो न, मवेशी हकाये जा रहे हैं!" ज़िरहसाज़ ने उन्हे दिखाया, "और वे जल्दी भी कर रहे हैं!"

और सचमुच मवेशी गाव से दूर, नदी के किनारे किनारे, मठ की दिशा में हकाये जा रहे थे। घोडो पर चढे हुए लोग, मवेशियो के इर्द-गिर्द दाहिने-बायें भागते हुए, छोटे छोटे-से दिखाई पड रहे थे। ये सवार मवेशियो पर कोडे बरसा रहे थे। उनकी सख्या बहुत थी।

"बडी विचित्र बात है!" कपिलोव धीरे से बोल उठा, "आखिर वे अपने अपने घर क्यो नही बचाते?"

"जरूर दाल में कुछ काला है," निकीतिन ने हामी भरी, "मैं जानता हू क्यातिनो में कोई दस मकान हैं, इसके माने हैं मवेशियो के इर्द-गिर्द सारा गाव इकट्ठा है सेरेगा, पाल उतार दो! देखें क्या मामला है "

"रुकना चाहते हो?" भयभीत मिकेशिन बोला—"आखिर क्यो? अच्छा हो हम यहा से जल्दी ही निकल चलें।"

"कहा निकल चलें?" निकीतिन की त्योरिया चढ गयीं, "और अगर सचमुच तातारो ने हमला किया हो तो? फिर तो हमें त्वेर खबर भेजनी चाहिए "

"तुम्ही ने तो कहा था तातार यहा नही हो सकते "

"चलकर देखें।"

कपिलोव ने पाल हटा लिया और डाड मारने शुरू कर दिये।

निकीतिन ने आज्ञा दी कि नाव कुछ दाहिने, किनारे से नीचे लायी जाये ताकि पहाडी पर से उन्हें कोई देख न सके। उसने नाव को रेतीले छिछले किनारे पर लगाने की आज्ञा दी।

नाव रुकने से जो धक्का लगा उससे इवान लप्शोव की नीद टूट गयी और वह आखें मलता हुआ यह समझने की कोशिश करने लगा कि आखिर मामला क्या है। निकीतिन ने कोट और बूट उतारे और पतलून की मोहरिया उलटने लगा।

"सेरेगा, तैयार हो जाओ, हम नाव से उतरकर यह जानने की कोशिश करेगे कि माजरा क्या है।" निकीतिन बाकी लोगो पर नजर डालते हुए बोला—"इल्या, तुम मेरी जगह यही रहो। अगर कोई बात हो जाये तो नाव फौरन उस किनारे पर ले जाना। हम लोग तैरते हुए आ जायेंगे।"

निकीतिन और कपिलोव गुनगुने-से और चमचमाते हुए जल में उतरे। वे पैर उठा उठाकर रख रहे थे ताकि पानी न छलके। वे किनारे की ओर बढ रहे थे। निकीतिन घास तक पहुचा ही था कि पीछे से उसे छपाक की ध्वनि सुनाई दी। उनके पीछे इवान लप्शोव चला आ रहा था।

"तुम क्यो चले आये?" निकीतिन ने पूछा।

"आखिर वहा बैठा बैठा क्या करता?" अपराधी की सी नकली मुस्कान के साथ इवान बोला और पतलून पकडे पकडे जहा का तहा खडा रह गया। "चाचा अफ़नासी, मैं कोई नन्हा बच्चा थोडे ही हू। मुझे ले चलो न।"

"ले भी लो इसे अपने साथ!" हाथ हिलाते हुए सेरेगा कपिलोव बोला, "देखो न कैसा बहादुर है!"

इवान का मुह लाल हो उठा।

"अच्छा चलो " निकीतिन मुस्करा दिया, "पर जल्दी न करो! समझे!"

और वे इधर-उधर देखते-भालते बडी होशियारी के साथ किनारे पर चढने लगे।

ऊपर आकर उन्होने देखा कि गाव में आग लगी है। उनके देखते ही देखते एक मकान की छत गिरी और चारो ओर धुआ और चिनगारिया फैल गयी। कुछ और आगे दूसरे मकान जल रहे थे। उन्हे स्त्रियो की सिसकिया, बच्चों का रोना-धोना और पुरुषो की चीखें सुनाई पड रही थी।

उस गिरे हुए मकान के पास ही उन्हें ज़मीन पर पडा हुआ एक आदमी दिखाई दिया। इस आदमी का बाया पहलू लहूलुहान था। उसकी कमीज़ तक खून से तर थी। नीचे की घास भी खून से लाल हो रही थी। इस व्यक्ति के ऊपर, अपनी कनपटियो पर हाथ रखे, एक बालिका बैठी थी। उसके चेहरे से निराशा टपक रही थी। वह हिलती-डुलती हुई, एक ही दर्दनाक आवाज़ में, बराबर रोये जा रही थी। आखिर व्यापारियो को देखकर लडकी ने रोना-धोना बन्द कर दिया और, टूटे पखवाली चिडिया की भाति, लम्बी-सी नाली की ओर खिसकने लगी।

"ज़रूर यहा कोई दुर्घटना घटी है!" चिन्तातुर कपिलोव बोला।

"बेटी!" अफनासी ने बालिका को सबोधित करते हुए पूछा, "यहा हुआ क्या है?"

लडकी मुह ज़मीन की ओर करके और सिर दोनो हाथो से छिपाती हुई लेट गयी।

कपिलोव ने पास पडे हुए आदमी के सीने पर कान लगाया और सलीब बनाता हुआ उठा और कहने लगा—

"यह तो मरा पडा है "

व्यापारी आग से बचते हुए आगे बढे। उन्हें सामने कुछ स्त्री-पुरुषो का एक झुड-सा दिखाई पड रहा था। वे इन लोगो के पास तक पहुच गये।

"यहा कौनसी घटना घटी है?" अभी निकीतिन कुछ दूर ही था कि लोगों को सबोधित करता हुआ पूछने लगा, "क्या हुआ है यहा?"

कन्यातिनो निवासी चुपचाप खडे रहे मानो प्रश्न उनकी समझ ही में न आया हो। ये नगे पैरो वाले तीन आदमी आ कहा से गये—ये ग्रामवासी निकीतिन और उसके साथियो की ओर देखते हुए शायद यही सोच रहे थे।

एक स्त्री अपने डरे हुए बच्चे को छाती से चिपटाये बैठी थी। रोते रोते उसके आसू तक सूख चुके थे। बच्चा काप रहा था और मा की जीर्ण-शीर्ण ब्लाउज में मुह छिपाने का प्रयत्न कर रहा था। वह अपनी नन्ही नन्ही उगलियो से मा का खून से लथपथ कधा थामे था। अफ़नासी इसी स्त्री के पास आकर बैठ गया।

बच्चे की नन्ही नन्ही उगलियो का स्पर्श करती हुई मा, जैसे होश में आकर, बोल उठी। वह अपने पास बैठे हुए इस भूरी-सी दाढीवाले व्यक्ति की ओर मुखातिब हुई पर बोली कुछ नही। वह, जैसे रोती हुई, अपने आप को ही समझा रही थी कि उनपर कौनसी मुसीबतो का पहाड टूटा है।

"मठ के लोगो ने हमपर हमला किया है और हमारे हाथ-पैर बाधकर हमारे कितने ही आदमियो को मौत के घाट उतार दिया है "

अफनासी और उसके साथी वहा जडवत् खडे हुए ये सिसकिया और करुण कथा सुनते रहे। आतकित और भयभीत ग्रामवासी इन्तज़ार

कर रहे थे कि कहीं से तिनके का सहारा मिल जाये। उन्हें लगा जैसे ये अजनबी उनके साथ सहानुभूति दिखा रहे हैं। परन्तु वे उनके चारों ओर एकत्र होकर, मन ही मन प्रार्थना करते हुए और दिलों में क्षीण-सी आशा सजोये उनकी ओर देखते रहे।

आग की लपटें उठ उठकर वातावरण को झुलसाये दे रही थीं और जलती हुई खपच्चियां और चिनगारियां उड़ उड़कर इधर-उधर गिर रही थीं।

"क्या तुम लोग उस मठ के अधीन हो?" निरीतिन ने पूछा। उसने वहां खड़े हुए ग्रामवासियों पर एक नजर डाली।

"नहीं तो! हम आजाद हैं," सिसी ने कहा।

"तो क्या मठवालों से कोई झगड़ा हो गया था?"

"कैसा झगड़ा?" वहां खड़े हुए लोगों में से एक ने दुखी होकर जवाब दिया। उसके हाथों में उसकी कुल बची-खुची सम्पत्ति, एक जुआ, था—"तुम्हीं देखो न, हमारी जमीन "

पास ही एक बूढ़ा-सा आदमी फटी हुई गुलाबी कमीज पहने, कराहता हुआ, उठने का प्रयत्न कर रहा था। उसने सामने के लोगों पर एक धूमिल-सी दृष्टि डाली और खून से सने हुए हाथ जमीन पर टेके और सिर लटकाये पृथ्वी की ओर ताकता हुआ काफी देर तक वहीं बुत बना बैठा रहा।

चारों ओर चुप्पी छा गयी थी।

"चले गये न?" हल्की-सी आवाज में उस आदमी ने पूछा।

"चले गये " सिसी ने धीरे से जवाब दिया, "सभी जगह आग लगा गये हैं "

वह आदमी पूरी ताक़त से जमीन का सहारा लेते हुए उकड़ूं बैठा और आखिर किसी का कन्धा पकड़कर पूरा पूरा खड़ा हो गया।

उसके पिटे हुए चेहरे पर लाल लाल वाल खून से चिपक गये थे जिन्हे वह कोहनी से एक ओर हटा रहा था।

"मेरे सगे-सवधी यही है?"

"यही, फ्योदोर ",

निकीतिन को इस आदमी पर तरस आ रहा था। ओफ, वेचारे को मार मारकर भुरता वना दिया। देखने में आदमी वहादुर लगता है, तन्दुरुस्त! उस आदमी ने देखा कि ये लोग उसकी ओर सहानुभूति से देख रहे हैं।

"देख रहे हैं न, किसानो को कैसे लूटते हैं," वह खरखराती-सी आवाज में वोला, "आखिर क्यो? किस लिए?"

वह कहते कहते रुका और मठ की दिशा में देखने लगा। फिर मुट्ठी भीचते हुए धमकी के स्वरो में चीख पडा—

"सत्यानाश हो आप लोगो का! हा, हा, सत्यानाश!"

आखिर किसी प्रकार निकीतिन ने इन क्न्यातिनो निवासियो से मठवालो के हमले के सारे विवरण मालूम किये। सवसे ज्यादा फ्योदोर ही वोल रहा था। निकीतिन को यह आदमी पसन्द आया था। वह दूसरो की अपेक्षा अधिक चतुरता से वातचीत कर रहा था।

"मठाधीश ने अन्याय किया है!" क्रोध से निकीतिन कहने लगा, "आखिर हम ऐसे किसी न किसी आदमी को तो ढूढ ही निकालेगे जो उसकी खबर ले सकेगा, उसे मजा चखा सकेगा!"

"कहा?" निराशा और क्रोध से फ्योदोर ने पूछा।

"क्यों! वडे राजा जो हैं! उनसे प्रार्थना की जा सकती है!"

"हा, ठीक तो है," कपिलोव ने हा में हा मिलाते हुए कहा, "तुम लोग घुटने मत टेक देना। तुम्हे अपने हक़ के लिए लडना चाहिए। मैंने सुना है कि एक वार उग्लीच के मठाधीश ने अपने किसानो पर

टैक्सो की भरमार कर दी थी, नतीजा यह हुआ कि किसानों ने बड़े पादरी से शिकायत की और पादरी ने उनकी रक्षा की।"

"ठीक तो है," अफनासी तेज पटते हुए बोला, "फिर मठाधीश को अपने सारे टैक्स घटाने पड़े। तुम्हे भी वही करना चाहिए।"

वहा एकत्र लोगो में कुछ हलचल-सी हुई और वे कहने लगे—

"मठाधीश के दिमाग़ में जो आता है कर बैठता है "

"आखिर दुनिया में कहीं सत्य भी होगा ही!"

"बड़े राजा हमारी रक्षा करेंगे "

"हमें बड़े पादरी के पास जाना चाहिए "

फ्योदोर ने सिर उठाया—

"लेकिन वहा जायेंगे कैसे? उसके लिए अर्जी चाहिए बिना उसके हम वहा नही जा सकते।"

ग्रामवासी उदास हो गये।

"सचमुच हमें अर्जी चाहिए "

"बिना उसके हम जा भी कहा सकते है?"

"और उसकी कीमत अदा करने के लिए हमारे पास रहा ही क्या है?"

"बस अब एक ही रास्ता बचा है—भीख मागने का "

निकीतिन ने फ्योदोर के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—

"अर्जी मैं तुम्हे लिख दूगा।"

फ्योदोर ने जैसे विश्वास न करते हुए पूछा—

"सच, तुम लिख दोगे?"

"हा, सच ध्यान," निकीतिन लप्शोव की ओर मुड़ते हुए बोला, "जरा नाव तक तो दौड़ जाना और हा मेरे नीले बक्स में से एक कॉपी और दावात तो निकाल लाना।"

"अभी लाया, चाचा अफनासी!"

इवान तुरन्त दौड गया। निकीतिन और कपिलोव घास पर बैठ गये। क्न्यातिनो निवासी भी, पहले ही की तरह, उनकी ओर झुके हुए से खडे रहे।

"लेकिन आप लोग हैं कौन?" फ्योदोर ने प्रश्न किया।

"सौदागर," निकीतिन ने जवाब दिया।

"तो आप लोग ठहरे आजाद आदमी," मुह पर से खून पोछते और दर्द के कारण आह भरते हुए फ्योदोर बोला—"आपका काम ही क्या? खरीदा-बेचा और यहा, देखो न कि "

"हा, लेकिन हमारी जिन्दगी भी फूलो की सेज नही है," कपिलोव ने उसे शान्त करते हुए कहा, "और हमें टैक्स कितने अदा करने पडते हैं? फिर कभी कभी हम लुट भी तो जाते हैं "

"ठीक है, सौदागरो की जिन्दगी ही ऐसी होती है," फ्योदोर ने उदासीनता से हा में हा मिलायी, "आजादी मिलने के बाद हममें से भी दो आदमी सौदागर बन गये थे। कहते हैं कि एक तो बडा आदमी हो गया था। त्वेर में। प्रोश्का विकेन्त्येव आपने सुना है उसके बारे में?"

"नहीं," जैसे कुछ याद करता हुआ, निकीतिन बोला, "मुझे याद नही आता।"

"बेशक, आप सब को जान भी कैसे सकते हैं   त्वेर इतना वडा जो है।"

वह चुप हो गया और आग की ओर घूरने लगा। अब मकानो के निचले लट्ठे सुलग रहे थे और राख उड रही थी। व्यापारियो ने गाव पर एक नजर डाली—वह धू ध करता हुआ जल रहा था। उसी समय एक वूढी भी वही आ गयी। उसकी भी खासी मरम्मत की गयी थी और अब वह पैर तक मुश्किल से टिका सकती थी। वह फ्योदोर के पास वैठ गयी और उसके कन्धे को इस तरह स्पर्श करने लगी मानो यह इत्मीनान कर लेना चाहती हो कि फ्योदोर जिन्दा भी है या नहीं। साथ ही उसने व्यापारियों पर भी एक ऐसी नज़र डाली मानो उनका भेद लेना चाहती हो कि ये अजनवी हैं कौन।

"मा ?" कपिलोव ने पूछा और उत्तर की प्रतीक्षा न करते हुए कहा—"हा   "

इसी समय इवान के स्थान पर मिकेशिन नाव पर से आ गया। उसके मुह में ढेरो धुआ चला गया था और वह खास रहा था, थूक रहा था। उसके कोट पर एक चिनगारी गिर गयी जिससे उसमें एक छोटा-सा छेद हो गया था। उसने निकीतिन को कॉपी और दावात थमायी और अपना कोट उतारकर खीझ के साथ उसका छेद देखने लगा। वह इस नुक्सान को सहन न कर सका और क्रोध से भभक उठा—

"पिशाच इन सौदागरो को यहा भी ले आये   "

कपिलोव ने क्रोध से आखें मिचकाते हुए धीरे से कहा—

"इन बेचारों को देखो! इनके घर-बार स्वाहा हो गये हैं,

लेकिन ये तुम से कम ही चीख रहे हैं। तुम रोते हो एक छेद के लिए "

"बड़े बेचारे आये," मिकेशिन भुनभुनाया, "यह कोट अभी नया ही तो है, सिर्फ चार ही साल तो पहना है "

गाव के निवासी निकीतिन के इर्द-गिर्द जमा हो गये और एक दूसरे को टोकते हुए अपनी अपनी बाते कहने लगे—

"वास्का नेमीती के बारे में भी लिख देना। बेचारा तीन बच्चे छोड गया है "

"सूखी घासवाली खत्तियो के बारे में लिख देना और यह भी कि सारी घास जल गयी।"

"और मवेशियो को मत भूल जाना!"

निकीतिन को मेज की जगह एक लट्ठा दे दिया गया था। वह उसी पर कॉपी रखकर, और सिर हिलाते हुए, लिखता गया

कोट के छेद की देखभाल कर चुकने के बाद मिकेशिन ने सावधानी से उसकी तह लगायी और गाववालो की ओर देखता हुआ कपिलोव से पूछने लगा—

"लगता है, अर्जी लिखी जा रही है?"

"हा।"

"देखो मुझे इस सबसे कोई सरोकार नही। और निकीतिन भी अपनी टाग क्यो अडा रहा है, बेमतलब ही तो?"

"बेमतलब क्या?" कपिलोव तेजी से मुडा और कहने लगा, "यहा लोगो को लूटा जो गया है!"

"उन्हें लूटा गया है तो वे रोयें। उनकी मुसीबत अपने सिर लेना ठीक नही। फिर यह भी तो पता नही कि कौन ठीक कहता है कौन ग़लत। हो सकता है मठाधीश ने ठीक ही किया हो।"

"घर जला दिया, आदमियों को मौत के घाट उतार दिया, बच्चों को मारा-पीटा . यह सब उसने ठीक किया?"

"अरे तुम मुझपर क्यों बरस रहे हो, मैं तो नहीं "

फ्योदोर की मां जो उनकी बातचीत सुन रही थी, उदासी भरी चुप्पी के साथ मिकेशिन को घूरती रही।

"क्यों घूर रही हो? क्या बात है?" मिकेशिन उसकी निगाह से कुछ उलझकर मुस्कराया। "आखिर बात क्या है? लगता है कि आप लोग संकट में हैं?"

बूढ़ी न तो कुछ बोली ही और न उसने अपनी आंखें ही मिकेशिन पर से हटायीं।

"मैं जा रहा हूं!" जाने के लिए तैयार मिकेशिन बोल उठा, "लगता है बुढ़िया सठिया गयी है हम तो नाव में रहेंगे पर तुम सब जल्दी चले आना यहां का काम-काज निपटाकर "

वह शीघ्र ही पगडंडी पर आ गया और इधर-उधर नजर डालते और फिर पीछे देखते हुए, जैसे दौड़ने लगा।

बूढ़ी ने एक ठंडी सांस ली और फिर कपिलोव की ओर नजर फेरती हुई कहने लगी—

"वह तुम्हारे साथ है?"

"हां," अनिच्छा से कपिलोव को स्वीकार करना पड़ा।

"मुझे उसपर तरस आता है," दर्द से सिर हिलाती हुई वह बोली, "वह रहेगा कैसे? बेचारा अकेला है!"

जिसका मकान जल गया था, जिसे इतनी मार पड़ी थी, वही बूढ़ी, मिकेशिन पर दया दिखा रही थी! इस अप्रत्याशित दया-प्रदर्शन से कपिलोव के रोमांच खड़े हो गये।

...किसी तरह निकोतिन ने लिखना खत्म किया। उसकी लिखावट

एक जैसी न थी, कोई अक्षर कही जा रहा था, कोई कही। कई जगहो पर निव ने कागज़ तक फाड दिया था। उसने कागज की स्याही पर फूक मारी ताकि लेख जल्दी सूख जाये। क्न्यातिनो निवासी उसके ओठो की ओर वडी श्रद्धा से देखने लगे।

"सुनना चाहते हो, मैं पढ रहा हू "

निकीतिन ने दोनों हाथो से कागज़ पकडकर पढना शुरू किया –

"हम, क्न्यातिनो निवासी किसान, आप, वडे राजा, से करवद्ध प्रार्थना करते हैं कि आप वरीस और ग्लेव के मठाधीश पेरफीली से हमारी रक्षा करे। न जाने कव से हमारे खेतो और चरागाहो पर इस मठाधीश के दांत थे। अव उसने उनपर कब्ज़ा करने के लिए अपना कदम वढाया है "

पढना वन्द कर उसने सिर उठाया–

"सारी वाते आ गयी इसमें?"

"हा! हा!"

"सव ठीक है!"

निकीतिन ने अर्जी फ्योदोर को दे दी। फ्योदोर ने अपने हाथ पोछे, सावधानी से कागज़ लिया और उत्सुक नेत्रो से उसकी काली काली पक्तियो की ओर देखने लगा। ग्रामवासियो में से एक युवा स्त्री अपने फैले हुए हाथ में एक छोटा-सा थैला लिये दिखाई दी।

"हमारी ओर से ये थोडे-से अडे स्वीकार करो। ये वच रहे थे "

निकीतिन दो कदम पीछे हट गया।

"यह कर क्या रही हो? क्या मैं कुधर्मी हू जो तुमसे कुछ लूगा?"

वह स्त्री थैला वैसे ही अपने हाथ में लिये रही। कपिलोव उसकी बगल में आया, अधिकारपूर्वक किन्तु प्यार से उसका हाथ झुकाया और स्त्री को एक कदम पीछे हटा दिया।

"भगवान को क्रोध मत दिलाओ, सुन्दरी अच्छा, दोस्तो, नमस्ते। ईश्वर तुम्हे सफलता दे। अफनासी, चलो चले।"

"ठहरो," निकीतिन ने उसे रोकते हुए कहा, "फ्योदोर, तुम कभी त्वेर गये हो?"

"नही।"

"जब जाओ तो वहा निकीतिन का मकान पूछ लेना। और जब तक तुम्हारा कोई फैसला न हो जाये तब तक वही रहना।"

दुखती हुई पीठ के बावजूद फ्योदोर ने जमीन तक झुककर उसका अभिवादन किया। इस समय तक आग ठढी पड चुकी थी। हवा से काली काली राख उड उडकर हरी घास पर बैठती जा रही थी। ग्रामवासी व्यापारियो को नाव तक पहुचाने आये। सभी लोग, किनारे पर खडे, नाव को नदी में बढते हुए देर तक देखते रहे। इन लोगो में फ्योदोर का हट्टा-कट्टा जिस्म दूर से ही साफ दिखाई पड रहा था

"तो ऐसे हमने शुरू किया है अपना सफर," मिकेशिन बोरो पर बैठा, और इधर-उधर निगाहे नचाता हुआ गुस्से में भुनभुनाता रहा, "अगर हमने ऐसे ही सफर किया तब तो मुनाफे की बात सपना हो

जायेंगी, सपना। हमारा काम है तिजारत करना, न कि दूसरो के मामलो में दखल देना अगर हम ऐसा ही करते रहे तो फिर देखना आगे कितनी मुसीबतें आती हैं।"

"बन्द करो अपनी बकवास!" कपिलोव ने उसे रोकते हुए कहा, "ऐसी बाते सुनना भी शर्म की बात है।"

"तो मत सुनो!" मिकेशिन भौंक पडा, "रक्षक, पैग़म्बर! जब खुद चक्कर में आयें तो सारे छक्के-पजे भूल जायें!"

"अच्छा, अच्छा!" निकीतिन चिल्लाया, "तुम डरते क्यो हो? तुम्हें कौनसा चक्कर दिखाई पड रहा है? उन गाववासियो का पक्ष सत्य का था!"

लेकिन मिकेशिन देर तक बडबडाता रहा और तभी चुप हुआ जब अपने कोट के छेद में रफू करने लगा। फिर इस काम में वह पूरी तरह व्यस्त हो गया।

"चाचा अफनासी!" नाव के पिछले भाग में निकीतिन के पास जाते हुए इवान धीरे से बोला, "क्या उन किसानो को सफलता मिलेगी?"

"मिलनी चाहिए," इवान के गम्भीर चेहरे की ओर देखते हुए निकीतिन ने उत्तर दिया, "हा, ज़रूर मिलनी चाहिए . जानते हो इवान, किसान सब का आधार है। उसे लूटना-खसोटना गुनाह है। और जहा तक सामन्तो और मठवासियो की बात है "

और बिना बात पूरी किये उसने हाथ हिलाया। इवान ने निकीतिन की ओर देखा और चुप हो गया।

"तुम अभी हो ही कितने से!" निकीतिन सस्नेह उसके बारे में सोचने लगा, "अभी तुमने दुनिया देखी कहा है .. लेकिन खैर, हो सकता है कि यह तुम्हारे लिए अच्छा ही हो।"

वह लेटा रहा और कोट सिर तक खींचते हुए अपनी आखें बन्द

कर ली। आखिर आदमी सभी बातो पर तो दिमाग़ दौडा नही सकता और अगर दौडाये भी तो उससे होगा क्या ?

तय यह हुआ था कि त्वेर के व्यापारी नीज्नी नोवगोरद में मास्को दूतावास के लोगो के साथ मिलेगे और उनके साथ शेमाखा की ओर रवाना होगे। नीज्नी नोवगोरद के मार्ग में कल्याज़िन, येरोस्लाव्ल, प्लेस और कोस्त्रोमा नगर पडते थे। नाव दूसरे दिन कल्याज़िन पहुच गयी। यहा उन्होने पहला बडा पडाव डाला और नाव एक छोटी-सी नदी, जाब्न्या, में खडी करके व्यापारी नगर की सैर के लिए निकल गये। सभी इस नगर से अच्छी तरह परिचित थे—ज़िरह्माज़ इल्या तक। यहा उनकी भेंट अन्य त्वेर निवासियो से और मास्को के उन लोगों से हुई जो पिछले सप्ताह वहा दिमित्रोव से आये थे।

मास्को के इन्ही लोगो ने इस बात की भी पुष्टि की थी कि मास्को दूतावास शेमाखा जा रहा है और त्वेर के व्यापारी समय रहते उनसे नीज्नी नोवगोरद में मिल सकेगे।

सूर्यास्त होते होते व्यापारी पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से प्रसिद्ध एक मठ में गये। मठ जाब्न्या के पास ही था। व्यापारियो ने अपने मार्ग की सफलता के लिए प्रार्थना करायी और एक रूबल चढा दिया। मठाधीश मकारी ने अन्य पादरियो के साथ प्रार्थना कर चुकने के बाद व्यापारियो को बुलाया, उनसे त्वेर स्थित स्पास्क मठ का हाल-चाल पूछा, और उत्सुकता से एक सवाल और कर दिया— "हमें अपने लोगो के लिए चोग़े बनवाने है, आप लोगो के पास कोई मामूली किस्म का कपडा तो न होगा ? बस सौ हाथ चाहिए।" और जब उसे मालूम हुआ कि उन व्यापारियो के पास वैसा कपडा नही तो उसने उन्हे यात्रा की सफलता का आशीर्वचन देते हुए विदा किया।

व्यापारियो ने उग्लीच में पडाव न डालने का ही निश्चय किया था – उनके पास समय जो न था। वे दोपहर तक इस छोटे-से नगर से होते हुए गुजर गये। शाम होते होते तो वे और भी कई मील आगे बढ सकते। उग्लीच में जानने-समझने योग्य था ही क्या? बेशक यह नगर सुन्दर था – वोल्गा के पास स्थित दुर्ग और मठो की सफेद दीवाले, ऊचे ऊचे घटाघर, हरियाली में डूबी हुई मकानो की छतें। वह कल्याज़िन जैसा न था। कल्याज़िन इतना रमणीक तो न था किन्तु उसमें ज़िन्दगी थी, चहलपहल थी। उग्लीच में सिर्फ प्रार्थनाए सुनी जा सकती थी या फिर भक्तिनियो की टर्र टर्र।

उन्होंने यरोस्लाव्ल में आधा दिन, पूरी रात और दूसरा आधा दिन बिताया। नगर में पहुचने से कुछ ही पहले वे हहराते हुए तूफान में फस गये। आसमान पर घने घने बादल मडरा रहे थे, फिर बिजली, बादलो की गडगडाहट और मूसलधार पानी। उनकी नाव बडी कठिनाई से ही टिकी रह सकी। ठहरने के लिए कायदे की जगह खोजने का भी उनके पास समय न था। वे सारी गठरिया नाव के पिछले हिस्से में खीच लाये और उन्हे कनवास से ढक दिया। खुद उन्होंने बोरो से अपने को ढक लिया और अपने ऊपर फालतू पाल तान लिया। वे इसी दशा में सलीब बनाते और मन ही मन भगवान की प्रार्थना करते तब तक बैठे रहे जब तक अन्धाकुप्प न हो गया। दो बार तो नाव ऐसी उलटी-पलटी कि लगा जैसे मौत सामने हो। बिल्कुल पास ही बिजली चमकी और लगा जैसे ज़मीन और आसमान दो दो भागो में बट गये हो। सभी भीग गये थे, सभी ठिठुर रहे थे, सभी में डर समा गया था। शाम होते होते तूफान आगे बढ गया, लेकिन नाव से बाहर निकलना उचित न था – आखिर उस सुनसान नदी तट पर वे अपना माल-असबाब किसके भरोसे छोडते? फलत भोर होने तक वे आग

जलाये बैठे और ठिठुरते रहे। दो गठरियां भीग गयी थीं। उन्हें खोला गया, उनका फर और लिनेन सुखाया गया, फिर उन्हें जहां का तहां रखकर सी दिया गया। किसी प्रकार वे साढे तीन बजे तक वहीं उठा-धरी करते रहे, वे शहर में न गये। उन्होंने कुछ खाना खरीद लिया, खाया, पिया और बस यरोस्लाव्ल में यही कुछ हुआ।

कोस्त्रोमा में उन्होंने पूरा दिन बिताया था। यहीं से वह इलाक़ा शुरू होता था जिसपर मास्को का अधिकार था। उन्हें मास्को के राजा अलेक्सान्द्र की सनद की ज़रूरत थी। इस सनद का शुल्क था आधा रूबल, उसे जल्दी प्राप्त करने के लिए मुंशियों और राजा को दी जानेवाली घूस थी तीन रूबल। यह भी अच्छा हुआ कि उन्होंने वहां कंजूसी नहीं की। उन्हीं के साथ ही नोवगोरद निवासियों को भी सनद लेनी थी। उन्होंने पैसा दांतों से पकडा। नतीजा यह हुआ कि उन्हें तीन दिनों तक लटकना पडा और राजा की ड्योढ़ी की हाज़िरी बजाते बजाते उनके पैर सूज आये। लेकिन परिणाम कुछ न निकला। आख़िर उन्हें पैसा देना ही पडा, और इसमें एक दिन और बरबाद हो गया—तब कहीं उन्हें सनद मिली। कंजूसी का यही फल होता है!

उन्हें राजा के भी दर्शन हो गये। लम्बा-सा क़द, सींक-सलाई जैसा बदन, उसपर डिज़ाइनदार कोट, जवाहरात के आभूषण। वह सिर झुकाये, और लोगों की ओर न देखता हुआ, क्रेमलिन से निकलकर कहीं जा रहा था। उसके आगे आगे कुछ अश्वारोही, भीड हटाते हुए, उसका रास्ता साफ करते हुए चल रहे थे। कोई रास्ते में आ गया और घोडे की लपेट में आकर ज़मीन पर गिर पडा। राजा ने उसकी ओर देखा और नाराज़गी से ओठ भींच लिये।

व्यापारी प्लेस से होते हुए अन्ततः अगले सप्ताह नीज्नी नोवगोरद पहुंच गये। निकीतिन तो इस नगर को पहचान तक न सका। तीन

साल की अवधि कम तो होती नही! उस समय सारा नगर लकडी का ही दिखाई पडता था लेकिन अब दुर्ग की पत्थरो की नवनिर्मित सफेद दीवाले दूर से ही दिखाई दे रही थी। उसकी ऊची ऊची दातेदार मीनारे, मीनारो में पतले छेद, जिनकी आड से गोलावारी की जाती थी—इन सब से दुर्ग की मजबूती प्रकट हो रही थी।

इस दुर्ग पर दात रखनेवाले तातारो के दात खट्टे हो जायेंगे—ऐसा मजबूत था यह दुर्ग। जय हो मास्को, तेरी! लेकिन इस दुर्ग के निर्माण में शायद त्वेरवालो का भी कम योग न था। त्वेर के राजगीर सारे रूस में प्रसिद्ध थे। उन्होने भी इस दुर्ग के निर्माण में योग दिया है।

अफनासी ने नीज्नी के नये क्रेमलिन की मन ही मन प्रशसा की, ऐसी प्रशसा मानो उसका निर्माण स्वय उसी ने किया है, मानो उसकी नयी दीवालो की शक्ति उसकी रक्षा के लिए अपने हाथ फैलाये खडी है, मानो वह आज भी उसकी रक्षा कर रही है और भविष्य में भी करती रहेगी।

"लो, भगवान की कृपा से हम नगर में पहुच गये!" इवान लप्शोव के कन्धे थपथपाते हुए निकीतिन बोला, "तुम्हे यहा गिरजो में जाने का काफी समय मिलेगा!"

रास्ते-भर निकीतिन को सबसे अधिक चिन्ता रही इवान की। और इसका एकमात्र कारण यह न था कि इवान के पिता ने उससे आग्रह किया था अपितु वह स्वय उसे चाहता था—क्न्यातिनो में इवान ने जो कुछ किया था उसका निकीतिन पर अच्छा प्रभाव पडा था। निकीतिन की समझ में यही न आ रहा था कि इवान के पिता ने अपने बेटे को विचित्र क्यो कहा था। इवान बातूनी न था। एकातप्रिय था, जिज्ञासु था। इवान को रास्ते में याद आयी—निकीतिन ने उसे भारत के सबध में एक पुस्तक देने का वादा किया था। फलत उसने किताब

माग ली और उसे वडे ध्यान मे पढा, समझा और छोटे छोटे व्यौरो पर मनन किया और उमके वाद उसपर सोच-विचार करने लगा।

एक वार निकीतिन ने सूर्य और मितारो की गति के वारे में ममझाया था। इवान वडे ध्यान से उमकी वाते सुनता और समझता रहता था।

आखिर इवान में कौनसी विचित्रता थी?

सचमुच निकीतिन ने इम वात पर ध्यान दिया था कि इवान प्राय नाव मे खडा खडा सामने से गुजर जानेवाले जगलो और चरागाहो को मन्त्रमुग्ध-सा देखा करता और अगर उसे एक क्षण का भी अवकाश मिल जाता तो एकात में जा वैठता। आखिर ऐसा क्यो? एक दिन निकीतिन ने इवान को तट पर वैठे देखा। वह भी आकर उनके पीछे खडा हो गया।

इवान, निकीतिन को न देख सका। वह अपने घुटनो पर एक तख्ती रखे उसपर कोयले से कुछ रूप-रेखाए वना रहा था। धीरे धीरे तख्ती पर वल खाती हुई वोल्गा और लट्ठो का एक वेडा उभर आया। वेडे का एक सिरा वोल्गा के रेतीले तट पर था। पास ही एक गाडी वेडे की ओर वढ रही थी, कुछ आगे एक वन भी दिखाई पड रहा था।

निकीतिन सास रोके वही खडा रहा—तख्ती पर उभरा हुआ चित्र उसे वास्तविक जैसा लग रहा था। उसे लगा कि वह भी उसी दृश्यावली का एक अग है और सभी कुछ यथावत् देख रहा है।

"तो यह वात है!" वह धीरे से वोला और आकर उसी के पास उकडू वैठ गया।

इवान ने जैसे डरकर तख्ती अपनी आस्तीन मे ढक ली और भय और चिन्ता से निकीतिन की ओर देखने लगा।

"क्या हो रहा है?"

"कुछ नही यो ही "

"डरो मत मैंने तुम्हारा हुनर देख लिया है।"

इवान ने आखें नीची की और चुप हो गया।

"इसी लिए तुम्हारे पिता तुम्हें डाटते-फटकारते थे, है न?" तख्ती की ओर देखता और सिर हिलाता हुआ निकीतिन दोस्ताना ढग से कहने लगा।

इवान ने सिर उठाया। वह फीकी-सी हसी हस दिया और फिर फुसफुसाते हुए जल्दी जल्दी कहने लगा—

"किसी से कहना मत, चाचा अफनासी "

इस प्रार्थना से निकीतिन का मन जैसे भर आया।

"अच्छा अच्छा, मगर मुझे एक बार फिर तो दिखाना," वह बोला।

इवान ने देखा कि उसका चित्र निकीतिन को पसन्द है। इसी लिए वह उसे चित्र दिखाते हुए कहने लगा—

"मैं अक्सर ऐसी ही रेखाए खीचा करता हू दुनिया कैसी खूबसूरत है, उसे जुगा कर रखना चाहता हू, लोगो तक पहुचाना चाहता हू, उन्हे धरती का गदराता सौन्दर्य दिखाना चाहता हू!"

"हा, लोगो को धरती का वह सौन्दर्य प्राय दिखाई भी तो नही पडता। वे उनकी ओर मे अपनी आखें मूदे रहते है।"

"ठीक, वे उमे नही देख पाते!" उत्सुकता मे इवान ने सहमति प्रकट की। ऐसा लगता था मानो निकीतिन ने उसके मन की ही बात कही थी।

"वे है कि झगटे-टटे में पडे रहते है, दुखी रहते है। लेकिन इस दुनिया में सौन्दर्य जैसे फूटा पडता है! मैं समझता हू कि अगर लोग इस सौन्दर्य को देखें और उसमें रम जायें तो जिन्दगी उनके लिए फूलो की सेज हो जाये।"

"हू " विस्मित-सी आखें ऊपर उठाते हुए निकीतिन धीरे से बोला, "मै नही जानता शायद तुम ठीक कहते हो। कितना अच्छा चित्र बनाया है तुमने। जी होता है तुम्हारी वोल्गा में एक डुबकी लगाऊ।"

अपनी प्रशसा सुनकर इवान के गाल लाल पट गये। उसे कोई जवाब न सूझा। फिर भी कह चला—

"मैंने कुछ प्रतिमाए भी बनायी है घर पर।"

दो ऐसी प्रतिमाए अभी भी उसके पास थी। इनमें से एक उस ने अफनासी को दिखायी। इस प्रतिमा में काटो का सेहरा बाधे ईसामसीह को दिखाया गया था।

"बहुत अच्छा," अफनासी बोला, "और दूसरी भी तो दिखाओ?"

इवान ने निकीतिन पर एक अजीब-सी नजर डाली और शर्माते हुए कहने लगा—

"वह अभी तक पूरी नही हुई "

"अच्छा जब पूरी हो जाये तब दिखा देना," निकीतिन बोला, "तुम्हारे ईसा तो ऐसे लगते हैं कि अब बोले, तब बोले।"

उस दिन के बाद से निकीतिन इवान का वैसा ही ख्याल रखने लगा मानो वह उसके अपने हृदय का टुकडा हो और इवान भी उसके इशारो पर चलने को तैयार हो गया। उसने सकल्प कर लिया था कि वह निकीतिन की हर आज्ञा का पालन करेगा।

इल्या कोजलोव यात्रा-भर बडा प्रसन्न रहा—हर अफवाह पर विश्वास करता, आश्चर्य प्रकट करता और जहा जहा व्यापारी ठहरते वहा का कोना कोना छान आता, आखें ठढी करता। ऐसा लगता जैसे उसे दुनिया की हर चीज में रुचि हो— कल्याजिन मठ के पादरी की धीर गम्भीर आवाज में, राजा अलेक्सान्द्र के कोट में लगे हुए रत्नों में और यरोस्लाव्ल के गिरजो में।

"जब लौटूगा तब इन सारी बातो का ज़िक्र किया करूगा," इल्या कोजलोव का दिल नाच उठा और उसके ओठो पर मुस्कराहट खेलने लगी, "मेरा बेटा तो मुझसे सवालो की झडी ही लगा देगा—तरह तरह के सवाल। वह हर बात जानना जो चाहता है। हाथ का काम सीख ही रहा है, अभी से लोहे की चीजें बना लेता है। अभी उसकी उम्र ही क्या—कोई तेरह साल।"

कभी कभी तो वह अपने बेटे की तारीफो के पुल बाधता। कहता कि ऐसा चतुर है उसका बेटा, इतनी होशियार है उसकी बीवी, वग़ैरह वग़ैरह, और ये बाते इतनी लम्बी चलती कि कपिलोव के कान पकने लगते और वह उसका मज़ाक़ बनाने लगता।

"सुनो इल्या," वह ज़िरह्साज़ को रोकते हुए पूछ बैठता, "कहते हैं कि तुम्हारी बस्ती में एक बकरी है जो स्तोत्र-पाठ करती है। वह तुम्हारी ही तो नही है?"

"नही, नही" खुशमिज़ाज ज़िरह्साज़ घबड़ाकर कहने लगता।

"परन्तु मैं तो समझता था वह तुम्हारी है। तुम्हारे पास जो है भला वह दूसरो को कहा नसीब! तुम्हारा सब कुछ दूसरो से बीस है," आखो में शरारत भरे कपिलोव बडी गम्भीरता से कहने लगता।

निकीतिन, इवान और मिखेशिन क़हक़हे लगाने लगते। ज़िरह्साज़ के गाल लाल हो उठते और वह गर्दन लटका लेता।

कुछ देर तक वह चुप रहता मगर उससे रहा न होता और वह फिर अपनी हाकना शुरू कर देता–

"मेरा बेटा"

और ये शब्द मुह से निकलते ही सहसा वह भयभीत इधर-उधर देखने लग जाता। निकीतिन भी अपने को मुश्किल से ही सभाल पाता और उसकी हसी गले में अटक जाती। कुछ भी हो ज़िरह्साज़ दिल का अच्छा था। वह हाथ हिलाकर हस दिया करता। और अगर वह फिर अपनी अनन्त कथा शुरू करने लगता तो कपिलोव पीछे से सीग दिखाने लगता और फिर इल्या जैसे उसकी हा में हा मिलाता हुआ हाथ उठा देता और कहने लगता–

"हा, वह बकरी! वह तो मेरी ही थी"

. नीज्नी नोवगोरद आ गया। सभी खुशी से खिल उठे। लेकिन घाट पर पहुचते ही उन्हे पता चला कि ज़ार इवान का राजदूत वसीली पापीन पहले ही जा चुका है।

इस खबर से व्यापारियो पर जैसे बिजली टूट पडी। मिकेशिन तो बडबडाने लगा—"दूसरो के लिए तो आखें बिछाये रहते हैं, पर अपनो की याद तक नही आती।"

"अरे तुम लोग तो उदास हो गये? क्यो?" निकीतिन ने अपने साथियो को खुश करने का प्रयत्न करते हुए कहा, "राजदूत चला गया, कोई बात नही, कोई मुसीबत तो हम पर आ नही गयी। हम खुद ही जायेंगे। हमें गवर्नर के पास जाना चाहिए, शायद हमें उधर जानेवाले कुछ लोगो का पता चल जाये कोई बात नहीं!"

व्यापारी नाव से सामान उतारने लगे। उन्होने निकीतिन और कपिलोव के एक परिचित व्यापारी के साथ ठहरने का निश्चय किया था। उसी व्यापारी के यहा सारा सामान रखा जाना था। अफनासी तुरन्त वहा से गवर्नर के यहा चला गया।

जब लौटा तो उसने कई ऐसी खबरे सुनायीं जिनसे व्यापारी गदगद हो गये—शेमाखा के राजा फरुख-यासार का राजदूत शीघ्र ही इधर से होकर गुजरेगा। मुशियो ने तो यही बताया था। अन्तत, व्यापारियो ने निश्चय किया कि वे शेमाखा राजदूत की प्रतीक्षा करेंगे। उनका विचार था कि उसके साथ यात्रा करना सुरक्षा के ख्याल से लाभदायक है, इसलिए कि उनका रास्ता आलतिन ओरदा से होकर है।

तीसरा अध्याय

मास्को के प्रवेश द्वार-सा नीज्नी नोवगोरद—वोल्गा पर स्थित एक अभेद्य दुर्ग था। बेशक व्यापारियो को पापीन के निकल जाने का जो समाचार मिला था उससे उन्हें काफ़ी निराशा हुई थी। लेकिन

फिर उन्हे जो जो खबरे मिली उससे उन्हे बराबर खुशी ही होती गयी–सभी समाचार जैसे उनका उत्साह बढा रहे थे।

व्यापारी, ऊनी कपडों के सौदागर खरीतोन्येव के यहा ठहरे थे। गोल चेहरा, सुग्रर जैसी ग्राखें, बुजदिल जैसा ग्रादमी। ग्रभी कुछ ही समय पहले वह भी नाव पर सराय गया था। दूसरे सभी बुजदिलो की तरह उसे भी एक बात पसन्द थी यानी यह कि वह खौफनाक कहानिया सुनाकर दूसरो को भयभीत किया करता था। लेकिन खुद उसका भी यही कहना था कि रास्ते में कोई डर नहीं।

नदी के नीचे की ग्रोर से प्रतिदिन नये नये काफिले ग्राया करते–ग्रारमीनियाई भी, ईरानी भी। काज़ान से दो जहाज़ ग्राये थे। नदी तट के रास्ते तातार वहा के बाज़ार में कोई दो हज़ार घोडे भी लाये थे।

यही लगता था कि ग्रानेवाली शरद शान्ति की वाहिका है। बस एक ही खराबी थी–राजदूत को ग्राने में देर लग रही थी।

प्राय निकीतिन दुर्ग की दीवालो की ग्रोर चला जाता। वहा तरह तरह के ग्राकार-प्रकार तावे की तोपें थी जिनपर लोहे के मोटे मोटे हुक चढे थे। तोपो के निकट पहरेदार खडे खडे ऊघा करते थे। निकीतिन देर तक क्ल्याज़्मा की दिशा में देखा करता, किन्तु किसी ग्राती हुई नाव का पाल उसे नज़र न ग्राता।

निकीतिन निराश हो गया। इन्तज़ार करते करते दूसरा हफ्ता चल रहा था। बेकार ही उन लोगो का पैसा खर्च होता जा रहा था। यद्यपि उनका मेज़बान कोई शिकवा-शिकायत न करता, फिर भी उसपर इतने ग्रादमियो के रहने-ठहरने का बोझ रखना निकीतिन को उचित न लग रहा था।

निकीतिन ने अपने साथियो को अकेले ही यात्रा पर चल देने के लिए समझाया, लेकिन मिकेशिन बैल की तरह अडा रहा और कपिलोव और कोजलोव बहाने बनाते रहे। फलत अफनासी ने सारी कोशिशें छोड दी।

"अच्छी बात है, तो फिर हम इन्तज़ार करेगे।"

बैठे-ठाले व्यापारी करते ही क्या? वे गिरजे की प्राय सभी प्रार्थनाओ में उपस्थित रहने और देर देर तक बाज़ार में मटरगश्ती करने लगे। नोवगोरद में ऐसी कोई बात न थी जिसे देखकर उन्हें कुछ आश्चर्य होता, दातो तले उगली दबानी पडती—सामन्तो के मकानो की त्वेर जैसी नक्काशीदार छते, नौकरखाने और तरह तरह की कोठरिया, नगर की पतली पतली गलिया और उनके दोनो ओर बने हुए ऊचे ऊचे बाडे, पत्थरो और लकडियो के बने छोटे-बडे गिरजे।

बेशक, बाज़ार शानदार था। यहा नये दुर्ग की दीवालो के पास लगी हुई छतदार छोटी छोटी दुकानो की कई कतारे थीं, जिनमें दुनिया की हर चीज़ मिल सकती थी—तुर्की के मुलायम मुलायम बेजोड कालीन, फारस के विचित्र रगो वाले कपडे, पानी जैसे पारदर्शी, दूध जैसे सफेद और दूसरे रगो के वेनिस के शीशे—नीले, गुलाबी, हरे, सोने के काम के और कटावदार ऐसे ऐसे शीशे जिनपर फूल, घास और लम्बी लम्बी पूछवाली चिडियो की आकृतिया बनी हुई थी, गेनोआ के हथियार, जिनका रूप-रग, कारीगरी और सुन्दरता देखकर मनुष्य यह भी भूल जाता था कि उनमें मौत बरपा कर देने की भी ताक़त है, मूल्यवान रत्न, जो गाहको को दूकानो के भीतरी कमरो में दिखाये जाते थे, उत्तम कारीगरीवाले आरमीनियाई कटर, सुगन्धित शरावें जो आधी दुनिया का सफर करने के बाद वहा पहुची थी।

यह सारी चीजें ऐसे भिन्न भिन्न रगो में चमचमा रही थी कि सहसा उनपर आखें ही न टिक पाती। और वे महगी भी इतनी थी कि लोभी मिकेशिन चौंधिया गया था।

इतना ही नही, गेनोआ के थैले के लापरवाही से गन्दी जमीन पर फेंके हुए साधारण चिथडे तक का लोगो की निगाहो में मूल्य था, इसलिए कि वे समझते थे कि वह दुनिया के उस हिस्से से आया है जिसे उन्होने कभी नही देखा, इसलिए कि वह एक ऐसे देश की ओर सकेत कर रहा है जिसका जीवन रोचक और रहस्यमय था।

इस बाजार में क्या नही था—तरह तरह के कटर, घोडो के सोने के कामवाले खूबसूरत साज, मनुष्यो और पशुओ के मुख-चित्रो से जडे हुए तरह तरह के शीशे, चमचमाती हुई नगी तलवारे और उनकी खूबसूरत मूठें। पर इन सबसे विचित्र एक और चीज थी—वहा एकत्र तरह तरह के लोग।

कही किसी घोडा बेचनेवाले तातार का चिक्कट लबादा बिना किसी भेदभाव के किसी वेनिस निवासी के लाल और कीमती चोगे से टकरा रहा था, कही किसी नोवगोरद निवासी की लाल टोपी फारस की पगडियो के बीच झलक रही थी, कही भेड की खाल का कोट पहने हुए कोई आदमी किसी मखमली टोपीवाले से मोलतोल कर रहा था, तो कही पूर्वी देशो की रगीन दाढीवाला कोई आदमी किसी मठवासी से बतिया रहा था।

और वे क्या क्या बातें कर रहे थे? घोडों की हिनहिनाहट, फेरीवालो की चिल्ल-पो, लोगो की गाली-गलौज और तरह तरह की ध्वनियो से पूर्ण भिन्न भाषाभाषी मनुष्यो के उस समुद्र में यह जान सकना हसी-खेल न था।

बाजार में तरह तरह की खबरे आया करती थी—यहा आप यह तक जान सकते थे कि काज़ान के खान की सबसे छोटी बीवी को क्या क्या पसन्द है, यहा आपको शीराज के मौसम, गेनोआ निवासियो के बास्फोरस पर हमले, मास्को के राजा द्वारा भविष्य में निर्मित किये जानेवाले भवन के सबध में उसके इरादे और नोवगोरद की आम सभा के अन्तिम फैसले तक के बारे में जानकारी हो सकती थी। नतीजा यह कि कभी बाजार-भाव तेज़ हो जाते थे और कभी मन्दे, पुराने सौदे खत्म हो जाते थे और नये पटते थे, जिन व्यापारियो को ये खबरे पहले मिलती थी उनकी चादी थी और बाकी व्यापारियो का बेडा गर्क हो जाता था।

निकीतिन को लग रहा था जैसे वह काफी समय तक जगलो की खाक छान चुकने के बाद आखिर किसी ऐसी जगह आ गया हो जहा से उसे दूर दूर तक फैले हुए भूखड दिखाई पड रहे हो।

किन्तु वहा उसने किसी प्रकार की तिजारत न की। वह बाज़ार जाता और वहा तरह तरह की चीज़ें देखकर अपना अनुभव बढाता। एक दिन ख़रीतोन्येव को घोडा खरीदने की धुन सवार हुई। वह बाज़ार चल दिया। निकीतिन भी उसके साथ हो लिया। घोडो की हाट, बाज़ार के अन्त में एक बडे-से चौरस चरागाह पर लगती थी। निकीतिन ने भी घोडे ख़रीदे थे लेकिन वह घोडो का माहिर न था और प्राय लोगो की सलाह पर ही घोडे ख़रीदता था। ख़रीतोन्येव इस मामले में उस्ताद था। निकीतिन घोडो के बारे में उसकी बाते बडे ध्यान से सुना करता—वह फौरन जान जाता कि घोडा कैसा है, जवान है या बूढा, उसे नशा तो नही खिलाया गया है, वह अधा तो नही है, उसका मिज़ाज कैसा है

"तुम इस धोखे में न आना कि घोडा कैसे पटपटाकर पैर रख रहा है," खरीतोन्येव जैसे अपनी बात से सन्तुष्ट होकर बोलता ही रहा, "मेरे भाई, इसका मतलब है कि उसे कुछ पिला दिया गया है। अजी घोडे खरीदना किसी ऐरे-गैरे का काम नही। इसके लिए तो राई-रत्ती जानना पडता है, यह देखो, वह देखो अच्छा, देखना मैं कैसे खरीदता हू।"

खरीतोन्येव का आत्मप्रशसा का स्वर निकीतिन को अच्छा न लगा, फिर भी वह बडे सयम से सुनता रहा–"उसे कहने दो। आखिर यह भी तो एक कला है। न जाने कब काम आ जाये।"

एक युवक तातार एक घोडे की लगाम पकडे खडा था। घोडे का रग भूरा था और वह बराबर थरथराता जा रहा था। अफनासी ने घोडे की लाल लाल आखो, सिकुडी हुई गर्दन और काठी पर एक निगाह डाली और खरीतोन्येव को कुहनियाते हुए सकेत करने लगा। परन्तु खरीतोन्येव ने निषेध-सा करते हुए अपना सिर हिला दिया–

"मुझे घोडा लेना है गाडी के लिए, सिपाहियो की तरह उसपर चढने के लिए नही।"

फिर भी अफनासी ने खरीतोन्येव से घोडे को सिर से पैर तक देखने के लिए कहा। खरीतोन्येव बडी स्थिरता से आगे बढा और जैसे अनिच्छा से मुडकर ऐसे देखने लगा जैसे सकोच कर रहा हो। फिर हाथ हिलाते हुए तातार से पूछने लगा–

"यह घोडा बूढा तो नही?"

"बूढा? बूढा क्यो होगा? देखते नही–अभी चार ही साल का तो है!"

खरीतोन्येव घोडे के इर्द-गिर्द दाहिने-बायें घूमा और उसकी चमचमाती हुई काठी थपथपाते हुए कहने लगा–

"क्या लोगे इसका?"

"जब घोडा देखा ही नही तो कीमत क्यो पूछते हो?" तातार ने तेज आवाज में कहा, "देखो तो पहले! वह खुद ही सब कुछ बता देगा!"

"हा, हा, अच्छा देखता हू," खरीतोन्येव धीरे से बोला, "देखता हू   पिडलिया तो सूजी लगती है।"

"झूठ बोलते हो!"

"झूठ क्यो! और दात तो लगता है जैसे रिते हुए है।"

तातार ने घोडे का सिर और उसका ऊपरी ओठ उठाया और उसका जबडा खोला, "दात तो इसके जवान लडकी के जैसे है! चाहो तो हाथ में ले लो!"

उनके चारो ओर उत्सुक लोगो की एक भीड-सी लग गयी। खरीतोन्येव ने आस्तीनें चढायी, अपना हाथ घोडे के मुह में डाला और वहा जाने क्या क्या टटोलने लगा, फिर हाथ कोट से पोछ लिया। उसने घोडे की नाक में फूका, एक एक करके चारो खुरो का निरीक्षण किया और जोडो का मुआइना करने लगा।

तातार क्रोध से और जैसे उसका उपहास करते हुए उसकी सारी चालें देखता रहा। उत्सुक लोग सिमटकर खरीतोन्येव के पास आ गये। निकीतिन समझ रहा था कि खरीतोन्येव तातार पर हसेगा लेकिन खरीतोन्येव तो उसकी आशा के विपरीत गम्भीरतापूर्वक कहने लगा—

"अच्छा घोडा है, बहुत अच्छा!"

तातार ने विजय के गर्व से सिर ऊपर उठाया।

"ठीक कहते हो! तो फिर खरीद लो न! घोडा पसन्द आ गया है तो ले लो, सस्ते में दे दूगा!"

उसने कीमत बतायी और फिर एक सर्द आह-सी भरते हुए खरीतोन्येव कहने लगा—

"नही। नही ले सकता।"

"क्यो? महगा है? कहो न, महगा लगता है क्या?!"

"नही, महगा नही है। सस्ता ही है। लेकिन मेरी जेब में इतने भी पैसे नहीं।"

"फिर क्यो खोपडी चरी मेरी? बेचारे घोडे को भी कितने नाच नचा डाले! उल्लू का पट्ठा!" तातार बड़बड़ाने लगा।

खरीतोन्येव निकीतिन को आख मारता और जैसे खेद से अपने दोनो हाथ हिलाता हुआ वहा से चल दिया। उत्सुक लोगों के पीछे से पीली टोपीवाला एक आदमी घोडे की ओर बढता हुआ दिखाई दिया।

"सचमुच घोडा बढिया है?" खरीतोन्येव के साथ कुछ आगे निकल जाने पर निकीतिन ने सवाल किया।

"हा, वैसे ढग तो नही," उसने जवाब दिया, "पर उसके पिछले पैर टेढे है। उसके लिए इतनी कीमत देना ठीक नहीं।"

"लेकिन तुमने तो कहा था घोडा सस्ता है!"

"उस पीली टोपीवाले को देखा था तुमने?" खरीतोन्येव ने प्रश्न किया, "मैंने तो उसे सुनाने के लिए कहा था। वह बेवकूफ सामन्तो के लिए घोडे खरीदता है। जानता-बूझता कुछ भी नही—तो खरीदे वही यह घोडा! सामन्तो के पैसे बरबाद हो तो मुझे नही खलता!"

दोनो हस दिये।

दोनो ने एक घोडा खरीदा। बडा सुन्दर तो न था लेकिन था बडा मजबूत। खरीतोन्येव ने निकीतिन को उसका निरीक्षण करने

के लिए कहा। अफनासी ने घोडे की उम्र और उसके दोप सभी कुछ ठीक ठीक बता दिये।

"हु-ह!" खरीतोन्येव ने आश्चर्य से कहा, "देखनेवाले तुम्हे देखते ही कह पडेंगे कि तुम आलतिन ओरदा में खेले-खाले वही बडे हुए!"

अफनासी गदगद हो गया।

इवान लप्शोव था कि उसे गिरजो में ही मजा आता। वह वहा प्रतिमाए, धातु के बर्तन और दीवाल-चित्र आदि जाने क्या क्या देखा-भाला करता। जब निकीतिन को थोडा-बहुत समय मिल गया तो वह इवान को दूकान पर ले गया और उसे समुद्र पार से आयी हुई चीजें दिखाने-भलाने लगा।

डिजाइनदार शीशे, छोटी छोटी अद्‌भुत पुतलिया और चित्रित तश्तरिया देखकर इवान की आखें चौंधिया गयी।

एक दूकानदार गेनोआवासी था। दुबला-पतला, हड्डी का ढाचा। वह इवान की एक एक गति देख देखकर मुस्करा रहा था—इवान उसकी चीजें बडी सावधानी से छूता, उन्हे ऐसे देखता मानो उनका हर रग, चमचमाता हुआ प्रत्येक वस्त्र, पात्रो पर मुस्करा उठनेवाली पच्चीकारी अपने मन की गहराई में घोल लेना चाहता हो।

"'भाई?" गेनोआ निवासी ने इवान की ओर सिर हिलाते हुए पूछा।

"भाई, भाई!" घबडा-से गये इवान के कन्धे थपथपाते हुए निकीतिन ने मजाक-सा करते हुए कहा।

निकीतिन और गेनोआ निवासी दूकानदार विचित्र खिचडी भापा में बातचीत करने लगे। इस भापा का जन्म कास्पियन और काला सागर जानेवाले व्यापारी मार्गों पर ही कही हुआ होगा। इसमें

रूसी, तातारी, इतालवी और फारसी भापाओ के शब्दो का खुलकर प्रयोग होता था। यह एक ऐमी भापा थी जिसे छोटे-मोटे सौदागर तक जानते थे।

दूकानदार दोनो को दूकान के भीतरी कमरे में ले गया, फिर उकड़् बैठा जिससे उसके घुटनो से खर्र खर्र की आवाज़ आने लगी। दूकानदार ने सन्दूक में से कोई चीज़ निकाली और बड़ी सावधानी से उसे खोलने लगा। यह तावे की एक नमकदानी थी और कला की दृष्टि से एक अद्भुत चीज़—उसपर एक हस के सामने एक नग्न औरत का चित्र नक्काशी करके बनाया गया था।

निकीतिन ने इवान की ओर देखा और चकित-सा रह गया। इवान का मुह खुला रह गया और गाल लाल हो उठे। गेनोआवासी ने नमकदानी युवक व्यापारी के हाथो में थमा दी। इवान ने उसे हथेली पर रखकर चारो ओर घुमाया।

निकीतिन ने भी नमकदानी पर एक दृष्टि डाली। क्या कहने! कितनी अद्भुत चीज़ है यह अगरचे इसे इसलिए मेज़ पर नही रखा जा सकता कि इसपर बेशर्मी की मुहर लगी है।

किन्तु इवान के चेहरे से स्पष्ट था कि उसकी निगाह निकीतिन से अधिक गहराई में देख रही थी।

"हस ने तो लडकी को डरा दिया है," लज्जा से लाल पडते हुए इवान ने कहा, "और वह खुद निडर, अटल "

"यह कारीगरी है किसके हाथ की?" निकीतिन ने प्रश्न किया।

"एक बडे कारीगर की। उसे मौत के घाट उतार दिया गया था।"

"क्यो? क्या किया था उसने?"

"वेनिस के गरीबो ने बगावत की थी और उसने उनका साथ दिया था।"

"सामन्तो के खिलाफ, है न?"

"हा, सामन्तो के खिलाफ!"

अब निकीतिन नमकदानी को एक नये पहलू से देखने लगा। उसपर एक गर्वीले हस और एक व्यथित स्त्री के नमूने बने हुए थे।

"बेचारा कारीगर!" निकीतिन ने सिर हिलाते हुए कहा।

"उसकी खुशकिस्मती ही कहो कि एकदम मारा गया!" सहसा गेनोआवासी घृणा से कहने लगा, "विजेताओ को बराबर यह अफसोस बना रहा कि वे उसे जिन्दा न पकड सके। वे शैतान उसे सीसे की छतवाली मीनार में बन्द करके रखते जहा बीस बीस साल के जवान एक एक साल में बूढे हो जाते है।"

गेनोआवासी शान्त हो गया और नमकदानी मखमल में लपेटते हुए इवान से पूछने लगा—

"तुम भी ऐसी ऐसी पच्चीकारी कर सकते हो?"

"यह चित्र बनाता है!" निकीतिन ने कहा।

"प्रतिमाए? मैंने तुम्हारे कलाकार अन्द्रेई रुब्लेव की कृतिया देखी थी। उसे धरती से प्यार नही है, उसने जैसे उससे अपना सबध ही तोड लिया है। उसके देवी-देवता मनुष्यो के कष्टो को नही जानते हैं तुम भी प्रतिमाए बनाते हो?"

इवान ने हामी-सी भरते हुए सिर हिलाया।

"लाओ न फिर उन्हे मेरे पास। मुझे भी दिखाओ। मेरा नाम है निकोलो पिचारदी। मेरे दोस्तो का ख्याल है कि मैं छेनी और तूलिका का भेद समझता हू, उनका रहस्य जानता हू।"

निकोतिन और इवान चल दिये। निकोतिन ने उसे समझाया कि यह गेनोआवासी वेनिसवासियो से इसलिए घृणा करता है कि इन लोगो ने सारी समुद्री तिजारत अपने हाथो में ले ली थी। बस, निकोलो की बात यहीं रह गयी। पर कुछ समय बाद निकोलो ने खुद जाकर अफ़नासी को बाज़ार में ढूढ लिया। उसने उसे दूर से ही पुकारा।

निकोलो भीड को चीरते हुए अफनासी की ओर बढने लगा। उसकी टोपी ज़मीन पर गिरते गिरते बची। वह वसन्ती गौरैया की तरह चहकता-सा लग रहा था।

"मैंने तुम्हारे भाई की बनायी प्रतिमाए देखी थी!" निकोलो चिल्ला पडा, "इस कला में वह अभी बच्चा ही है। हा, हा, बच्चा! लेकिन फिर भी जिसने उसकी माता मरियम को देखा है वह बिना उसे प्यार किये नही रह सकता!"

बात इतनी अप्रत्याशित थी कि अफनासी कहकहा लगाकर हसने लगा।

"निकोलो, तुम ज़रूरत से ज्यादा तारीफ कर रहे हो उसकी माता मरियम प्यार हे भगवान!"

निकीतिन देर तक हसता रहा। निकोलो ने हाथ झुला दिये— लग रहा था जैसे वह किसी बात से सन्ना गया हो।

अफनासी ने अपना हाथ पिचारदी के कधे पर रख दिया—

"भाई माफ करना मेरी यह हसी। तुमने बडी अद्भुत बाते की हैं तुम्हें प्रतिमा पसन्द आयी? आयी न?"

निकोलो ने इवान की कला पर आश्चर्य प्रकट करते हुए पूरे विश्वास से कहा—

"उसे ज़रूरत है अभ्यास की, सीख की!"

"तो क्या उसे इसके लिए किसी मठ में जाना चाहिए?" निकीतिन ने गम्भीरतापूर्वक प्रश्न किया।

"क्यो, मठ में क्यो?"

"फिर इस प्रकार की प्रतिमाए बनाने की शिक्षा और कहा दी जाती है?"

गेनोआवासी जैसे विचारो में डूब गया।

"मठो में हरगिज नही!" वह बोला, "मै तुम्हारे मठो और मठवासियो को अच्छी तरह जानता हू। उनके चक्कर में पडकर अपनी प्रतिमा तक से हाथ धो बैठेगा वह! समझे? उसकी माता मरियम के गालो में आज जो लाली है, जवानी की जो गहराहट है, जो उभार है, वह भी न दिखाई देगा नही उसे मठो में भेजना ठीक नही!"

ईसाई धर्म के बारे में बोलने का इस विदेशी का अजीब ढग निकीतिन को बुरा लगा।

"हमारे मठो में एक से एक बुद्धिमान, एक से एक विद्वान लोग पडे है," उसने रुखाई से जवाब दिया, "वे पाप नही करते, लोगो को पुण्य का रास्ता दिखाते है।"

और फिर आगे कहता गया–

"और फिर जारग्राद से पादरी और धर्मात्मा लोग हमारे यहा मास्को आते है, तुम्हारे यहा नही जाते!"

गेनोआवासी ने अफनासी और इल्या कोजलोव पर एक दयापूर्ण-सी नजर डाली और कोट का लैसदार कालर पकडे और टोपी सिर पर सरकाते हुए न जाने क्या क्या बडबडाता हुआ एक ओर चल दिया।

शाम के समय अफनासी लप्शोव के पास आया और जैसे अपने पर सयम न रखते हुए उससे ऐसे बाते करने लगा मानो उससे नाराज हो–

"अपनी प्रतिमा बेचना चाहते हो? यही बात है न? बाज़ार ले गये थे उसे?"

इवान के गाल लाल हो गये। उसने सिर झुका लिया और हाथ मलने लगा।

"मुझे भी तो दिखाओ! देखू तो कौन सुरखाब के पर लगे हैं उसमें?"

इवान ने कोई जवाब न दिया बल्कि सिर और भी झुका लिया।

आखिर वह ऐसा हठ कर क्यों रहा है? अफनासी इसका कारण न जान सका।

सुबह निकीतिन ने, हमेशा की तरह, इवान को अपने पास बुलाया। इवान खुश हो गया, उसके ओठो पर मधुर मुस्कराहट हमेशा की ही तरह खेल रही थी।

"खैर, छोड भी दो इस प्रतिमा की बात!" अफनासी ने सोचा।

उनकी दोस्ती फिर जैसी की तैसी हो गयी और ऐसा लगा जैसे उस क्षणिक मनमुटाव का उनपर कोई असर न पडा हो। किन्तु निकीतिन गेनोआवासी के प्रशसा भरे शब्दो को न भूल सका और उसे उसकी याद हो आयी। हा, अब वह इवान को भी आदर की दृष्टि से देखता।

इस परिवर्तन ने इवान को खिन्न कर दिया था।

किन्तु नीज्नी नोवगोरद में सब कुछ शान्ति से ही चलता रहा हो, ऐसी बात न थी। वहा कभी कभी अप्रिय घटनाए भी हो जाती थी।

एक दिन बाज़ार में बडी भीड थी। सभी उत्सुक थे, सभी चिन्तित। निकीतिन, लप्शोव, मिकेशिन और इल्या कोज़लोव भी इसी भीड में मिल गये थे। वे कन्धे झटकारते और हाथो से भीड चीरते हुए

आगे बढ रहे थे। आखिर वे एक ऐसी जगह पहुचे जहा किसी को मौत की सजा दी जानी थी।

सजा कार्रवाइया शुरू हो चुकी थी। एक आदमी सफेद सूती पैंजामा और कमीज पहने लकडी के तख्ते के बीचोबीच खडा था। वह एक खम्भे से बधा था। उसका मुह उसी खम्भे की तरफ था।

तख्ते के एक किनारे एक मुशी खडा था—चुपचाप, शान्त। उसके हाथ में एक सफेद हुक्म था, जो पढा जा चुका था।

वही एक जल्लाद भी था। नाटा कद, चपटी नाक, शरीर पर लाल क़मीज़। वह भीड में किसी को देखकर खिलखिलाकर हस रहा था और अपना कोडा झटकार रहा था। मुशी ने सिर हिलाकर इशारा किया। जल्लाद ने वाल फटकारे, हसी बन्द की, दो वार नाक सिसकारी, दूरी का मन ही मन अन्दाज लगाया और कोडा उठाया

जैसे ही मजबूत चमडे का कोडा हवा में सर्राया कि भीड को साप सूघ गया। खम्भे से बधा हुआ आदमी कापा और उसके मुह से एक भयानक चीख निकल गयी। कोडे के पहले ही हाथ ने उसकी खाल उधेड दी थी। खून के छीटे तख्ते पर छलक आये थे और उस बदनसीब के पैंजामे पर जम गये थे।

"मर जायेगा " निकीतिन के पास खडा हुआ कोई आदमी बोल उठा। उसकी आवाज में दर्द था। देखने में दुबला-पतला और छोटा, शरीर पर किसानो वाला भूरा-सा कोट, झुर्रियोदार छोटा सा चेहरा। लगता था जैसे सर्दी से काप रहा हो। वह तख्ते पर आखें गडाये था।

"इसे क्यो मारा जा रहा है?" निकीतिन ने उस आदमी से प्रश्न किया।

आदमी ने आखें वन्द कर ली और कोई जवाब न दिया। दूसरी वार फिर कोडा सर्राया और फिर पिटते हुए आदमी के मुह से एक दर्दनाक चीख निकली, लेकिन वह तुरन्त ही चुप्पी में वदल गयी

उस आदमी ने आखें खोली। उसका चेहरा फक पड गया था।

"दूसरी वार मे तो   " उसने कहना शुरू ही किया था कि कोडा एक बार फिर सर्रा उठा, किन्तु इस वार कोई चीख न सुनाई पडी।

"आखिर क्यो?" अपने ऊपर सलीव का निशान वनाते हुए निकीतिन ने एक वार फिर पूछा।

"यह एक सौदागर था," धीरे धीरे उस आदमी ने कहना शुरू किया, "उसने उधार माल लिया था, लेकिन तिजारत में उसे नुक्सान हुआ और उसके पास मालिक को देने के लिए एक पाई तक न रह गयी। अव इसके लिए एक ही रास्ता था–गुलाम वनना। लेकिन उसका भरा-पूरा परिवार है। उसने भाग जाने का निश्चय किया, पर पकडा गया   "

निकीतिन सलीव का निशान वनाने लगा।

"हे भगवान, रक्षा करो!" उसके ओठ जैसे स्वय वुदवुदा उठे।

जव मुजरिम के वन्धन खोले गये तो उसका पिटा हुआ शरीर खम्भे के पास गिर पडा। जल्लाद ने उसके मुर्दे-से शरीर पर भेड की एक तुरत उतारी हुई खाल उढा दी।

"इससे वह वचेगा नही," आदमी दुखी होकर वोल उठा, "हत्यारे ने मारते मारते उसकी हड्डिया तक पीस डाली   अव तो उसे कब्र में ही दम मिलेगा   "

भीड धीरे धीरे छटने लगी। निकीतिन ने इवान पर एक नजर डाली। उसका चेहरा पीला पड गया था। निकीतिन ने उसके कधे जोर से दवाये।

मिकेशिन भी फक पड चुका था। उसके ओठ तेजी से काप रहे थे। उसके मुह से एक शब्द तक न निकल रहा था।

जब वे उस भयानक तख्ते से दूर हट आये, तब कही इवान का मुह खुला। बोला—

"उसे भागना नही था—कितनी दर्दनाक है ऐसी मौत!"

"और गुलाम बनकर रहना तो और भी बुरा है!" निकीतिन ने बात काटी। उसकी आवाज तेज थी, "बिना आजादी के आदमी वैसा ही है जैसे बिना पख का पछी।"

इस दर्दनाक काड के बाद निकीतिन उदास-सा रहने लगा। शेरवानशाह के राजदूत की प्रतीक्षा करते करते वह थक गया था। रोज प्रातकाल शरद की सरदी और अब-तब हो जानेवाली बूदा-बादी से वह और भी परेशान हो उठा था। नगर में जैसे उदासी छा गयी थी।

"आखिर यह दुष्ट हसन-बेग कहा गया?" व्यापारी गुस्से में एक दूसरे से कहने लगते।

मिकेशिन ने खीसें निकालना छोड दिया, वह अपने सहयात्रियो के साथ अधिक समय रहने लगा। वह प्राय निकीतिन की ओर आखें गडाये देखा करता। सहसा एक दिन उसने, अकेले में, निकीतिन के सामने यह स्वीकार किया कि काशीन ने उसे इसी लिए यहा भेजा है कि वह सारी तिजारत पर निगाह रखे और निकीतिन ने मिकेशिन का कालर पकडकर इतने जोर से झटका कि मिकेशिन के दात तक बज उठे।

"तो मैं चोर हू, है न?" निकीतिन जोर से चिल्लाया, "तुम्हें शरम कैसे नहीं आती?"

लेकिन मिकेशिन अपनी बात कहता गया—

"सुनो हम काशीन को अपने दाम बतायेंगे, और जो कुछ बचेगा वह हम ले लेंगे, आधा आधा बाट लेंगे। है न? मैं कह दूगा कि यही दाम ठीक थे "

निकीतिन मकान में चहलकदमी कर रहा था। उसने जैसे ही ये शब्द सुने कि जहा का तहा खडा रह गया, सन्न।

"क्या?!"

मिकेशिन बेंच पर दूर कोने की ओर धीरे धीरे बढा और कधो के बीच सिर को समेटते हुए दोनो हाथो में मुह ढक लिया।

"हे-हे," उसकी डरी-सी आवाज़ जैसे झनझना रही थी, "ओह तो तुमने मेरी बात का यकीन भी कर लिया, मै तो मज़ाक ही कर रहा था सुना तुमने हे-हे! मैं तो मज़ाक कर रहा था!"

"अच्छा!" निकीतिन ने बात काटते हुए कहा, "लौटने पर त्वेर में बात करेंगे।"

इस घटना के तीसरे दिन खरीतोन्येव घाट से होता हुआ घर आया, बोला–

"राजदूत आ गया! लेकिन अकेला नहीं है। उसके साथ मास्को के व्यापारी भी है और पूर्वी देशो के भी। उसका अपना जहाज़ बडे रईसाना ढग का है। तीन तो बाज़ है उसपर, जो तोहफे के रूप में शेरवानशाह की पत्नी के लिए भेजे गये है!"

अपने मित्रो के साथ निकीतिन तुरन्त बोल्गा की ओर चल दिया। ये लोग खुशकिस्मत थे। मास्को के व्यापारियो में रगिनोव को अपना एक परिचित भी मिल गया, जिसने अफनासी का परिचय अपने दल के प्रधान से करा दिया। प्रधान का नाम था मत्वेई र्‌याबोव। उसकी आखें थी काली काली और वह खुद था बैल जैसा।

निकीतिन को र्‌यावोव अच्छा लगा। र्‌यावोव हट्टा-कट्टा आदमी था। क़ायदे का और वक्त का पावन्द। एक एक वात तौलकर कहता। उसने त्वेर के व्यापारी की वाते वडे ध्यान से सुनी। और जब उसे यह मालूम हुआ कि अफनासी को तातारी भाषा अच्छी तरह आती है, वह कई वार जारग्राद भी जा चुका है तो वह कुछ सोचने लगा।

"अच्छा सुनो," र्‌यावोव वोला, "वात यह है हम सिर्फ तिजारत के लिए ही तो जा नही रहे हैं। हमें वडे राजा ने आज्ञा दी है कि हम ख्वालीन के पार जाकर वहा के वाजारो में विकनेवाला माल देखें-भाले। हमें तो वे रास्ते जानने है जिनसे होकर सभी प्रकार का कीमती माल लाया ले जाया जाता है। अगरचे हमारे साथ काफी आदमी है, सभी एक से एक वहादुर, एक से एक साहसी, लेकिन अभी तक उन्होने भी दूर देशो की यात्रा नही की है। मैं तुम्हें अपने साथ ले चलूगा। लेकिन तुम्हे यह तय करना है कि तुम लोग हमारे साथ सराय के पार तक चलोगे, ख्वालीन के पार? अगर भगवान ने हमें सफलता दी तो वडे राजा हमें अच्छा-खासा इनाम भी देंगे।"

निकीतिन ने सिर ही पर अपनी टोपी सरकायी। किसे उम्मीद थी कि हमें ऐसा मौक़ा भी मिलेगा! उसने तो सोचा था कि उसे सराय में आगे चलने के लिए अपने लोगो को मनाना पडेगा। लेकिन ये तो खुद उसे ख्वालीन चलने को कह रहे हैं। शावाश, मास्कोवासियो!

"देख लेगे!" निकीतिन वोला, "मेरी क्या, मेरे लिए कोई वात नही, पर मै आगे चलने के लिए अपने साथियो को समझाऊगा।"

"मुझे कोई जल्दी नही है," उससे सहमति-सी प्रकट करते हुए र्‌यावोव वोला।

फिलहाल उन्होने साथ साथ रहने का निश्चय किया। र्‌यावोव ने भी वचन दिया कि वह राजदूत को समझा देगा।

निकीतिन ने सफ़र की तैयारियां शुरु कर दीं। सभी खुश थे। ख़रीतोन्येव भी प्रसन्न था। उसने सौदागरों को एक घोड़ा दिया और उसकी पत्नी ने उनके लिए समोसे, मांस, लपसी वग़ैरह तैयार की।

"खा लो, खा लो," वह कहती रही, "जब अनाज के इर्द-गिर्द बैठोगे तो पेट में चूहे कूदेंगे।"

त्वेर-व्यापारियों की नाव, ज़ंजीर से बंधी हुई, अपनी जगह पर ही खड़ी थी। उसका आधा भाग पानी में और आधा रेत में था। व्यापारियों ने उसे पानी में सरकाया, उसपर माल लादा और मास्को के लोगों से बातचीत करने लगे। अन्ततः उन्हें गवर्नर की गाड़ी आती दिखाई दी। उसमें से धीरे धीरे हसन-बेग बाहर निकला। शरीर पर फर का कीमती कोट, सिर पर पगड़ी। फिर किसी नौकर की मदद से वह एक कमज़ोर-सी पुलिया पर होता हुआ अपने जहाज़ में चला गया।

"अच्छा, चलें, मेरे शेरो," निकीतिन चिल्लाया, "हम चल पड़े अपने सफ़र को। हे भगवान तेरे बड़े बड़े हाथ हैं! नोवगोरद, तेरे आगे हम सिर झुकाते हैं, तेरी मिट्टी को नमस्कार!"

इस सुबह, जब निकीतिन नीज़्नी के सफ़ेद क्रेमलिन के आगे सिर

झुकाये खडा था, उस समय यह विचार उसके मन में भी न आया था कि वह नोवगोरद की मिट्टी को अन्तिम वार प्रणाम कर रहा है, अन्तिम वार।

यात्री दोपहर होते होते तातारो की राजधानी सराय-वेर्के पहुच गये।

मत्वेई र्‌यावोव ने नीज्नी में जो कुछ कहा था उससे सभी व्यापारी व्याकुल हो रहे थे।

निकीतिन ने मत्वेई की वात ज्यो की त्यो अपने साथियो को कह सुनायी—यह तक न छिपाया कि उसने ख्वालीन से भी आगे जाने का निश्चय कर लिया है। वस उसने यह वात जरूर न कही कि उसने उससे भी पहले ख्वालीन से आगे जाने की सोची थी।

पहले तो त्वेर के व्यापारी यही समझते रहे कि अगर सराय तक पहुच जायें तो भी वहुत है। और चाहिए भी क्या! किन्तु रास्तो में कोई मुसीवत न आयी और इससे उनके दिलो में सफलता की आशा अगडाइया लेने लगी। फिर, पूर्व के व्यापारियो की कहानियो और मास्को के सौदागरो के वादो ने व्यापारियो के दिलो में और भी उत्तेजना पैदा कर दी थी।

जीगुली के वाद एक पडाव पर व्यापारियो ने निश्चय किया—यदि सराय तक कोई खास घटना न घटी तो फिर हम लोग हसन-वेग के साथ दरवद तक जायेंगे। ज्यादा समय भी वरवाद न होगा और अच्छा लाभ भी कमा लेंगे। वहा रूसी माल आलतिन ओरदा की वनिस्वत ड्‌योढी कीमत पर विकता है।

धूप और हवा के कारण इवान लप्शोव का चेहरा खुरखुरा हो रहा था। वह नाव की नासिका में ही वैठा रहा। वह चौरस स्तेप के वीच वसे हुए इस विचित्र नगर—सराय वेर्के—को आख-भर देख लेना चाहता था। इस नगर के वारे में उसने न जाने क्या क्या सुन रखा था।

दूर से सराय सफ़ेद और रंगीन टीलों की क़तार की तरह लगता। ये टीले एक के बाद एक, तरतीब से, रखे हुए से लग रहे थे। नगर के चारों ओर कोई दीवालें न थीं मानो वहां के रहनेवालों को दुश्मनों का कोई डर ही न हो। यह बात तत्काल ही त्वेर व्यापारियों की आंखों में बस गयी। उन्हें वहां कोई हरियाली न दिखाई दी और इस कारण उन्हें और भी आश्चर्य हुआ। थोड़े-से पेड़ इधर-उधर खड़े थे।

नाव कुछ और आगे बढ़ी और नगर की सफ़ेद सफ़ेद मीनारें दिखाई पड़ने लगीं। इवान ने उन्हें गिनना शुरू किया और साठ तक गिन गया, लेकिन फिर उसकी गिनती गड़बड़ा गयी और वह आगे न गिन सका। एक मीनार पर उसे सोने के कामवाला सलीब भी दिखाई दिया। वह उसे बड़े ध्यान से देखने लगा। ओह, यह तो ईसाइयों का सलीब है।

"चाचा अफ़नासी, गिरजा!" इवान ज़ोर से बोल पड़ा।

निकीतिन ने वहीं से जवाब दिया—

"और ध्यान से देखो तो तुम्हें वहां के बड़े पादरी भी दिखाई देंगे!"

"अच्छा, सचमुच, हमारा पादरी?"

"हां, यहीं, यहां सब कुछ है।"

"और ख़ान का घर कहां है?"

"उधर जहां तीन मसजिदें हैं। वह ऊंची-सी छत देख रहे हो?"

"हां, हां, वह?"

"वही। कैसा सुन्दर मकान है। चारों तरफ़ बाग़-बगीचे।"

"लकड़ी का है?"

"नहीं, उनके मकान पत्थर के होते हैं।"

"फिर वह ठंडा नहीं रहता क्या?"
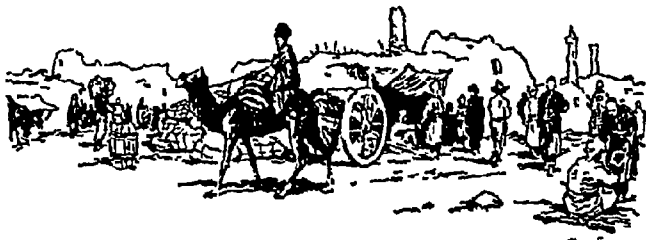
"आखिर वहा लोग रहते ही हैं। और वह दाहिनी तरफ जहा नीला गुम्बद है, देख रहे हो क्या है—बाज़ार। ऐसे वहा कई बाज़ार हैं।"

"यहा रूसी भी रहते हैं? यह पराया मुल्क जो है "

"इस नगर के एक हिस्से में हमारे ही लोग रहते हैं। नगर में हर कौम के लिए एक एक हिस्सा अलग कर दिया गया है।"

"कितनी विचित्र बात है मैं तो यहा कभी न रह सकू।"

"जरूरत आ पडे तो रहोगे ही। यहा जो रूसी रह रहे हैं उनमें बडे मालदार भी हैं।"

"तातारो के साथ रहते हैं?"

नावें घाट पर लगी और लोग उनकी तरफ बढने लगे। तावे जैसा रग, अधनगे तातार मुसाफिरो से उनके बोरे लेने की कोशिशें कर रहे थे और दोनो हाथ झुलाते हुए नगर की तरफ इशारे कर रहे थे।

"इन्हे हटाओ भी यहा से!" निकीतिन चिल्लाया, "हमें किसी की मदद की जरूरत नही। ये करेंगे क्या—माल चुरायेंगे!"

हमाल बडबडाते हुए वहा से हट गये। उनकी जगह दूसरे लोग आ डटे। ये भी तातार थे। तरह तरह के आदमी—कुछ फरो के कोट और चोग़े पहने हुए थे, तो कुछ की नाक टेढी थी, रग सावला था

और वे सफ़ेद कपड़ों में थे। उनकी बातें किसी के भी पल्ले न पड़ रही थीं। कुछ दूसरे भेड़ की खालवाली ऊंची ऊंची टोपियां डाटे थे।

लाल बालों वाले वास्का ने एक को धक्का मारकर हकाल दिया।

"हम सौदागरी नहीं करते!" निकीतिन चिल्लाया, "हम सौदागरी नहीं करते! हम खान के यहां जा रहे हैं!"

खान का नाम सुनते ही वे उजड्ड सौदागर इधर-उधर तितर-बितर हो गये।

राजदूत ने निकीतिन और ल्यावोव को बुला भेजा। अफ़नासी और सर्गेई ने अपने साथियों को हुक्म दिया कि वे नावें छोड़कर कहीं न जायें, और खुद राजदूतवाले जहाज़ में चले गये। डेक पर वास्का बाज़ों के पिंजड़ों पर ढका हुआ कपड़ा उतार रहा था और पक्षियों जैसी बोली बोल रहा था। चारों ओर बाज़ों की बीट की गन्ध उड़ रही थी। रूसियों ने एक दूसरे की ओर देखा और हंस दिये।

"राजदूत कैसे मज़े में सफ़र कर रहा है?"

"मैं तो जा रहा हूं शहर में," हसन-बेग बोला, "वहां खान या उसके वज़ीर हमें फ़रमान देंगे और तब हम लोग आगे का सफ़र कर सकेंगे। तुम्हारे काग़ज़ात कहां हैं?"

निकीतिन और ल्यावोव ने हसन-बेग के हाथों में गोल लिपटे हुए काग़ज़ात थमा दिये।

राजदूत शीघ्र ही वहां से चला गया।

राजदूत के जहाज़ पर से सुनाई पड़नेवाली वास्का की गाली-गलौज व्यापारियों को बड़ी नीरस लग रही थी। वे अपनी नाव पर बैठे नदी पर से किनारे की ओर देख देखकर उकता रहे थे, ऊब रहे थे। किनारे पर लोगों की भीड़ थी, लम्बे कानों वाले गधे रेंकते हुए भाग रहे थे और गम्भीर-से लगनेवाले ऊंट इठलाते हुए चक्कर लगा रहे थे।

"कैसे विचित्र है ये जानवर," इवान साश्चर्य बोल उठा।

"सामन्तो जैसे चलते है ये," कपिलोव ने हसते हुए कहा, "इल्या, अच्छा हो अपने बेटे को इनके दर्शन करा दो!"

स्तेप से आनेवाली हवा के साथ धूल भी बहती चली आ रही थी। वे लोग नाव पर बैठे बैठे ऊब चुके थे।

इवान लप्शोव ने किनारे तक जाने के लिए निकीतिन की अनुमति ले ली। और वह चला गया।

दूर से निकीतिन ने इवान को जाते हुए देखा—कैसे एक तातार ने उसे रोका, कैसे उसने उससे कुछ पूछा और कैसे इवान ने जवाब दिया। तातार ने इवान के कधे थपथपाये और नावो पर तिरछी नज़र डालता हुआ वहा से दूर चला गया।

"इवान, इधर आओ!" अफनासी ने उसे पुकारा।

इवान दौडता हुआ निकीतिन के पास चला आया।

"क्या बात है?"

"तातार तुमसे क्या पूछ रहा था?"

"यही कि कौन जा रहा है।"

"तुमने क्या कहा?"

"कहा, हम रूस से आये है और शेमाखा के राजदूत के साथ जा रहे है "

"क्यों कहा?"

"उसने पूछा जो था।"

"कैसे दूध पीते बच्चे हो! किसी से कुछ भी नही कहना चाहिए!

तातार को हम लोगो से क्या मतलब ? वे तो हमसे सिर्फ पैसा ऐंठना जानते है।"

"अगर इतना कह ही दिया तो कौनसी खास बात हो गयी, चाचा अफनासी ?"

"तुम नही समझते! यह पराई जमीन है, हम विदेश में है," निकीतिन सख्ती से बोला, "यहा हमारे दोस्त कम है। यहा तो हमेशा कान खडे रखना चाहिए "

इवान परेशान-सा अपनी जगह पर खडा रहा। निकीतिन ने मुस्कराते हुए उसकी छाती में हाथ गडा दिया–

"अच्छा अच्छा, जाओ, मगर दूसरो से कुछ न कहना!"

लप्शोव सिर हिलाता हुआ चल दिया और निकीतिन मत्वेई र्‌यावोव की बगल में वही किनारे पर लेटा लेटा सहयात्रियो, कारोबार और गर्मी आदि के बारे में बातचीत करता रहा

और उनके काफिले में दिलचस्पी रखनेवाले तातार ने बोरो के ढेर के पीछे घूमकर कैसे मुडकर देखा और जल्दी जल्दी शहर की ओर बढ गया, इसपर न तो इवान लप्शोव ने ही ध्यान दिया, न निकीतिन ने ही।

निकीतिन गर्मी से परेशान था और राजदूत की खबर का इन्तजार करते करते थक गया था। उसने र्‌यावोव को ऊघते हुए देखा और कोट से सिर ढकते हुए खुद भी सो गया। कपिलोव ने आकर उसे जगाया।

सूर्य अख्तूबा नदी के पीछे डूब रहा था और सोनेवालो पर नावो की लम्बी लम्बी परछाइया पड रही थी। किनारा वीरान हो चुका था। राजदूत लौट आया था और अपने जहाज मे आराम कर रहा था। कपिलोव ने कहा कि तातारो ने सभी को वहा से आगे जाने
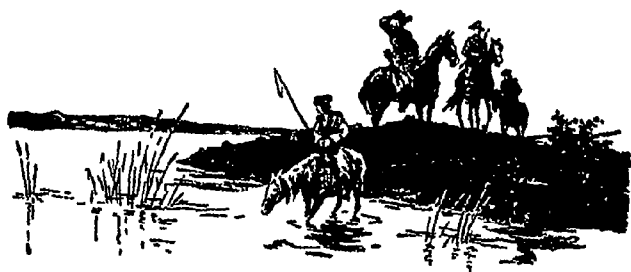
की अनुमति दे दी है, पर राजदूत रात में सफर नही करना चाहता।

"हम लोग सुबह् चलेगे।" कन्धा मलते हुए निकीतिन शान्ति से बोला, "नदी में नहायेंगे "

उन्होंने कुछ खाया-पिया, कुछ आराम किया और फिर कपडे उतारते हुए पानी में कूद पडे और बालू रगड रगडकर अपने शरीर का मैल छुडाने लगे। मसजिदो से नमाज़ की आवाजें आ रही थी— मुस्लमानो की इबादत शुरू हो चुकी थी।

अधेरा बढने लगा—सायकाल की रगीनी धूमिल पड रही थी, आसमान का लाल रग बैगनी पड रहा था, झुटपुटा छा रहा था।

निकीतिन ने तट पर एक निगाह डाली। पास ही कुछ सदिग्ध-सी आकृतिया चक्कर लगा रही थी।

निकीतिन ने इल्या को पुकारा—

"अब पहरा देने की तुम्हारी बारी है।"

इल्या ने तीर-कमान लिया, तरकश बाधा और चुपचाप नाव के अगले भाग में बैठ गया।

इवान सोने के लिए नाव के निचले भाग में चला गया और, जैसे आश्चर्य प्रकट करते हुए, कहने लगा—

"रास्ते में हम लोग आग जला जलाकर उसकी गर्मी का आनन्द लेते हुए सोये हैं, लेकिन यहा सोना पड रहा है पानी के ऊपर।"

"पराया नगर है, मेरे भाई! पराया!" निकीतिन बोला, "सो जाओ बच्चे हो अभी!"

इसी समय चार घुडसवारो ने अख्तूबा पार की। गीले घोडे इन सवारो को रेतीले किनारे तक ले आये थे, उनकी सास फूल रही थी लेकिन सवार उन्हे दम लेने की भी फुरसत न दे रहे थे और उनपर चाबुक बरसाते हुए उन्हे आगे बढा रहे थे। वे चुप थे मानो जीन से जड दिये गये हो। शीघ्र ही वे अधेरे में गायब हो गये—चाद बादलो के पीछे छिप गया था। घोडो की टापें सराय से दूर, और दूर, होती जा रही थी और वोल्गा के निकट स्तेप में विलीन हो रही थी। घास की सरसराहट में तो वे और भी डूब गयी।

सबसे पहले इल्या कोज़लोव ही जगा। नमी मे ठिठुरते हुए भी उसने अपने साथियो, गीले किनारे, स्थिर-से लगनेवाले बडे बडे बादलो और सुबह के प्रकाश में भूरे पडते हुए दूरस्थ मकानो पर एक उडती-सी नज़र डाली, हसा और सिर के काले, सख्त, गझे हुए बाल हिलाने-डुलाने लगा। अब एक एक करके त्वेर के व्यापारी भी उठने लगे। र्‌याबोव का अब भी ऊघता-सा चेहरा दिखाई पड रहा था। राजदूत के जहाज के डेक पर कुछ ईरानी आकर खडे हो गये थे। वे रूसियो की नाव पर टकटकी लगाये हुए थे।

ज़िरहसाज़ इल्या ने कपिलोव को आख मारी और उसकी कमर पर प्यार का एक भारी मुक्का जड दिया।

"यह तुम्हे हो क्या गया है?" कपिलोव साश्चर्य कहने लगा।

इल्या हस दिया।

"अब भी पूछते हो! कहा है चोर-वोर यहा!"

कपिलोव उसकी बात न समझ सका और उसे आख फाड फाडकर देखता रहा। इल्या गदगद हो रहा था।

"लोग कितने चतुर होते हैं, कितने गप्पी! हे भगवान! बाते बनाना कोई इनसे सीखे! हो-हो!"

निकीतिन इस हो-हो को सुनकर घूम पडा—

"सेरेगा, इसे हो क्या गया है?"

"हो-हो, बस "

निकीतिन, चिन्तित-सा, ज़िरहसाज़ के सामने उकड़ू बैठ गया।

"इल्या, इल्या क्या बात है?"

इल्या को धोखा देना अब आसान न रह गया था। अब वह सब कुछ समझ सकता था। निश्चय ही व्यापारी खतरो, डकैतियो और पराये इलाको की बडी बढा-चढ़ाकर बाते करते है। यह रहा सराय। वे वोल्गा पर इतना लम्बा सफर कर आये, कही कोई खतरा दिखाई दिया उन्हे? और यही आलतिन ओरदा में कौनसी मुसीबत दिखाई दी उन्हें? कैसे होते हैं ये व्यापारी भी—बेपर की उडाते हैं, जब चाहे कीमतो को आसमान छुआ दें! किसी प्रकार इल्या के हसने का कारण जानकर निकीतिन भी कहकहा लगाकर हसने लगा।

कपिलोव हसते हुए बोला—

"आखिर हसा ही दिया हमें! कुछ भी हो, इल्या है चतुर! कभी अच्छा सौदागर बनेगा!"

मत्वेई र्‌याबोव ने सिर हिलाया—

"मेरे भाई, तुम बेवकूफ हो!"

"अच्छा, अच्छा," हसते हुए इल्या ने उत्तर दिया, "तुम चाहे जो कहो, बुरा-भला कहो या क्रोध करो, लेकिन मेरी आखें चारो तरफ रहती हैं "

इसपर सभी ठहाका मारकर हँस दिये। ऐसा लगा जैसे लहराती हुई नावें, पानी की इठलाती हुई धारा, और धूप में नगर की मीनारों पर चमकता हुआ अर्ध-चन्द्र—सभी इन लोगों के साथ हँस रहे हों।

प्रातःकाल इसी हँसी-खुशी में आरम्भ हुआ था। नावें मज़े में चल दीं। उन्होंने हँसी-खुशी अस्त्रूवा को पीछे छोड़ दिया और हँसी-खुशी बुज़ान में प्रवेश करने लगीं। बुज़ान उनके मार्ग में वोल्गा की अन्तिम सहायक नदी थी। इसके बाद उन्हें सिर्फ वोल्गा का डेल्टा पार करना था और ख्वालीन पहुँच जाना था।

यात्री बुज़ान पर, जगह जगह पानी की थाह लेते हुए बड़ी सावधानी से नावें बढ़ा रहे थे। नावें नदी के सुनसान और नीरस तटों के बीच आगे बढ़ रही थीं।

किसी ने दूर पर खड़े एक तातार घुड़सवार को देखा। वह झाड़ियों के पास दाहिनी ओर अकेला खड़ा था, उसपर सूर्य की किरणें पड़ रही थीं। वह हिल-डुल नहीं रहा था। ऐसा लगता था मानो घोड़े के साथ वह भी ज़मीन से चिपक गया हो।

तातार ने हाथ उठाया और बढ़ती हुई नाव की दिशा में चिल्लाने लगा। घोड़ा भी, चिन्तातुर-सा, नावों की ओर बढ़ने लगा

"राजदूत की आज्ञा है कि नावें किनारे लगा दी जायें!" सभी नाववालों से कहा गया।

व्यापारी चिन्तित होते हुए, शेमाख़ा के जहाज़ के पास आ गये। वे अपने अपने हथियार सभाल रहे थे।

"निकी-तिन! र्या-बोव!" वास्का जहाज़ के पिछले हिस्से पर से चिल्लाया, "हसन-बेग बुला रहा है!"

अफनासी और सर्गेई कूदकर किनारे पर आ गये। उन्होंने इस तातार को जहाज़ पर चढ़ते हुए देखा। उन्हें दो तातार और दिखाई

दिये जो पहले तातार के घोडे की रखवाली कर रहे थे। ऐसा लग रहा था कि ये तातार आसमान से टपक पडे हो।

"आ गयी कोई मुसीबत!" डेक पर खडे वास्का ने व्यापारियो के कानो में फुसफुसाते हुए कहा। अली राजदूत के कमरे के पास खडा था। उसका चेहरा फक था, ओठ भिचे थे। भयभीत यूसुफ दोनो रूसियो को हसन-बेग के पास ले गया और स्वय दरवाजे पर अपनी छोटी-सी दाढी में उगलिया फेरने लगा।

कमरे में एक दिया जल रहा था। कालीन के एक सिरे पर शतरज की बिसात और मोहरे लुढके पडे थे। ऐसा लगता था जैसे खेलते खेलते सहसा उसे एक ओर तेजी से सरका दिया गया हो। हसन-बेग के सामने उन्होने उकडू बैठे हुए उसी तातार को देखा जिसे वे पहले देख चुके थे। तातार एक ऊची-सी टोपी लगाये था। उसका नीचा माथा घाव के किसी निशान के कारण दो हिस्सो में बटा-सा लगता था। उसके चौरस चेहरे पर हल्की हल्की मूछें थी। उसके चेहरे से कोई भी भाव प्रकट न हो रहे थे।

हसन-बेग ने उन्हे बैठने का सकेत किया और तातार की ओर देखते हुए कहने लगा—

"अब सारी बातें फिर कहो ये लोग तुम्हारी भाषा समझते है।"

तातार सीने पर हाथ रखकर झुका और कुत्तो जैसे दात निकालते हुए कहने लगा—

"ऐ दानिशमन्द खान, अल्लाह तुम्हारे इन दोस्तो को बरकत दें! मुझे यही कहना है कि बुजान में सुलतान कासिम अपनी तीन हजार की फौज लिये आपका इन्तजार कर रहा है। वह डाका डालेगा और सब कुछ ले जायेगा। सुलतान बडा बदमाश है शायद बहुत जल्दी ही वह बुजान पर मिलेगा।"

तातार ने फिर अपने सीने पर हाथ रखा, झुका और चुप हो गया।

राजदूत के माथे पर बल पड़ गये। उसने दुभाषियों की ओर देखा।

"तुम्हें यह सब कैसे मालूम हुआ?" निकीतिन ने पूछा।

तातार निकीतिन की ओर घूमा और उसपर एक तीखी-सी दृष्टि डालते हुए अपनी लाल लाल पलकें नीची कर लीं।

"मैं ग़रीब चरवाहा हूं, थोड़े-से घोड़े चरा लेता हूं, हर जगह आना-जाता हूं, सुनता हूं, देखता हूं..."

"तुम्हारे घोड़े कहां हैं?"

"तुम मेरी बात का यक़ीन क्यों नहीं करते? मैं तुम्हारी भलाई चाहता हूं। मैं अपने घोड़े इत्तील नदी के पास छोड़ आया हूं इसलिए कि मैं चाहता था कि तुम लोगों से मिलकर तुम्हें इसकी सूचना दे दूं..."

निकीतिन और र्‍याबोव ने एक दूसरे की ओर देखा। फिर निकीतिन रूसी में यूसुफ़ से बोला—

"राजदूत को समझा दो कि हमें इस मामले पर तातार की अनुपस्थिति में ही विचार करना चाहिए।"

यूसुफ़ ने यह बात हसन-बेग के कान में कह दी। हसन-बेग ने सिर हिला दिया।

"तुम बाहर जाकर इन्तज़ार करो!" उसने तातार को आज्ञा दी।

चरवाहा चुपचाप उठा और सिर झुकाकर कमरे के बाहर निकल गया। यूसुफ़ भी बाहर चला आया और दरवाज़ा बन्द कर दिया।

"हालत ख़तरनाक है," हसन-बेग बोला।

"शायद झूठ ही बोलता हो, कौन जाने," र्‍याबोव ने संदेह प्रकट करते हुए कहा।

"शायद झूठ बोलता हो, शायद न बोलता हो!" निकीतिन ने आपत्ति करते हुए कहा, "हमें होशियार रहना ही चाहिए "

"वह वादा करता है कि हमारा पूरा क़ाफिला ऐसे ले जायेगा कि कोई भाप भी न सकेगा," राजदूत बोला, "लेकिन उसका कहना है कि हमें रात में ही सफर करना चाहिए।"

"अगर जाना है तो बेशक रात में ही चलना पडेगा," निकीतिन ने उत्तर दिया, "अधेरे में दूसरो की नजरो से छिपना आसान रहता है। बस डर यही है कि यह हम लोगो के लिए जाल न साबित हो।"

"कैसा जाल?" हसन-बेग ने पूछा।

"वह भेंगी आखो वाला शैतान हमें रास्ता दिखायेगा!" र्‌याबोव ने कहने को तो कह दिया, लेकिन तुरन्त ही परेशान-सा हो गया इसलिए कि राजदूत भी भेंगी आखो वाला था। हसन-बेग ने इसपर कोई ध्यान न दिया पर र्‌याबोव का अनुमान उसे ठीक लगा।

"हा, यह भी हो सकता है। तो फिर किया क्या जाये?"

सब चुप हो गये।

"जो भी हो," निकीतिन बोला, "हमें इन खबर देनेवालो को जाने नही देना चाहिए, तीनो को अपनी नाव पर रखना चाहिए। हम उन्हे तोहफ़े देने का वादा करेगे। हम ऐसा करेगे कि वे सोचें कि हम उनपर विश्वास करते हैं। किन्तु हमें चौकस रहना चाहिए। अगर कोई बात हो जाये तो हमें लडने के लिए भी तैयार रहना चाहिए।"

"ठीक है," र्‌याबोव ने हा में हा मिलायी।

"मेरे पास एक ही बन्दूक़ है," राजदूत ने शिकायत के से स्वर में कहा, "एक बन्दूक़ और पाच तीरदाज़। हमारा जहाज़ अरक्षित है।"

"कोई बात नही," निकीतिन ने उसे धीरज बधाते हुए कहा,

"हमें तुरन्त ही कोई न कोई फैसला करना चाहिए। आपके जहाज़ में अभी और कितने लोग आ सकते हैं?"

"पांच की जगह अभी और है।"

"ठीक है। सुनो मत्वेई हमें अपनी एक नाव छोड देनी चाहिए।"

"क्यों?"

"खुद ही सोचो। अगर हम तीन नावों पर होंगे तो हमारी सारी ताक़त बटी रहेगी और अगर लडाई हुई तो हमें सभी से हाथ धोना पडेगा। दो नावें ठीक रहेंगी—कम हो-हल्ला, कम चिल्ल-पों "

"मुझे अपनी नाव छोडने का अफसोस होगा।"

"अच्छा, अच्छा। मैं अपनी छोड दूंगा। तुम हमारा सामान तो अपनी नाव पर रख लोगे न?"

"क्यों नहीं "

हसन-बेग बीच में बोल उठा—

"बडे शाह तुम्हारी नाव का दाम चुका देंगे, सिर्फ हमारा जहाज़ और राजा द्वारा दिये गये तोहफे बच जाने चाहिए।"

"तो फिर बात तय हो गयी इसके माने है राजदूत के जहाज़ पर दो बन्दूक चलानेवाले और आठ तीरदाज़ हैं। और हां, मत्वेई, तुम्हारे साथ भी तो एक बन्दूक और कुछ तीर-कमान है मेरा ख्याल है, हम निपटा लेंगे। हमारे पास आतशी हथियार हैं जो शायद तातारों के पास नहीं।"

"भगवान भला करे!"

"अल्लाह मददगार है!"

तातार को बुलाकर उससे कहा गया—"काफिले को रास्ता दिखाओ। तुम्हें इनाम मिलेगा।"

चपटे-से चेहरेवाले तातार ने सिर हिलाया, सिजदे के ढग से झुका और फिर वडबड करने लगा—

"मैं ठहरा गरीव आदमी, मेरे ये भाई भी वडे गरीव हैं। सभी हमें डाट सकते हैं। किससे हम कुछ कहे? अपनी अपनी किस्मत!"

व्यापारियो ने अनुमान लगाया कि तातार अपना इनाम तुरन्त चाहते है। हसन-वेग ने आज्ञा दी कि हर तातार को एक एक जैकेट और एक एक थान कपडे का दे दिया जाये।

तातार ने दात निकाल दिये—

"खान तो कितना अच्छा है, कितना मेहरवान! फिक्र मत करो खान! मछलियो की तरह ले चलूगा। किमी को कानो कान खवर न होगी। हम सीधे चलेगे!"

और यह कहकर तातार ने खीसे वा दी।

"तुम तीनो हमारे माथ चलोगे!" अफनासी ने तातार को चेतावनी दी और उसकी आखो में घूरने लगा।

तातार ने अपनी निगाहे नही हटायी।

"ठीक है! हम तीनो चलेगे।"

सारे काफिले में चिल्ल-पो मच गयी। इल्या, जो अभी कुछ ही पहले हस रहा था, अव शून्य मस्तिष्क और अपराधी की भाति इधर-उधर देखने लगा।

"तुम्ही ने नज़र लगायी है!" मिकेशिन उसके पास आकर फुसफुसाने लगा, और किसी ने भी इल्या का पक्ष नही लिया, "क्यो न हम लौट पडें। सराय तक तो हम आ गये "

"मै आगे जाऊगा," निकीतिन ने दृढता से कहा, "तुम लोग जैसा चाहो करो। कोई इसका वुरा न मानेगा।"

कपिलोव वूट से नाव को ठोकर देते हुए वोला—

"हम माथ माथ यहा तक पहुचे हैं तो आगे भी साथ साथ ही चलेंगे। दोस्ती अपनी चमडी से ज्यादा कीमती है।"

कोज़लोव ने निकीतिन से पूछा–

"तुम मेरा वस्तर पहन लो न?"

उसकी आवाज़ में इतना दर्द था कि अफनासी का दिल भर आया।

"शायद वह हमारे लिए काम का सावित होगा। अच्छा निकाल लो उसे।"

इल्या ने अपने वोरो की रस्मी तोडनी शुरू की यहा तक कि उसकी वायीं हथेली जलने लगी।

त्वेर के व्यापारियो ने मास्को के सौदागरो की सहायता से अपना माल उनकी नाव पर रखना शुरू किया। कुछ ही समय वाद त्वेरवालो की नाव, जिमका पाल तक हटा लिया गया था, यतीम जैमी दिखाई पडने लगी।

मिकेशिन वडी हिचकिचाहट के वाद मास्कोवालो की नाव पर चटा। वाक़ी सारे व्यापारी राजदूत के जहाज़ पर चले गये और जहा जगह मिली, जम गये–डेक के नीचे, नम और वदवूवाली जगह में, ऊपर पिजडो के इर्द-गिर्द।

वास्का डेक पर घूमता रहा। शीघ्र ही वहा भी भीड-सी लग गयी।

"अरे दोस्तो, चिडिया वचाये रखना," वह वोला।

हमन-वेग ने नावें घमाने की आज्ञा दी। लोगो ने वुज़ान पर एक सरसरी निगाह डालते हुए नावो को अख़्तूवा नदी में मोड दिया। उन्होंने अपना रास्ता वदल दिया ताकि अस्तरखान उनके रास्ते से दूर से दूर छूट जाये।

राजदूत शतरज और किस्से-कहानिया भूल गया और चिन्तित-सा जहाज़ के ऊपरी भाग में आकर लोगो को और नदी के किनारो को देखने लगा।

निकीतिन उसके पास आया, वोला–

"सूर्य डूबते डूबते हमें अस्तरखान दिखाई पडने लगेगा। तो कही हम रुकेंगे और रात होने का इन्तजार करेगे।"

सभी की निगाहे ऊपर आसमान पर लगी थी। सभी अनुमान लगा रहे थे कि जाने मौसम वदलेगा या नही। साफ आसमान देखकर उन्हें कोई प्रसन्नता नही हो रही थी। काश इस समय वरसात हो जाती! वे भारी आवाज मे एक दूसरे से वातें कर रहे थे। उत्तेजित इवान लप्शोव हाथो में तीर-कमान लिये मुस्करा रहा था और निकीतिन से आख मिलाने की कोशिश कर रहा था।

निकीतिन आकर उसी के पास वैठ गया।

"तुम्हें डर तो नही लगता?"

"नही चाचा, नही "

"शावाश जव लडाई शुरू हो तो नाव की आड ले लेना, और जव दुश्मन नज़दीक आये तो तीर चलाने लगना, उन्हे वेकार वरवाद न करना।"

"अच्छी वात है।"

कपिलोव धीरे से वोल उठा—

"मुझे नाव का दुख है। र्‌यावोव कितना वदमाश निकला, अपनी नाव तो नही छोडी।"

"भगवान उसका भला करे!" निकीतिन ने चिन्तित होकर कहा, "अगर हम वचकर निकल गये तो फिर नाव की मुझे कोई चिन्ता नही "

अगर वचकर निकल गये तो! इस विचार मात्र से सभी सोच में पड गये और जैसे भयभीत हो उठे। शायद वे न निकल सके, न वच सके।

"तातारो पर निगाह रखना," अफनासी ने धीरे से कपिलोव से कहा, "अगर कोई बात हो तो उनपर जरूर तीर चला देना "

"अच्छा "

इल्या कोजलोव को लग रहा था जैसे वह स्वय अपराधी हो और खुद ही लोगो के दुख का कारण भी। वह नाव के अगले हिस्से में तातारो के पास खडा रहा। वह किसी भी क्षण उनपर झपटने के लिए तैयार था।

नावें वोल्गा में, नदी के वीरान किनारो के बीच बढती चली जा रही थीं। शाम होते होते वे एक छोटी-सी खाडी के पास आकर रुक गयीं।

यहा ये लोग बहुत देर तक अधेरा होने का इन्तजार करने लगे। वक्त धीरे धीरे कट रहा था। चाद रुई के फाहे जैसा उठता हुआ झिरझिरे बादलो से बाहर निकला। बादल जैसे बडी अनिच्छा से एक दूसरे में विलीन हो रहे थे। वे चाद को छिपाकर रख सकेगे? कौन जाने! हवा में ताजगी आ चुकी थी और वह पहले से अधिक तेजी से चलने लगी थी।

"हे भगवान," निकीतिन जोर से बोला, "हमारी सहायता करो!"

आखिर अन्धाधुन्ध छा गया। बादलो ने चाद को चारो ओर से ढक लिया और उसकी चादनी एकदम मुरझा-सी गयी।

निकीतिन हसन-बेग के पास आया, बोला—

"हमें कूच करना चाहिए!"

हसन-बेग ने अपना वेश बदल लिया था। अब उसने चोगे की जगह बख्तर पहन लिया था और पेटी में कटार खोस ली थी। अब टेढी नाकवाला उसका मोटा चेहरा सीधा-सादा नही बल्कि गभीर लग रहा था और वह पैनी दृष्टि से इर्द-गिर्द देख रहा था।

"कूच करो।"

निकीतिन ने धीरे से कहा–

"डाड चलाओ!" और जहाज की नासिकावाले हिस्से में बैठे हुए तातारो के पास आ गया। माथे पर घाव के निशान और टेढे पैरो वाले तातार ने उसे देखकर सिर हिलाया–

"सौदागर, मेरी बात सुनो अब बायी तरफ ले चलो।"

डाड धीरे धीरे चलने लगे। राजदूत का जहाज शान्ति से बढने लगा। पीछे आनेवाली मास्को के सौदागरो की नाव के डाडो की छपाक इतनी धीमी थी कि मुश्किल से ही सुनाई पड रही थी। तातार चुपचाप बैठे रहे। निकीतिन सावधान खडा था–कही उनमें से कोई उसपर टूट न पडे। पास ही इल्या तेज़ी से सास ले रहा था। किनारे दिखाई न पड रहे थे। वे रात के अधकार में छिप-से गये थे। और फिर किनारे तो किनारे! हर क्षण अधेरा बढता जा रहा था। पानी तक न दिखाई पड रहा था। और पास खडे हुए साथियो का तो वे अनुमान-भर लगा पा रहे थे।

"बायी तरफ, बायी तरफ!" तातार फुसफुसाया।

जहाज और भी बायी ओर एक नयी धारा में बढने लगा। लगता था जैसे तातार झूठ नही बोल रहा है–अस्तरखान दाहिनी ओर ही होगा।

"दाहिनी तरफ, दाहिनी तरफ!"

निकीतिन भौहे चढाकर सोचता रहा–शायद तातार झूठ बोल रहे थे? शीघ्र ही वह इस भ्रम में पड जाता है कि उनका काफिला

जा किधर रहा है। दाहिने-बायें–ये शब्द जैसे उसे चक्कर में डाल रहे हैं।

यूसुफ़ की फुसफुसाहट सुनाई दे रही है–

"हसन-बेग पूछता है–हम हैं कहां?" निकीतिन हाथ में कटार थाम लेता है और चुप रहता है।

जहाज धीरे धीरे अज्ञात क्षेत्रों की ओर बढ़ रहा है, कभी सरकंडों की झाड़ियों से टकराता है तो कभी नदी के तल से।

रात। चारों ओर मौत जैसा सन्नाटा। डांड़ों की छपाक। पानी में उगी हुई घास की सरसराहट।

"बायीं तरफ़ ... दाहिनी तरफ़ ..."

तो ऐसा है रास्ता! सब कुछ कैसा शान्त था। और एक ही क्षण में सारा सपना टूट जायेगा। हे भगवान, हमें इतना कठोर दंड मत दो। ओलेना, तुम्हीं हमारे लिए प्रार्थना करो न! अगर ... तो फिर सब कुछ समाप्त। इल्या की क्या? उसका अपना माल है, लेकिन काशीन तो मुझसे पाई पाई धरा लेगा। अगर पार लग गया तो गिरजे में दान करूंगा ... जाने वहां इवान का क्या हाल है?

उसके दिमाग़ में तरह तरह के विचार उठ रहे थे और तातारों पर रह रहकर क्रोध आ रहा था। इन्हें सिर्फ़ लूट-खसोट आती है। ये रोटी ही लूट-खसोट की खाते हैं। और अगर ये झूठे हैं तो मैं उनपर क्यों दया करूं!

"दाहिनी तरफ़ ... दाहिनी तरफ़ ..."

"हमारे पीछे की नाव?" निकीतिन कुछ सुनने लगता है, "हमारा सारा माल तो उसी पर है ... हे भगवान!"

सहसा बादल छंटने शुरू होते हैं। चांद बादलों से झांकता है और उसके धीमे धीमे प्रकाश में नदी की संकरी-सी धारा दिखाई पड़ती

है। किनारो पर झाडिया और दाहिनी ओर दूरी पर अधेरे से काली पडती हुई ऊची ऊची जगहे। सहसा निकीतिन ने अनुमान लगा लिया— अस्तरखान! किन्तु उसे तातारो को पुकारने का समय नही मिला। वे पकड में न आनेवाली परछाइयो की भाति पानी में कूद चुके थे। उसे सुनाई दी थी केवल पानी की छपाक। झाडियो के पीछे से घुडसवारो की आकृतिया दिखाई दे रही थी और उधर से आनेवाली चिल्ल-पो कानो में पड रही थी—

"रुक जाओ!"

घुडसवार दाहिने-बायें भाग रहे थे। नदी सकरी थी। चन्द्रमा के प्रकाश में नावें साफ साफ़ दिखाई पड रही थी। कपिलोव गुस्से में बडबडा रहा था। इवान उठकर खडा हो गया। कोई चीज सनसनाती हुई नाव के डेक पर पड रही थी तीर!

"हमारे साथ गद्दारी की गयी!" निकीतिन चिल्लाया, "दोस्तो, नाव खेते रहो!"

हमेशा सकट के समय अफनासी में न जाने कहा की ताकत आ जाती और उसमें खतरो से ऊपर उठने और उनपर विजय पाने की कामना जग उठा करती। उसने तुरन्त ही निश्चय किया—हमें हर हालत में यहा से निकल जाना चाहिए।

राजदूत का जहाज़ आगे बढ गया। किनारे से तेज़ आवाज़ें सुनाई दे रही थी, ढेरो तीर सनसना रहे थे।

"लडाई शुरू कर दो!" डेक पर लेटते और बन्दूक का निशाना साधते हुए अफनासी ने आज्ञा दी, "सेरेगा! कपिलोव! सामने देखो, रास्ता ढूढो!"

बन्दूक में बारूद भरना और डगमगाती हुई नाव से निशाना साधना खेल न था, फिर भी बन्दूक घुडसवारो को निशाना बना रही

थी। चक्रमक का खट्ट सुनाई पडता और नाव का कोई भाग एक क्षण के लिए लाल-पीली आग से जगमगा उठता, और फिर वादलों जैसी गरज सुनाई देती

"अल-ल-ल-लाह!" किनारे पर से चीखें सुनाई पडने लगी।

इतने ही में दूसरी वन्दूक भी दग पडी और डाड चलानेवालो में हो-हल्ला मचने लगा।

"वायी ओर!" कपिलोव तेजी से चिल्लाया, और उसने अपना तीर ऐसे सन्धाना कि निशाने पर गिरे।

हसन-वेग की क्रुद्ध आवाज सुनाई दी, वह किसी को धमकी देता-सा लग रहा था किसे? खैर! अरे यह गोली तो नली में जाती ही नही! दूसरी डालू जल्दी काश नाव निकल जाती! वह हल्की भी तो है! हु-ह फिर वारुद ओफ!

फिर आग चमकी और फिर किनारे पर चीखें सुनाई दी।

इवान लप्शोव घुटनो के वल वैठ गया और चलते-फिरते घुडसवारो पर तीर वरसाने लगा। पहले पहल जव उसने तातारो के तीरो की सनसनाहट सुनी तो उसके हाथ काप उठे। लेकिन जव उसने देखा कि निकीतिन कैसे गोलिया चला रहा है, उसके साथी दुश्मनो पर कैसे हमला कर रहे हैं, तो उसकी भी हिम्मत वधी और उसने एक के वाद एक तीर वरसाने शुरू किये। उसका सारा डर जैसे हवा हो गया। उसे डरने का समय ही न था। वह वरावर तीर वरसाये जा रहा था, तातारो को निशाना वनाने की कोशिश कर रहा था। वह वरावर जोर से कमान की डोरी खीच रहा था।

ऐसा लग रहा था कि रूसियो की गोलिया और तीर निशाने पर वैठ रहे हैं--किनारे से वरावर दर्दनाक चीखें सुनाई दे रही थी। इससे इवान को आसुरी आनन्द हो रहा था।

"लो, चखो, अब चखो मजा!" वह चीखा और उसका तीर हवा में सनसनाता हुआ निशाना भेदने पहुच गया। फिर खतरे पर जैसे बिल्कुल ध्यान न देता हुआ वह खडा हो गया। यह उसके लिए सुविधाजनक था

उसे पीडा की कोई अनुभूति न हुई। बस लगा कि वह चिल्ला न सकेगा। उसे यह देखकर विस्मय हो रहा था कि एक बहुत बडा और चमचमाता हुआ चाद जहाज पर उतरा, फिर उसके हाथो के नीचे कोई चीज खडखडायी और उसे कोई हल्की-सी चें चें सुनायी दी–यह तो बाजो का पिजडा था। ओलेना काशीना उसे शराब का जाम दे रही थी, किन्तु उसका हाथ पिजडे की तीलियो से ही चिपका रहा। उसकी आखो के सामने अधेरा छा गया, उसके मुह पर हल्की-सी मुस्कराहट दौड गयी और उसका सिर नाव के एक ओर झुक गया। अब उसे न कुछ दिखाई दे रहा था, न सुनाई पड रहा था। एक तीर ने उसका हृदय वेधा था और दूसरे ने उसका गला

"हम उनके चगुल से छूट रहे हैं!" अफनासी को कपिलोव की आवाज सुनाई दी।

निकीतिन ने गोली चलानी बन्द कर दी और पीछे देखने लगा। बायें किनारे पर एक चौडी-सी सहायक नदी शुरू हो गयी थी। जहाज उसी की ओर बढ गया। बायें किनारे पर खडे हुए तातारो के दस्ते की जैसे मति कट गयी थी–लग रहा था कि आगे जाने के उनके सारे रास्ते बन्द हो गये।

"वढे चलो!" निकीतिन तेज़ी से चिल्लाया, "वढे चलो, पाल उठाग्रो! हवा हमारी ही दिशा में चल रही है!"

उठे हुए पाल मे कई तीर घुस चुके थे। पर जहाज़ तेजी से ग्रागे वढ रहा था ग्रौर पीछे से ग्राती हुई चिल्ल-पो ग्रौर भी पीछे छूटती जा रही थी।

"नाव कहा रह गयी?" निकीतिन चिल्लाया।

किमी ने कोई जवाव न दिया। उसने फिर वही प्रश्न किया ग्रौर जहाज़ के पिछले हिस्से से यूसुफ उसके पास ग्रा गया। वह नगे सिर था ग्रौर उसके घुघराले वाल उड उडकर उसके चेहरे तक ग्रा रहे थे।

"नाव तो छिछले में धस गयी," वह गहरी सास लेते हुए वोला।

"क्या?" निकीतिन उठ पडा, "झूठ है!" ग्रौर तभी उसकी निगाह कपिलोव के चेहरे पर पडी।

"इवान " सेरेगा वोला।

निकीतिन की निगाहे डेक की ग्रोर घूमी ग्रौर उसे जहाज़ के किनारे से लटकता हुग्रा इवान का शरीर दिखाई पडा। ग्रफनासी ने ग्रपनी वन्दूक एक तरफ छोडी ग्रौर उसके पास दौडा चला ग्राया।

"इवान! इवान!"

मगर इवान ने कोई जवाव न दिया। निकीतिन ने उसके शिथिल पडे हुए शरीर को ग्रपने हाथों में उठाया ग्रौर उसके चेहरे की ग्रोर देखने लगा। इवान के ग्रधखुले ग्रोठो पर एक घवडाई-सी मुस्कराहट जैसे चिपककर रह गयी थी, उसकी खुली ग्राखो में चाद प्रतिविम्वित हो रहा था।

कपिलोव ने वडी सावधानी से लाश में हाथ लगाया ग्रौर उसे डेक पर लिटालने में निकीतिन की सहायता करने लगा ग्रौर उसकी पलके वन्द कर दी।

"ग्रव हम इसकी कोई मदद नही कर सकते," वह वोला, "वहादुर की मौत पायी है इसने।"

निकीतिन एक ठढी सास लेकर रह गया और घूम पडा। कपिलोव ने अफनासी के कन्धे पर हाथ रख दिया-

"अफनासी, यह तुम्हारा पहला सफर तो नही है तुम्ही सोचकर बताओ कि हमें अपनी नाव का क्या करना चाहिए?"

"ओह, कैसा नौजवान था यह मेरा ही अपराध है!"

"सिर्फ तुम्ही को उसका अफसोस नही है। हमें उनकी चिन्ता करनी चाहिए जो ज़िन्दा है! हम तो निकल आये हैं और हमारे आदमी वहा हैं "

निकीतिन को जैसे होश आया। जहाज़ हिलता-डुलता आगे बढता रहा। लोग एक स्वर में चिल्लाते हुए पूरी ताकत से डाड चला रहे थे। घनी झाडियो वाले किनारे पीछे छूट रहे थे और जहाज़ झटको के साथ आगे बढ रहा था।

"अब हम लौट भी कैसे सकते है?" अफनासी ने कपिलोव से पूछा, "फिर तो हमें इस जहाज़ से भी हाथ धोना पडेगा शायद नाव भी तातारो के पजे से निकल भागे।"

कपिलोव चुप रहा, फिर जहाज़ के किनारे के पास बैठकर पिजडे पर सिर रखकर कहने लगा—

"इसके माने है, बरबादी," और दात पीस लिये।

हसन-बेग जल्दी में था, उसने डाड चलानेवालो को बदला और सुबह होने तक एक बार भी डेक पर से न हटा। आखिर ऐसा लगा कि वे इतनी दूर निकल आये है कि अब खतरे से बाहर हो गये हैं।

अभी भोर का प्रकाश फैला ही था कि एक ऐसी घटना हो गयी

जिससे सभी के छक्के छूट गये। जहाज़ दहाने में बढ रहा था कि सहसा छिछले में धस गया और ऐसा लगा कि वह एकदम ऊपर उठा और फिर बायें बल लुढक पडा। पिंजडे भडभडाये और आदमी गिरने और चीखने-चिल्लाने लगे। दाहिनी ओर के डाड हवा में लटके-से दिखाई पडने लगे। डाडियो ने दो बार और डाड चलाये। जहाज़ उस घायल पक्षी की भाति था जो एक पख फडफडाता हुआ दर्द से तडप रहा हो।

"नाव छिछले से बढाओ! पानी में चलो!" डेक पर से लोग चिल्लाये। किन्तु वे यह न कर पाये। सहसा तातारो का एक दस्ता चुपचाप किनारे पर आ धमका। ऐसा लग रहा था जैसे वह कही गया ही न हो।

कपिलोव ने पहले पहल तातारो को देखा और हाथ लटका दिये तातारो ने, तीर-कमान का भय दिखाते और कोडे सटकारते हुए, जहाज़ घेर लिया और लोगो को हकाते हुए किनारे पर ले आये। फिर उन्होने रस्से जहाज़ में लपेटे और घोडो की मदद से उसे धारा की उल्टी दिशा में खीचने लगे।

रूसियो और शेमाखा निवासियो को घोडो की सहायता करने के लिए विवश किया गया।

"तुम लोग भाग क्यो आये?" जीन पर झुकते हुए एक तातार ने निकीतिन से पूछा। उसके माथे पर घाव का एक लाल निशान था। निकीतिन ने इस तातार को तुरन्त पहचान लिया। यही उनका मार्गदर्शक था। "मैंने कहा था न कि मछलियो की तरह आगे बढोगे और जानते हो मछलिया जाल में घुसती है!"

तातार ही-ही कर हस दिया। उसे अपने मजाक पर खुशी हो रही थी। फिर उसने अपना कोडा उठाया और क्रोध से निकीतिन के सिर पर जमा दिया

जहाज उन्हे देर तक नही खीचना पडा। तातारो को मुख्य टुकडी के पास जाने का सबसे छोटा रास्ता मालूम था। वही उनकी दूसरी नाव भी खडी थी। यह नाव मछली पकडने के लिए लगाये गये वल्लियो के वाडे में फस गयी थी। तातारो ने इस नाव को पहले ही लूट-खसोट लिया था। किनारे पर घास के बीच कुछ फटे-चिथे बोरे पडे थे और कुछ खाली सदूक। बन्दियो को एक जगह इकट्ठा किया गया था। और अब वे एकसाथ खडे थे। खून से सना र्याबोव फुसफुसा रहा था—

"सब कुछ लूट लिया गया हम समझते थे कि शायद तुम लोग निकल गये "

हसन-बेग ने माग की कि उसे तातारो के खान से मिलाया जाये और अपना फरमान बढा दिया। रईसाना फर-कोट पहने हुए एक तातार एक क्षण के लिए रुका, उसने राजदूत की बात सुनी, फरमान हाथ में लिया, उसे उल्टा पकडा और उसे फाड-चीडकर टुकडे हवा में उडा दिये।

"क्या देख रहे हो?" पैर पटकते हुए तातार ने पहरेदारो से कहा, "पकड लो!"

हसन-बेग को तुरन्त ही जमीन पर पटक दिया गया और उसका सब कुछ ले लिया गया—फर-कोट, उसके नीचे का वस्तर, बूट और पगडी। सिवा भनभनाने के राजदूत से और कुछ करते-धरते न बन पडा। एक ही क्षण बाद वह अकेली एक बनियाइन पहने, नगे पैर, भीगी हुई घास पर बैठा दिखाई दिया। उसकी कीमती अगूठिया भी उतार ली गयी थी। वह पानी से निकली हुई मछली की भाति तडप रहा था—कभी मुह खोलता, कभी बन्द करता। दूसरे तातार रूसियो और शेमाखा के लोगों की जेबें टटोल रहे थे, उनके सीनो में हाथ डाल डालकर देख रहे थे, तो कुछ उनके कोट और चोगे उतार रहे थे।

राजदूत के जहाज़ पर से क़ालीन, बक्से, चिड़ियों के पिंजड़े और थैले आदि सभी कुछ उतार लिये गये थे।

इवान की लाश पानी में फेंक दी गयी थी, जो अब एक हल्की-सी छपाक के साथ किनारे के पास आ लगी।

जब निकीतिन से ओलेना की दी तावीज़ भी छीना जाने लगी तो वह अपने पर क़ाबू न रख सका और उसने तातार के हाथ पर एक चोट की, परन्तु उसे तुरन्त ही ज़मीन पर पटक दिया गया और उसपर मार पड़ने लगी। पर तावीज़ अफ़नासी के पास ही पड़ी रही।

सहसा वास्का की चीख़ सुनकर तातारों का ध्यान उस ओर आकृष्ट हुआ।

लग रहा था जैसे वास्का पागल हो गया है। लड़ाई के समय और निकल-भागने के समय वह अपनी चिड़ियों की ही चिन्ता कर रहा था, पर इस समय तो उसका दिमाग़ सचमुच ख़राब हो रहा था। वह पिंजड़े ले जानेवाले तातारों पर टूट रहा था और अपनी चिड़ियां छीन रहा था; लेकिन तातारों ने उसे इतना पीटा कि बेचारा अधमरा हो गया।

शीघ्र ही लूट-खसोट बन्द हुई और रईसाना फ़र-कोटवाला तातार फिर बन्दियों के पास आ धमका। उसने घोड़े पर चढ़े चढ़े उनके इर्द-गिर्द एक चक्कर लगाया और एक एक रूसी के सीने पर उंगली रखते हुए इशारा करने लगा।

जिन लोगों की ओर उसने इशारा किया था उन्हें एक तरफ़ हटा लिया गया। इनमें से तीन आदमी मास्कोवाले थे और एक था इल्या।

फिर तातार टूटी-फूटी रूसी में चिल्लाकर बोला—

"काफिरो, तुमने हमारे एक भाई को मारा है हम तुम्हारे चार लिये जा रहे हैं वहाव की दिशा में भाग जाओ, हम तुम्हे उल्टी दिशा में न जाने देंगे हम तुम्हे सराय में खवर पहुचाने का मौका न देंगे।"

"हमारी नावें तो दे दो!" किसी ने कहा।

"नावें नहीं देंगे, नाव हम खुद ले जायेंगे, तुम्हे हम डोंगे देंगे। ले लो! भाग जाओ!"

"हम अपने मरे हुए साथी को भी ले जायें न "

"ले जाओ, भाग जाओ!"

वन्दियो के दल में से इल्या की चीख सुनाई पडी—

"मेरी पत्नी से कह देना वेटे से भी! दोस्तो! कह देना हो सकता है, मदद "

तातार, हो-हल्ला मचाते हुए, वन्दियो को हका ले गये। कुछ घोडे व्यापारियो की दोनो नावें खीचते हुए उन्हे अस्तरखान की ओर ले चले। कुछ ही क्षणो वाद वाकी घुडसवार भी रफूचक्कर हो गये। अव वहा रह गये केवल वे, जिनका सव कुछ लुट चुका था

निकीतिन का ध्यान इवान के सदूक की ओर आकृष्ट हुआ। सदूक के पास दो प्रतिमाए पडी थी और कुछ चिथडे। अफनासी ने प्रतिमाए उठा लीं। एक को तो वह पहले ही देख चुका था। दूसरी वह थी जिसकी प्रशसा गेनोआवासी ने की थी। इस प्रतिमा पर उसने ओलेना का कोमल मुस्कुराता हुआ चेहरा देखा

यहा, वोल्गा से कुछ दूर, वहुत से टीले अस्तरखान के स्तेप तक चले गये थे। ऐसे ही एक टीले पर इवान की कब्र खोदने का निश्चय किया गया। वहा की धरती सख्त थी और उसे खोदना

कठिन था। पहले इसे पेड की डालें लेकर ढीला करना जरूरी था। यह कार्य बहुत धीरे धीरे चलता रहा। मिकेशिन ने अफनासी की आस्तीन पकडकर खीची –

"दोस्तो, जरा जल्दी करो! अगर शेमाखावाले अकेले चले गये तो हम कहा जायेंगे?"

अफनासी चुपचाप खोदता रहा, किन्तु मेरेगा कपिलोव अपने पर काबू न रख सका। वह चीख पडा –

"क्या हम अपने साथी को कौओ और कुत्तो के लिए छोड जायें?"

मिकेशिन चलते-फिरते बुदबुदाता रहा –

"मैं तो तुम्हारी भलाई के लिए कह रहा हू!"

इस समय तक काफी रोशनी फैल चुकी थी। टीले के शिखर पर से प्रात काल के प्रकाश में पास के नदी-तट की अस्पष्ट-सी रूप-रेखाए दिखाई पड रही थी। और तलहटी में बेंत की धूमिल-सी झाडिया, भूरा स्तेप और खडे हुए लोगो के कुछ दल नजर आ रहे थे। दूसरे व्यापारी भी चुपचाप पास आ गये। मत्वेई र्‍यावोव, कपिलोव से कहने लगा –

"तुम थक गये होगे। हटो, मैं खोदूगा।"

यूसुफ, निकीतिन की जगह पर आ गया। उसने अपना हाथ फैलाया और अफनासी ने चुपचाप उसे डाल पकडा दी।

निकीतिन टीले से नीचे उतर आया। वह कब्र के लिए कुछ घास तोडना चाहता था। उसे ऐसी जगह भी मिल गयी थी जहा गडी हुई घास लगी थी। वह पहले तो उसे हाथ से, फिर छडी की सहायता से उखाडने लगा। पर नतीजा कुछ न निकला। उसने कमर सीधी की और उसके सीने पर लटका हुआ सलीब छाती से

टकराया। निकीतिन ने यत्रवत् उसे छुआ और ठीक कर लिया। उसका सलीब ताबे का था और भारी भी। वह कुछ देर तक चुपचाप शान्त खडा रहा। फिर ओठ भीचे, सलीब उतारा, उसे हाथ में लिया और घुटनो के बल बैठ गया। सलीब से घास अच्छी तरह कटने लगी।

इवान को कब्र में सावधानी से रख दिया गया। उसके दोनो हाथ उसकी छाती पर जमा दिये गये।

"मिट्टी छोडो!" अफनासी ने आज्ञा दी।

"सलीब काहे से बनाया जाये!" मत्वेई र्‌याबोव ने गहरी सास लेते हुए कहा।

अफनासी वोल्गा के पास उतरा, मिट्टी से सने हाथ धोये, मुह धोया और नदी का ठढा ठढा पानी पीता रहा, पीता रहा।

"अब हमें क्या करना है?" उसे कपिलोव की आवाज़ सुनाई दी।

सूर्य चढ आया। वोल्गा का जल उसकी किरणो के नीचे बीसियो धाराओ में फूटता और अनेकानेक द्वीपो के बीच होता हुआ सरकडे और झाडियो के बीच इठलाने लगा।

"जाकर हसन-बेग से बात करूगा "

राजदूत पूरी तरह निराश हो चुका था। उसकी बायी आख के नीचे नील पड गया था, उसके कपडे चिथडे चिथडे हो रहे थे।

"अब क्या किया जाये?" निकीतिन उसके पास आकर पूछने लगा।

हसन-बेग ने चेहरा ऊपर उठाया और फिर लटका लिया। अब वह अपने नगे पैरो की ओर टकटकी लगाये देख रहा था। दुष्टो ने ज़ार इवान तृतीय के भेंट किये हुए बढिया और कसीदेवाले बट तक लूट लिये थे।

"तुम लोग क्या देख रहे हैं?" निकीतिन ने कठोरता से पूछा। इस समय तक शेमाखा के लोग राजदूत के इर्द-गिर्द जमा हो चुके थे। "अपने राजदूत के लिए एक जोडा बूट भी तुम लोग न जुटा सके?"

सभी जैसे अपनी अपनी बात कहने लगे—

"राजदूत के पैर बहुत बडे हैं। किसी के भी जूते उन्हें न होंगे।"

निकीतिन ने सास ली, अपने बूट उतारे और राजदूत को देते हुए कहने लगा—

"शायद ये आपको हो जायें? पहनकर देखिये।"

बूट उसके पैरो में ठीक हुए। हसन-बेग के पिटे हुए चेहरे पर एक मुस्कान-सी दौड गयी।

"शुक्रिया। मेरा ख्याल है अब चलना चाहिए। बैठो, हम सब मिलकर सोचेंगे—किधर चला जायें।"

सीने के पास से राजदूत ने एक मोटा-सा कागज़ निकाला। लुटेरो से वह बच कैसे गया, यह सचमुच बडे आश्चर्य की बात थी।

"इधर देखो!" हसन-बेग बोला, "यह रहा दरबद, यह रहा शेमाखा "

निकीतिन ने नक्शे पर तुरन्त ही वोल्गा नदी, ख्वालीन समुद्र और काकेशिया का किनारा पहचान लिया। समुद्र से थोडी ही दूर धूमिल पडती हुई पहाडिया थी। जहा ये पहाड एक स्थान पर किनारे से मिलते थे वही नक्शे में दरबद का किला दिखाया गया था। बाकू के पास एक दूसरा किला था, शेमाखा का। यही शेरवानशाह का नगर था।

राजदूत के कहने के अनुसार वे तट वीरान थे, और वहा बन्जारे तक बहुत कम आते-जाते थे। लेकिन अच्छा ही है यदि उनसे

भेंट न हो। काकेशिया के समुद्र के किनारे जाना बहुत ही खतरनाक है! वहा कैटक जाति के डाकू रहते हैं। यद्यपि उनके राजा का विवाह शेरवानशाह की सबसे बडी पत्नी की बहन से हुआ है

"हा," निकीतिन बोला, "ओ-हो! तो, आपके सगे-सम्बन्धी भी उसी तरह दोस्ती निभाये रहते है जैसे हमारे और फिर दूसरा कोई रास्ता भी तो नही।"

"तुम चिन्ता मत करो," हसन-बेग ने निकीतिन का हाथ पकडा, "तुमने अच्छी बहादुरी दिखायी है, मैं शाह से तुम्हारे बारे में बातचीत करूगा। वह तुम्हारी मदद करेगा।"

"जरूर हमारी मदद कीजिये!" निकीतिन लम्बी सास लेते हुए बोला, "भगवान भला करेगा चलो देखें डोगे?"

डोगे रूसी जैसे न थे—नासिका चौडा, बगलें बाहर निकली हुई, पिछला हिस्सा सकरा। एक डोगे पर मछली मारने का जाल रखा था। निकीतिन दोनो डोगो के इर्द-गिर्द घूमा और उन्हे चारो ओर से देखने लगा। मुसीबत के समय ये डोगे भी बडे काम के थे। अजीब लकडी की कीलो से वे जोडे गये थे। डोगे राल से मढे होने

के कारण काले लग रहे थे। बेशक इनपर यात्रा की जा सकती थी। यूसुफ ने बताया कि ख्वालीन समुद्र पर ऐसे डोंगे 'मछलिया' कहलाते है।

"देखो न," उसने उंगली से डोंगे की ओर इशारा किया, "सिर कितना बडा है, पेट कितना गोल और दुम कितनी पतली मछली ही तो है!"

उन्होंने अदाज लगाया और मालूम हुआ कि डोंगो में सभी लोग बैठ सकते हैं।

कपिलोव ने निकीतिन को पुकारा—

"तो हम शेमाखा जा रहे हैं? है न?"

"और जायेंगे कहा?"

"क्यो स्म नही?"

"जायेंगे क्या लेकर? जाडा आ रहा है। और कौन जाने लोग हमें रास्ते में ही मार डाले!"

नदी पर हल्का हल्का धुआ-सा उठ रहा था। पानी के ऊपर घना कुहरा था जो बराबर क्षीण पडता जा रहा था। ऊपर उठकर वह घूम पडता और उसके धीरे धीरे उठते हुए पुंजो के बीच कभी तो दाहिनी ओर कटावदार बालू नदी-तट, कभी निकट के द्वीप पर लगी बेंत की झाडिया और कभी ऊची ऊची घासवाले दुर्गम जगल दिखाई पडने लगते।

सूर्य निकल रहा था और प्रातःकाल की अद्भुत शान्ति के बीच ऐसा लग रहा था मानो चारो ओर से मधुर ध्वनियां सुनाई पड रही हो। तरह तरह की घासे, ओस-कण और दूर दूर तक फैला हुआ गुलाबी आकाश—सभी में मादकता थी।

किनारे के पास ही कही पानी की कलकल-छलछल और जमीन

के कटाव के कारण हवा में लटकी-सी दिखाई पडनेवाली वलूत की जडो पर पडती हुई पानी की छपाक सुनाई पड रही थी।

दाहिनी ग्रोर से भी पानी की छपाक कानो में पड रही थी—एक मोटा-सा जल-चूहा पानी में कूदा था, जो वहा देर तक तैर चुकने के बाद, पानी के ऊपर गर्दन उठाता, चारो ग्रोर निगाह डालता ग्रौर मूछें नचाता हुग्रा फिर गायव हो गया था।

सहसा, ग्रौर विजली जैसी तेजी से, वत्तखो का एक झुड• निकीतिन के सिर के पास से होकर निकल गया—वत्तखें चारा खाकर लौट रही थी।

ऊचे ग्राकाश में हस उड रहे थे ग्रौर कोई चिडिया गाने का प्रयत्न कर रही थी। यह कौनसा पक्षी था इसे निकीतिन न समझ सका। पक्षी की ग्रावाज भी सहसा टूट गयी ग्रौर वह जैसे शर्म के मारे चुप हो गया।

पृथ्वी पर प्रकाश विखरता जा रहा था। ग्रव दिन के समय के रग दिखाई देने लगे थे—हरे, नीले, पीले। कोहरा वरावर छटता जा रहा था ग्रौर पहली जैसी गुलावी छटा सभी वस्तुग्रो पर छिटकती हुई इस वात की याद दिला रही थी कि ग्रभी सवेरा है, शान्ति का समय।

ग्रौर जव निकट के तालाव पर से हवा कोहरे को सहसा उडा ले जाने लगी ग्रौर उसके स्थान पर गुलावी-से पक्षी दिखाई पडने लगे तो निकीतिन को कोई ग्राश्चर्य न हुग्रा। शुरू शुरू में उसे लगा कि वे पक्षी वगुले है, किन्तु वे वगुले न थे। उनके परो ग्रौर पीठ का रग एक जैसा था। वह दुम के पास गहरा था ग्रौर ग्रव सुबह के समय लाल दिखाई दे रहा था। ये फ्लामिगो पक्षी थे ग्रौर मछलियो की टोह में ग्रपनी टेढी ग्रौर कुछ कुछ काली चोचें वोल्गा के पानी में डाले, लाल लाल पैरो के सहारे ग्रागे वढ रहे थे।

इसके बाद हरी हरी और घनी झाडियों के बीच अफनासी ने एक लोमडी की सुनहरी खाल, उसके सतर्क कान और काली काली आखें देखी। लोमडी पानी में उतरी, उसने पानी पिया और फिर सतर्क हो गयी। नही, यहा कोई खतरा नही! लोमडी एक पतली-सी आवाज में चिचियायी। और तभी उसके पास उसके तीन बच्चे और आ गये, चुपचाप। फिर उन्होने, एक दूसरे को धकियाते हुए, अपने सिर पानी में डाले और प्यास बुझाने लगे। उनकी मा अपने बच्चो पर एक सतर्क-सी निगाह रखती हुई उनकी रक्षा के लिए वही खडी रही।

"कैसे सुन्दर बच्चे है, ये!" निकीतिन ने उन्हे देखते ही समझ लिया था।

उसने ये शब्द ज़ोर से, किन्तु काफी उदासीनता से कहे थे, इसलिए कि अब भी उसकी चेतना का कोई न कोई अग जिन्दगी के उतार-चढाव को देख सकता था और समझ सकता था कि जीवन का क्रम, बीती बातो की ओर से उदासीन, पूर्ववत् चल रहा है।

निकीतिन बुझी हुई आग के पास पालथी मारे बैठा था और अपने सोते हुए मित्रो को देख रहा था। उसका मन उदास था। उनपर जो मुसीबत आयी थी उसने उनकी रही-सही उम्मीदो पर भी पानी फेर दिया था। यह दुर्घटना कितनी दुखदायी थी, इसे अफनासी ने अच्छी तरह समझ लिया था। उसने जो माल उधार लिया था उसके दाम वह वर्षो में भी अदा न कर सकेगा। फिर कोडे पडेंगे? या गुलामी करनी होगी? और होगा ही क्या? रूस में और आशा ही क्या की जा सकती थी? काशीन अपना कर्ज़ माफ करने से रहा। और फिर क्यो माफ करे? अफनासी उसका है कौन? तो किया क्या जाये? उसकी एक ही आशा थी—शेमाखा में सामान बेचना

और काशीन का कर्ज पाटने के लिए उसे रुपया भेजना, और फिर खुद आगे बढना   उसने शून्य नेत्रो से, चढते हुए दिन की ओर देखा और अपनी शान्ति और स्थिरता के कारण उसे सब कुछ शत्रुवत् मालूम हुआ। उसे लगा कि मैं वोल्गा में पडी हुई बालू के एक कण से भी छोटा हू, शरद की एक पत्ती से भी अधिक एकाकी, गया-बीता।

दुनिया पर छा जानेवाली सुबह, जल की कलकल-छलछल, लोमडी-मा का चिचियाना--सभी कुछ भगवान के इशारो से होता है।

हमेशा से ऐसा ही होता आया है और होना भी चाहिए। किन्तु यह बात अफनासी के गले तले न उतरी कि जो दुनिया कल के पहले थी वह आज के बाद भी वैसी ही बनी रहेगी।

निकीतिन ने माथा मल दिया।

खैर जो कुछ कल हो चुका है उसमें और आज की बातो में कोई तालमेल नही, कोई तारतम्य नही। भाग्य की चट्टान के आगे, भगवान की मर्जी के आगे, उसकी अपनी कमजोरियो ने उसे निराश कर रखा था। फिर भी उसे आशा की एक किरण दिखाई दे रही थी।

उसके साथियो को किस पाप की सजा दी गयी है? भगवान क्यो उनकी इतनी कडी परीक्षा ले रहा है? आखिर उन्हे और क्या क्या देखना बदा है? बेशक यह सब कुछ जानना तो असम्भव था, लेकिन इस विचार से उसे सन्तोष जरूर हो रहा था। भगवान इन अभागो पर दया भी कर सकेगा।

सूर्य कुछ और चढ चुका था। प्रात काल के रगो के स्थान पर धरती और आकाश दिन के सोने से नहा गये थे। निकीतिन ने

तालाब की ओर देखा और जड़वत् खड़ा रह गया। बालू, पानी, लिली की पत्तियां—चारों ओर सभी कुछ पूर्ववत् था। लेकिन वे पक्षी, जिन्हें वह जिन्दगी में पहली बार देख रहा था, अब भी प्रातःकालीन सौन्दर्य से मुंह न मोड पा रहे थे और उनके एक एक पंख में प्रभात की मनोरम गुलाबी प्रतिबिम्बित हो रही थी।

कपित्नोव जग चुका था और अब सर्दी से ठिठुरता हुआ जमीन पर बैठा था।

"तुम नहीं सोये?"

"चुप!" अफनासी ने उत्तर दिया, "देखो कैसा सुन्दर पक्षी है।"

किन्तु फ्लामिंगो, मनुष्यों की आवाज़ से डरकर, पंख फड़फड़ाते हुए समुद्र की दिशा में उड़ गये।

"भाग्य ने हमें कहां लाकर पटक दिया!" कपित्नोव बोला, "यहां पक्षी तक रंग बदलते हैं "

निकीतिन खड़ा हो गया। वह अपने चलते-फिरते साथियों की ओर देख रहा था। यहां उसकी आंखों के सामने न जाने कितनी जिन्दगियां बर्बाद हो गयी थीं, न जाने कितने बदकिस्मती के शिकार हो गये थे।

और, जैसे सहसा, दृढ़ता से उसने कपित्नोव को उत्तर दिया—

"कोई बात नहीं, शेमाखा में हम शाह और वसीली पापीन से मिन्नतें करेंगे, उनसे मदद लेंगे। मैं कहूंगा, हम डूबेंगे नहीं!"

चौथा अध्याय

निकीतिन और उसके साथी लगातार तीन दिन और तीन रात भयानक तूफानों से लड़ते रहे

आंखें बन्द करते ही 'मछली' की नाक, और हाहाकार करती

हुई समुद्र की अनन्त लहरें उठती-गिरती दिखाई पडती है। 'मछली' लहरों के सिरो पर चढकर पानी की गहराइयों में धसती है और जैसे मृत्यु का आलिंगन करने के लिए आगे बढती है। दूसरे ही क्षण जब वह किसी चमत्कारवश, ऊपर उठकर आकाश की ओर बढने लगती है तो यात्रियो का अन्तर तक दहल जाता है उनसे जो कुछ बन पडता है, वे करते हैं—अपनी सारी शक्ति लगाकर डोंगे को लहरो के मुकाबले साधे रहते है।

दूसरे डोंगे के लोगों की तो हिम्मत ही टूट गयी। भयकर लहरो ने उनपर आक्रमण किया और मास्को के लोग चीखते-चिल्लाते अधकार में समा गये। किन्तु निकीतिन के साथियो को इन लोगो पर ध्यान देने का समय ही न मिला। अब-तब लहरें उठतीं और उन्हें ढक लेती, और वे डोंगे मे चिपके हुए किसी प्रकार ऊपर उठते, डाड चलाते और नाव में से पानी फेंकने लगते। उनके ताजे पानी की मसक और खाना सब समुद्र के गर्भ में समा गया था।

अली कुछ विचित्र ढग से घूमा और डोंगे से गिरते गिरते बच गया। निकीतिन को लगा कि एक ही क्षण में उसके उन हाथों के पुट्ठे फट-चिथ जायेंगे, जिनसे उसने अली को पकड रखा था या फिर वह स्वय उसके साथ पानी में समा जायेगा। यूसुफ भी अली को पकडे रहने में पूरा जोर लगा देता है। आखिर अली खतरे से बाहर हो जाता है

दूसरो की ही तरह हसन-बेग भी डाड चला रहा है। उसकी लाल दाढी का रग धुल चुका है और वह सफेद निकल आयी है। किन्तु बूढा नमकीन पानी थूकता हुआ, और निकीतिन के बूटो में अपने पैर 'मछली' के तले पर जमाये, पूरी ताकत से डोगा खे रहा है। डाड चलानेवाले जब-तब बदले जा रहे हैं, क्योंकि उनकी शक्ति पल

पल पर क्षीण हो रही है। वहा खाने-पीने की कोई चीज़ नही जो उनकी क्षीणता दूर कर सके। और फिर, सबसे खतरनाक है नीद।

दूसरे चौबीस घटो में उन्हे बुरी तरह नीद सताती है। वह तो प्यास से भी अधिक तेज़ है। प्यास उन्हे समुद्र का नमकीन तीखा पानी पीने को विवश करती है। वे उलटी करते है, लेकिन फिर वही पानी पीते है। सोना हराम है—सोये कि पानी की लपेट में आ गये। सभी अपनी पूरी ताक़त लगाकर थकान और नीद का मुक़ाबला कर रहे है।

कभी कभी अफनासी को लगता है कि अपनी चेतना और इच्छा के बावजूद उसके हाथ और पैर सुन्न हो रहे है, जैसे सो रहे है।

जब शरीर का कोई अग सोता है और सिर का कहना नही मानता, तो स्थिति भयकर हो जाती है।

वह आखिर तक हिम्मत नही हारता। फिर समझ लेता है—उसे लोग एक बेंच के साथ रस्सी से बाध रहे है, और आखिरी गाठ लगते लगते सो जाता है। उसने गरजती हुई लहरो, 'मछली' के नीचे के बर्फ़ जैसे ठडे पानी और तूफान के हाहाकार के प्रति आखें मूद ली है। 'मछली' के तल में पानी आता-जाता है, फिर भी लगता है मानो वह गुदगुदे गद्दे पर सो रहा है।

वह नही जानता कि उसके पहले सभी लोग बारी बारी से सो चुके है, उसकी बारी तो अन्त में आयी है।

वह जगता है और उसे दिखाई देता है वही आकाश, वही हहराती हुई लहरे—पर कही कुछ परिवर्तन ज़रूर हुआ है, लेकिन क्या? वह कुछ भी नही समझ पाता। फिर वह अनुमान लगाता है—डोंगे पर कोई कहकहा लगा रहा है। यह तो माज़न्द्रान का निवासी

है जो अपनी सफेद सफेद आखो मे घूरता और अपनी सूजी हुई ज़बान वाहर निकालता हुआ ज़ोर से कहकहा लगा रहा है। वह पागल हो गया है। उसे डोंगे के पिछले भाग में वाध दिया जा रहा है। वह यह नही चाहता और हर तरह हाथ-पैर पटककर विरोध करता है। यदि उसकी घुटी हुई चाद पर डाड न जमा दिया जाता तो उसकी इस खटपट से डोगा उलट ही जाता।

'मछली' उठती है, गिरती है। और उन्हे अपने चारो ओर सिवा गरजती हुई लहरो के और कुछ नही दिखाई देता।

पानी उनकी आखो को अधा-सा कर देता है, उन्हे वहरा-सा वना देता है। वह उनके मुह में घुम जाता है जिमसे प्रार्थना के स्वर गले में ही अटके रहते हैं। ऊपर-नीचे, भीतर-वाहर सभी जगह जल ही जल! आखिर उन्हे ऐसा लगता है जैसे आसमान आसमान नही, एक काली-सी लहर है जो सारी दुनिया को घेरे है।

अफनासी देखता है कि हमन-वेग डाड फेंक देता है और भद्दे ढग से मुह खोलता है, वन्द करता है। उमका सिर हिलने-डुलने लगता है। उसी क्षण डाड पानी के भवर में समा जाता है। डोगे की दिशा वदल जाती है और अव उमका पार्श्व-भाग लहरो के सामने आ जाता है। वस, अव सव कुछ ममाप्त—मौत मुह खोले मामने खडी है।

उमी क्षण यूसुफ और कपिलोव निकोतिन मे आगे वढकर हमन-वेग के पाम आ जाते हैं। यूसुफ के चेहरे से लगता है जैसे वह गुस्से से तिलमिलाया जा रहा है। वह राजदूत को एक ओर हटा देता है। कपिलोव शेमाखावामी के हाथ मे डाड ले लेता है। डोंगे-भर में अकेला यही डाड वचा है। अव वह डोगे को ठीक दिशा में लाने का प्रयत्न कर रहा है।

उनके पास अकेला यही डाड रह गया है, अकेला यही डाड!
डोगे की नासिका फिर लहरो के सामने आ जाती है।

तीसरा दिन शुरू होता है। लगता है कि सब कुछ अस्वाभाविक है। उन्हे थकान इस हद तक घेर लेती है कि उनकी चेतना भी जड हो जाती है। जब वे अपने को देखते है तो उन्हे लगता है जैसे वे कोई और है। अब उन्हे अपनी मौत का ध्यान भी नही आता।

पानी, पानी, पानी और चारो ओर तूफान का हाहाकार। बस, और कुछ नही। वे पूरी ताकत से डोगा पकडे है, उसे उलटने मे बचा रहे है।

तूफान जिस तेज़ी से शुरू हुआ था वैसी ही शीघ्रता से शान्त भी हो गया। लहरो का आकार घटने लगा। आकाश पर प्रकाश बिखरने लगा और शीघ्र ही डोगा समुद्र की हरी सतह पर स्थिर-सा हो गया। दाहिनी ओर पहाड-से दिखाई पड रहे थे। बादलो को भेदती हुई सूर्य की किरणें नीचे आ रही थी। एक घटा और—स्वालीन समुद्र शान्त हो जाता है, पहचाना तक नही जाता। वह सूर्य की किरणो में चमचमा उठता है, डोगे के पास कलकल करता है, उसे दुलारता है, वैसे ही जैसे कुत्ता अपने पिटे हुए पिल्ले को चाटता है, प्यार करता है।

यूसुफ हाथो से मुह ढापते हुए उकडू बैठ जाता है। उसकी सूजी हुई अगुलियो पर उसके आसू बह रहे है। कपिलोव डोगे की दीवाल पर गिर पडता है और उसकी सारी शक्ति जवाब दे जाती है। अली, निकीतिन को बडे ध्यान से देखता है और लगता है कि वह कुछ कहना चाहता है, लेकिन कह नही पाता।

निकीतिन के ओठो पर एक थकी-सी मुस्कुराहट बिखर जाती है।

"तुमने मेरी जान बचायी!" अली कह उठता है।

"खत्म हो गया!" उसकी बात न सुनता हुआ निकीतिन कहता है, "भगवान की दया है!"

चारो ओर शाति, धूप, गर्मी!

शाम होते होते जब सूर्य पहाडियो के पीछे छिपने लगता है उस समय डोगा किनारे की ओर बढता है। दरबद! वे लोग इसी नगर का इन्तजार कर रहे थे। नगर पत्थर की दो दीवालो के बीच बसा था और ये दीवाले समुद्र में चली गयी थी। दूर से वहा के मकानो की चौरस छते और शाम के समय धुधली-सी मीनारे दिखाई पड रही थी।

मछुआ-नावें अपने जाल खीच रही थी। खुले हुए घाट पर तुर्कमनी डोगिया, गोल और छोटी पालदार फारसी नावें और वोल्गा के जहाज खडे थे।

"हमारे लोग नही दिखाई दे रहे हैं यहा!" कपिलोव इधर-उधर देखता हुआ जैसे निश्चित ढग से कह उठता है।

"वह रहा पापीन का जहाज!" उत्तेजित होकर वास्का चिल्ला पडता है, "वह, वह रहा, जो सबसे बडा है!"

वह मुस्करा देता है, पापीन के बारे में कुछ कहता है और अपने साथियो की आस्तीने पकड लेता है। दूसरे साथी भी खुश हो जाते है। अरे यहा तो हमारे अपने आदमी है, रूसी! वे हमारा साथ देंगे।

डोगा जहाज की ओर बढता है। फारस की तथा दूसरी नावो पर बैठे हुए सावले चेहरो वाले लोग इन यात्रियो की ओर देख देखकर या तो अपने सिर हिलाने लगते है, या जीभ चटखारने लगते है, या किसी को पुकार पुकारकर उससे कुछ पूछने लगते है। पापीन के जहाज

के डेक पर काली दाढीवाला एक आदमी दिखाई पडता है। वह विचारशील मुद्रा में, टूटी-फूटी-सी 'मछली' और अपनी ओर बढते हुए नाविको के फैले हुए हाथो की ओर देखता हुआ पहले तो कुछ सोचता है फिर सहसा बोल पडता है–

"हा, राजदूत होगा? अरे वास्का, मामला क्या है? अरे वुद्धू, वाज़ कहा हैं?"

सबसे पहले तो वे लोग ताज़े पानी पर टूटे। खाते और बातें करते करते समय जल्दी जल्दी बीतता गया। यूसुफ नगर में जा चुका था और अब हुसन-बेग के कपडे और घोडा लिये लौट रहा था। राजदूत ने बूट उतारकर निकीतिन को दे दिये।

"कल मुझसे मिलना!" रईसाना चोगा पहनते हुए वह कहने लगता है।

यूसुफ सभी को कारवा-सराय मे ले आता है। सराय का मालिक आनन-फानन गद्दे लाता है, सूखी घास के लिए नौकर को भेजता है और मेहमानो को पुलाव खाने के लिए बुलाता है।

इस वक्त पुलाव कैसा! नीद के मारे तो आखें नही खुलती! निकीतिन सूखी घास पर लेट जाता है और यूसुफ को किसी से बाते करते सुनता है। शायद यूसुफ उसी से कुछ कह रहा है–

"हुसन-बेग का ख्याल है कि मास्कोवालो की नाव कही तारका के पास डूबी है। अब वे लोग कैटको के हाथो में पड गये होगे!"

वह यूसुफ की बात का जवाब देने का असफल प्रयास करता है और सो जाता है।

नीद बचपन जैसी है–न कोई फ़िक्र, न परेशानी।

सुबह होते ही आदमी नयी नयी चिन्ताओ में फस जाता है।

सुबह का आरम्भ होता है गधे के रेकने से। गधा मूडा हुआ है, लेकिन उसके पैर झबरे है। वह पैर फैलाये और लम्बे कानो वाला सिर झुकाये अहाते के बीचो बीच खडा है और हीस रहा है। तभी कही से कोई गधा हाकनेवाला फटा-पुराना भूरा लबादा पहने वहा आ जाता है। अब दोनो रेकने लगते है। गधा उस

आदमी को देखकर रेकता है, और आदमी गधे को देखकर। इसी समय एक गोल-मटोल आदमी आ जाता है। वह बैगनी-पीला धारीदार चोगा पहने है। वह गधा हाकनेवाले को गालिया देने लगता है और उसे धकियाने लगता है। इस आदमी के मोटे-से ओठो पर फेन ही फेन दिखाई दे रहा है।

निकीतिन को कारवा-सराय के फाटक पर देखकर वह धारीदार चोगेवाला आदमी गाली-गलौज बन्द कर देता है और सिर झुका देता है। वह मुस्कराता है जिससे उसका चेहरा चपटा-सा लगने लगता है।

यह कारवा-सराय का मालिक, मुहम्मद, है। वह शायद ओस है, शायद तातार।

"आपको नीद तो अच्छी आयी है?" मुहम्मद सिर झुकाकर पूछने लगता है। "इस शैतान के बच्चे ने आपके आराम में खलल डाला है? मुहम्मद जिन्हे प्यार करता है, उनके कदमो में पडा रहता है। गधे हाकनेवाले इस शैतान को मुहम्मद अच्छा मजा चखायेगा। आप इस ग़रीबखाने को अपना ही घर समझें। मुहम्मद तो आपका गुलाम है "

मुहम्मद समझता है कि निकीतिन उन रूसियो में से एक है

जिनके वारे में यूसुफ ने कहा था कि वे राजदूत के पास आये हैं। इसी लिए वह चिडिया की तरह चहचहाने लगता है।

यद्यपि निकीतिन फटी-पुरानी कमीज और पुराने जूते पहने था, फिर भी सराय के मालिक ने उसे वडा सौदागर ही समझा। सोचा, मुसीवत किस पर नहीं आती।

मुहम्मद तातारी बोलता है, फिर भी यह सुनकर आश्चर्य होता है कि वह तातारो को उन्ही की भापा में गालिया देता है, बुरा-भला कहता है।

गर्मी पड रही है और यह गर्मी आती है नगर के इर्द-गिर्द खडे पहाडो से, वाग़-वगीचो से और उस हरे हरे समुद्र से जो निकटतम मकान की चौरस छत से ही शुरू हो जाता है। इस मकान की छत पर एक दरवद निवासी अपनी कमीज़ की पर्तो में से जू वीन वीनकर मार रहा है।

कारवा-सराय में जैसे ज़िन्दगी आ जाती है, चिल्ल-पो शुरू हो जाती है। लोग एक एक करके फिर समूहो में दिखाई पडने लगते हैं–कोई चोग़ा पहने है तो कोई वुरका, कोई तुर्कमनी टोपी में है तो कोई खोपडी-टोपी में। उनकी वातो में कण्ठ्य वर्णो की प्रचुरता है। प्राय सभी हथियारवन्द है–किसी के पास कटार है, तो किसी के पास तलवार। कुछ लोग ऊटो और घोडो को पानी पिला रहे हैं और कुछ मवेशियो के पास वैठे हुए विचित्र गोल रोटिया और सूराखो वाली सफेद पनीर खा रहे है और मसक से खोखले सीगो और प्यालो में पानी उडेल उडेलकर पी रहे है।

मुहम्मद निकीतिन और कपिलोव को पुकार रहा है। छोटे और ठढे मकान में एक कालीन विछा है जिसपर तकिये रखे हैं। कालीन पर थालिया रखी है। उनमें कुछ खाने की चीज़ें हैं–पीले रग का हलुआ

जिसमें अखरोट या दूसरे मेवों की गिरिया पडी हुई है, अगूर और आटे से वनी कुछ मिठाइया। कालीन के वीचोवीच एक गोल और लम्वी टोटीवाला कटर रखा है।

मुहम्मद सिर झुकाकर यात्रियो से अनुरोध करता है कि वे उसके यहा जो कुछ भी रूखी-सूखी है, खायें।

इन मिठाइयो के स्वाद के आदी न होने के कारण व्यापारियो को मजा न आ रहा है। वे अपने खाली पेट में ताजी शराव डाल लेते हैं जो उनके सिर में चढ जाती है।

"अगर हमें काली रोटी और कुछ दूध मिल जाता!" दातो से चिपचिपी मिठाई खोदते और लम्वी सास लेते हुए कपिलोव कह उठता है, "ये लोग यह खाना खाते कैसे हैं? हा, शराव जरूर अच्छी है "

मुहम्मद वडी उत्सुकता से अपरिचित रूसी भापा सुनता है और मुस्कराते हुए निकीतिन से पूछता है—

"क्या? क्या?"

"मेरा दोस्त तुम्हारी शराव की तारीफ कर रहा है!" अफनासी उसकी भापा में जवाव देता है।

मुहम्मद मक्खन की तरह पिघल जाता है, गदगद हो जाता है। वह जोर से ताली वजाकर चिल्ला पडता है—

"हुसेन!"

एक घुटी चादवाला नौकर आकर सिर झुकाता है और एक कटर में शराव, सलाखो में पिरोये हुए भुने माम के टुकडे ले आता है।

"खाना तो इसी से शुरू करना था!" कपिलोव वुदवुदाया।

मुहम्मद देखता है कि मेहमान अधिक पी गये है, और चापलूसी की वाते शुरू कर देता है। उसे यही आशा है कि जब तक ये मेहमान दरवद में रहेगे तब तक वे उसी की सराय में रहेगें। वेशक वे अपने

इस गुलाम को कभी न भूलेंगे। यह गुलाम अपने इन ज़र्रानवाज़ मेहमानों के लिए अपनी हक़ीर ज़िन्दगी तक कुर्बान कर सकता है। मुहम्मद अपनी बातों में रस घोलता है, कपिलोव शान से सिर झुकाता है और निकीतिन उत्तेजित हो उठता है।

आखिर सराय के मालिक से पिंड छुड़ाकर अफनासी सेरेगा से कहने लगता है—

"शायद उसने हमें कोई राजा-महराजा समझ लिया है। यह तो बुरा हुआ।"

"क्यों? बुरा क्यों हुआ?" कपिलोव आपत्ति करते हुए कहता है, "मुहम्मद अच्छा आदमी है, दरवद भी अच्छा है और समुद्र भी हम तो यहीं रहेंगे गधा खरीदेंगे, पहाड़ खरीदेंगे "

अच्छी तरह सो चुकने पर कपिलोव सोचता है, "सराय के मालिक की ग़लती, हमारे लिए बड़ी नुकसानदेह हो सकती है।"

"वह खाने का और सूखी घास का ज्यादा पैसा ले लेगा!" कपिलोव सोचता है।

सूर्य और भी अधिक चढ़ आया है। कारवां-सराय में यूसुफ कपड़ों का एक गट्ठर लेकर आता है।

"हसन-बेग ने भेजे हैं, तुम्हारे लिए।" वह निकीतिन से कहता है।

गट्ठर में रेशम के दो बढ़िया चोगे, नीचे पहनने के कुछ कपड़े, चौड़े चौड़े विचित्र पैजामे और बढ़िया मुलायम बूट थे।

निकीतिन और कपिलोव ने अपने रूसी कपड़े उतारे और नये कपड़े बदल लिये। इन कपड़ों में ये लोग पहिचाने तक न जा रहे थे।

"एकदम मशरिक़ियों की तरह!" यूसुफ खुशी से मुस्करा दिया।

यूसुफ के खिले हुए चेहरे पर अपने नये दोस्तों और हसन-बेग

के प्रति खुशी के भाव झलकने लगे थे। हसन-बेग ने इन दोस्तो की पूरी पूरी मदद जो की थी।

अली, हसता हुआ, सिर हिलाने लगता है—

"अच्छा! अच्छा!"

"हसन-बेग कहा है?" निकीतिन पूछता है, "हमें उसके पास ले चलोगे न?"

"चलो न। चाहो तो अभी चलो।"

"अली," निकीतिन कह उठता है, "उस नाव में तुम्हारे दो आदमी थे न?"

"हा, दो।"

"अच्छा तो चलो, यूसुफ।"

मुहम्मद ने निकीतिन को रेशमी चोगा पहने देखा और मुह बाकर देखता ही रह गया।

शहर में आबादी कम थी और कई मकान खाली पडे थे। इधर-उधर खडे बाडे भी खडहर हो चले थे। वहा के खडहरो की मिट्टी देखकर ही पता चलता था कि कभी वहा मकान रहे होगे। वहा थोडी-सी दूकाने थी। छोटे छोटे चौराहे थे, जहा कुछ उदास-से हौज़ थे जिनमें पानी न था।

"यहा थोडे-से ही लोग रहते हैं!" निकीतिन यूसुफ से कहता है।

"ऊपरी शहर में ज्यादा आबादी है," यूसुफ उत्तर देता है, "हा, अब तो नावें बाकू जाती हैं, जहा एक अच्छा-सा घाट और मज़बूत किला है। वहा ज़िन्दगी गुज़ारना आसान है। इसी लिए दरबद खाली खाली-सा लगता है। यहा बाज़ार भी छोटा है।"

"तुम यही के बाशिदे हो क्या?"

"नही, मेरे रिश्तेदार शेमाखा में रहते है।"

राजदूत का मकान दूसरे मकानो को देखते हुए अधिक बडा था, कुछ अधिक शानदार। उसके चारो ओर मिट्टी की नही, पत्थर की एक दीवाल थी जो काफी दूर तक फैली हुई मस्जिद के अहाते तक चली गयी थी। फाटक पर धनुपाकार तलवारे लिये कुछ चौकीदार टहल रहे थे।

राजदूत का मकान एक बाग़ के बीचोबीच था। बर्फ की तरह सफेद और चारों ओर से एक लम्बे बरामदे से घिरा हुआ। बरामदे में कोई जंगला न था। मकान की खिडकिया और दरवाज़े सकरे थे।

अंग-रक्षको से घिरा हुआ हसन-बेग रईसाना पोशाक पहने हुए एक व्यक्ति से बातचीत कर रहा था। वे दोनो बाग़ में आनेवालो की ओर मुडे।

फौवारो वाले एक तालाब का चक्कर लगाता हुआ निकीतिन हसन-बेग के मकान के पास पहुच गया।

यूसुफ सिर झुकाये जहा का तहा जडवत् खडा रह गया था। निकीतिन ने पहले तो धरती छूकर हसन बेग को प्रणाम किया, फिर सीधा खडा हो गया।

हसन-बेग सिर ऊचा किये शान से खडा था, एक बडे अधिकारी की भाति। उसके शरीर पर सोने के काम का लाल चोगा और सिर पर मूल्यवान रत्नवाली पगडी थी।

पापीन के बाल काले थे। उसकी आखें चचल थी। उसकी पोशाक में भी मोती और कीमती रत्न जडे थे। उसका एक हाथ उसकी दाढी पर था।

"शुक्रिया, मालिक," निकीतिन कहता है, "आपकी भेजी पोशाक मुझे ठीक होती है।"

हसन-बेग अभी अभी रगी हुई अपनी दाढी हिलाता है। और कुछ न बोलते हुए बडी बडी अगूठियो से भरे हाथ के सकेत से ही बता देता है कि "अजी रहने भी दीजिये!"

यह शेमाखा निवासी इस समय वैसा कायर न लग रहा था जैसा अस्तरखान के पास था और न वैसा कमजोर ही जैसा डोगे में था। अब कौन कह सकता था कि इसपर कभी यूसुफ बरसा था या सेरेगा ने उसे हटाकर एक ओर कर दिया था।

"तुम लोग त्वेर के हो?" पापीन ने प्रश्न किया।

"हा, त्वेर के," अफनासी ने पुष्टि की, "हम आपकी मदद चाहते है। हमें अपने उन साथियो को बचाना है जो नाव

उलट जाने से मुसीबत में पड गये हैं। कहते हैं कि वे कैटको के हाथ पड गये है।"

"वहा है कौन कौन?" पापीन ने पूछा।

"चार हैं मास्कोवाले और एक हमारा त्वेर का साथी, मिकेशिन, और दो पूर्व के व्यापारी।"

"वेग, हमें कुछ न कुछ करना चाहिए।" पापीन वोला, "मदद करो!"

हसन-वेग सिर एक ओर झुकाते हुए कहता है—

"मेरा ख्याल है हमें दरवद के शासक पोलाद-वेग के पास कोई हरकारा भेजना चाहिए। अगर हम विना उससे प्रार्थना किये कुछ करेंगे तो वह नाराज होगा। व्यापारी दरवद आ रहे थे—उनकी चिन्ता पोलाद-वेग को ही करनी थी न। लेकिन वह तो नगर में है ही नही।"

"तो कव तक हम उसका इन्तजार करेंगे?"

"कौन जाने?" प्रश्नसूचक ढग से हसन-वेग उत्तर देता है, "मैं तो उसे हुक्म दे नही सकता जहा इस समय पोलाद-वेग रह रहा है वहा तक पहुचने में आधा दिन लग जायेगा, फिर हरकारे को उत्तर का इन्तजार करने में भी कुछ समय लगेगा फैसले के इन्तजार में दो दिन तो लग ही जायेंगे।"

"हमें मुसीवत में न छोडें, सरकार!" निकीतिन कहने लगता है, "याद है न आपके लिए हमने अपनी जिन्दगी तक की चिन्ता न की थी।"

"वहा है क्या तिजारती सामान?"

"सामान तो हमारा सब लुट गया," निकीतिन उत्तर देता है, "मुझे अपने साथियो की चिन्ता है"

"हु-ह!" आखें सिकोडते हुए पापीन वोल उठता है, "सब कुछ लुट गया?"

"सब कुछ। कोई चीज़ नही बची।"

"तो अब ?"

"सिवा आपके अब हमारा कोई सहारा नही।"

"लेकिन मैं तुम लोगो की कोई मदद नही कर सकता। तुम्हारे अलावा ही मेरी चिन्ताए कौन कम है।"

"हमें यों न छोड़ें, सरकार। हमें मौक़ा दीजिये कि हम आपकी जिन्दगी की खैर मनाते रहे। दुष्टो ने तो हमें भिखमगा बनाकर छोड दिया।"

"लेकिन तुमसे कहा किसने था कि इतनी दूर का सफर करो। नही, मेरे पास कुछ भी नही! मुझसे कुछ न कहो।"

निकीतिन चुपचाप अपने घुटनो के बल पड गया—

"सरकार मैं अपने लिए ही नही कहता सबके लिए कहता हू। अब हम जायें भी तो किस के पास ?"

पापीन की त्योरिया चढ गयीं—

"कह तो दिया जाकर शाह से अर्ज़ करो। मै खुद यहा परदेसी हू अच्छा अब जाओ! हम फैंटको के बारे में जो कुछ फ़ैसला करेंगे वह तुम्हें बाद में बता दिया जायेगा।"

निकीतिन उठता है और अपने घुटनो की धूल झाडने लगता है—

"बमीली, मुझे माफ करना। हमें अकेले आपका ही भरोसा था "

पापीन चुप हो गया। निकीतिन का हृदय दुख और निराशा से भर गया।

"जिन्दगी तो ढकेलनी ही है!" निकीतिन भारी आवाज़ में कह उठता है, "भगवान के नाम पर मैं आपसे थोडी मदद चाहता हू। यहा तो खाने तक का पैसा नही। जब तक शाह के पास जायें तब तक के लिए तो कुछ चाहिए ही "

"अच्छा, तो कुछ भेज दूगा " काफी देर तक चुप रहने के वाद अनिच्छा से पापीन कह उठता है, "अब जाओ।"

अगरक्षकों के चेहरे विल्कुल भावहीन थे। हुमन-वेग अगूठियो को रोशनी में नचा रहा है जिससे अगूठियों से निकलनेवाली किरणें उसके हाथ पर पड रही हैं। अफनामी, पापीन के मुह की ओर नही अपितु उसके बूटो के नीचे लगी चादी की नाल की ओर देखता है। वह चुपचाप अपना क्रोध पी जाता है और सिर झुकाकर फाटक की ओर चल देता है।

ये हैं अपने लोग

कपिलोव उदासीनता से उनकी वातें सुनता है—

"कितना भेजेगा, यह नही वताया?" वह पूछता है।

"नही।"

अली, निकीतिन का दुखी चेहरा देखता है और उसके पास वैठकर अपना हाथ उसके कन्धे पर रख देता है।

"वुरी वात है? है न?"

"वुरी वात है, अली। हम इससे वुरी वात की कल्पना भी नही कर सकते।"

"मै तुम्हारी मदद करूगा। तुमने मेरे प्राण वचाये हैं।"

"यह मत कहो! प्राण वचाये है! तुम्हे वचाता नही तो टकेल देता क्या? तुम हमारी मदद कैसे कर सकते हो? तुम भी तो हमारे साथ ही लुट चुके हो!"

"मैं करीव करीव घर के पास हू। मेरे साथ मेरे घर चलो। वहा माजन्द्रान में तुम कुछ तिजारत कर लोगे।"

"अली, सचमुच तुम्हारा दिल वहुत वडा है। शुक्रिया। लेकिन मैं अपने साथियो को नही छोड सकता। और न जाने तुम्हारे यहा काफी

तिजारत भी कर सकू या नही। जानते हो मुझे कितना कर्ज़ा पाटना है? एक हज़ार रूवल से ज़्यादा! समझे?"

अली मुह लटकाकर उसके पास ही वैठ जाता है और आखें नीची कर एक ठढी सास लेता है। वेशक एक हज़ार रूवल, यह तो वहुत हुआ

इसी समय कारवा-सराय का मालिक यह पता चलाने आता है कि उसके प्यारे मेहमानो को क्या क्या भोजन चाहिए। लेकिन उससे पिड छुडाने के लिए निकीतिन, कपिलोव और अली नगर की ओर चल देते हैं। काली आखो वाले नगे नगे वच्चे चीखते-चिल्लाते गन्दे पानी में नहा रहे है और पालतू वत्तखें उडा रहे है, भगा रहे है। एक दूकान से निहाई पर पडनेवाली चोटो और घटी की आवाज़ सुनाई पड रही है और देहलीज़ पर फटे-चिथे कपडे पहने एक वूढा सो रहा है। कही चलते हुए ऊटो के गलो में वधी हुई घटियो की टुन टुन भी सुनाई पड रही है। वडे, देखने में भयानक कुत्ते आदमियो को देखकर दुम दवाये भाग रहे है।

वीरान वगीचे में नाशपाती और सेवो की भरमार है। अली वेहिचक उन्हे पत्थर मार मारकर गिराने लगता है। व्यापारी फलो को अपनी जेवो और छाती के पास रखते है और समुद्र की ओर वढ जाते है। फिर एक वलूत की छाया में वैठकर उन्हे खाने लगते है।

"तुम्हारा शहर है कहा?" निकीतिन अली से पूछता है। वह प्रश्न करता है इसलिए कि मौन टूट जाये और वातो का सिलसिला चल पडे।

अली दाहिनी ओर और सामने की तरफ इशारा करता है—किले की दीवालो के उस पार, उठती हुई सफेद लहरो के उस पार।

"और शेमाखा का शाह कहा रहता है?"

"या तो बाकू में या पहाडो पर। आजकल वह पहाडो पर है। अभी तो गर्मी ही चल रही है न। जाडो में अपने महल में रहेगा।"

"जाडे यहा सख्त होते हैं क्या?"

"तुम्हारी खिजा की तरह।"

कपिलोव खाने के बाद बचा हुआ सेव का टुकडा जमीन पर फेंक देता है।

"शायद शाह हमारी मदद करे।"

"शाह मालदार है।" अली ने हामी भरते हुए कहा।

"नही, वह मदद नही करेगा," निकीतिन कह उठता है, "हमसे उसे क्या लेना-देना।"

"लेकिन उसे महसूल मिलता है तिजारत से ही।" कपिलोव आपत्ति करते हुए कहता है, "उसे चाहिए कि हमारी मदद करे "

निकीतिन उपहास-सा करता हुआ मुस्करा देता है। उसकी मुस्कराहट में कटुता की झलक है।

कुछ दिनो तक व्यापारी आशा और निराशा के बीच झूलते रहे। पापीन ने उन्हे थोडा-सा ही पैसा भेज दिया—जैसे ऊट के मुह में जीरा। इतने पैसे से तो वे आधा पेट खा भी नही सकते। कारवा-सराय के मालिक को उनकी कगाली की गन्ध मिल चुकी थी। अब वह उन्हे अपने पास तक नही फटकने देता, बल्कि वह तो गद्दे भी धीरे धीरे हटाये ले रहा है।

"शैतान समझे उसे। खैर हमें पैसा भी तो कम ही देना पडेगा।" कपिलोव थूकते हुए कहने लगता है।

मुहम्मद रूसियो की ओर निगाह उठाकर भी नही देखता और व्यापारियो को भी उसका लाल लाल मोटा-सा चेहरा बडा नामाकूल लगता है।

भगवान भला करे उस मुहम्मद का! व्यापारियो को उससे अधिक आश्चर्य हुआ था शाह् फरुख-यासार की हरकतें देखकर, जो शेमाखा का हुक्मरा होने के साथ ही साथ पृथ्वी पर अल्लाह् का वन्दा समझा जाता था। यूसुफ ने वताया था, जैसे ही शाह् ने पोलाद-वेग के हरकारे की वात सुनी कि तुरन्त एक हरकारा कैटको के राजा खलील-वेग के पास दौडा दिया, कहलाया तारका के पास जो नाव उलट गयी है, वह रूसी है और मेरे पास आ रही थी।

यह कहानी सुनकर निकीतिन को हसी आ गयी। हो सकता है हरकारे ने वात ठीक से न कही हो, हो सकता है शाह् ने ठीक ठीक न समझा हो, किन्तु ऐसा लगता था कि फरुख-यासार को सबसे ज्यादा दिलचस्पी अपने पास लाये जानेवाले माल के वारे में थी जो उसकी राय में कैटको ने लूट लिया था। शाह् ने कहलाया था कि व्यापारियो को रिहा करके, उन्हे, मय उनके सारे सामान के, उसके पास दरवद भेज दिया जाये। शाह् ने वादा किया था कि वह खलील-वेग की हर समय मदद करने को तैयार है।

खलील-वेग ने व्यापारियो को छोड दिया लेकिन माल के वारे में कहला दिया कि उनके पास फूटी कौडी तक नही है। उसने तो यह भी शिकायत की कि इतने लोगो के खिलाने-पिलाने पर उसे काफी खर्च आया है और इनसे उसे नुक्सान ही उठाना पडा है।

व्यापारी दरवद आ गये। किसी प्रकार मिकेशिन भी आ पहुचा। वह हाफ रहा था, आहें भर रहा था। उसने सूघ लिया था कि पापीन ने उनकी मदद की है। इसी लिए अपना हक भी मागने लगा।

"तुम्हे कुछ नही मिलेगा," निकीतिन वीच ही में वोल उठा, "अभी सब पचायती है।"

"गधा कहीं का! अरे तुम्हें तो हमारा अहसानमन्द होना चाहिए था कि हमने तुम्हारी मदद की!" कपिलोव ने क्रोध दिखाते हुए कहा।

"तुम्हारे बिना भी वे लोग मुझे छोड देते।" सिकेशिन भौंक पडा, "मैंने तो तुमसे कहा नहीं था कि मेरी फ़िक्र करो। मैं पापीन से शिकायत करूंगा कि तुम मुझे भूखा मार रहे हो। मैं जानता हूं तुमने पैसा छिपा रखा है।"

"दुष्ट कहीं का," मुट्ठी भींचते हुए कपिलोव बोला, "अगर हमें शाह से कुछ मिलेगा भी तो भी तुझे एक कौडी न दूंगा। दूं, तो मुंह पर थूक देना!"

व्यापारी शाह की मेहरबानियों पर आस लगाये रहे। उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए वे हसन-बेग और पापीन के साथ फीत-दाग़ की पहाडी पर शाह के ग्रीष्मकालीन शिविर की ओर चले। हसन-बेग ने घोडों का प्रबन्ध कर दिया था। इससे व्यापारियों को आशा भी बढने लगी थी—इसके माने हैं कि हसन-बेग समझता है कि शाह रूसियों की सहायता करेगा।

पूर्व के व्यापारी दरबद में ही रह गये। चलते समय अली ने निकीतिन से कहा—

"मैं एक हफ्ते यहां तुम्हारा इन्तज़ार करूंगा।"

शाह का ग्रीष्मकालीन शिविर—कोईनूर—दरबद के दक्षिण-पश्चिम में था। रास्ता पहाडों, अंगूर के बागों और बादाम के जालों से होकर जाता था। मार्ग के दोनों ओर अखरोट और बलूत के घने वन, एस्प और मैपिल के वृक्ष और सेब और नाशपाती के जगल थे। वनों के भीतर भी जगह जगह पीले और काले आलूचों और मुट्ठी मुट्ठी बराबर सन्तरई बिही के छोटे छोटे जगल दिखाई पड रहे थे। वहां लोगों से डरी हुई सी चिडिया वृक्षों में लिपटी हुई लताओं से टकराती और लताएं सरसरा उठतीं।

मार्ग जितना ही अधिक ऊचाई पर होकर जाता, इर्द-गिर्द वातावरण उतना ही सुनसान होता जाता और घोडो की टापें कभी उन स्थानो पर पडती जहा का पानी सूखा होता, और कभी सूखी हुई घास पर। धीरे धीरे वनो के स्थान पर झाडिया आने लगी—और झाडियो का स्थान भूरी नगी चट्टानो ने लिया।

चारो ओर हरी, नीली, धुएँली पहाडिया थी, जिन्हें देखकर लगता जैसे लोगो को लौटने का रास्ता ही न मिलेगा।

उदास मत्वेई र्यावोव घोडे पर सवार निकीतिन के पास आया। उस सकरे-से मार्ग पर दोनो की रकावें एक दूसरे से टकरायी। कुछ दूर तक दोनो चुपचाप बढते रहे।

"मैंने तुम्हारे बारे में पापीन से बात की थी," र्यावोव धीरे से बोला, "कहता था कि ख्वालीन तक के लिए तुम्हारी मदद चाहता हू।"

निकीतिन ने कोई जवाब न दिया और पहाडी रास्ते की ओर देखता रहा।

"हमने उस नाव की भी चर्चा की जो छोड दी गयी थी; और तातारो से हुई लडाई की भी " हाथ हिलाते हुए र्यावोव बोला—"सुनो, अफनासी, हमारे साथ मास्को चलो। फिर कुछ सोचेंगे "

"तुम आगे नही जाओगे क्या?" तिरछी नजरो से र्यावोव को देखते हुए निकीतिन ने कहा, "आगे का रास्ता नही देखोगे?"

"पापीन ने मुझे आगे जाने की आज्ञा नही दी। और खुद हम भी नही चाहते। आखिर रास्ते भी कैसे हैं। यही बात हम बडे राजा से कह देंगे। कहेंगे कि ख्वालीन के उस पार जाना सम्भव भी नही। वहा तो डाके पडते हैं। समुद्र के उस पार तो और भी गडबडी है तो फिर? मास्को?"

"देखूगा," उदासीनता से निकीतिन ने उत्तर दिया, "देखूगा कि शाह जवाब क्या देता है।"

शेमाखा के बडे शाह के पास व्यापारियों को जाने की अनुमति नहीं दी गयी। पापीन ने रूसी व्यापारियों का लिखित प्रार्थना-पत्र फ़रुख़-यासार को दे देने का वचन दिया और उसने वह वचन निभाया भी। किन्तु पूरे तीन दिनों तक इन्तज़ार कर चुकने के बाद कहीं शाह का उत्तर आया कि वह कोई मदद नहीं कर सकते—व्यापारियों की संख्या अधिक है।

उत्तर सुनते ही उन्हें लगा जैसे फ़ीत-दाग़ की पहाडी, बुर्ज, पत्थर का क़िला, बाग़-बगीचे, चौकीदार—सभी कुछ उदास हैं, सभी कुछ नीरस। उनकी अन्तिम आशा भी टूट चुकी थी।

पापीन ने मत्वेई र्‌याबोव की मार्फ़त कहला भेजा कि उसे शीघ्र ही रूस लौटना है, जो लोग उनके साथ जाना चाहें, जा सकते हैं। मत्वेई र्‌याबोव अफनासी के पास आकर कहने लगा।

"लगता है कि पापीन की बात बनी नहीं। शाह नाराज़ है इसलिए कि उसे दी गयी सौग़ात उसतक नहीं पहुची। उसने खुद भी कुछ नहीं भेजा। लगता है कि राजदूत और शेमाखा के लोगों की कुछ बनी नहीं।

यह बात ठीक भी लग रही थी। शाह के चाकरों ने रूसियों को ऐसे देखा मानो उनकी खिल्ली उडा रहे हों, और उन्हें क़िले के पास तक भी न जाने दिया।

कूच का समय निकट आता जा रहा था। र्‌याबोव, सिकेशिन और एक और मास्कोवासी ने पापीन का इन्तज़ार करने का निश्चय किया। दो मास्कोवासियों ने शेमाखा जाने का फ़ैसला किया।

शाह का उत्तर जानकर कपिलोव निकीतिन को पहाडों पर ढूढने

गया। उसे आश्चर्य हो गया—निकीतिन का चेहरा शान्त था। वह जमीन पर पड़ा पड़ा घास चबा रहा था और मुस्कराता जा रहा था।

"चलो, चलें!" कपिलोव ने पुकारा।

निकीतिन ने, जैसे उसकी बात न मानते हुए, अपना सिर हिलाया और हथेली से घास थपथपाते हुए कहने लगा—

"बैठो आखिर हम बरबाद ही हो गये, न?"

कपिलोव जमीन पर बैठ गया। उसने कोई उत्तर न दिया।

"शाह ने हमारी कोई मदद नही की। मैं कहता था न," निकीतिन बोला।

"तुम्हारे इस ठीक कहने को लेकर हम चाटें क्या?" कपिलोव ने आपत्ति की, "तुम्हारे कहने से हमारा पेट भरता है क्या?"

घास थूकते हुए अफनासी ने अपने दुखी साथी की ओर देखा।

"हा, पेट भरता है," वह बोला, "अब कम से कम हमें किसी के आगे सिर तो नही झुकाना है।"

"कहना आसान है!" उत्सुकता से सेरेगा बोला, "तुम ठहरे टुटरूं-टू लेकिन मेरे लिए तो मेरी बीबी और बच्चे रो रहे होंगे।"

"इल्या की हालत तो और भी खराब है!" अफनासी ने उसे याद दिलाते हुए कहा।

"बेशक, उसके लिए हम कुछ भी नही कर सकते। इसलिए हमें उसके बारे में बात नही करनी चाहिए," सेरेगा ने बात काटते हुए कहा, "बेकार ही मुझे डाटो-फटकारो मत, कहो यह कि अब किया क्या जाये?"

उसने सिर उठाकर अफनासी की ओर देखा। कपिलोव की आखें प्रतीक्षा के कारण थकी थकी-सी और व्यथित-सी लग रही थी। निकीतिन को भी दुख हो रहा था कि उसने अपने मित्र को क्यो कड़ुई बात कह दी।

"सेरेगा, सुनो," अफनासी ने अपने साथी का घुटना छूते हुए कहा, "मैं तुम्हें थोड़े ही कुछ कहता हूं। मेरे दिमाग़ में एक विचार आ रहा था ..."

कपिलोव के कान खड़े हो गये। उसकी छोटी छोटी काली आंखों में अब भी अविश्वास झलक रहा था।

"हमारे लिए अब भी एक रास्ता है," धीरे धीरे अफनासी ने कहना शुरू किया।

"राजदूत के साथ रूस जाने का?"

"रूस? नहीं ... रूस के दरवाज़े तो हमारे लिए बन्द हो चुके हैं। मैं वहां भिखारी बनकर या धोखे खाकर मरना नहीं चाहता—मेरी ज़िन्दगी इसके लिए नहीं है ... नहीं, रूस नहीं! समुद्र के उस पार।"

कपिलोव ने हाथ हिला दिया।

"अली के साथ? कुछ तिजारत कर भी सकोगे? और फिर रूस लौट सकोगे? मैं तो कहता हूं मेरे लोग मेरा इन्तज़ार कर रहे हैं।"

"कोई मेरा भी ... इन्तज़ार कर रहा है ..." निकीतिन ने अपने मित्र की आंखों में आंखें डालते हुए कहा और कपिलोव तुरन्त समझ गया कि निकीतिन का इशारा किधर है। "तुम तो मेरी बात जानते ही हो। मुझे भी त्वेर जल्दी ही जाना है। लेकिन जाऊं कैसे और क्या लेकर? अगर कारीन अपना क़र्ज़ माफ भी कर दे तो भी मैं वहां सुख न रह सकूंगा। लोग मुझे उधार देंगे नहीं—किस बूते पर देंगे, मेरे पास बचा ही क्या है! फिर क्या गुलाम बन जाऊं या दुनियादारी छोड़कर मठ में रहने लगूं? या फिर ओलेना की मुसीबतें देखा करूं और उंगलियां चबाया करूं? या हर एक के आगे हाथ फैलाऊं-गिड़गिड़ाऊं? मैं यह सब नहीं करना चाहता! नहीं करूंगा!"

कपिलोव ने निकीतिन को ऐसी मानसिक स्थिति में पहली बार देखा था। वह जानता था—निकीतिन बहादुर है, तत्काल निश्चय कर सकता है, लडाई में भी टिक सकता है, लेकिन उसने उसके चेहरे पर ऐसी नाराजगी कभी न देखी थी। उसकी ठुड्डी आगे निकली थी, गाल की हड्डिया हिल-डुल रही थी—लग रहा था मानो वह अपने सबसे भयानक शत्रु को घूर रहा हो।

निकीतिन ने अपने चोगे को जोर से झटका दिया।

"हर आदमी को अपनी किस्मत ढूढनी चाहिए। मैं रूस में कुछ न कर सका तो फिर समुद्र के उस पार तकदीर आजमाऊगा। अली! अली का क्या? वह मेरी कब तक सहायता कर सकता है—यही पहले कुछ दिन। मुझे तो और आगे जाना है, भारत।"

कपिलोव को तुरन्त कोई जवाब न सूझा। फिर उसपर से आख हटाते हुए बुदबुदाने लगा—

"भगवान भला करे, अफनासी! तुम कहते क्या हो?"

"ठहरो," निकीतिन ने दृढता से उत्तर दिया, "मेरी तरफ देखो। मेरा दिमाग ठीक है। मैं पागल नही हू। क्या भारत के नाम से तुम्हे डर लग रहा है? लेकिन तुम उसके बारे में जानते क्या हो? हा? तुमने उसकी कहानिया सुनी है? लेकिन मैंने कहानिया ही नही सुनी, उसके बारे में पढा भी है। लोग वहा से माल लाते है? मरते नही? नही, वे नही मरते। माल बीसियो हाथो से होता हुआ आता है, इसी लिए तो जो माल हम तक पहुचता है वह सोने से ज्यादा महगा होता है। हा। लेकिन लिखी गयी और कही गयी इन कहानियो में और भले ही कुछ हो, एक बात जरूर सच है—भारत देश बडा अद्भुत है। वहा सब कुछ है। यही बात मैंने अली और दूसरे दोस्तो से कही थी। फिर खैर, भारत से नजदीक नही है। माजन्द्रान में ऐसे

व्यापारी होते हैं जिनमें बहुत-से ऐसे भी होंगे जो लगभग भारत तक गये होंगे, जिन्होंने भारत के लोगो के साथ व्यापार किया होगा। समुद्र पार करना ही है। लेकिन मैं उसे देखकर रुकूगा नही—वह मेरा रास्ता नही रोक सकता। मैं तो समझता हू—भारतीय हमारी ही तरह रोज काम आनेवाली चीजो का इस्तेमाल करते हैं फिर हमें उनसे डरने की कोई जरूरत नही। वे हम जैसे ही तो हैं।"

कपिलोव ने अनमनेपन से आख विचकायी और कुछ कहने के लिए मुह खोला, लेकिन निकीतिन ने उसे इसका मौका ही न दिया—

"जरा ठहरो! तुम पहले शेमाखावासियो के बारे में कुछ जानते थे? नही! तुम्हें तो उनके पास तक जाने में डर लगता था? हा, ऐसा ही लगता था! तो क्या हुआ? आदमी तो आदमी हैं। यहा यूसुफ जैसे अच्छे लोग भी रहते हैं और मुहम्मद जैसे बदमाश भी   मैं समझता हू भारत में भी ऐसा ही होगा।"

"सचमुच? यह बातें गम्भीरता से कह रहे हो?" आखिर कपिलोव को बोलने का कुछ मौका मिल ही गया।

"जरूर! मैं तुमसे कहता हू—सिवा भारत के और कोई जगह भी तो नही जहा हम जा सके। हमें एक बार फिर खतरा उठाकर अपना भाग्य आजमाना चाहिए। और अगर कामयाबी मिली तो बड़े आदमी बन जाओगे और फिर दूसरों के आगे सिर झुकाना भूल जाओगे।"

"हे भगवान! लेकिन भारत में भी क्या धरा है? अगर तुम रूस नही जाना चाहते तो फिर यही कुछ धधा कर लो। भारत जाने की इतनी जल्दी भी क्या है! और वहा जाने का कोई रास्ता भी तो नही है   वह देश यहा से दूर, बहुत दूर है   और कौन जाने इस नाम का कोई देश न भी हो   अफनासी   बेकार ही तुम मेरा सिर चाट रहे हो?"

सेरेगा ने निकीतिन के चेहरे पर एक पैनी दृष्टि डाली।

"ओफ!" अफनासी ने सिर उठाया, "मै देखता हू कि मेरी बातें तुम्हारे दिमाग में नही बैठती। अच्छा तो चलो।"

"तो तुमने कब भारत जाने का फैसला किया है?" कपिलोव ने अनमनेपन से पूछा।

"फैसला तो मैंने न जाने कब का कर लिया," निकीतिन शान्ति से बोला, "मैंने उसके बारे में बहुत कुछ सुना है, अब उसे देखना चाहता हू!"

"तुम बात तो ऐसी करते हो जैसे कोई पडोस के गाव में जा रहे हो।"

निकीतिन ने कपिलोव को ऊपर से नीचे तक देखा—

"तो हमेशा घर का ही चक्कर काटते रहें क्या! कुछ लोगो को नगर से गाव तक जाना पहाड हो जाता है और कुछ ऐसे भी हैं जो भारत तक का सफर करना खेल समझते हैं। तुम भी मेरे साथ चलो। हम लोग जरूर वहा तक पहुच जायेंगे।"

"भगवान तुम्हारी मदद करे, अफनासी। मास्कोवासियो की तो नानी मरती है त्वालीन के उस पार जाने में, और तुम हो कि "

यह कब की बात थी? हाल ही की तो। बस, इतना ही समय हुआ! आखिरी रात सब साथी साथ साथ रहे। कल विदाई की घडी जो थी। कोईतूल से सारे रास्ते-भर, दरबद में हर समय और दरबद से बाकू जाते वक्त भी कपिलोव बराबर निकीतिन के साथ रहा था। निकीतिन कपिलोव की घबडाहट पर कभी तो गुस्सा हो जाता और कभी मुस्करा देता।

निकीतिन को चारो ओर निराशा ही निराशा दिखाई पड रही थी और कोई रास्ता न सूझ रहा था। तभी, अन्तत , उसने पक्का निश्चय कर लिया कि वह भारत जरूर जायेगा।

निकीतिन शाह के पास जाने के इन्तज़ार में था। ऐसे में एक दिन वह ऊपरी शहर की ओर निकल गया। वह अकेला था और अंगूरों के ढेरों, शराब और ठंढे पानी की मसकों तथा पनीर और मिठाइयों के बाज़ार से होता हुआ आखिर वहां पहुंच गया जहां क़ालीन बिकते थे। बेशक, उसके पास पैसा न था लेकिन उसे दूर देशों की, समुद्र पार से आयी हुई चीज़ों में दिलचस्पी तो थी।

क़ालीन खूबसूरत थे और सस्ते भी। बढ़िया बढ़िया डिज़ाइनों के दो-तीन क़ालीन रूस ले जाइये और मालदार बन जाइये।

कारीगर ऐसी ऐसी सुन्दर डिज़ाइनें क़ालीनों में बना कैसे लेते हैं? उन्हें इतने अद्‌भुत रंग मिल कहां से जाते हैं?

इन क़ालीनों में उसे एक क़ालीन विशेष रूप से आकर्षक लगा – देखने में बड़ा, लाल रंग का, जिसकी काली, सफ़ेद और नीली डिज़ाइनें एक दूसरी में इस खूबसूरती से गुथी-मिली थीं कि आंख उन्हीं पर लगी रह जाती। क़ालीन का एक एक रेशा जैसे उसकी निगाहों में बसता जा रहा था।

एक खरीदार उसे खरीद रहा था – एक बदशक्ल मुल्ला, अपने पिचके हुए पेट पर हाथ बांधे सांवले चेहरेवाले व्यापारी से क़ालीन के दाम कम करने के लिए सौदेबाज़ी कर रहा था।

व्यापारी क़ालीन पर कुछ मुनाफ़ा कमाने के चक्कर में था। लेकिन मुल्ला को यक़ीन था कि वह उसे और किसी के हाथ न बेचेगा क्योंकि वह खुदा के बन्दे को नाराज़ करके उसे कभी खाली हाथ वापस न जाने देगा। शायद इसी लिए मुल्ला उसे मनमानी क़ीमत देने की ज़िद कर रहा था।

"अमां, दे भी दो, वरना वह मुफ़्त के दामों खरीद लेगा!" किसी ने व्यापारी से मज़ाक़ करते हुए कहा।

"अरे बेच भी लो न। अगर ऐसा कुछ अच्छा काम करो तो किसी हूर का चुम्बन मजे में मिल जायेगा!" किसी दूसरे ने राय दी।

कुछ निठल्ले, मुल्ला और व्यापारी के इर्द-गिर्द जमा होकर कहक़हे लगा रहे थे।

"तुम इसका क्या चाहते हो?" व्यापारी को आख मारते और भीड में से घुसते हुए निकीतिन ने प्रश्न किया।

वहा खडे हुए काले और नाटे पहाडियो के बीच निकीतिन एक दैत्य जैसा लग रहा था। उसे धकियाकर हटा देने की किसी की हिम्मत न हुई।

व्यापारी निकीतिन का मतलब समझ गया। उसने दस तमगे–पाच रूबल–मागे।

"चार रूबल दूगा!" उसके आगे हाथ बढाते हुए निकीतिन बोला, "आठ तमगे लो और ढूढ लो अपनी हूर को इसी दुनिया में। चलो लपेटो कालीन।"

मुल्ला ने क़ालीन थाम लिया।

"सौदा अभी खत्म नही हुआ! ए, सौदागर यह न भूलना कि मै खुदा का बन्दा हू। और पहले आया था!"

"सरकार, मुझे अल्लाह के नाम की याद न दिलायें! कालीन मै उसके हाथ बेचूगा जो मुझे ज्यादा पैसे देगा नौ तमगे!"

"आठ, आठ!" निकीतिन शान्ति से बोला, "इतने तमगो में तो तुम्हारे मुहम्मद ने भी कालीन न खरीदा होगा।"

"कुधर्मी!" मुल्ला फुसफुसाया, "उनके नाम को अपवित्र न करो!"

"कालीन लपेट दो!" मुल्ला की ओर कोई ध्यान न देते हुए निकीतिन कालीन में उगलिया गडाने लगा, "हूरे इन्तजार कर रही हैं।"

सभी लोग उस बदशक्ल और निरीह की तरह इधर-उधर देखते हुए मुल्ला पर हस पड़े।

"तुम तो भले आदमी हो! उसे किसी कुधर्मी के हाथ दे दोगे क्या?"

"ए मुल्ला, इस क़ालीन पर वह अपने खुदा की इबादत करेगा। कुछ और दाम बढा दो न!"

"मैं कालीन बेचता हू," व्यापारी बोला, "अल्लाह गवाह है, वह ज्यादा कीमत दे रहा है।"

"अच्छा, मैं भी आठ तमग़े दूगा," हाथ ऊपर उठाते हुए मुल्ला बोला, "दूगा, लेकिन कालीन नही जाने दूगा। कालीन मेरा है। मैं पहले आया था।"

"अजी मुल्ला जी! यह नही होगा," कालीन पर हाथ रखते हुए निकीतिन कहने लगा, "आठ तमग़े, यह मेरा दाम है। क़ालीन मेरा है।"

"तो तुम क़ालीन किसी कुधर्मी को दे दोगे?" मुल्ला ने व्यापारी से कहा, "थू है तुम पर।"

"लेकिन वह ठीक कहता है, दाम तो पहले उसी ने लगाया था "

"तुम मुझसे ज्यादा मागते हो? एक तमग़े के लिए तुम अपना ईमान बेच रहे हो, कैसे सौदागर हो तुम!"

"यहा ईमान का क्या सवाल?" निकीतिन ने आपत्ति करते हुए कहा, "अरे खुदा के बन्दे, अपनी मस्जिद बाज़ार में तो मत घुसेडो। यहा सभी एक ही खुदा की इबादत करते है।"

"तुम सुन रहे हो, सुन रहे हो न, वह क्या कह रहा है?! फिर भी कालीन तुम उसी को दोगे?!"

मुल्ला गुस्से से काप रहा था और लोग क़हक़हे लगाकर हस

रहे थे। व्यापारी सकुचा रहा था। उसकी समझ ही में न आ रहा था कि वह क्या करे। आखिर निकीतिन ने ही उसकी मदद की।

"अच्छा अच्छा, तुम्हारे रुतवे का लिहाज करके मै हट जाता हू। तुम्ही देखो बाजार में भी मैं दूसरो के मजहव की कद्र करता हू। नही, नही, शुक्रिये की कोई जरूरत नही," उसने ऐसी मुद्रा वनायी जैसे वह कृतज्ञता प्रकट करने से उसे रोक रहा हो, "हो सकता है कि उस दुनिया में मुझे इन आठ तमगो का फल मिल जाये।"

"तुम्हे फल मिलेगा सिर्फ तुम्हारी गालियो का और चुगलियो का," पैसा गिनते हुए मुल्ला क्रोध से भनभनाया।

जव मुल्ला कालीन लेकर जाने लगा तो पीछे से लोगो ने छीटेंकशी की और सीटिया वजानी शुरू कर दी। वाजार के लोग तो यो भी ऐसे ऐसे तमाशे देखने के उत्सुक होते है। वे इस भूरी दाढीवाले परदेशी की साहसिकता और तेज जवान पर मुस्करा रहे थे। लोग उसके कधे और पेट थपथपाकर उसे शावाशी दे रहे थे।

व्यापारी वडा खुश था, आकर निकीतिन से वोला—

"मेरी दूकान पर चलो। मेरे पास कालीन ही नही, कुछ और भी है।"

निकीतिन ने दोनो हाथ झुला दिये—

"दोस्त, अगर मेरे पास पैसा होता, तो इस कालीन को हाथ से न जाने देता! यह कालीन है कहा का?"

"वुखारा का। अफसोस कि तुम्हारे पास पैसा नही। मै तुम्हारे हाथ एक चीज वेचना चाहता हू   अच्छा, आओ मेरे साथ कुछ कुमीस* पियो।"

---

* कुमीस—घोडी का दूध।

"शुक्रिया। क्या चीज़ है वह?"

"तुम्हारे पास तो पैसा ही नहीं।"

"तो इसके माने है कि तुम उसे बेचकर नुकसान उठाने का खतरा मोल नहीं लेते!"

"बात तो ठीक है!" दूकानदार हंस दिया, "पर तुम्हें बड़ी निराशा होगी। चीज़ सुन्दर है।"

"तो क्या सुन्दर चीज को देखकर निराशा होती है?"

"बेशक, अगर वह चीज न मिले तो।"

"यह जानकर खुशी ही हो कि ऐसी चीज़ दुनिया में है तो।"

"हुन्ह!" दूकानदार ने उत्तर दिया, "दरवेश के लिए शाह की प्रेमिका से क्या लेना-देना? बेचारा उसकी सुन्दरता की सराहना-भर कर सकता है और मन ही मन दुःख कर सकता है कि वह शाह क्यों नहीं हुआ।"

"तो उसे चाहिए कि शाह बने, कोशिश करे।"

"दरवेश है हजार और शाह—एक ही," दूकानदार लम्बी सांस लेता हुआ बोला, "कोई न कोई तो हमेशा दुखी रहता ही है अच्छा, अच्छा, मैं वह चीज तुम्हें दिखाऊंगा।"

दोनों दूकान में घुस गये। वहां दूकानदार ने बक्से नहीं खोले अपितु छाती के पास से एक थैली निकालकर उसमें से एक अखरोट निकाला। बगदाद की सड़कों पर ऐसे ढेरों अखरोट मिलते थे। उसने अखरोट अपनी हथेली पर रख लिया।

"कभी जिन्दगी में ऐसी चीज देखी है तुमने?" ओठों पर हल्की-सी मुस्कराहट बिखेरते हुए उसने कहा, "ऐसी खूबसूरती, ऐसा हुनर कभी ही कहीं देखने को मिलता है? हुन्ह? इसे जरा ध्यान से देखो! यह है एक खजाना!"

"क्या !" निकीतिन ने सावधानी से कहा, "जरा हाथ में तो देना "

"लो।"

निकीतिन कुछ भी न समझ सका। मामूली-सा अखरोट, लेकिन जरूर वह कोई साधारण अखरोट न होगा। अगर ऐसा होता तो दूकानदार मुस्कराता नही। आखिर इसमें राज़ क्या है? शायद उसके भीतर कुछ हो? लेकिन भीतर क्या हो सकता है? वह इतना हल्का जो है।

"मुझे तो कुछ भी समझ में नही आता !" निकीतिन ने स्वीकार किया, "सौदागर, तुम मजाक कर रहे हो!"

"इसकी सुन्दरता ने तुम्हे चौंधिया दिया है!" दूकानदार मज़े ले लेकर कहने लगा, "तुम्हारी आखो की रोशनी तक छीन ली है! जरा ध्यान से देखो इसे!"

"यह लो अपना अखरोट," निकीतिन बोला, "मुझे बनाओ मत। झूठ मत बोलो।"

दूकानदार ने अखरोट ले लिया और एक बार फिर हथेली पर उछाला।

"अरे, क्या मैं झूठा लगता हू इसे ज़रा ठीक से देखो। अच्छी तरह एक, दो देख रहे हो?"

दूकानदार के हाथो में अखरोट के दो टुकडे हो गये और उसमें गरी की जगह पिस्तई रग के रेशम का एक छोटा-सा गोला निकल आया।

"अरे, यह क्या है?" निराशा-से मुस्कराते हुए निकीतिन बोला, "यह है क्या, और किसलिए?"

"तुम्हें पसन्द नही?" कृत्रिम खेद से व्यापारी ने पूछा, "मैं तो तुम्हें खुश करना चाहता था! लेकिन अफसोस! बेशक, इसकी

जरूरत किसे पड सकती है? इसे तो फेंक देना चाहिए इस तरह इस तरह "

इतना कहकर व्यापारी हाथ से वह गोला उछालने लगा। प्रत्येक उछाल के साथ हवा में धीरे धीरे सिन्दूरी रंग का एक नम धुआँ-सा उठने-गिरने लगा। धुए भी एक लपेट दूसरे के ऊपर बह-सी रही थी। एक ही मिनट में सारी दूकान हरी हरी-सी गन्ध से भर गयी।

अफनासी साश्चर्य इधर-उधर देखने लगा। कितने हाथ लम्बा कपडा होगा यह? और यह बनाया किसने है? यह तो मकडी के जाले से भी महीन है!

"लो, हाथ में लेकर देखो!" व्यापारी ने उसे कपडा देखने की अनुमति देते हुए कहा, "इसे खींचकर देखो, खींचकर! डरो मत! चाहो तो जोर से खींच सकते हो।" निकीतिन ने डरते डरते उस मुलायम कपडे को खींचा। कपडा मजबूत था। उसने और तेजी से खींचा—कपडा नहीं फटा। अब उसने उसे चीरने की कोशिश की, फिर भी वह टस से मस न हुआ!

"इसे नापना चाहते हो?" दूकानदार ने पूछा, "अन्दाज लगाओ कितना लम्बा होगा?"

"ओफ़!" बीस हाथ तक नाप चुकने के बाद निकीतिन विस्मित होकर कहने लगा, "कितनी आश्चर्यजनक बात अगर यह बात किसी ने मुझसे कही होती तो मैंने विश्वास न किया होता। यह कपडा आता किस काम है?"

"रईस लोग इसकी पगडी बनाते है और नयी-नवेलिया—पोशाक।"

"इसकी कीमत क्या होगी?"

"सारे अखरोट की? सौ तमगे।"

"सौ-डन्ड?"

"सौ! ऐसी चीज़ कही देखने में भी आती है। यह अखरोट भारत की कला है।"

निकीतिन के दिमाग में एक विचार कौंध गया। सौ तमगे—पचास रूबल। यह कीमत यहा है। और मास्को में—दस गुनी पाच सौ एक अखरोट के लिए, जो मुट्ठी में आ सकता है!

"तुम भारत के हो?"

"अरे नही! यह अखरोट मैंने करमान में खरीदा था।"

रेशमी कपडा लपेटते हुए दूकानदार ने किसी और चीज़ के बारे में भी कहा, कुछ छीटेकशी भी की, किन्तु निकीतिन ने कुछ न सुना।

"और अगर " वह सोचने लगा। उसने यह विचार अपने मस्तिष्क से निकाल बाहर करना चाहा, लेकिन वह और भी दृढता से उसके दिमाग में जड जमाने लगा—"तुमने तो भारत जाने का इरादा कर ही लिया है," उसकी चेतना जैसे कह उठी—"तुम तो हमेशा ही विदेशो की ओर खिचते रहे हो? उन्हे देखने की इच्छा भी तुम्हारे मन में उठती रही है? तो अब तुम्हे क्या हो गया?"

"लेकिन वह समय और था," तुरन्त उसकी आत्मा ने आपत्ति की, "तब मैंने खाली हाथ जाने का इरादा नही किया था। लेकिन अब तो मैं दो टके का हो गया हू!"

"तो क्या हुआ!" तुरन्त उसे उत्तर मिला, "अगर तुम्हारे पास माल होता और तुम पहले की ही तरह लूट लिये जाते? तो क्या होता? लौट आते क्या? और लौटकर जाते कहा? किसलिए? नही, आगे जाता! सचमुच, अफनासी, तुम्हारे लिए भारत ही वह देश है, जहा तुम अपनी हालत सुधार सकते हो।"

निकीतिन दूकान से बाहर चला आया। वह चिन्तित था—"भारत! भारत!" उसके दिमाग में एक यही शब्द चक्कर लगाता रहा। ऐसा लग रहा था जैसे जिन्दगी स्वय उसे दु साध्य प्रयत्नो की ओर ढकेल रही है और वह यह भी भूल रहा था कि उसे हर कदम फूक फूककर रखना चाहिए।

शेरवानशाह के उत्तर ने अन्तत उसकी आखिरी हिचकिचाहट भी दूर कर दी। उसने लोगो से इस अद्भुत देश का रास्ता भी पूछ लिया था और उसकी जान-पहचानवाले व्यापारियो, उसके दोस्त अली और कालीन वेचनेवाले सौदागर ने भी उसे यही बताया था कि यह रास्ता ख्वालीन के पार, माज़न्द्रान प्रदेश के चपाकुर और आमुल नाम के नगरो और वहा से खुरासान होते हुए करमान, तारुम और होर्मुज़ से सीधे हिन्द महासागर तक जाता है। उसके बाद जाना होता है पानी के जहाज़ पर। उन्होंने यह भी बताया था कि भारत में ऐसी बहुत-सी चीज़ें है जो रूस के लिए बडे काम की हैं।

"तो फिर?" अफनासी ने मन ही मन प्रश्न किया—"यह ठीक है कि हममें से कोई भी वहा नही गया। इसके माने हैं वहा जानेवाला मैं ही पहला आदमी हूगा निकीतिन, हिम्मत बाधो! शायद, तुम्हारे पीछे दूसरे लोग भी जायेंगे! रूस के लोग भी भारत भूमि के दर्शन करेंगे।"

कोईतूल से लौटने पर अफनासी पहले पहल अली से मिला।

"तुम्हारे साथ चलूगा!" उसने अली से कहा, "तुमने मुझे अपने साथ ले चलने का इरादा तो नही बदल दिया?"

अली खुशी से उसका हाथ थपथपाने लगा।

"लेकिन हमें समझौता करना होगा!" निकीतिन ने उसे सचेत करते हुए कहा, "मुफ्त तुमसे मैं कुछ भी न लूगा। अगर चाहते हो तो मुझे काम दे दो।"

अली ने वहस करने की कोशिश की, विगडा भी, लेकिन अफनासी अपनी वात पर अडा रहा। अन्तत अली को हार माननी पडी। आखिर यह निश्चय किया गया कि अफनासी अली के व्यापार में उसकी सहायता करेगा और अली उसे छ तमगे महीना वेतन और खाना-पीना भी देगा। इस ऊची तनख्वाह का हठ स्वय अली ने ही किया था।

कपिलोव ने ये सारी वाते सुन ली थी। उसका चेहरा मुरझा गया था।

"उसने भारत जाने का पक्का इरादा कर लिया है!" उसने भारी आवाज में अली से कहा, "शायद तुम्ही उसके दिमाग से यह विचार निकाल सको!"

"ओह?" अली ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "सचमुच? रास्ता खतरनाक है हम आमुल में काम करेगे। वहा शान्ति है!"

"मालिक, तुम इसकी चिन्ता मत करो!" निकीतिन हस दिया, "तुम्हारा काम है–मुझसे काम लेना!"

कपिलोव अकेले ही वडवडाता रहा–

"म्लेच्छ के यहा गुलामी करोगे इससे तो अच्छा है रूस लौट चलो"

"कैसी गुलामी?" निकीतिन आखें सिकोडता हुआ वोला, "मुह से वात निकालने के पहले सोचते-विचारते भी हो। मैं अली का गुलाम नही हू। जव चाहूगा–चला जाऊगा। मैं उसके साथ कुछ आगे जाऊगा, थोडा पैसा कमाऊगा और अपने रास्ते चल पडूगा। अगरचे वह हमारे मजहव का नही, फिर भी भला आदमी है। पापीन को देखो। कहने को तो हमारे ही मजहव का है लेकिन उसका हिया पत्थर से भी अधिक कठोर है। हमें कैसी मुसीवत में छोड दिया उसने।"

जमीन की ओर देखते हुए कपिलोव ने दुराग्रहपूर्वक आपत्ति की–

"वहा तुम्हारा धर्म चला जायेगा   तुम मेरे लिए पराये नही हो, समझे।"

अफनासी का कलेजा ठढा हो गया। अपने मित्र की चिन्ता से वह द्रवित हो उठा।

"डरो मत!" निकीतिन ने धीरे से उत्तर दिया, "रूस को मै सबसे अधिक प्यार करता रहा हू और करता रहूगा। तुमने मेरे लिए जो चिन्ता प्रकट की है उसके लिए धन्यवाद। बस मुझे एक ही दुख है कि तुम मेरे साथ नही जाना चाहते।"

"मेरे वहा जाने का कोई मतलब नही!" कपिलोव ने दृढता से कहा।

"तो फिर हमारे रास्ते अलग अलग है   "

निकीतिन के पक्के निश्चय को देखकर सेरेगा ने उसे आगे समझाने-बुझाने की कोई कोशिश न की और न निकीतिन ने भी यह प्रयत्न किया कि वह अपना इरादा बदल दे। अब दोनो, अलग अलग, अपने अपने रास्ते जाने की तैयारी कर रहे थे।

व्यापारियो को तातारो से जो 'मछलिया' मिली थी वे बेच डाली गयी। हसन-बेग ने यूसुफ के हाथ उस नाव के दाम भी भेज दिये जो अस्त्रूबा में छोड दी गयी थी। बेग की आत्मा की पुकार का ही यह फल था। यह सारा पैसा निकीतिन ने अकेले कपिलोव के साथ बाट लिया। दोनो को पाच पाच रूबल मिल गये। अब उन्हे मायूसी से लडते रहने की कोई जरूरत न रही थी

आखिरी रात वे साथ साथ रहे। कारवा-सराय के अधखुले दरवाजे में से आलूचे की एक काली डाल और टिमटिमाता हुआ एक सितारा दिखाई दे रहा था। बाहर जलनेवाली आग की हल्की हल्की रोशनी कमरे में आ रही थी। ऊट और घोडे दीवाल के पीछे पैर पटपटा रहे

थे। भाग के पास कुछ लोग गा रहे थे। उनका भाग्य भी इसी विदेशी भाषा के गाने की तरह दुर्बोध

"सो रहे हो?" निकीतिन पूछता है।

"नही," कपिलोव उत्तर देता है।

"तुमसे कुछ कहना चाहता हू।"

"कहो। जो कहोगे, करूगा।"

"जब त्वेर लौटना तो श्रोलेना से मेरा नमस्ते कहना। कहना मै निकल गया हू सुख की तलाश में।"

"कह दूगा।"

"कुछ श्रौर भी यह भी कहना कि मैंने उसे उसके दिये हुए वचन से मुक्त कर दिया है। वह अब अपनी जिन्दगी बरबाद न करे। बस मुझे अपनी प्रार्थनाश्रो में न भूले। श्रौर मै भी उसे न भूलूगा।"

"कह दूगा।"

दरवद, स्वालीन, शेरवान–सभी जगह रात का अधेरा था। कपिलोव ने दात भीच लिये। मित्र मौत के मुह में जा रहा है लेकिन मैं उसे नही बचा सकता।

दरवद से सराय, श्रौर फिर सराय से काज़ान तक राजदूत पापीन पानी के रास्ते चलता रहा। काज़ान के श्रागे पानी का सफर असम्भव हो गया था, क्योंकि वोल्गा पर धीरे धीरे बर्फ जम चुकी थी। दूतावास के लोग श्रौर राजदूत के साथ साथ चलनेवाले व्यापारी स्लेज-गाडियो पर बैठकर श्रागे की यात्रा करने लगे।

पापीन चिन्ताग्रस्त लग रहा था। अस्तरखान के विरुद्ध शेरवानशाह से कोई भी समझौता न किया गया था। अस्तरखान के निकट जो डकैती हुई थी उसमे रूसियो का काफी नुक़सान हुआ था। पापीन को डर था कि इससे बडे राजा का सारा क्रोध उसपर ही उतरेगा।

नोवगोरद तक मिकेशिन, पापीन के साथ यात्रा करता, भूरे चूहे की तरह स्लेज-गाडी में लदे हुए भेड की खाल के कोटो के नीचे पडा पडा अपनी जान की खैर मनाता और बच निकल आने की अपनी सफलता पर मन ही मन भगवान को धन्यवाद देता रहा। सचमुच मनुष्य यह अनुमान नही लगा सकता कि कहा उसे लाभ होगा, कहा हानि।

नीज्नी नोवगोरद में निकीतिन के साथ कहासुनी हो जाने के बाद मिकेशिन को बराबर डर बना रहा था इसलिए कि उसने अफनासी से काशीन को धोखा देने की बात चलायी थी। वह जानता था कि मौका पडने पर निकीतिन सब कुछ बमीली से कह देगा। तब तो मिकेशिन की ज़िन्दगी ही बरबाद हो जायेगी।

रास्ते में लुट जाने से तो सभी कुछ बदल गया था। लेकिन निकीतिन के किसी अज्ञात भारत देश में चले जाने से मिकेशिन को नयी आशा बधने लगी थी।

मिकेशिन ने आनन-फानन यह निश्चय कर डाला कि वह काशीन से क्या क्या कहेगा। कहेगा कि वह सराय में नही ठहरा था, बल्कि सबो के साथ शेमाखा गया था क्योंकि, जैसा पहले से ही तय हो चुका था, उसे निकीतिन पर निगाह रखनी थी। कहेगा कि अफनासी किसी न किसी प्रकार उससे निगाह बचाकर निकल जाना चाहता था लेकिन उसकी एक न चली। अस्तरखान में जो मुसीबत आयी थी उसके लिए वह निकीतिन को ही ज़िम्मेदार ठहरायेगा। यदि वे लोग सराय के आगे न जाते तो कुछ भी न होता। निकीतिन ने सभी को बहला-फुसलाकर और मुनाफे का लालच दे देकर आगे जाने के लिए विवश किया था। वह रूस नही आया क्योंकि वह जानता था कि वह अपराधी है। उसने नाव के लिए

हसन-बेग द्वारा दिया गया पैमा भी हडप लिया और फिर काफिरो से जा मिला।

मिकेशिन की बात कौन झूठी ठहरायेगा? अकेला कपिलोव ही ऐसा कर सकता है। लेकिन वह उसे भी झूठ ठहरायेगा। वह भी जान लेगा कि मिकेशिन का मजाक उडाने का उसे कैसा मजा मिलता है। वह कहेगा कि यही कपिलोव निकीतिन की हा में हा मिलाता हुआ चिल्ला रहा था–शेमाखा, शेमाखा! वह मालिक के फायदे की नही, अपने फायदे की बात मोच रहा था। वह सामन्तो को गाली दे रहा था, हमारे राजा को गाली दे रहा था। फिर देखूगा कैसे वह अपने को सच्चा साबित करता है। लोग अपराधी का विश्वास नही करते!

मिकेशिन को पूरा विश्वास था कि सब ठीक हो जायेगा। नोवगोरद आकर वह दूतावास के लोगो से अलग हो गया और दो हफ्तो में त्वेर पहुच गया।

दिसम्बर का महीना था। मन को उबा डालनेवाला दिन। झीनी झीनी बर्फ पड रही थी और जो सडक प्राय गन्दी रहती थी वह आज सफेदी में नहा रही थी।

दूर से नगर कटे हुए वन की तरह लग रहा था। मकान मफेदी के नीचे काले पडते हुए ठूठो के ममान दिखाई पड रहे थे।

मिकेशिन को अपनी गाडी में ले जानेवाला गाडीवान, एक पुराने कोट में लपटा, चुपचाप बैठा गाडी चला रहा था। उसका घोडा जैसे-तैसे चल रहा था। कभी कभी वह पूछ उठा लेता और चाल धीमी कर देता।

वे गाव पार कर शहर में आ गये। मिकेशिन जान-पहचान वालो को पहचान रहा था। वे भी उसे पुकार रहे थे। किन्तु

मिकेशिन मुह लटकाये वैसे ही गाडी में बैठा रहा, मानो कब्रिस्तान मे लौटा हो।

लोग रुक रुककर उसकी स्लेज-गाडी को परेशानी मे देखने लगते।

मिकेशिन ने गाडी सीधे काशीन के यहा ले चलने की आज्ञा दी। "अच्छा हो, सब कुछ तुरन्त कह दू, काशीन को पता चले कि जरा भी आराम न किये मै उसे खबर पहुचाने के लिए दौड आया हू।"

फाटक खुल गया और गाडी खभे मे रगड खाती हुई अहाते में आ गयी। ड्योढी का दरवाजा भी खुला और ओलेना बिना बाहो की जैकेट पहने रेलिग पर आ गयी।

"लौट आये?!" वह चिल्लायी। मिकेशिन ने टोपी उतार ली।

ओलेना के पीछे पीछे काशीन भी आ गया। वही अग्राफेना भी दिखाई पडने लगी थी। घर के लोग इधर-उधर दौड रहे थे।

"बाकी लोग कहा रह गये?" रास्ते में ही काशीन ने पूछा, "अपने अपने घर पर हैं क्या? बोलो न? चुप क्यो हो? इधर आओ "

"अकेला मै ही आया हू," सिर लटकाते हुए मिकेशिन बोला, "आपने कुछ नही सुना? हम तो लुट गये थे "

•

वसीली काशीन कमरे में चहलकदमी करता रहा। ऊपर से रोने की आवाज बराबर उसके कानो में पडती रही। अग्राफेना, मुह बाये, अगीठी के पास बैठी बैठी, अपने पति को भावहीन आखो से देखती और उसके क्रोध का अन्दाज लगाती रही। आखिर पत्नी को देखकर काशीन, क्रोध से उसके सामने आकर, एकदम रुक गया।

"चली जाओ यहा से!"

काशीन ने धीरे धीरे अपने कधे से खिसकते हुए फर-कोट को झटके से ठीक कर दिया। उसकी निगाह फर्श पर पड़ी दरी की एक परत पर जम गयी। उसने उसे ठोकर मारकर कोने में कर दिया और फिर तब तक उसे कुचलता रहा जब तक थक न गया। कोट बाधा डाल रहा था। उसने उसे फर्श पर पटका और उसपर थूक दिया। फिर कापते हुए ओठ आस्तीन से पोछते हुए उसने जोरो से एक गाली दी।

और आखिर बेंच पर बैठकर ठढी सास लेने लगा।

"अफनासी " वह जोर से बोला, "बदमाश, तुझे भिखारी बनाकर छोड़ूगा!"

मिकेशिन ने जो बाते बतायी थी उनसे बूढे व्यापारी को इतना क्रोध आ गया कि अगर उसका बस चलता तो मिकेशिन की जान ले लेता। उसने उसपर जो छड़ी फेंकी थी उससे वह किसी प्रकार बच गया था।

"बदमाश!" काशीन ने सोचा, "सराय तक तो आराम से पहुच गया। फिर भी जैसे वह उसके लिए काफी न था। मुझे धोखा देना चाहता था, मुझसे पैसा ऐंठना चाहता था! शेमाखा चला गया! तुझे शेमाखा का मजा दिखाऊगा!"

यदि निकीतिन सही-सलामत आ जाता और उसे लाभ हुआ होता तो निश्चय ही काशीन एक शब्द भी मुह से न निकालता। वह यह बात खुद जानता था। इस विचार से उसके दिमाग में और भी गर्मी चढ गयी।

वह कोस रहा था उस घडी को जब उसने निकीतिन के साथ इकरार किया था। अगरचे अग्राफेना मूर्ख थी, फिर भी उसने उसे

चेतावनी तो दी ही थी। लेकिन वह था कि उसने निकीतिन पर विश्वास कर लिया!

काशीन को लग रहा था कि उसे बहुत अधिक हानि उठानी पडी है, उससे कही अधिक जितनी उसे वास्तव में हुई थी।

"चोर! डाकू!" काशीन बुदबुदाया।

ऊपर से सिसकियो की आवाज़ बराबर आती रही।

"हे भगवान! यह भी खुशी की ही बात है कि इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी बरीकोव ने ओलेना से विवाह करने का प्रस्ताव किया," काशीन ने सोचा, "उन्होंने नगर-भर में फैली हुई इन अफवाहो पर भी ध्यान न दिया कि ओलेना अफनासी के यहा भाग गयी थी अब चिल्ला, चिल्ला, डाइन! दो ही हफ्ते में तेरा व्याह कर दूगा। तब पता चलेगा कि खसम के मुक्के अक्ल कितनी जल्दी ठिकाने करते हैं।"

काशीन कुछ शान्त हो गया। बेटी का व्याह कर दूगा, अफनासी के मकान और उसके सारे सामान पर कब्ज़ा कर लूगा और फिर मिकेशिन की खबर लूगा। उसे मैं माफ न करूगा। उसे गुलाम बनाऊगा, हल मे जोतूगा! और कपिलोव! अगर वह भी मेरा कर्ज़ नही पाटता तो उसकी भी वही गत करूगा। फिर बहायें पसीना हल में जुते जुते!

वसीली ने फर्श पर एक गन्दे ढेर के रूप में पडे हुए अपने फर-कोट पर एक निगाह डाली। उसने उसे उठाया, उसपर से थूक पोछा, उसे झाडा और कधे पर डाल लिया।

"बदमाशों ने काशीन को धोखा देने की ठानी थी," उसने छत की ओर मुक्का दिखाते हुए धमकी-सी दी, "तुझे भारत के दर्शन मैं कराऊगा, बदमाश!"

ऊपर से आती हुई सिसकिया बराबर तेज, और तेज, होती जा रही थी

काशीन हठी था। मिकेशिन के आने के दो हफ्तो के भीतर ही भीतर सारे घर ने वर, उसके सबधियो और इष्टमित्रो से मिलने की तैयारी में जैसे आसमान सिर पर उठा लिया था।

दूसरा भाग

पहला अध्याय

दूर वनों में ज़ाफरानी प्रकाश फैलने लगा था। वायु शीतल थी और वसन्तकालीन सलोनी मिट्टी की भीनी भीनी गन्ध और सडकों के निकट उगनेवाले शहतूत उसे और भी मादक बना रहे थे। क्षितिज के उस पार सूर्य की लाल लाल पट्टी दिखाई पडने लगी थी। शीघ्र ही लाल रग सुनहरे-सन्तरई में बदल गया। छितरे हुए पेडो की परछाइया चमचमाती हुई लाल-सी मिट्टी पर पडकर वीरान सडक के आरपार पहुच रही थी। एक काफिला सडक पर चला जा रहा था। परछाइया काफिले के ऊटो और घोडो पर ऐसे पडती मानो उन्हें गिन रही हो।

काफिला बहुत बडा था। बीस ऊट और सौ मजबूत तुर्कमनी घोडे बन्दर के प्राचीन मार्ग पर फारस की खाडी की ओर बढते चले जा रहे थे।

घोडो और ऊटो की गर्दनो में बधी हुई घटिया बराबर टुनटुना रही थी। उनपर लदी हुई गठरिया कभी इधर झुकती, कभी उधर। खुरो की आवाज भी धीमी धीमी सुनाई पड रही थी

थोडे-से पहरेदार जम्हाइया ले रहे थे। उन्हे रात मे उठना पडा था। जैसे-तैसे उन्होंने नाश्ता कर लिया। लोग उदास थे, चुप थे। वे काफिले के सरदार से रुष्ट थे, क्योंकि उन्हे लग रहा था कि इतनी रात में कूच करना बिल्कुल वाहियात है। आखिर ऐसी भी जल्दी क्या थी! पर करते क्या? रोटी चाहते हो तो मालिक का कहना मानो—बडे-बूढे हमेशा यही कहा करते हैं। तो, जब सफर पर निकल ही पडे तो फिर जीन पर मजे से जमिये, अनजाने उसपर झपकिया ले और बस।

खुदा के बन्दो, धीरज रखो, मन मे बुरे विचार मत लाओ! कब कूच करना चाहिए, कब रुकना चाहिए—यह बाते सरदार ही ठीक समझता है। उनपर खुदा की बरकत है—वह मालदार है, ताकतवर है। उसके फरमाबरदार नौकर-चाकर इनाम-इकराम के लिए उसका मुह जोहते है। और इनाम में उन्हे मिल सकता है—सोना। सोना लीजिये और बन्दर के बाजार में काने सलीम की दूकान में अफीम खाइये, या फिर प्रसिद्ध नगर बन्दर की किसी अधेरी दूकान में मीठी शराब की चुस्किया लीजिये। काफिले के सरदार, हमें ले चलो, हमें ले चलो! हम अल्लाह की बरकत जानते हैं। नम्रता गरीबो की शोभा है। ला अल्लाह इल्ला-अल्लाह!

काफिले का सरदार पूरा फारसी था—मोटा शरीर, लाल लाल दाढी, शरीर पर बुखारा का कामदार चोगा, घोडे पर कीमखाब की जीन। सारे काफिले में अकेला वही एक आदमी था जो ऊघ नही रहा था।

सरदार की तेज निगाहे देखकर कोई भी समझ सकता था कि उसे वसन्त के इस प्रभात का कोई विश्वास नही। वह चिन्ताग्रस्त लग रहा था।

सरदार स्वयं पूरे विश्वास से नहीं कह सकता था कि वह क्यों चिन्तित है, उसे चिन्ता में डालनेवाले विचार उसके दिमाग़ में उठ क्यों रहे हैं? लार की कारवां-सरायों में तरह तरह के लोग आते हैं। और वे स्वाभाविक ही उसके नौकरों-चाकरों से पूछ सकते हैं कि काफ़िला कब आगे जायेगा? पता नहीं क्यों सरदार की आंखों के सामने, धारीदार चोगा पहने एक नाटे-से तुर्क की आकृति आकर खड़ी हो जाती – धीरे धीरे मुस्कराते हुए ओंठ, अस्थिर-सी निगाहें।

यह तुर्क लार में कई बार उससे मिला था। वह जिस अप्रत्याशित ढंग से उसके पास आता, वैसे ही चुपचाप गायब भी हो जाता। पता नहीं उसने उसके नौकरों से क्या बातचीत की थी। सरदार के मातबर नौकर हसन ने अपने मालिक को बताया था कि इस अपरिचित आदमी को रेशम के कपड़ों में दिलचस्पी है। छोड़ो भी रेशम की बात! यह आदमी व्यापारी-सा नहीं लगता।

काफ़िले के सरदार ने अपने दिमाग़ से भयानक घबड़ाहट को दूर करने की कोशिश की पर बन्दर के इर्द-गिर्द डाकुओं, डकैतियों और लूट-खसोट के बारे में जो बातें चल रही थीं वे बराबर उसके दिमाग़ में चक्कर काटती रहीं।

कारवां-सराय में ऐसी ऐसी बातें सुनने में आयी थीं कि अमुक अमुक व्यापारी ऐसे गायब कर दिये गये कि फिर उनका पता ही न चला लोग तो यह भी कहते थे कि डाकू सबसे पहले भारत के साथ व्यापार करनेवाले सौदागरों पर ही हमले करते हैं।

इस विचार से सरदार काप उठा था। यदि डाकुओ को उसकी असलियत का पता चल गया तो फिर उसका बुरा हाल हो जाता। किन्तु कौन उनसे कहेगा कि खज़ानची मुहम्मद यहा कहा से और क्यो आया, कि उसकी पेटी में अब भी वे बहुमूल्य रत्न है जो उसे वज़ीरे आज़म महमूद गवान के खज़ानची ने भारत में दिये थे?

अकेले हसन को छोडकर बाक़ी सभी ऐसे हैं, जो या तो बन्दर के हैं या होर्मुज़ के। ये वे लोग हैं जिन्होने कभी भारत की ज़मीन पर पैर तक नही रखा। तो शायद सचमुच उसके ये सारे डर बेबुनियाद हैं? व्यर्थ ही वह अपने को इस वासन्ती प्रभात के आनन्द से वंचित रख रहा है?

काफिले को चलते चलते दो घटे हो चुके थे और उसके साथ कोई दुर्घटना नही घटी थी। यदि डाकुओ को कुछ खबर चल भी गयी होती तब भी उन्हे यह आशा तो हो ही नही सकती थी कि काफिला इतनी जल्दी कूच करेगा। अल्लाह का शुक्र है कि मुहम्मद के दिमाग़ में रात रहते ही चल देने की बात आ गयी थी। अब वह आराम से बन्दर तक पहुच जायेगा।

मार्ग अनन्त लग रहा था। धूप में गर्मी बढ गयी थी। परछाइया गहरा चुकी थी। घोडों के पसीने, शहतूत के वृक्षो और गर्म धूल की गन्ध एकाकार हो गयी थी। ऊटो की घटिया टुनटुना रही थी। ऐसे में खज़ानची मुहम्मद के विचार कहा से कहा पहुच गये। उसके मस्तिष्क में निकट भविष्य के चित्र घूमने लगे—बन्दर या होर्मुज़ में आरामदेह मकान, ठढा शरबत, दीनारो की खुशनुमा खनखनाहट खज़ानची खतरो को भूल अपने सपनो में खो गया। उसने आखें बन्द कर ली। एक ही क्षण में उसके सामने उसका सारा जीवन घूम गया—वह बगदाद के एक कुम्हार

का वेटा था और अपने गरीव और बूढे मा-वाप को निर्धनता की गोद में छोडकर, काफिलो के वडे वडे रास्तो पर नियामतो की तलाश में निकल पडा था। वह कहा कहा नही गया था—तुर्की की पहाडियो पर, मिस्र के स्फिक्स के पास। लेकिन उसकी तकदीर पलटी थी भारत जाकर। हा, तकदीर पलटी थी? दिल्ली पहुचते पहुचते वह वहुत कुछ जान-समझ चुका था। वह पहले ही समझ चुका था कि जिन्दगी कितनी निर्दय होती है, कि सफलताओ की प्राप्ति के लिए अपनी अनुभूतियो पर नियत्रण रखना कितना आवश्यक है, कि विजेता जो कुछ कहता है सच कहता है और जव उसे मौका मिला तो उसने उससे लाभ उठाने में सकोच नही किया।

उसकी अमीरी दूसरो के दुखो पर पली थी। अमीरी ऐसे ही पलती है, इसमें कोई नयी वात नही। और क्या उसने वाद में यह अनुभव नही किया था कि लोग कितने अहसान-फरामोश होते हैं, क्या उसे दिल्ली से इसलिए नही भागना पडा था कि वह अमीर से अपनी जान वचाना चाहता था जिसने उसपर सूदखोरी का आरोप लगाया था?

उसी समय वह वीदर पहुचा।

वाद में मुहम्मद के जीवन में जो कुछ भी हुआ, उसे जो भी सफलताए मिली उसका श्रेय अकेले उसी को था—उसने होनेवाले परिवर्तनो की पहले से ही कल्पना कर ली थी

वह १४६२ का जमाना था। वीदर की गद्दी पर नावालिग़

निज़ाम-शाह विराजमान था। निज़ाम-शाह हाल ही में मरे हुए एक निर्दय शासक सुलतान हुमायूं का बेटा था। उड़ीसा और तिलंगाना के हिन्दू राजे और मालवा का सुलतान उसपर हमले करने की धमकी दे रहे थे। उनकी फ़ौजें सलतनत में आ आकर हमले कर रही थीं, वहां के सीमा प्रदेशों को नष्ट-भ्रष्ट कर रही थीं, वहां के लोगों को बन्दी बना रही थीं और व्यापारियों का माल-असबाब लूट रही थीं। और बीदर में ठीक राजसिंहासन के पास घमासान युद्ध हो रहा था।

यह वह समय था जब सुलतान के चंगुल से मुक्ति पाने के लिए दक्खनी भारत के पुराने रईस और अधिक ताक़त के साथ उठ रहे थे।

अभिमानी सुन्नी तरफ़दारों को जिनमें ख़ोजा-ए-जहां नाम का एक शक्तिशाली वज़ीर भी था, बराबर सौ साल पुरानी घटनाएं याद आ रही थीं, और याद आ रही थी देवगिरि के अमीराने-सदह की वह बग़ावत, जो दिल्ली के सुलतान की पराधीनता से मुक्ति पाने की दिशा में पहला क़दम थी।

एक बार शिकार के समय जलाल नामक एक अमीर ने अल्पवयस्क शासक के सामने खुले आम यह कह दिया था—

"हमारे दादा-परदादा ने तुम्हारे दादा को इसलिए सिंहासन पर बिठाया था कि वह उनकी सेवा करे। यह मत समझना कि ज़माना बदल गया है!"

फिर यह अफ़वाह भी उड़ी कि जागीरदारों ने राज बदल डालने का निश्चय कर लिया है और कोई तरफ़दार बीदर की गद्दी हथिया लेना चाहता है।

पुराने जागीरदारों ने सुलतान की मां की परेशानियों और उसके गद्दीधारी बेटे की असहायता से फ़ायदा उठाकर जो चाहा सो कर

दिया। यह बेटा पूरी तरह खोजा-ए-जहा के वश में था। नतीजा यह हुआ कि खज़ाने में टैक्सो की आमदनी समय से न पहुच पाती थी। अब उनकी रकम भी पहले मे कम हो गयी थी। सुलतान के हुक्म रद्दी की टोकरी में फेंके जाते थे। सेना में भी गडबडी पैदा हो चुकी थी। आम जनता ने जागीरदारो की स्वेच्छाचारिता के विरुद्ध सिर उठाया था।

लग रहा था कि इस सलतनत के दिन इने-गिने ही रह गये है।

ऐसे समय एक ऐसा व्यक्ति सामने आया जिसने इस पतनोन्मुख एव जर्जर सलतनत में एक नयी ज़िन्दगी फूकी। इस व्यक्ति का नाम था वज़ीर महमूद गवान।

खज़ानची मुहम्मद इस व्यक्ति के नाम की पूजा करता था। वह गवान के कदम चूमता था। वह अपनी जी-हुजूरी में सबसे अव्वल था। उसे उस समय भी महमूद गवान में पूरी आस्था थी जब सत्ता के लिए चल रही लडाई अभी खत्म न हुई थी और यह कहना मुश्किल था कि किस पक्ष की विजय होगी। जो तूफान बीदर पर चल रहा था उसमें खज़ानची की स्थिति रेत के एक कण के समान थी। किन्तु इस कण ने खुद ही हवा का रुख चुन लिया था और हवा की कुछ ताकत पी ली थी।

महमूद गवान! वह भी खज़ानची और दूसरे सैकडो मुसलमानो की तरह एक परदेसी था जो भारत में पनाह और लाभ की खोज में पहुचा था। वह जानता था कि लोगो की ज़रूरते क्या होती है। वह हमेशा लोगो का ख्याल रखता था।

बन्दर जानेवाले मार्ग की लाल-सी धूल के ऊपर, चलनेवाले घोडे की ज़ीन में हिलते-डुलते, खज़ानची मुहम्मद अपने गये-बीते दिनो में खो-सा गया था।

वीदर में आकर उसे अनुकूल परिस्थितिया नही मिली।

उमके सामने एक ज़बरदस्त सवाल था। किसका पक्ष लू–सुन्नियो का जो खोजा-ए-जहा के पक्ष में थे, या शियो का जिन्होंने महमूद गवान का अनुकरण किया। इम गुत्थी को वह वहुत समय तक न सुलझा पाया था।

पुराने जागीरदारो–मुन्नियो–का विचार था कि अल्लाह की आध्यात्मिक शक्ति के अनुसार पृथ्वी पर सुलतान की नियुक्ति होती है। इस धार्मिक तर्क की आड उन्होंने इसलिए ली थी कि वे ऐसे सुलतान को गद्दी मे उतार सके जो उनके मनोनुकूल न हो।

शियो का तर्क था कि यह आध्यात्मिक शक्ति पृथ्वी पर पीढी-दर-पीढी अवतरित होती है। ये लोग सुलतान की शक्ति को मज़बूत वनाने और जागीरदारो का प्रभाव कम करने के पक्ष में थे।

किन्तु जो लोग झगडे की जड में केवल धामिक तर्कों को देखते थे वे मूर्ख थे।

मुहम्मद की निगाह में दोनो ही तर्क एक जैसे थे। उसे तो हवा का रुख पहचाना था, इसी लिए उमने महमूद गवान का पक्ष लिया था।

जन-साधारण की अन्तश्चेतना ने जैसे उसे बता दिया था कि सामन्तो से किसी प्रकार के लाभ की आशा करना व्यर्थ है। दिल्ली के अभिमानी जागीरदारो के 'आभार' का उसे अच्छा अनुभव था।

कुछ समय तक तो खजानची के पैर डगमगाते रहे, क्योंकि बीदर के जागीरदार बडे शक्तिशाली थे और उनकी जीत होने से उस उद्दण्ड शिया के रास्ते में अनेकानेक कठिनाइया आ सकती थीं।

उसने दूसरे पक्ष पर भी ध्यान दिया था—स्थिति यह थी कि जो यह पूर्वकल्पना कर सकता था कि किस पक्ष की विजय होगी वही सब कुछ बन सकता था। अवसर चूक जाने पर सिवा जिन्दगी-भर हाथ मलने के और होता भी क्या। उसने निश्चय कर लिया। नगर के जिस भाग में मुहम्मद रहता था वहा शीघ्र ही वह सबसे बडा शिया माना जाने लगा। एक बार सुन्नियो के साथ हुई लडाई में खजानची को अपने माल-असबाब और दूकान तक से हाथ धोना पडा था।

जब अज्ञात अपराधियो द्वारा निजाम-शाह को जहर देकर मौत के घाट उतारा गया और उसका छोटा भाई मुहम्मद-शाह गद्दी पर बैठा, जब खोजा-ए-जहा के षड्यन्त्र का भडाफोड हुआ और उसे उसके जागीरदार साथियो के साथ मौत की सजा दी गयी, तो खजानची की किस्मत का सितारा भी चमका। आरम्भ में उसे बीदर के कोतवाल के एक सहायक के रूप में काम पर लगाया गया।

उसके जिम्मे कई काम थे—नगर के जिस भाग में वह रहता था वहा दस्तकारी के कामो की देख-रेख रखना, यह निगरानी रखना कि कोई चुपचाप शराब न बनाये, चोरी के माल का लेन-देन न करे, दुराचार न करे। इसके अतिरिक्त उत्तराधिकार के समस्त मामले पर भी उसी को कार्यवाही करनी होती थी।

इन सारे कर्त्तव्यो का उसने पूरी जिम्मेदारी से पालन किया।

फिर घूस देकर वह ऐसी जगह पर नियुक्त हो गया, जहा उसकी चलती भी थी और उसे कोई खास काम भी न करना पडता था। उसे एक जागीरदार के महल के हल्के में टैक्स वसूल करने का काम मिल गया।

यहा रहकर उसने यह साबित करने के लिए अपने काम में सारी शक्ति लगा दी कि उसके स्थान पर जो आदमी पहले काम करता था वह निकम्मा था। अब मुहम्मद के प्रयासो के फलस्वरूप खजाने की आमदनी बढने लगी और पहले से काफी अधिक हो गयी।

टैक्स वसूल करनेवाले इस ईमानदार आदमी की खबर महल में भी पहुच गयी।

पिछले वसन्त में, सेना के लिए घोडे खरीदनेवालो का चुनाव करते समय महमूद गवान ने खजानची मुहम्मद का नाम भी उन लोगो की सूची में लिख लिया जिनपर वह भरोसा कर सकता था।

तब से आज तक एक वर्ष हो चुका था। क्या महमूद गवान ने अपने चुनाव में कोई गलती की थी? बीदर की सेना के लिए मुहम्मद सैकडो घोडे खरीद चुका था। अब उसे घोडो की आखिरी खेप भेजनी बाकी रह गयी थी।

अल्लाह की मरजी, भारत की जमीन घोडे पैदा करने के लिए अनुकूल न थी। वहा अच्छे घोडे बडे महगे मिलते थे, इसलिए घोडो के दलालो की जेबें काफी गरम हो जाती थी। और, अगर उन्हे घोडे खजाने द्वारा निश्चित किये गये दामो मे सस्ते मिल जाते थे तो उनकी और भी चादी रहती थी। सभी जानते है कि घोडो के दलालो को अच्छा लाभ होता है। लेकिन अगर उन्हे लाभ होता है तो इसमें किसी का क्या इजारा? सुलतान को इससे कोई नुक्सान तो

होता नही। इन सब चीजो का खर्च बरदाश्त करती है उसकी ईमानदार प्रजा। वह होती ही इसी लिए है!

बस इस आखिरी काफिले को बन्दर तक पहुचाना था। बाकी सब कुछ मुश्किल न रह गया था। पाच सौ बढिया घोडे भेजना कोई हसी खेल तो है नही। कभी न कभी मुहम्मद का भी अपना महल होगा। वह अभी बूढा नही हुआ है। क्या वह किसी जागीरदार, मसलन निजामुल-मुल्क, की बेटी से शादी नही कर सकता? और कौन जाने वह घडी भी आ जाये जब उसे खजाने का ही अधिकारी बना दिया जाये? सब कुछ सम्भव है! इन सुखद विचारो में मुहम्मद इतना खो गया कि घोडे पर बैठा बैठा सिर हिलाने लगा। उसने अपनी कत्थई बरौनियो वाली सूजी हुई पलके बन्द की और मुस्करा दिया।

पर, दूसरे ही क्षण खजानची की मुस्कराहट पथरा-सी गयी। पास के बन से कुछ घुडसवार निकलकर उनपर टूट पडे। इन घुडसवारो में खजानची ने तुरन्त ही धारीदार चोगा पहने हुई उस परिचित आकृति को भी पहचान लिया।

खजानची चिल्ला पडा। उसने तलवार निकाल ली।

तीर की सनसनाहट सुनाई दी। एक ऊट चिघाडता हुआ बगल में आ गया। काफिला तितर-बितर हो गया। खजानची ने अपना घोडा पिछले पैरो पर खडा किया और उसकी मुठभेड धारीदार चोगेवाले के घोडे से हो गयी। पर शीघ्र ही खजानची को घोडे पर से नीचे ढकेल दिया गया और उसके जख्मी हाथ से उसकी तलवार गिर गयी। घोडे ने उसके सिर पर एक लात जमायी।

खजानची की आखो के आगे अधेरा छा गया। वह नाक के बल गिरा और उसके जड ओठ जमीन से बज उठे। उसकी पगडी के नीचे से खून की धार बह चली।

खज़ानची मुहम्मद को धीरे धीरे होश आ रहा था। उसे माथे में सर्दी लग रही थी। किसी ने उसके आगे पानी का एक लोटा बढ़ाया। उसने कुछ घूंट पी लिये और चोग़े की आस्तीन से आंखों से खून और धूल पोंछी और एकटक ज़मीन की ओर देखने लगा। वह अब भी पूरे होश में न था। वह डर रहा था कि कहीं उसपर और मुसीबत न आये।

उसे लगा कि वह एक पेड़ के सहारे बैठा है और उसके आसपास कई लोग खड़े हैं।

खज़ानची को उबकाइयां आ रही थीं। उसने अपने चारों ओर देखा और कै कर दी। बड़ी देर तक उसका सारा शरीर कांपता रहा। आखिर उसका जी ठिकाने हुआ और, मुश्किल से सांस लेते हुए, उसने आंसुओं से भरी अपनी धूमिल आंखें ऊपर उठा दीं।

"अल्लाह का शुक्र है कि ज़िन्दा बच गये!" खज़ानची के ऊपर झुकते हुए एक व्यक्ति ने दर्दभरी आवाज़ में कहा। यह आदमी करमानी बूट और फटा-पुराना चोग़ा पहने था। बूटों के रंग हल्के पड़ रहे थे, किन्तु यह ज़रूर लगता था कि कभी वे चमचमाते रहे होंगे। "ख़ोजा, पानी पियो। पियो न, तबीयत ठीक हो जायेगी।"

खज़ानची ने सिर उठाया और धीरे धीरे उसे याद आने लगा कि वह कहां है। चारों ओर उत्तेजित सहयात्रियों की एक भीड़-सी लगी थी। वे हाथ हिला हिलाकर अपरिचितों को कुछ समझाने का प्रयत्न कर रहे थे। जो घोड़े लड़ाई के समय इधर-उधर भाग गये थे वे कुछ ही दूर पर घूमते हुए दिखाई दे रहे थे।

स्वामिभक्त गुलाम हसन, घुटनों के बल बैठ गया। वह भय से मालिक के चेहरे की ओर ताक रहा था।
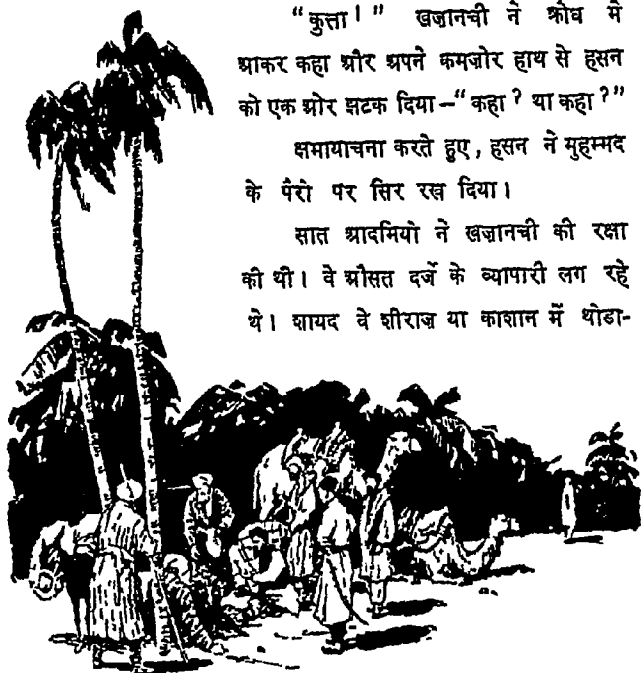
"कुत्ता!" खजानची ने क्रोध में आकर कहा और अपने कमजोर हाथ से हसन को एक ओर झटक दिया—"कहां? या कहां?"

क्षमायाचना करते हुए, हसन ने मुहम्मद के पैरों पर सिर रख दिया।

सात आदमियों ने खजानची की रक्षा की थी। वे औसत दर्जे के व्यापारी लग रहे थे। शायद वे शीराज़ या काशान में थोड़ा-

बहुत व्यापार करते थे। आदमी तो आदमी है। जिस आदमी ने खजानची को लोटा दिया था उसकी चमड़ी एकदम सफेद थी, और आखें वर्षा के बाद जंगलों के ऊपर दिखाई पड़नेवाले आकाश की भांति नीली।

"अल्लाह तुम्हारी सारी मुसीबतें मुझे दे दे!" सफेद चमड़ीवाले की ओर मुखातिब होते हुए खजानची बोला, "तुमने मेरी जिन्दगी बचायी है और मेरा माल-असबाव। मैं कैसे तुम्हारा बदला चुकाऊं?"

"अल्लाह तुम्हें लम्बी उम्र दे, खोजा!" व्यापारी बोला,

"हम किसी के काम आ सके यही हमारा सबसे बडा बदला है, सबसे बडा इनाम। तुम तो अब ठीक हो न?"

व्यापारी का असाधारण उच्चारण खज़ानची के कानो से छिपा न रह सका। इस तरह लोग न तो शीराज़ में ही बोलते हैं, न अबज़न में और न रेय में ही। इस तरह का उच्चारण तो फ़ारस के उत्तर में रहनेवालो का ही होता है।

"तुम्हे तो अल्लाह ने ही मेरे पास भेजा है!" आभार प्रकट करने के लिए व्यापारी की ओर मुड़ता हुआ मुहम्मद बोला, "अल्लाह तुम्हारी मदद करे, तुम्हें कामयाबी दे। मुझे बताओ न मैं अपनी नमाज़ में किसका नाम दुहराया करू? मेरा बेटा किसकी बरकत मनाया करे?"

"ख़ोजा, तुम अब भी कमज़ोर हो। बैठे रहो। अभी हम तुम्हें हाथ-मुह धोने को पानी देंगे और तुम्हारे घावो की मलहम-पट्टी करेगे। तुम्हें ज्यादा बातचीत नही करनी चाहिए। मेरा नाम है यूसुफ़। पर मैं अकेला नही हू, यह तो तुम देख ही रहे हो।"

मुहम्मद के पास एक अरब लाया गया, जिसे लोगो ने लडाई में पकडा था।

"हुज़ूर, क्या हुक्म है? इसके साथ क्या किया जाये?" हसन ने पूछा, "इस कुत्ते को मौत के घाट उतार दू?"

चारो ओर सन्नाटा छा गया। सारे क़ाफ़िले की निगाहे खज़ानची पर जम गयी।

मुहम्मद ने डाकू के पैरो पर थूका और हसन को सकेत करते हुए कहने लगा—

"इसे छोड दो   खजानची मुहम्मद कमजोरो और निहत्थो से वदला नही लेता।"

दोनो काफिलो का रास्ता एक ही था। दोनो वन्दर जा रहे थे। मुहम्मद उत्तेजित था। उसने शुरू शुरु में वडी वाते की। हसन ने उसे वताया कि यही सफेद चमडीवाला आदमी सवसे पहले उनकी मदद को आया था। शायद इसी लिए खजानची दूसरो की अपेक्षा इस अजनवी से अधिक वातचीत कर रहा था। उसने यह भी मालूम कर लिया था कि उसकी जान वचानेवालो का यह काफिला तारुम से आ रहा है, और वह सफेद चमडीवाला तो और भी दूर से आ रहा है–आमुल से।

"मैंने भी यही सोचा था!" खोपडी के दर्द से तडपता हुआ खजानची सिर हिलाते हुए कहने लगा, "तुम तो गीलानवालो की तरह वात करते हो। वन्दर जा रहे हो?"

"नही। और भी आगे। भारत जाना चाहता हू, पानी के रास्ते।"

"सचमुच, हम यहा अल्लाह के ही फजल से मिले है!"

अजनवी ने खजानची की आखो में आखें डालकर देखा। खजानची उसकी मगलकामना-सी करते हुए मुस्करा दिया।

"तुमने महमूद गवान के वारे में सुना है?"

"नही।"

"हु-हू। वह भी गीलान का ही रहनेवाला है। अव वह भारत में वीदर के शक्तिशाली सुलतान का वजीरे आजम है।"

"तो, इससे क्या?"

"मुझे यहा महमूद गवान ने ही भेजा है। अल्लाह की कसम मैं तुम्हें इनाम दिलवाऊगा!"

मुहम्मद को महसा एक बार फिर लगा जैसे वह सचमुच बहुत बडी मुसीबत से बचा है। उसका चेहरा भूरा पड गया और वह बडी मुश्किल से घोडे की रासें थामे रहा।

जिस व्यक्ति ने अपना नाम यूसुफ बताया था, उसने अपनी आखें फेरी और एक ओर देखने लगा।

जब से उसने माजन्द्रान की ज़मीन पर पैर रखा था तब से आज तक, यानी इन डेढ वर्षों में, उसका न जाने कितने लोगो से साबिका पड चुका था। यही, माजन्द्रान की इसी ज़मीन पर ही तो उसने अपना नाम बदला था। उसका पुराना नाम, अफनासी निकीतिन, एक साधारण नगर चपाकुर के एक छोटे-से झोपडे में छूट गया था। और जब इसने आमुल में कदम रखा उस समय तक वह यूसुफ बन चुका था—खुरासान का रेशम और फीरोज़े का एक व्यापारी। इसका नया नामकरण उसके मित्र अली ने किया था। अफनासी ने कोई आपत्ति न की थी। यह नाम आसानी से लिया जा सकता था। इससे न तो किसी के मन में शक ही हो सकता था और न उत्सुकता ही। अपने प्रति लोगों का ध्यान आकृष्ट करने के बजाय उसे स्वय दूसरो को देखना और नयी नयी धरती पर कदम रखना वही अच्छा लगता था। अली की सलाह से उसने अपनी दाढी भी रग ली थी ताकि दूसरे लोग उसके प्रति आकृष्ट न हो।

आधा साल तक अफनासी ख्वालीन सागर के तट पर चपाकुर में अली के साथ रहा था। और अली वहा अपने भाई के साथ रह रहा था। अब अली का कारबार भी ठीक-ठाक चलने लगा था। अली का भाई अभी हाल ही में अबजन से लौटा था। उसे अपने सफर में सफलता मिली थी। आते ही उसने ऊट पर से फीरोज़े की एक गठरी उतारी थी। अली ने अपने हाथ में मुट्ठी-भर फीरोज़े

लेकर ऐसा मुह बनाया था मानो इन कीमती रत्नो को देखकर उसका अन्तस् तक कराह उठा हो। फिर फीरोज़े गठरी में डालते हुए उसने कहा—

"बस, काफी है।"

"बेशक काफी है।" उसका भाई हस दिया, "अब बाकू या काशान जाना चाहिए।"

"बस, यह आना-जाना बन्द!" अली ने धीरे से आपत्ति करते हुए कहा, "बहुत हो चुका। मैंने इस पागलपन को पहले ही बन्द कर दिया है। मैं ज़िन्दा रहना चाहता हू। मै तातारो के फदो, तुर्कमनी तीरो, समुद्र में एकाएक हहरा उठनेवाले तूफानो, या रेगिस्तान की प्यास का शिकार, या पहाडो पर रहनेवाले शेर-चीतो के मुह का निवाला नही बनना चाहता। मै यह नही चाहता, नही चाहता!"

"तुम इस डकैती से डर गये?" आखें सिकोडते हुए उसके भाई ने कहा, "मुझे देखो, मै भी तो उज़ून-हसन की ज़मीन पर से ही होकर आ रहा हू।"

निकीतिन ने पहले ही सुन रखा था कि माज़न्द्रान से लेकर तुर्की तक का और हिन्द महासागर तक का सारा प्रदेश अक्कोइयूलू क़बीले—'श्वेतभेड' तुर्कमन—के सरदार, उज़ून-हसन के हाथ में है।

उत्तर के स्थान पर, अली मुट्ठी-भर फीरोज़े लेकर उसकी नाक में जैसे ठूसते हुए चिल्लाया—

"इन टके की चीज़ो के लिए मैं मरना नही चाहता! इन्हें

देखकर शाह की महबूबा भले ही यह ममझे कि उन्हे छाती पर या पैरो में पहनने से उमे खुशी होगी, लेकिन इन पत्थरो से मुझे और तुम्हे केवल दुख मिलेगा, केवल दुख! इन्ही पत्थरो के मोह में पडकर मै अपना घर-बार तक भूल जाऊगा। इन्ही के कारण मुझे अभी तक यह पता नही कि मेरी पत्नी ने मुझे उपहार में बेटा दिया है या बेटी। और क्या यह सन्तान मेरी है?! पूरा एक साल हो गया कि मेरे कानो में मेरी अपनी भाषा के शब्द नही पडे।"

कुछ फीरोज़े बेचकर अली रुई और गेहू खरीदने चल दिया। निकीतिन ने इस काम में उसकी सहायता की। वे पास के गावो और पहाडो की ओर गये। माज़न्द्रान में जाडे की ऋतु थी। हल्की हल्की सर्दी पड रही थी। कटे हुए खेत रूसी खेतो की याद दिला रहे थे। फिर भी उन्हे कुछ न कुछ नया नया-सा, विचित्र जैसा, लग रहा था। वन तक नये थे। वहा कदली, शाहबलूत के पत्रहीन वृक्ष सिर उठाये खडे थे। समुद्री तट पर सरो के वृक्ष काली काली मोमबत्तियो जैसे लग रहे थे। तटवर्ती नदियो के पास लगी झाड-झखाड की झाडियो में से जगली जानवरो की चीखें सुनाई पड रही थी। एक बार तो अफ्नासी और अली का सामना एक शेर से हो गया। शेर पदचिह्नो को सूघता हुआ, घने वन में गायब हो गया था। और यद्यपि कोई आवश्यकता न थी, फिर भी अली ने पागल की तरह घोडा मोडा और घर जाकर ही दम लिया।

अली ने दूर के इलाको के साथ व्यापार न करने का निश्चय कर लिया था। इसी लिए उसने वहा काम करना शुरू किया जहा तक वह आसानी से पहुच सकता था। माज़न्द्रान के गाव गरीब थे। वहा के सकुचित आखो वाले किसान जब व्यापारियो को देखते तो बडी विनम्रतापूर्वक अपना सिर झुका देते। ऐसा लग रहा था कि

यहा कोई लाभ न होगा—गाववालो का सारा पैसा तो उनका कर्ज चुकाने में ही निकल जाता था। लेकिन अली अपने काम में होशियार था। गाव में प्राय कोई गठीला पाठा-बैल, कोई ऊट, किसी किसान की पत्नी की चोटी में बजनेवाले चादी के सिक्के या कोई नई-नवेली दिखाई पडती अली लोगो को कर्ज देने लगा, अगली फसल तक के लिए। करीब करीब एक वर्ष के लिए। वह चूल्हे के पास पडी हुई किसी चटाई पर या फर्श पर चमचमाते हुए कुछ सिक्के रख देता था। इन गोल गोल सिक्को में जादू की शक्ति छिपी थी। इनसे दुनिया की कोई भी चीज खरीदी जा सकती थी—पत्नी के कपडे, नये नये बकरे, गधे और मजबूत और कम उम्रवाले ऊट! कितनी जबरदस्त थी यह ताकत! किसानो के सामने पूरा एक वर्ष पडा था—अल्लाह ने चाहा तो फस्ल में सोना बरसेगा, अन्न के अम्बार लग जायेंगे। और फिर यह कर्ज अपने आप चुक जायेगा, अपने आप।

किसान अली द्वारा लिखे गये कागज पर अगूठा लगाते और चादी के चमचमाते हुए सिक्के जेब में रख लेते।

अफनासी प्राय एकान्त में निकल जाया करता और देर देर तक पहाडो को घूरा करता। तलहटी पर उगे हुए वनो सहित पहाड ऐसे लगते मानो बडे बडे और काले-हरे खडो के रूप में जमीन से फूटे हो। बहते हुए झरनो के कारण टेढी-मेढी दरारे ऐसी लगती मानो पहाडो को विभाजित कर रही हो। दूर पर हिमावृत पर्वत-शिखर सीधे बादलो में घुसते हुए नजर आते। उसने जिन्दगी में पहली बार यह देखा था कि हरियाली और बर्फ साथ साथ रह सकती है।

निकीतिन जानता था—उसका रास्ता एलबुर्ज पर्वत के उस पार है और उसके मार्ग में पत्थर और बर्फ की बाधा है। पर वह
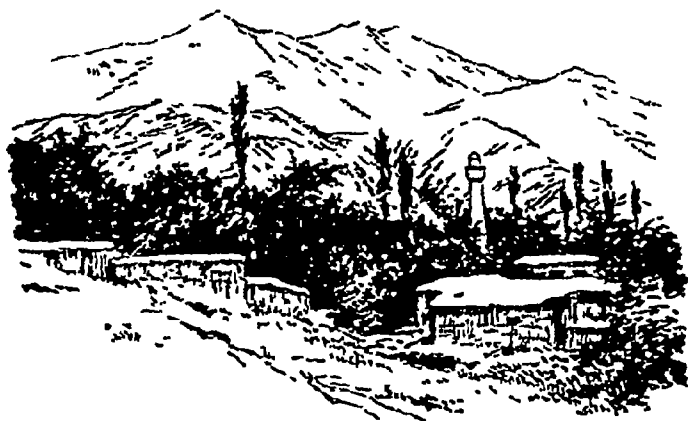
तो शीघ्र से शीघ्र पहाड़ों और बर्फ से मोर्चा लेने को आतुर हो रहा था, अपनी शक्ति आजमाना चाहता था।

वह उत्तेजित घर लौट आया और शीघ्र आगे बढ़ने के लिए अली से आग्रह करने लगा। किन्तु अली को अभी काम था और निकीतिन अकेला आमुल जाना न चाहता था क्योंकि एक तो उसे भाषा न आती थी और दूसरे वहां उसका कोई परिचित न था।

समय बरबाद न करने की दृष्टि से वह माजन्द्रानी भाषा के शब्द सीखने लगा। इसके अलावा अली से उसने शतरंज खेलना भी सीख लिया। शतरंज वह प्रायः शाम को खेला करता। इस खेल में उसे बड़ा मज़ा आता। उसे मुश्किल चालें देखकर आश्चर्य होता और इस बात की खुशी होती कि वह स्वयं भी जटिल चालें सोच सकता है, चल सकता है, अपने विपक्षी की चालें विफल बना सकता है, उनकी योजनाएं धूल में मिला सकता है, उन्हें शाह-मात की धमकियां दे सकता है।

एक वार, फर्ज़ी पिटा देने का खतरा उठाकर निकीतिन अली से वाजी जीत गया। किन्तु इस वार उसने हमेशा की तरह अली का मजाक़ नही उडाया, वरन् विचारपूर्ण मुद्रा के साथ कहने लगा–

"देखते हो न खेल भी एक जिन्दगी ही है–जो ताकतवर है वही जीतता है!"

"यह सब वाहियात वात है!" क्रोध से अली ने आपत्ति की, "सिर्फ भाग्य! सिर्फ इत्तिफाक! खतरा कभी नही मोल लेना चाहिए।"

"नहीं, यहा हर चाल समझ-वूझकर चली जाती है। जरूर, जव अन्तिम वार निर्णय किया जाता है तो जोखिम उठानी ही पडती है। हो सकता है कही कोई चूक हो जाये? लेकिन अगर निर्णय ठीक है तो खतरा जरूर उठाना चाहिए। तभी जीत तेरी होगी।"

"खैर देखना है तुम्हारा निश्चय कैसा है। भारत जाना चाहते हो? फिर फर्ज़ी पिटाना पडेगा? तैयार हो?"

"तैयार हूं!" गम्भीरता से निकीतिन ने उत्तर दिया।

उसके वाद मारी और आमुल के रास्ते सामने आये–मन को उवा डालनेवाले नगर, जिनके वाजार चपाकुर से कुछ ही वडे थे। दमावन्द तक का मार्ग तो और भी कठिन था। यहा अथाह खड्डो के ऊपर जानेवाले पहाडो पर वने हुए सकरे रास्ते काफिले के लिए वडे दुखदायी सिद्ध हो रहे थे। इस रास्ते पर सहसा धुआधार वारिश हुई और काफिला फिसलते फिसलते वच गया। दमावन्द में अफनासी ने अली से विदा ली। अली ने उसे वेतन में अडतालीस सोने के सिक्के दिये और एक ऊट की रास पकडाते हुए कहने लगा–

"मेरी ओर से भेंट।"

वाह्यत दोनो ने शान्ति से एक दूसरे से विदा ली। दोनो ने एक दूसरे से हसी-मजाक किया। पर जव अफनासी कुछ आगे

बढकर पीछे घूमा तो क्या देखता है कि अली सिर के ऊपर हाथ उठाये एकटक उसकी ओर देख रहा है। वह अपना पार्ट अदा कर चुका था। पर अफनासी का पार्ट अभी भी जारी था। इस खेल में पग पग पर गलतिया कर बैठना आसान था किन्तु विपक्षियो के इरादो को भाप सकना उतना ही कठिन। सभी तो उसके विपक्षी थे—प्रकृति, परदेसियो के रीति-रिवाज, नयी भाषा, दूसरो का धर्म। अपने पक्ष में अकेला वही था और थी उसकी कट्टरता, उसकी दृढता और मनुष्य में उसका अखड विश्वास। उसने निश्चय किया कि यह सब उसके लिए काफी है।

काफिला समुद्र के पास पहुच रहा है। हे भगवान! डेढ साल! याद है इन डेढ सालो में क्या क्या हो चुका है। मिकेशिन और सेरेगा इतने समय से त्वेर में ही हैं। ओलेना हाय मेरी किस्मत! शायद उसकी मगनी हो चुकी हो। क्या वह कुछ समझती भी है? और इवान की कब्र पर भी दुबारा हरी घास जम चुकी है वह भी उसे प्यार करता था। काश मै उसकी रक्षा कर सकता! लेकिन नही हुई अब रूस में क्या हो रहा है? शायद तातार लोग नगरो में आग लगा रहे हो। काश ओलेना को बचाया जा सकता! काश मास्को दुख की घटाओ में भी चट्टान की तरह खडा रह सकता!

खजानची मुहम्मद के गुलाम हसन ने देखा कि भूरी दाढी वाला यह खुरासानी सौदागर किन्ही विचारो में खो गया है।

"खोजा!" हसन ने धीरे से पुकारा, "समुद्र! वन्दर!"

खुरासानी सौदागर ने सिर उठाया और ऊट रोक दिया। उसके सामने क्षितिज तक विचित्र नीलिमा फैली हुई थी जो आकाश का आलिंगन कर रही थी। ताडो के वन उसे ढाक न पा रहे थे और वह दूर दूर तक जगमगा रही थी। यह नीलिमा उसे अपनी ओर आकृष्ट कर रही थी और कुछ अनपेक्षित चीजो की प्राप्ति का आश्वासन-सा दे रही थी और इस नीलिमा के उस पार था— भारत!

खजानची ने पीछे मुडकर देखा। खुरासानी सौदागर की आखो से आसू वह रहे थे, झरझर, झरझर

दूसरा अध्याय

घोडो, खजूर और रेशम से लदी हुई नाव धीरे धीरे जल-डमरूमध्य पार कर रही है। उसके इर्द-गिर्द और भी दर्जनो छोटी छोटी नावें चल रही हैं। सूर्य की जलती-सी किरणों के नीचे नीला नीला गर्म जल चमचमा रहा है। जल नाव से टकरा टकराकर ऐसी ध्वनि पैदा कर रहा है मानो हजारो तालिया एक साथ वज रही हो। अधनगे और भूरे रग के मल्लाह सामने से आनेवालो को पहचान पहचानकर, दात निकाले, एक दूसरे को पुकार रहे है और क्रोध का प्रदर्शन किये विना एक दूसरे को खरी-खोटी सुना रहे हैं।

इस सुनहली नीलिमा, पुरमजाक महौल और शरीर को कमजोर बना डालनेवाली गर्मी के वीच, समुद्र के ऊपर से होर्मुज

ऐसा उठता हुआ सा लगता है मानो भवर में मे फेन उठ रहा हो—फेन, जिमने पत्थर की शक्ल अख्त्यार कर ली हो।

दूर से उसकी वर्फ जैमी मफ़ेद दीवाले, मीनारे और बुर्ज दिखाई पडते है और नज़दीक मे रग-विरगे पालो वाली मैंकडो नावें, नीले और सुनहरे गुम्बद और भूरी मीधी दीवारो जैमी चट्टानें

मल्लाहो जैमे ही अधनगे चुगीवाले, तट मे नाव तक लगे हुए तख्ते के पाम, मामानो की जाच-पडताल कर रहे है। वे व्यापारियो मे पैमा ले लेकर उन्हें तट पर जाने देते है। आखिर आ पहुचे!

निकीतिन माथ आये हुए एक घोडे पर चढकर, खजानची मुहम्मद के पीछे पीछे चलता हुआ, बडी उत्सुकता के साथ इधर-उधर नज़र दौडा रहा है। एक मकरे-मे मार्ग पर जैमे कोई हहराती हुई जन-सरिता किले के फाटक की ओर चली जा रही है। भूरे, काले चेहरे, रगीन चोगे, बुरनूसे, लबादे, लगोट, रेशम, वरतनो के गट्ठर, ममके, घोडो के गुस्सैल मुह, गाडी हाकनेवालो की चिल्ल-पो, अभिवादन के रूप में मुनाई पडनेवाली आवाजें, घोडे हकाने के लिए की जानेवाली पुचकारें, हमी-कहकहे—यह मव के मव भिन्न भिन्न रूप-रगो में पहाडी पर चढ-उतर रहे थे, जिन्हें देखकर कल्पना के मामने नये नये चित्र आ जाते थे।

वह रहा एक ऊचे कद का हवशी, वाकू के तेल की तरह काला। उसकी आखो की मफेदी चमक रही है। वह मडक के एक ओर खडा हुआ निकीतिन के मफेद चेहरे को वडे आश्चर्य मे देख रहा है। वह रहा एक फारमी लडका। गधा हाक रहा है। गधे पर दो इतनी वडी वडी ममके लदी है कि उनके मामने लडका और गधा दोनो ही मक्खियो जैसे लग रहे है। एक तरफ चार नगे पैर, नगे आदमी पालकी उठाये जा रहे है। पालकी में एक लाल आवरण के नीचे

एक मोटा-सा आदमी बैठा है–शरीर पर चोगा, पैरो में बूट। और वह–पता नही मर्द है या औरत। लम्बी-सी चोटिया, पीला मुह, छोटी छोटी आखें।

लग रहा था जैसे किला लोगो को निगले जा रहा है, वैसे ही जैसे भवर चिप्पी को निगलती है। यह जन-समूह एक मोटी-सी दीवाल में बने दुर्ग-द्वार से होता हुआ एक सकरी और गर्म सडक पर चलता चला जा रहा था। सडक के दोनो ओर बिना खिडकियो वाले मकान थे, जिनकी छते चौरस थी, जिनके पीछे वीरान अहाते थे। अहातों में हरियाली का नामोनिशान तक न था। कारवा-सराय जरूर एक बडी इमारत थी–लम्बी, दुमज़िली। यहा व्यापारियो के लिए अलग अलग कमरे थे और मवेशियो और घोडो के लिए अस्तबलवाले खाने। इतना होते हुए भी पशुओ के लिए काफी जगह न थी। व्यापारी और नौकर-चाकर इधर-उधर भाग-दौड रहे थे, धूल और लीद में बच्चे खेल और लड रहे थे। बीच बीच में "आव! आव!" की आवाज़ सुनाई पडती थी।

एक ठटे, और कुछ कुछ अधेरे, कमरे में पहुचकर अफनामी ने सन्तोष की सास ली। ओफ, इतनी गर्मी! लेकिन नगर के क्या कहने!

और सचमुच जब निकीतिन सडको पर आया तब तो वह और भी हैरत में पड गया। शहर में दो दो बार जोरो की ज्वार आती—पानी समुद्री तटो पर चढता, किले की दीवारो तक पहुचता और लगता जैसे सब कुछ इसी में विलीन हो जायेगा, और गर्मी और प्यास से लोग पागल हो उठेंगे!

ईस्टर के दिन थे। यहा की गर्मी के सामने रूस का प्योत्र दिवस—(१६ जुलाई)—भी कुछ न था। होर्मुज में ताजे पानी के कोई स्रोत न थे। यहा पानी नावो पर लाद लादकर बन्दर से लाया जाता। मकानो के अहातो के गड्ढो में यही पानी भर दिया जाता और जब तेज गर्मी पडने लगती तो लोग नग-धडग उन्हीं गड्ढो में बैठ जाते।

होर्मुज की जमीन जल द्वारा उन प्रदेशो से कटी हुई थी, जो चिन्ताओं और लडाई-झगडो के केन्द्र थे। इनके इर्द-गिर्द दीवारे थी जो पहाडो की चट्टानो से सटाकर बनायी गयी थी। नगर की अपनी नौसेना थी जिसमें तीन सौ युद्ध-पोत थे। निकीतिन को लगा जैसे यह नगर व्यापारियो के लिए अच्छी पनाहगाह है।

उसे नगर की सडको पर अग्निपूजक पारसी, पेकिंग के बौद्ध और जेरूसलम के ईसाई दिखाई दिये। उसे लगा कि यहा के भिन्न भिन्न लोगो ने इस द्वीप को जो 'दारुल-अमन' का नाम दिया है वह सार्थक है।

लगता था कि नगर में किसी प्रकार का धार्मिक प्रतिबन्ध न था—मजहब के मामले में सभी स्वतत्र थे। बाहर से लाये हुए माल
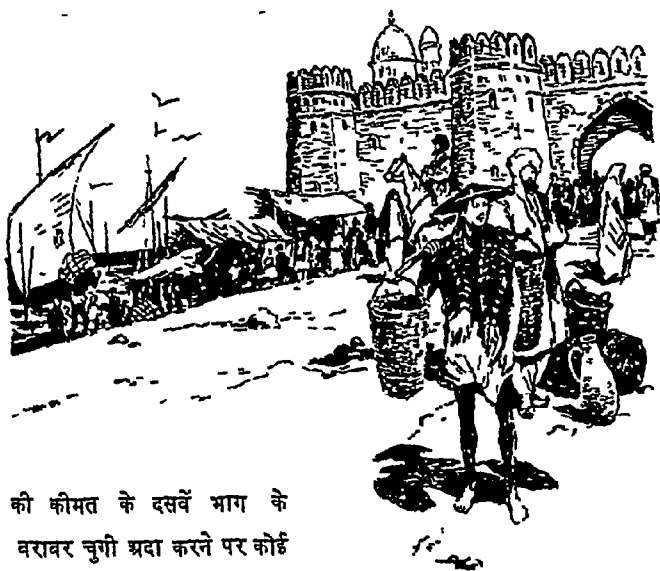
की कीमत के दसवें भाग के वरावर चुगी अदा करने पर कोई भी आराम से रह सकता था।
डेढ वर्ष में पहली बार निकीतिन को ऐसा लगा जैसे अपने ईसाई होने पर उसे कोई चिन्ता नही।

उसने यहा जवाहरातो की दूकाने, लोगो की रईमाना पोशाके और नगर निवासियो के गहने-जेवर देखे, और उसे यह कहावत याद हो आयी—"दुनिया अगर अगूठी है तो होर्मुज उसका मोती!"

अफनासी होर्मुज की चिलचिलाती धूप का अभ्यस्त न हो सका। हा, रातो में, जव सास लेना आसान हो जाता, वह देर देर तक सडको पर घूमता और आकाश में विखरे हुए मोतियो को घूरा करता। यह आकाश रूस के आकाश की अपेक्षा कुछ नीचा लग रहा था। यहा का तारक मडल—राशि समूह—तक उसका जाना-पहचाना न था। वह यहा के निवासियो की खुशी और उनके रहस्यपूर्ण जीवन

की झलक पाने का बराबर प्रयत्न किया करता। बेशक, यहा रूस जैसी ही हसी-खुशी थी और वैसी ही सिसकिया, पर उसे लगा कि यहा, मृगशिरा नक्षत्र के नीचे, आसू भी दूसरी जगहो की अपेक्षा, हल्के और कम पीडादायी होगे।

यह सब चीजें तो भारत में प्रवेश करनेवाले द्वार के समान थी। उसका दम-सा घुटने लगा

वसन्त की ऋतु थी। अभी हाल ही में मार्च के समुद्री तूफान समाप्त हुए थे। इन तूफानो ने होर्मुज से लेकर शतुल-अरब तक सब कुछ एक प्रकार से नष्ट कर डाला था। जिस धुध ने फारस के वीरान और निचने समुद्री तटो को ढक रखा था अब वह धीरे धीरे छट रहा था। वसन्त की ऋतु थी। प्रतिदिन प्रात काल मछुए मोती की तलाश में अपनी पुरानी नावो पर निकल जाते। नावो पर सीपें निकालनेवाले गोताखोर भी होते। होर्मुज के इर्द-गिर्द जो मोती निकाले जाते वह केवल वहा के शासक के लिए ही होते। किन्तु, कारवा-सरायो में प्राय ऐसे लोग भी दिखाई पड जाते जो चलते-चलाते व्यापारियो से छुटपुट बातें करते और चुपके से उनके कमरो में घुस जाते। और फिर भीड में मिल जाया करते।

खजानची मुहम्मद ने कहा कि वे चोरी चोरी सस्ते दामो पर मोती बेचते हैं। यद्यपि यह फारसी अपने कामो में व्यस्त था फिर भी अपने रक्षक को न भूला था। उसने कई मुसलमान व्यापारियो से निकीतिन का परिचय करवाया था और हसन को अफनासी की नौकरी में मुकर्रर कर दिया था। अफनासी ने इससे इन्कार किया पर फारसी अपनी बात करके ही रहा। गुलाम हसन, हर समय निकीतिन की परछाई बना रहता और उसकी हर इच्छा पूरी करने को तैयार रहता। निकीतिन अब उसकी सहायता का अभ्यस्त हो

चुका था। उसने मोतियो के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। उसने सीप बटोरनेवाले गोताखोरो को देखने की इच्छा प्रकट की। अत एक दिन प्रात काल वह द्वीप के ही निकट के एक

टीले पर पहुच गया। यह भाटे का समय था, इसलिए द्वीप पर सब कुछ साफ साफ दिखाई पडता था। वह खडा खडा नावो की ओर देखने लगा। एक नाव पास आकर खडी हो गयी। नाव के पिछले भाग में एक आदमी पगडी लगाये बैठा था। उसने कोई आज्ञा दी और एक नगा काला मछुआ उठ खडा हुआ। उसकी छाती से एक थैली और कमर से एक चाकू लटक रहा था। उसने नाव पर पडा और रस्सी से मजबूती से बधा हुआ एक पत्थर उठाया। फिर सीधा हुआ, एक गहरी सास ली और समुद्र में कूद पडा कुछ सेकड बीत गये। नाव पर खडे हुए लोग बराबर रस्सी छोडते जा रहे थे। अनुभवी हाथो में रस्सी मजे मजे सरक रही थी। गोताखोर पानी के भीतर जा चुका था सहसा वह पानी के ऊपर निकला और गहरी गहरी सासे लेने लगा। उसने कापते हुए हाथो से नाव पकड ली। और पत्थर उठा लिया। अब एक दूसरा मछुआ उठा, उसने पत्थर थामा, सीधा हुआ, वैसी ही गहरी सास ली और नाव से कूद पडा। अब पहलेवाला गोताखोर चाकू से सीपें खोलने लगा। यह सीपें उसकी थैली में भरी थी। पॉच, छ , सात — सभी सीपें नाव से होकर समुद्र में समाती गयी। किन्तु ग्यारहवी सीप ने मछुए का ध्यान अपनी ओर खीचा, और पगडीवाले व्यक्ति ने सीप लेने के लिए हाथ फला दिया। सीप उसके हाथो में चली गयी।

"इसमें है!" निकीतिन के कान के पास एक फुसफुसाती-सी आवाज सुनाई दी।

यह हसन की आवाज़ थी। वह शायद डर गया था कि उसने मालिक की शान्ति में बाधा पहुंचायी है। इसी लिए शीघ्रता से समझाने लगा—

"खोजा, इसे मोती मिल गया है   मैंने देख लिया है, मुझे माफ करें।"

"नहीं, नहीं, कोई बात नहीं। यह पगड़ीवाला है कौन?"

"पगड़ीवाला—यह दारोगा है। वही सारे मोती इकट्ठा करता है।"

"और वे कौन हैं जो मोती निकालते हैं?"

"मामूली गुलाम।"

निकीतिन ने नाव पर एक दृष्टि डाली और कहने लगा—

"लगता है यह पगड़ीवाला दारोगा तुम्हारे मालिक के पास आया था   "

"मैंने नहीं देखा खोजा!" हसन ने तड़ से जवाब दिया, "मैं कुछ नहीं जानता।"

निकीतिन, उन नंगे और अस्वाभाविक ढंग से उभरी हुई पसलियों और पिचके हुए पेटवाले मछुओं की ओर देखता हुआ उत्सुकता से हसन से पूछ बैठा—

"तुम यहां पहली बार आये हो?"

"हां, पहली बार।"

"तुम भारत में रहते हो?"

"हां, खोजा।"

"तुम्हारे मां-बाप भी वहीं हैं?"

हसन ने बहुत धीरे से उत्तर दिया—

"हुज़ूर, मेरे मां-बाप थे ही नहीं।"

अफनासी ने सिर घुमाया—

"क्या? मर गये क्या?"

हसन ने आखें झुका ली और भूरी अगुलियो से एक जलता हुआ पत्थर छू लिया—

"नही जानता वे थे ही नही।"

"खैर, यह तो बताओ," निकीतिन बोला, "तुम मुहम्मद के हाथो में कैसे पडे?"

"मेरे पहले मालिक ने मुझे उनके हाथ बेच दिया था।"

"तो तुम पहले मालिक के यहा बडे हुए थे?"

"नही, उन्होने भी मुझे खरीदा था।"

"किससे?"

"एक दूसरे मालिक से।"

"शैतान!" निकीतिन क्रोध मे बोला, "आखिर कही तो बडा हुआ ही होगा?"

"हा, हुजूर, लाहौर में।"

"तो सचमुच तुम्हे किसी की याद नही?"

"याद है। बडा-सा खूबसूरत मकान। ढेरो नौकर-चाकर। हम बच्चे ईंधन के लिए कडे पाथा करते थे। सारे दिन यही एक काम था। या फिर पानी लाते थे। हमारा रसोइया बडा मस्त था, हुजूर। वह गुस्से मे खासने लगता और फिर हमे मारने पर जुट जाता। बस उसी की याद है। हा, उस गाय की भी याद है जिसके पास मै सोता था। लाल रग, सफेद पीठ। बस, और कुछ याद नही आता।"

"हू-ह " निकीतिन के मुह से इतना ही निकल सका।

इसी समय उसे एक चीख सुनाई दी। नाव के लोगो में हलचल-सी मच गयी। उन्होने रस्सा खीचना शुरू किया और अपने डाड सभाल

लिये। पानी में से एक गोताखोर निकलकर नाव में चढा ही था कि उसके पास ही कोई भूरी-सफेद चीज़ दिखाई दी।

"शार्क मछली " हसन ने समझाया। उसका चेहरा पीला पड रहा था। "उस मछली ने तो अभी इस गोताखोर के टुकडे ही कर दिये होते। यहा ढेरो शार्क मछलिया हैं। मोती बटोरना बडा खतरनाक काम है।"

"फिर भी लोग यह काम करते है और नही डरते।"

"खोजा, आदमी समुद्र में रहकर जिन्दा रह सकता है, लेकिन उसका मालिक उसपर कभी रहम नहीं करता।"

इस दुर्घटना और हसन के साथ हुई बातचीत ने निकीतिन को चिन्तित कर दिया।

और जब निकीतिन ने सफेद, गुलाबी, काले और अतिदुर्लभ हरे मोती दूकानो में देखे, तो उसके मन में उनके प्रति वैसी ही घृणा पैदा हो गयी जैसी ज़ालिम शार्क को देखते हुए हुई थी। इस अनुभूति को दिमाग से निकालना उसके लिए असम्भव हो रहा था। बहरेन के प्रसिद्ध टापू और अज्ञात लका के समुद्र, जिनके बारे में कहा जाता था कि वहा मोतियो की बहुतायत है, उसे होर्मुज़ की चट्टानो की ही तरह नीरस और पापाणवत् लगने लगे। उसे लगा जैसे वहा के पानी में सिर्फ शार्क मछलिया है—प्राणघातक, भयकर मछलिया।

इठलाती हुई वायु समुद्र पर से बह रही थी। पानी पर छोटी छोटी तरगें उठ रही थी। होर्मुज़ के शासक के पत्रवाहक कबूतर अपने रग-बिरगे बुर्ज से ऊपर उडकर किले की दीवारो की आड में उतर रहे थे। गर्मी से बचने के लिए मकानो की छतो के ऊपर चादरे तान दी गयी थी, जो हवा के स्पर्श से लहरो की भाति उठती-गिरती दिखाई

दे रही थी। कारवां-सराय के तालावों के पानी में हिलोरें-सी उठ रही थी। चौराहों पर गर्म धूल उड रही थी और भिश्तियो के ऊट दिखाई पड रहे थे। होर्मुज़ के छैलो के घुघराले वाल हवा में लहरा रहे थे। औरतो के वुरको की नक़ावें निर्लज्जता से उडी जा रही थी और लग रहा था जैसे वायु औरतो की इज़्ज़त का मखौल उडा रही है। वह समुद्र पर से वह रही थी और जहाजो के पाल अधिकाधिक स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। कुछ जहाजो पर से भारी भारी गट्ठर उतारे जा रहे थे। गर्मी से वचने के लिए सडको पर विछाई गयी चटाइयो पर मल्लाह लोग झूमते हुए चल रहे थे। सख्त मेहनत के वाद अव वे आराम की तलाश में थे। शामो को सरायो में से मनचले गाने सुनाई पडते और नशे में धुत्त लोग वोरो की तरह निकाल वाहर किये जाते। जो लोग पहरेदारो से- लुटते लुटते वच जाते, वे चोरो के हत्थे चढ जाते। सरहद पर वने मिट्टी के वाडो के पीछे से औरतो की ही-ही ही-ही सुनाई पडती और वे वाडो में वने झरोखो में से मुसाफिरो की आस्तीनें पकड पकडकर उन्हे अपने चेहरे दिखाने लगती। उनके कानो में भारी भारी कर्णफूल झूमा करते। कर्णफूलो के वोझ से कइयो के कान तो कधो तक लटक आये थे। ये औरते जवान थी, खूवसूरत थी और थी महगी। नाविको की सख्या अधिक थी। हवा समुद्र पर से वह रही थी। क्षितिज में, एक के वाद एक, ढेरो पाल दिखाई पड रहे थे।

"जायफल ले लो, जायफल, मलावार के जायफल।"

"लौंग, दालचीनी, लौंग, दालचीनी!"

"नील, नील, दुनिया का सवसे ज्यादा चमचमाता हुआ नील।"

"हीरो को चमकानेवाला पत्थर!"

"अपनी माशूक़ा के लिए शाही तापता ले लो, तापता!" वाज़ार में भारतीय व्यापारी ऐसे ही चिल्ला रहे थे। हवा में मसालो की तेज

गन्ध उड रही थी, पारदर्शी वस्त्र सरसरा रहे थे, सोने के ज़ेवर झमक रहे थे। भारत! भारत! यहा भारत का अनुभव हो रहा था, एक जीवित, गर्म शरीर की भाति। लेकिन भारत का रहस्य छिपा किसमें है? भारत के चमचमाते हुए कामदार सुन्दर वस्त्रो में, या हुसन के दुर्भाग्य मे? क्या है वह रहस्य?

खज़ानची की सलाह से निकीतिन ने एक घोड़ा खरीदने का निश्चय किया।

वह घोडो के बाज़ार मे गया, घोडे देखे और उनका मूल्य मालूम किया।

घोडे सभी तरह के थे। अच्छे घोडे भी थे। लेकिन व्यापारी उनके बहुत अधिक दाम मागते थे। रूसी रुबलो में घोड़ा कोई सत्तर रूबल का पड़ता था।

"अगर भारत मे बेचा तो तुम्हें रूसी के दस गुने, पन्द्रह गुने दाम मिल जायें," खज़ानची ने समझाया, "भारत में घोडे नही पैदा होते। वहा सबसे फायदे का सौदा है—घोड़ा।"

निकीतिन के पास इतना पैसा तो था ही कि एक अच्छा घोड़ा खरीद सकता था और रास्ते का खर्च निकाल सकता था। उसने खज़ानची की सलाह पर चलने का निश्चय किया।

दिन गुज़रते गये। प्रतिदिन प्रात काल मुहम्मद को जन-उमस से होकर बन्दर तक जाना पड़ता था। वहा घोडो पर मुहरें लगायी जाती थी। खज़ानची परेशान हो गया था और जल्दी मचा रहा था। शीघ्र ही उसके घोडो के लिए बडी बडी नावें आनी थी, किन्तु घोडो पर मुहरे लगाने का काम धीरे धीरे चल रहा था।

"यूसुफ, तुम्हे घोडो की जानकारी भी है?" खज़ानची ने एक बार निकीतिन से प्रश्न किया, "तो फिर मेरी मदद करो न।"

मुहम्मद ने खरीदे हुए घोड़ो में से कुछ तो सरायो के सायबानो में रख दिये थे और कुछ बन्दर की सरहद पर बने हुए मिट्टी के बाडो के पीछे। इनमें से अधिकतर घोडे खजानची के नौकरो की देख-रेख में चरा करते थे।

मुहम्मद, निकीतिन को एक छोटे-से बाडे में ले गया जहा फटे-पुराने चोगे और मैली-कुचैली, चौकोर टोपिया चाद पर रखे कुछ लोग उनका इन्तजार कर रहे थे। उनका रग सावला था मगर धूल ने उनपर काली परत चढा दी थी।

सभी एक ही शक्ल-सूरत के लग रहे थे। सभी एक ही ढग से झुकते और एक ही तरह से दौडते थे। वे कोने में बनी अगीठी मे कोयला फूक रहे थे और घोडो की लगामें हिलाते-डुलाते हुए इस बात पर बहस कर रहे थे कि घोडो को कौन हाकेगा, कौन उनपर मुहर लगायेगा।

मुहम्मद वही से चिल्ला उठा और लोग ऐसे खिसक गये मानो हवा उन्हे उडा ले गयी हो। बस एक आदमी बच रहा। वह बडी मेहनत से धौंकनी चला रहा था। आग की लपटें उठ रही थीं और कालिख झड रही थी। ऊन से ढकी हुई जमीन घोडो के खुरो से जगह जगह खुदी हुई थी और सारे का सारा वातावरण मूत्र से गन्धा रहा था।

"यहा हम घोडे पर मुहरें लगवाते है," मुहम्मद बोला, "इस बात पर ध्यान देना है कि कही बूढे और बीमार घोडो पर मुहर न लग जाये। तुम्हे ऐसे घोडो को अलग कर देना है। मेरा अनुमान है कि ऐसे घोडे अधिक न होंगे। लेकिन, घोडो के दलाल हमें झासा दे सकते है। इन फटे-हालो का भी कोई विश्वास है? ये लोग तुम्हें धोखा देने की कोशिश करेंगे, मेरे खरीदे हुए अच्छे घोडो को अपने निकम्मे और अडियल घोडो से बदल लेगे बोलो तुम यह काम कर सकोगे?"

"तुम जाकर अपना काम करो," अफनासी ने उत्तर दिया, "यहा का काम मै सभाल लूगा।"

दो घोडो पर मुहर लग जाने तक मुहम्मद इन्तज़ार करता रहा। फिर उसने सभी को आदेश दिये कि वे खोजा यूसुफ का हुक्म मानें, और स्वय जल्दी से घोडो का मुआइना करनेवाले दूसरे लोगो के पास चला गया। अफनासी अकेला रह गया।

घोडो पर मुहर लगाने का काम इस प्रकार होता रहा—घोडे को बाडे में ले जाया जाता, अफनासी उनका मुआइना करता, फिर घोडे के पैर बाधे जाते, उसे बगल के बल गिराया जाता, और उसके पुट्ठे पर जलती हुई मुहर दाग दी जाती। घोडे का मास जलने लगता और वह तडपता हुआ भागने की कोशिश करता और भय से चीख पडता।

चौदह या पन्द्रह घोडो के बाद अफनासी इतना थक गया मानो सुबह से दोपहर तक कुल्हाडी से लकडी काटता रहा हो। चिलचिलाती हुई धूप से बचने के लिए उसे सिर छुपाने की भी जगह न मिली। उसके सूखे हुए ओठो पर हल्की-सी मुस्कराहट बिखर गयी और वह सोचने लगा कि सचमुच मेरी अपनी दशा इन दगनेवाले घोडो से अच्छी नही। दूसरे लोग भी बुरी तरह थक चुके थे। किन्तु निकीतिन ने खज़ानची के लौटने तक काम करते रहने का निश्चय किया। खजानची ने दोपहर तक लौटने का वादा किया था।

कार्य, अविराम, चलता रहा। निकीतिन घोडो की जाच-पडताल करता और वहा के लोगो पर नज़र रखता। निश्चय ही वे भिन्न भिन्न शक्ल-सूरत के थे। पर अजीब यह था कि निकीतिन को पहली नज़र में ऐसा लगा जैसे उनमें कोई फर्क नही। धौंकनी पर काम करनेवाले बूढे के हाथ में एक लम्बा-सा चिमटा था जिसमें वह घोडो पर

लगानेवाली मुहर साधे था। इस व्यक्ति का शरीर दुबला-पतला और नाक टेढी थी। उसकी आखें सूजी हुई थीं। लग रहा था जैसे उनमें जलते हुए आसू भरे हो। वही दूसरो से अधिक चतुर एक दूसरा आदमी था। यह तुर्कमन था। देखने में जवान, आखो का तेज़। गुस्सा तो उसकी नाक

पर धरा रहता। चीखना-चिल्लाना जैसे उसका स्वभाव था। उसका घुटा हुआ सिर उसकी भरी-पूरी और छोटी-सी गर्दन पर कसकर जमा हुआ दिखाई पड रहा था। जब वह घोडे की ओर बढा, तो वह हिनहिनाने लगा और कुछ कदम पीछे हट गया। तुर्कमन ने इशारे पर न चलनेवाले घोडे के माथे पर भारी भारी मुक्को की बौछार शुरू कर दी और उसे इतना पीटा कि वह बिल्कुल गिरने को हुआ।

"ए भाई, ज़रा धीरे से!" निकीतिन ने उसे रोका। तुर्कमन ने निकीतिन को ऐसे देखा जैसे उसका मखौल उडाना चाहता हो और अपने दोस्तो से जल्दी जल्दी कुछ कह गया। वे सब हसने लगे। तुर्कमन ने फिर हाथ उठाया मानो अपने अगले शिकार की खबर लेना चाहता हो।

निकीतिन ने तुर्कमन का हाथ पकडकर ज़ोर से दबाया। फिर एक क्षण तक दोनो खडे खडे एक दूसरे की आखो में आखें डालकर देखते रहे। तुर्कमन का हाथ पूरी ताकत से पकडे रहने के कारण अफनासी के पुट्ठो में पीडा होने लगी पर सास खीचकर आखिर उसने उसका हाथ मोड ही दिया।

सहसा तुर्कमन मुस्करा दिया और हाथ झटककर क्रोध से अपने उन मददगारों पर चिल्ला पड़ा जो काम छोड़कर तमाशा देख रहे थे—

"घोड़े को गिराओ न! रुक क्यों गये?"

लोग तुरन्त अपने काम में लग गये और फिर दुपहर तक कोई घटना न घटी। हां, कभी कभी निकीतिन ने इस बात पर अवश्य ध्यान दिया कि तुर्कमन कनखियों से उसकी ओर देखता है और रुखी हंसी हंस देता है।

दोपहर होते होते खजानची आ पहुंचा। उसके शरीर पर गर्द-गुबार जम गया था और गला बैठ गया था। उसने घोड़ों की जांच की, खुश हुआ और निकीतिन से आराम करने को कहा।

मुहम्मद, निकीतिन को किसी मुसलमान के घर ले गया जहां दोनों एक ठंडे कमरे में जम गये। यहां निकीतिन ने पानी मिली खट्टी शराब पी, अपने जलते हुए चेहरे पर हाथ फेरा और गहरी सांस ली। अब उसकी जान में जान आयी और गर्मी तथा थकान से कुछ राहत मिली। उसकी आंखों के सामने घोड़ों के सिर, पुट्ठे, चौंधिया देनेवाली ज़मीन और अलाव के ऊपर कांपती हुई सी हवा थी और उसके कानों में सुनाई पड़ रही थीं घोड़ों की हिनहिनाहट, वहां के लोगों की आपसी डांट-फटकार।

"इन लोगों को इकट्ठा कहां से कर लिया?" उसने खजानची से पूछा, "यह जवान कहां का है, जिसकी आंखें जंगलियों जैसी हैं?"

"सभी बन्दर के हैं!" खजानची धीरे से बोला—उसका गला बैठ गया था, "सभी चोर, बदमाश, उठाईगीरे हैं। लेकिन इनसे अच्छे मिलते भी नहीं। इसी लिए तो कम पैसों में मिल जाते हैं। क्यों, क्या बात है? कुछ हुआ तो नहीं?"

"नहीं। मैंने यों ही पूछा था," निकीतिन ने उत्तर दिया।

खाना अफनासी की हलक से न उतरा। किन्तु, खजानची खाने के बाद तुरन्त क़ालीन पर पडा रहा और खर्राटे भरने लगा। वह पूरे दो घटे तक सोता रहा। उसने मुह और नाक पर बैठती हुई मक्खियो की भी चिन्ता न की। पर निकीतिन को नीद न आयी। वह गरदन के नीचे हाथ रखे पडा रहा—चुपचाप, शान्त। उसके मस्तिष्क में तरह तरह के विचार उठ रहे थे। पास ही खर्राटे लेते हुए मुहम्मद ने भी उसके मन में एक विचार पैदा कर दिया था—क्या सचमुच भारत की भूमि आश्चर्यजनक है, अद्भुत है?

उसने अपना पैसा गिना। बेशक, इतने में वह घोडा खरीद सकता है और कुछ बचा सकता है। लेकिन उसे एक डर भी था। अगर वह घोडा ले जाये तब तो खैर अच्छा ही है, पर यदि वह मर गया तो? लोग कहते है प्राय यही होता है। इतनी दूर, परदेस में, बिना पैसे के माने हैं मौत। इसके माने है रूस का रास्ता हमेशा के लिए बन्द!

रूस! अफनासी का दिल तडप उठा। उसने सिर के नीचे से दोनो हाथ निकाले और उठकर बैठ गया। उसने दात पीसे। घर छोडे उसे कोई दो वर्ष हो चुके थे। वह अकेला, मातृभूमि से दूर, बहुत दूर चला आया था। उसने जितना सोच रखा था, मार्ग उससे अधिक दुष्कर सिद्ध हुआ। तो क्या इतना चल आने के बाद, इतना सब कुछ अनुभव कर चुकने के बाद, वह अब घुटने टेक दे? या शायद वह भारत पहुचेगा ही नही? भारत पहुचना उसके भाग्य में ही नही?

सहसा उसके हृदय में एक हूक-सी उठी—उसके कान अपनी मातृभाषा, मडली में बैठी हुई लडकियो के हसी-कहकहे सुनने को ललक उठे। वह बचपन की परिचित दुनिया में पहुचना चाहता था जहा की एक एक झाडी उसे मित्र-सी लगती थी।

उसने त्वेर की गली में खडी हुई श्रोलेना को देखा। सेवल की टोपी पहने श्रौर उसपर शाल कसे थी। उदास-सी मुस्कराहट उसके अधरो पर विखर गयी थी। श्रौर यहा, वन्दर के एक छोटे-से मकान में उसे त्वेर में पिघलती हुई वर्फ की गन्ध मिल रही थी। वहा के गिरजे के घटो की घनघनाहट, स्लेज-गाडियो की मरमराहट, गिरजो के क्रॉसो के ऊपर उडनेवाले कौश्रो की पटर पटर उसके कानो में पडने लगी। सहसा उसे श्रग्राफेना कागीना की श्रावाज़ भी साफ साफ सुनाई देने लगी – "निकम्मा आदमी, बिल्कुल निकम्मा!" श्रौर फिर मिकेशिन की ही-ही भी

निकीतिन ने माथे पर हाथ फेरा श्रौर खज़ानची को पुकारने लगा –

"खोजा, उठने का वक्त नही हुआ क्या? श्ररे भाई, सोश्रोगे तो खोश्रोगे!"

बाक़ी दिन वह एक क्षण के लिए भी चैन से न बैठा। खुद भी थका श्रौर काम करनेवालो को भी थका डाला। गरमी मे थके हुए होने के बावजूद उसने लोगो को जल्दी से जल्दी काम करने को कहा। शाम होते होते मुहम्मद की आशका सत्य दिखाई पडी। एक बूढा घोडा श्रफ़नासी के गले पडा। उसने उगलियो से घोडे के दात टटोले – दात घिसे हुए थे। निकीतिन श्रपने चारो श्रोर देखने लगा। बाज़ जैसी आखो वाला श्रादमी रस्सी हिला रहा था, टेटी-नाकवाला बूढा जलती हुई मुहर लिये था श्रौर दो श्रन्य वन्दरवासी उस निकम्मे श्रडियल घोडे की पिछली टागें वाध रहे थे श्रौर श्रजीव ढग से एक दूसरे को डाट-फटकार रहे थे।

"इस घोडे को हटा ले जाश्रो! इसपर मुहर नहीं लगेगी!" निकीतिन चिल्लाया, "इसे यहा बाध दो।"

जो वन्दरवासी घोडे की टागें बाध रहे थे उन्होने तुरन्त ही डाट-फटकार बन्द की श्रौर उछलकर एक श्रोर खडे हो गये।

"क्यों ?"

"इसे क्यो हटा रहे हो ?"

"यह तुम्हारा घोडा है!"

वे धडधडाते हुए निकीतिन के पास चले आये और अपनी दुबली-पतली, गन्दी बाहे झुलाने लगे। उनकी लहसुन से गन्धाती हुई सासे अफनासी को सुनाई पड रही थीं और वे अपनी काली और छोटी आखें इधर-उधर नचा रहे थे।

अफनासी ने कोई उत्तर न दिया और घोडे की रास पकडकर उसे द्वार से दूर, कोने में, एक खभे से बाघ दिया। बन्दरवासी तुरन्त चुप हो गये। बाज जैसी आखो वाले तुर्कमन ने धीरे से सीटी बजायी।

"घोडे लाओ!" कठोरता से निकीतिन ने आज्ञा दी, "शाम को देखा जायेगा। तो ले आओ! जल्दी करो!"

उन्होंने डेढ डेढ साल की दो घोडियो पर चुपचाप मुहरे लगायी। जब लोग तीसरे और चौथे घोडे को लेने गये तो बूढा निकीतिन के पास आकर पोपलाते हुए कहने लगा—

"इन लोगो की ग़लती माफ कर दो, खोजा।"

"यह गलती नही है!" निकीतिन बोल उठा।

"मालिक उन्हे निकाल देगा।"

"उन्होंने हरकत ही ऐसी की है।"

"एँ! हरकत सिर्फ अल्लाह बेगुनाह है, खोजा। इन लोगो के खानदान हैं, बाल-बच्चे हैं। भूखो की रोटी तो न छीनो, खोजा।"

बूढे ने एक गहरी सास ली और धौंकनी की ओर लौट गया। बन्दरवासी उदास मन से घोडे ले आये। बाज जैसी आखो वाला आदमी बराबर सीटी बजाता रहा। एक घटा और बीत गया। अब अधेरा हो चला था। कोने में बधा हुआ घोडा गहरी सासे ले रहा था।

जब अगले घोडे पर मुहर लग चुकी तो अफनासी ने अभागे घोडे की ओर देखते हुए सिर हिलाया—

"इसे ले जाओ "

बन्दरवासी उसका अर्थ न समझ सके।

"मैंने इसे नही देखा!" क्रोध मे अफनासी बोला, "और तुमने भी नही देखा। बस। इसे यहा से ले जाओ! बदमाश कहीं के!"

बूढे ने पीठ मोवी की ओर मुस्करा दिया। बन्दरवासियों में भी जैसे जान में जान आ गयी। बाज़ जैसी आखो वाले ने निकीतिन को कनखियो से देखा और अपनी मूछो पर हाथ फेरने लगा।

"जल्दी करो, जल्दी करो!" अफनासी कठोरता से कहता गया, "अधेरा होते होते हम पाच घोडो पर और मुहर लगवा लेंगे "

बन्दरवासी निकीतिन के आगे झुकते हुए चले गये। अब निकीतिन बाडे से निकलकर उस गली में आ गया जहा से मुहम्मद को आना था।

बाज़ जैसी आखो वाला तुर्कमन चुपचाप उसके पास चला आया। दोनो झुटपुटे में खडे थे। दोनो एक दूसरे का चेहरा ठीक से न देख सकते थे। तुर्कमन ने जैसे रहस्यपूर्ण ढग से कहना शुरू किया—

"तुमनें उन्हे माफ़ कर दिया, बडा अच्छा किया।"

अफनासी हस दिया—

"मुझे धमकी देते हो? लेकिन मैं डरनेवाला नही।"

"हाथ लाओ," तुर्कमन बोला, "ऐसे। अब तुम मेरा हाथ मोडो। मोडो, मोडो कसकर मोडो।"

तुर्कमन ने आसानी से निकीतिन के सारे प्रयत्नो को विफल कर दिया और बिना किसी कठिनाई के उसका हाथ ज़मीन तक मोड दिया।

"यह रही!" तुर्कमन बोला, "देख रहे हो, ज़िन्दगी में क्या क्या होता है? खोजा, मैं चाहता हू तुम सुनहले सपनो में झूलो "

इतना कहकर वह रात के अंधेरे में गायब हो गया।

होर्मुज की ओर, समुद्री रास्ते से जाते समय, निकीतिन कुछ विशेष प्रसन्न लग रहा था। उसे रात में गहरी नींद आयी थी।

घोड़ों पर मुहर लगाने का काम पूरा हो रहा था। बन्दरवासी निकीतिन से हिलमिल गये थे और प्राय अपने कठोर जीवन और कम पैसों का रोना रोते थे। निकीतिन ने उनसे वादा किया था कि वह उनकी सिफारिश खज़ानची से करेगा। और सचमुच उसने खज़ानची से कहा भी था। किन्तु खज़ानची उत्तर में अपना सिर हिलाते हुए बोला था–

"ये सब झूठे हैं, मैं इन्हें काफी पैसा देता हूं।"

निकीतिन ने खज़ानची का उत्तर उन्हें सुना दिया, जिसे सुनकर बूढ़ा तो उदास हो गया लेकिन जवान तुर्कमन ने ज़ोरों से थूक दिया। फिर पैर के पास पड़े हुए पत्थर को ठुकराते हुए पूछने लगा–

"देख रहे हो? और पूछते थे कि मैं क्रोध क्यों करता हूं। अजी जेब तो इजाज़त ही नहीं देती कि हम सखावत बरतें।"

"उसे छोड़ जाओ," निकीतिन ने सलाह दी, "तुम जवान भी हो और मज़बूत भी।"

"हां, दूसरों का बोझ हमेशा हल्का लगता है," जाते हुए तुर्कमन बड़बड़ाया।

"उसके बीमार मां है और एक छोटी बहन," टेढ़ी नाकवाला बूढ़ा बोला, "बेचारी अभी लड़की है, लेकिन लोग अभी से उसका दाम पूछ रहे हैं। पर मुज़फ्फर नहीं चाहता कि वह आगे चलकर कुलच्छनी बने।"

"तो फिर उसे ब्याह दे।"

"किसके साथ? शायद कोई पैसेवाला बूढ़ा आयेगा और उसे ले

जायेगा। ऐसे लोग ग़रीबी का ख्याल नही करते   होता है ऐसा। किस्मत ईमानदारों का साथ कम ही देती है, खोजा।"

शीघ्र ही मुहर लगाने का काम समाप्त हो गया। मुहम्मद सन्तुष्ट था। उसने निकीतिन को पचीस सोने के सिक्के और बाकी सबो को कुल मिलाकर बारह सोने के सिक्के दिये थे। मुहर लगानेवालो ने पैसा लिया और सिर झुका दिया। किन्तु जब खज़ानची चला गया तो वे उसे पेट भर भरकर गालिया देने लगे।

खज़ानची ने अफनासी को कभी कभी शाम के खाने पर बुलाया। नौकर-चाकर मिठाई, शराब और मसालेदार भुना हुआ गोश्त ले आये। मुहम्मद ने ज़बान चटखारी और खाने की तश्तरियो की ओर हाथ बढा दिया। खाना उसे पसन्द आया और वह उगलिया तक चाटने लगा। उसने घूट घूट कर शराब भी पी, किन्तु बहुत पी। इस समय उसे अल्लाह के कलाम तक बिसर गये। पहली शाम अफनासी ने इसकी चर्चा चलायी।

"एक अच्छा चुटकुला सुनो," आख मारते हुए खज़ानची ने जवाब दिया, "एक था मुल्ला। बराबर अपने हम-मज़हबियो को समझाया करता कि पीना गुनाह है। जो पीते है उनपर अगले जन्म में तरह तरह के कहर ढाये जाते है और जो नही पीते उन्हे लम्बे पैरो और गुलाबी छातियो वाली हूरे गले लगाती है। पीनेवालो को शैतानो के पजे दबोचते है, लोहे की सलाखो पर लटकाया जाता है, आग में भूना जाता है। सुननेवाले स्तम्भित हो गये। वे मुल्ला का उपदेश सुनकर मस्जिद से बाहर चले गये। उनके दिमाग में मुल्ला की बातें गूज रही थी, छलक रही थी शराब से भरे प्याले की तरह। लेकिन एक ही घटे बाद उन्होने अपने मुल्ला को बाज़ार की सडको पर लोटते देखा। उसमें उठने तक की

ताक़त बाकी न रही थी। उसके मुह से वैसी ही गध निकल रही थी जैसी शराब के कनस्तर से निकलती है।

"'खोजा!' लोगो ने साश्चर्य उससे प्रश्न किया, 'यह क्या? तुम्ही तो हमें अभी अभी सीख दे रहे थे और अब?'

"'मेरे बेटो!' मुल्ला हिचकियो के बीच किसी तरह कह पाया, 'भगवान के अलावा कोई भगवान नही! हिक मेरे बेटो, सब ठीक है। मैंने ठीक कहा था अरे शैतान के बच्चो, मुझे उठाओ तो हिक सब ठीक है ओ मजहब पर ईमान लानेवालो, याद रखो—सच्चाई मेरे कहने में है, करने में नही!'"

और शराब की चुस्किया लेते हुए मुहम्मद ने अपनी बात पूरी की—

"और भारत में काफिर यह समझते है कि पीनेवाले मरने के बाद गधो का जन्म लेते हैं।"

अफनासी हस दिया।

"जो वहशियो की तरह पीता है वह जानवरो की योनि में पैदा होने से डरेगा नही "

निकीतिन ने खजानची से भारत के बारे में कुछ सुनाने का अनुरोध किया।

"क्यो," खजानची ने उसे तग करने की गरज से कहा, "सब कुछ खुद ही देख लोगे और जल्दी ही "

लेकिन अन्तत उसने कहना शुरू किया—इतनी घनघोर वर्षा होती है कि गाव के गाव बह जाते हैं, ऐसे जहरीले साप होते है कि अगर आदमी को सूघ ले तो वह तुरन्त ढेर हो जाये, इतनी जल्दी जल्दी उगनेवाले बास के वन होते हैं कि अगर शाम को उसकी एक कलम लगाकर सो जाओ तो सुबह जगने पर तुम्हारी बग़ल में एक ऊचा-सा

तना दिखाई देगा, ऐसी भयकर महामारिया होती हैं कि सारे के सारे इलाके को मौत की नीद सुला देती हैं

एक बार मुहम्मद को अमीर खुसरो की याद आयी, जिसने देवल देवी के सौन्दर्य का गुणगान किया था।

"हा," वह बोला, "उनकी औरते तो माशा-अल्लाह गजब की खूबसूरत होती है। देवल देवी को ही देखो। उसके लिए खून की नदिया बह गयी थी। वह एक राजा की लडकी थी। सुलतान अला-उद्दीन उसे अपने बडे बेटे हज़र-खान की बीवी बनाने के लिए उठा ले गया। और जानते हो उसकी मा भी सुलतान के हरम मे ही रहती थी। हजर-खान तो देवल देवी का दीवाना ही बन गया था, पर उसमे हज़र-खान को सुख न मिला। कुतुबुद्दीन मुबारक देवल देवी का आशिक था। उसने हज़र-खान को मौत के घाट उतार दिया। फिर मुबारक भी मार डाला गया इस हसीना की खूबसूरती पर कितने परवाने मर मिटे। समझ रहे हो न! भारत की नाज़नीनें दुनिया में सबसे खूबसूरत होती है।"

"दिल्ली के ही पास एक और शहर है तुगलकाबाद," दूसरी बार मुहम्मद ने कहा, "इसे कोई डेढ सौ साल पहले गियासुद्दीन ने बसाया था। गियासुद्दीन अपने बेटे जौन-खान के हाथो मारा गया था। इस शहर में सुलतान ने अपनी सारी दौलत सुरक्षित रखी थी। शहर में सुलतान के महल की दीवाले सोने से मढी हुई थी। आदमी सुलतान के इस महल की ओर देर तक न देख सकता था—उसकी आखे चौंधिया जाती थी। गियासुद्दीन को हमेशा लडाइया ही लडनी पडती थी। इन्ही लडाइयो में उसने ढेरो गुलाम पकडे और काफी लूट तुगलकाबाद ले आया। सुलतान लालची था। उसने एक बहुत बडा तालाब बनवाया जिसमें उसने अपना सारा सोना, गुलामो से चुपचाप गलवा गलवाकर

भर दिया। कहते हैं कि सारा तालाब सोने से नाक तक भर गया। फिर उसने सभी गुलामो को फासी दे दी ताकि सोने के तालाब का किसी को पता न चल सके "

"हा तो?" अफनासी के मुह से निकल गया।

"सुलतान मर गया और शहर लुट गया लेकिन उस सोने का आज तक पता न चला।"

इन किस्से-कहानियों ने अफनासी की उत्सुकता और भी बढ़ा दी। कही गयी घटनाओ में सत्य का कोई न कोई अश तो होगा ही—मुहम्मद भारत ही में रहता है। और अगर ऐसा है तो अफनासी का आना बेकार नही हुआ।

"अच्छा, तुम्ही बताओ, पानी के रास्ते किधर सफर करना ठीक होगा?" निकीतिन ने पूछा, "माल कहा मिल सकता है? घोडा कहा बिक सकता है?"

"मेरे साथ बीदर चलो," खज़ानची ने उसे सलाह दी, "वहां सुलतान बडा ताकतवर है और तिजारत का भी बोलबाला है। वहा जाकर तुम रईस बन जाओगे, मशहूर हो जाओगे। मालिक-अत-तुजार महमूद गवान विदेशियो की क़द्र करता है, उनका विश्वास करता है।"

"और कहा कहा जाया जा सकता है?"

"हु-ह्ह गुजरात—वहा से होकर तो हम गुजरेंगे ही। पजाब, मालवा और जौनपुर भी लेकिन नहीं, सौदागरो के लिए ये जगहें ठीक नहीं है। बहामनियो का इलाक़ा सबसे बडा और सबसे मालदार है। बस हिन्दुओ के पास मत जाना—तुम न उनकी भाषा जानते हो न उनके रीति-रिवाज।"

"उनके साथ भी व्यापार किया जा सकता है?"

"बेशक   उनका सबसे मालदार शहर है विजयनगर। वहा महाराजाधिराज विरूपाक्ष का शासन है।"

"तुम गये थे वहा?"

"नही   शायद साथ साथ चलेगे। मालिक-अत-तुजार न जाने कब से वहा चढाई कर देने की सोच रहा है। जब हमारी नावें आयेंगी, चढाई हुई है या नही यह तब हम जान लेगे   "

"लगता है अभी तक तुम लोग शान्ति मे रह रहे थे?"

"शान्ति मे? भारत तो यह शब्द न जाने कब का भूल चुका है। अच्छा सुलतान लडाई के मैदानो में लगे हुए तम्बुओं में रहता है। भारत—सोने की चिडिया है। और सोना है—युद्ध!"

मुहम्मद की बातें सुनकर अफनासी इस नतीजे पर पहुचा कि उसके लिए एक ही रास्ता है—उसके साथ बीदर जाये। वह इसे जानता है और उसका विश्वास है कि बीदर का इलाका सबसे अच्छा इलाका है। तो बीदर ही सही।

नावें आ गयी। लम्बाई कोई दस फुट और चौडाई भी अच्छी-खासी। उनके पाल चौकोर थे। पालो और डाडो को देखते हुए वे गेनोआ की नावो जैसी लग रही थीं। एक नाव से एक गठीला जवान निकलकर किनारे आया। वह दस नावो का सरदार था। उसका नाम था सुलेमान। उसने मुहम्मद को बताया कि उसके पीछे दूसरी नावें आ रही हैं, लेकिन खुद जल्दी में था। मालिक-अत-तुजार ने शकर राजा पर हमला बोल दिया है। अब वह खेलना के किले पर चढाई कर रहा है। राजा ने अपनी सहायता के लिए कोकन के राजाओ को न्योता दिया है। यह असली लडाई है, मज़ाक नही। सुलेमान के पास खज़ानची के लिए एक पत्र है

पत्र पढकर खज़ानची ने चेहरा लटका लिया किन्तु उसे देखने से

साफ़ पता चलता था कि उसे इस ख़बर से गर्व भी हो रहा है और ख़ुशी भी।

"तो तुम जल्दी ही लौट जाओ!" खजानची ने गम्भीरता से कहा, "नावो पर घोड़े लादने का काम हम आज ही से शुरू कर देंगे। मैं अभी यही रहूगा। मुझे होर्मुज के शासक से मिलना है।"

"तो इसके माने हैं तुम यही ठहरोगे?" अफनासी ने पूछा।

"अगर चाहो तो मेरा इन्तज़ार कर लो।"

"तुम्हें ज्यादा वक्त लगेगा यहा?"

"यह बात शासक पर निर्भर है। शायद एक दिन लगे, शायद दो हफ्ते लग जायें।"

"ओह!" निकीतिन आश्चर्य प्रकट करते हुए कहने लगा। "इतने दिन! नही, मैं चलूगा! मुझे बीदर तक के हमसफर तो मिल जायेंगे न?"

"मिल जायेंगे "

निकीतिन उसी समय घोडा खरीदने चल दिया। नोवगोरद के व्यापारी खरीतोन्येव ने उसे घोडे पहचानने के जो गुर सिखाये थे वे यहा उसके काम आ सकते थे। जब उसे ये गुर सिखाये जा रहे थे, काश उस समय उस व्यापारी को मालूम होता कि अफनासी को हिन्द महासागर के बीच अरबी घोडो के दातो की जाच करनी होगी! इस समय उसकी छोटी छोटी आखें आश्चर्य से फटी की फटी रह गयी।

निकीतिन ने कोई तीस घोडे देखे और आखिर एक बर्फ जैसे सफेद घोडे को देखकर ठिठक गया। घोडा कोई दो साल का था। गठी हुई काठी। सूखे हुए ऊचे ऊचे पैर। लाल लाल डोरो वाली काली काली आखें। छोटे छोटे चमचमाते हुए रोए। हिलती-डुलती, पतली-लम्बी मासपेशिया। बात बात पर उसके कान खड़े हो जाते

और वह कायदे से गठे हुए खुर पटपटाने लगता। वह अपने बडे गुलाबी नथुनो से गहरी सासे ले रहा था और कनखियो से इधर-उधर देख रहा था।

बूढे अरब ने घोडे की रास उसके नये मालिक को थमायी और घोडे का मुह चूम लिया। जाहिर था कि घोडा उसके मालिक को बडा प्यारा था और मालिक ने उसे पैसो की जरूरत मे मजबूर होकर बेचा था।

"घोडे का नाम क्या है?" निकीतिन ने पूछा।

अरब ने सिर हिला दिया और दोनो हाथ छाती पर रख लिये—

"मैंने तुम्हारे हाथ घोडा बेचा है, उसका नाम नही। गुस्सा मत हो, दोस्त। नाम सुनकर बेचारे को वतन की याद आयेगी। यह याद दिलाकर उसपर क्यों जुल्म करो? तुम जो चाहो कहकर पुकारो उसे।"

और इतना कहकर बूढा चला गया।

घोडे ने सिर घुमाकर अपने पुराने मालिक को देखा और जैसे दुख से हिनहिनाने लगा। उसकी यह दशा देखकर अफनासी का दिल भी उदास हो गया। वह उदास मन कारवा-सराय लौट आया।

खजानची ने घोडा देखा और उसकी तारीफ की।

"इसे खिलाना-पिलाना जानते हो?" उसने पूछा।

अफनासी ने कधे झुला दिये।

"जानता हू।"

"नही, तुम कुछ नही जानते। हसन! गफूर! इस घोडे को भी हमारा ही चारा खिलाओ—वह उसका आदी तो बने घोडा तुम इन्हीं लोगो को दे दो और कैसे खिलाना-पिलाना चाहिए इसे

अच्छी तरह समझ लो। और हा, यह भी जान लेना कि रास्ते के लिए घोडे के वास्ते क्या क्या लेना है।"

अफनासी को शीघ्र ही पता चल गया कि घोडे का खिलाना-पिलाना अच्छा-खासा सिरदर्द है। भारत में घोडे चावल खाते हैं, गाजर खाते है, चना खाते हैं। उन्हें दूसरा खाना नही दिया जाता। यहा वे घास खाते थे, खजूर खाते थे। नतीजा यह हुआ कि उन्होंने नये खाने से मुह मोड लिया।

घोडो की खिलाई दिन में तीन वार होती थी और हर बार इसमें वडी परेशानी हो जाती थी। हसन और गफूर दवे पाव घोड़े के पास आते। एक घोडे की ओर हाथ फैला देता और उसे टिटकारने लगता, और दूसरा भीगे हुए चने या मक्खन और अडे मिले चावल के लड्डुओ वाली थैली, पीठ पीछे छिपाये, उसके आगे आ जाता। घोडा परेशानी से अफनासी का मुह ताका करता। हसन घोडे का मुह पकडता, उसकी मोटी-सी जवान वाहर खीचता और गफूर पर वरस पडता। गफूर चने और चावल घोडे के मुह में ठूसता और हसन पर चिल्ला पडता। घोडा पैर पटपटाता हुआ पिछले पैरो पर खडा हो जाता। ऐसे मौको पर अस्तवल में कयामत वरपा हो जाती। दूसरे घोडे चिल्ल-पो मचाने लगते और सईस भागते हुए अस्तवल में आ जाते। लेकिन इस ऊधम से घवडाहट किसी को न होती।

रास्ते के लिए खाने की चीजें खरीदने और उन्हे नाव पर लादने-लदाने में निकीतिन के पैर वोल गये। एक वार जव वह कारवा-सराय लौटा तो उसने अस्तवल के पास वाज जैसी आखो वाले मुजफ्फर को वैठे देखा, उसी के पास नाक तक भरी हुई दो गठरिया भी पडी थी।

"सलाम!" तुर्कमन बोला, "मैं यहां तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा हूं। मुझे भी भारत ले चलो न।"

"फिर तुम्हारी मां और बहन का क्या होगा?" निकीतिन को आश्चर्य हो रहा था।

"मां को अल्लाह ने अपने पास बुला लिया। और ज़ुलेखां अपने बाबा के पास है। मैं भी तक़दीर आज़माने चलूंगा। मेरी मदद करो। नाव पर एक आदमी की जगह मुझे भी दिला दो।"

"पैसा है तुम्हारे पास?"

"दो सोने के सिक्के हैं।"

"ये कम हैं..."

"तो मुझे क़र्ज़ दे दो। मैं सुलतान की फ़ौज में भरती हो जाऊंगा और तुम्हारा क़र्ज़ चुकता कर दूंगा।"

"ख़ैर, कहूंगा सुलेमान से। अगर ले जायेगा तो चले चलना।"

सुलेमान ने तुर्कमन को जगह दे दी। मुज़फ़्फ़र तुरन्त अपनी चीज़ें ले आया और डेक के नीचे जम गया।

"तुम डरो मत, घोड़ा ठीक से पहुंच जायेगा!" उसने उत्साहित होकर निकीतिन को विश्वास दिलाया।

नावों पर सभी घोड़े चढ़ा दिये गये, खाने का सामान लाद दिया गया, पानी से भरी मसकें रख दी गयीं और व्यापारी और दूसरे लोग डेक पर जम गये। सभी दूर की यात्रा पर जा रहे थे। सारी जगहें भर गयी थीं, आने-जाने के रास्ते तक बन्द हो गये थे और नाविक लोगों को एक जगह से दूसरी जगह खदेड़ रहे थे।

मुहम्मद, अफ़नासी को छोड़ने आया। "यात्रा मंगलमय हो। तुम्हारे साथ हसन जा ही रहा है। वह सब जानता है। सुलेमान का कहना मानना। मैंने उसे सब कुछ समझा दिया है। वह तुम्हारी

मदद करेगा। जब चौल पहुचना तो वहा मेरा इन्तज़ार करना।"

चौकोर पाल झटके से मस्तूलो पर चढाये जा रहे थे। डाड चलने लगे और नावें, एक दूसरी से टकराती और चरमराती हुई किनारे छोडने लगी। घोडे हिनहिना रहे थे, खुर पटपटा रहे थे। हवा बराबर बहती जा रही थी। अफनासी मुहम्मद की ओर देखता हुआ हाथ हिलाने लगा। उसके पीछे छूटती जा रही थी होर्मुज की सफेद मीनारे और वह धरती जिसे वह शायद हमेशा के लिए छोड रहा था। चुपके से उसने सलीब का निशान बनाया।

तीसरा अध्याय

यात्रियो को होर्मुज़ से भारत के पहले बन्दरगाह देगू तक जाने में दो हफ्ते लग गये। उन्हे अरबी बन्दरगाह मस्कत होकर जाना पडा था। इसके बाद गुजरात और खम्भात के नगर पडे। सुलेमान अपनी नावो को चौल लिये जा रहा था। वहा पहुचते पहुचते उसे छ हफ्ते लग गये।

जब समुद्र के बीचोबीच तट तक अफनासी की आखो से ओझल हो गये थे, उस समय उसके दिल में एक भय-सा बैठ गया था। लेकिन अब उसका वह भय उसे मखौल लग रहा था। भारतीय नाविक अपने कार्य में बडे पटु थे। वे बिना सितारो की ओर देखे हुए भी अपनी नावो को खुले समुद्र में, पूरे विश्वास के साथ ले गये थे। सुलेमान के कमरे में एक गोल घडी थी जिसमें एक सुई लगी थी। सुई हमेशा एक विशेष दिशा की ओर सकेत करती थी। इस घडी को लोग कुतुबनुमा कहते थे। कुतुबनुमा भारत की एक

अलौकिक चीज़ थी। ये थी भारत की अद्भुत चीज़ें जो भारतीयों की प्रतिभा की प्रतीक थी।

उनकी बडी बडी नावें यद्यपि होशियार कारीगरों द्वारा बनायी गयी थीं, फिर भी अच्छी न थीं। वे रस्सों, खूंटों और पच्चडों की सहायता से जोडी गयी थीं। वे वैसे ही चरमराती थीं जैसे बुरे मौसम में पुराना पेड। और जब नावें तेज़ी से डगमगातीं तो उनके जोड फैल जाते और वे रस्से रगड खाने लगते जो नाव को मज़बूती से बांधे हुए थे। यह देखकर दहशत-सी होने लगती। नाव के पेंदे में हमेशा पानी ही पानी छलछलाया करता। इसके कारण घोडे के खुरों में बीमारी लगने का भय बराबर बना रहता। नीचे समुद्र का अथाह जल देखकर भी डर लगा करता। यदि इस अनन्त नीले-हरे समुद्र के बीच कोई दुर्घटना हो गयी तो मदद कौन करेगा? फिर तो कुछ करते-धरते न बनेगा और समुद्र सबको अपने गर्भ में समेट लेगा। उसने त्वेर से लाया हुआ तांबे का एक पुराना बटन समुद्र में फेंक दिया। वह देर तक यही देखता रहा कि बटन कैसे डूबता है। आखिर उसका सिर चकराने लगा। कौन जाने इस हिन्द महासागर में तल है भी या नहीं? किसी ने कभी उसकी गहराई नहीं नापी। कोई उसके बारे में कुछ नहीं कह सकता।

सुलेमान अपने कमरे में मानो डर की कोई बात ही न हो, गाने लगा। बडा विचित्र आदमी है यह सुलेमान भी! कहता है पृथ्वी गोल है और यदि उसका विश्वास करो तो वापस जाने के

वजाय सीधे आगे वढने से ही जल्दी रूस पहुचा जा सकेगा। और अगर उससे पूछो कि दाहिने हाथ पर, समुद्र के उस पार क्या है तो वह नही जानता। वहा कोई नही गया। वे डरते हैं कि कही दाहिनी ओर से पाल के दर्शन न हो और वे जलदस्युओ के हत्थे न चढ जायें। कहते है कि वहा, दाहिनी ओर से महाराजा के आदमी जहाजो को लूटते हैं और उन्हे पकडकर अपने वन्दरगाह कालीकट ले जाते हैं।

अफनासी मुसीवत में नही पडना चाहता था। अगर वे उसे मौत के घाट न भी उतारे तो भी उसका घोडा और पैसा तो छीन ही लेगें। वह अपने को मुसलमान कहता था—अपनी निश्चितता के लिए ही नही, वरन् अपनी जिन्दगी के खातिर। उसने सुलेमान से उन ईसाई व्यापारियो के वारे में पूछा जिन्हे उसने होर्मुज़ में देखा था—"ये लोग भी भारत जाते हैं ?"

"नही, मैंने तो कभी नही सुना कि वे भारत गये हो। सलतनत में सभी लोगो को मुसलमान बनाया जाता है। इसी लिए ईसाई डरते हैं हम चाहते भी नही कि परदेशी भारत के वारे में कुछ जानें भी "

निकीतिन का दिल टूट गया। उसने पीछे मुडकर देखा, उस अथाह जलराशि पर जिसके उस ओर होर्मुज़ छूट चुका था। तो यह वात है! फिर अव? अगर किसी ने सूघ भी लिया कि वह रूसी है तो मुसीवत ही समझो। फिर लोग उसे न छोडेंगे!

किन्तु नावें तो वापस नही की जा सकती, और वह समुद्र में भी छलाग नही लगा सकता। वस एक ही रास्ता है—चुप रहो और किसी को खवर न लगने दो।

अफनासी सतर्क हो गया। जव कभी प्रार्थना करता तो ओठो

में फुसफुसा लेता, और जब सलीब का निशान बनाता तो डेक के नीचे के घने अधकार में, रात के समय।

वह जैसे अपने ही धर्म से इनकार कर रहा है। वह एकदम खराब बन गया है। एक बार रात में, ऐसे ही विचार उसके मस्तिष्क में उठ रहे थे। वह यह सोचकर कि सब सो रहे है, घुटनों के बल बैठकर डेक के सूराख में से दिखाई पडते हुए आकाश की ओर सिर उठाकर फुसफुसाने लगा—

"हे सर्वशक्तिमान! हे स्वर्ग के अधिष्ठाता! मुझ पापी को क्षमा करो! मैं उस रास्ते पर चल रहा हू, जहा अभी तक कोई नही गया। मुझ पापी को घृणित की तरह छिपकर रहना है। लेकिन, हे भगवान, मैं तेरा नाम लेकर निकला हू, सारे ईसाई ससार की भलाई के लिए निकला हू। अपने इस दास पर दया करना, उसे परदेशियो की जमीन पर तबाह न होने देना। मेरी ओर से आखें न चुराना।"

और वह इतना उत्तेजित हो उठा कि उसकी आवाज़ तेज़ हो गयी और वह पेंदे के नम तख्ते से सिर पीटने लगा।

और उसने इस बात पर ध्यान न दिया कि बोरे पर से किसी का उनीदा, सतर्क और अधेरे से ढका हुआ सिर कब और कैसे उठा और किस तरह कोई सास रोककर उसकी अपरिचित भाषा सुनने लगा

चिन्ताओ के साथ ही साथ सुलेमान के शब्दो ने उसे यह विश्वास भी दिला दिया था कि उसकी यह यात्रा व्यर्थ न होगी। यदि परदेशियो से भारत की बाते छिपायी जाती है तो इसका अर्थ है कि वहा छिपाने योग्य बहुत-सी बाते होगी।

प्रार्थना के बाद अफनासी का दिल हल्का हो गया। उसने हसन से हसी-मजाक किया और सुलेमान से भारत के व्यापार के

बारे में पूछ-ताछ की। उसने अपने सहयात्रियो पर एक उदार-सी दृष्टि डाली और हमेशा चुप रहनेवाले मुज़फ्फर से भी बातचीत छेड दी। जब से मुज़फ्फर नाव पर चढा था तभी से, अपने बोरे के लिए जगह बना लेने के बाद, या तो वह घोडे के पास रहता या अकेले डेक के आखिरी किनारे पर खडा खडा समुद्र की ओर आखें गडाये रहता। वह बैठकर मुह से सीटी बजाया करता या उतरकर गुलाम-मल्लाहो के पास पहुच जाता। वह इन लोगो की बात नही समझ सकता था--उनकी भाषा जो दूसरी थी। लेकिन वह प्राय उनके पास आ जाया करता। और जब सुलेमान मल्लाहो पर इसलिए कोडे बरसाता कि वे नाव जल्दी जल्दी चलायें तो मुज़फ्फर उदास हो जाता और उसका गला घरघराने लगता।

नाव के बाकी यात्रियो के साथ उसका व्यवहार रूखा था। लोगो को धक्का दे देना या उन्हें बुरा-भला कहना जैसे उसके बाये हाथ का खेल था। जिस अफनासी ने मुज़फ्फर की मदद की थी उसके साथ भी मुज़फ्फर का बर्ताव बडा रूखा था।

व्यापारी हुसेन दूसरे ही ढग का आदमी था। वह भी भारतवासी था, जुन्नर का रहनेवाला था। यह नगर राजधानी बीदर के रास्ते में पडता था। हुसेन बडा हसमुख था, रहमदिल था और जब पानी के लिए कतार में लगता तो पीछेवालो को पहले पानी ले लेने देता। मिलनेवाले को पहले खुद सलाम करता। उसने सुलेमान से सुन रखा था कि खज़ानची मुहम्मद की जान कैसे बची थी। जुन्नर तक साथ साथ जाने का प्रस्ताव उसने स्वय ही किया था। हुसेन भारत के जगलो, खज़ानो और गुप्त तहखानो में रखे हुए हीरे-मोतियो की कहानिया मज़े ले लेकर सुनाया करता और मुज़फ्फर, खीसे निकाले, नाव के बाहर थूका करता। हुसेन को

तुर्कमन की हरकते पसन्द न थी। वे एक दूसरे के पास से होकर वैसे ही निकल जाया करते जैसे दो मुर्ग।

दिन बीतते गये, बीतते गये। न काम, न धाम। जबरदस्ती लादी हुई काहिली—घोडे को पाच बार मालिश करो, चाहे छ बार, हुसेन की भी बाते सुनो, सुलेमान के साथ तेज चाय—चीनी पेय—पियो, हसन के दर्दभरे गानो का मजा लो, फिर भी रात नही होती, घटो उसका इन्तजार करना पडता है।

नाव चर्रमर्र करती है, पाल लहराते हैं, बेंचो से बधे हुए गुलाम-मल्लाह डाड मारते हैं, लहरें उठती हैं, गिरती हैं। भारत का रास्ता लबा और खतरनाक है।

नाव देगू से किनारे किनारे आगे बढी। लोगो में खुशी की लहर छा गयी। नावें किसी भी बन्दरगाह पर एक दिन से अधिक न ठहरी। अफनासी ने जमीन पर कदम न रखा। किन्तु निकट आते हुए ताड के पेड, नजर पडते हुए पहाड और रास्ते में मिलनेवाली नावो को देखकर उसके दिल में यह विश्वास जरूर जमने लगा था कि वह अपनी मजिल पर पहुच रहा है।

गुजरात[1] में आकर भारत का परीदेश फिर एक बार उसकी आखो के सामने घूम गया और एक क्षण के लिए मोरो के सुनहले पख उसके सामने नाच गये। उसे नाव पर से सुलतान के बाग-बगीचे, और नीले और सुनहले गुम्बदो के नीचे सफेद सफेद मीनारे दिखाई पडने लगी। लोग कहते थे कि गुजरात का शासक महमूद-शाह-बिगर्रा बडा मालदार और बहादुर है। उसकी सेना में बीस हजार जवान हैं और पचास हाथी प्रतिदिन प्रातःकाल उसके महल के सामने उसे सलामी देने आते हैं यह महमूद-शाह बचपन से ही जहर पीता है। अब तो उसका सारा शरीर ही जहर हो गया है।

अगर किसी पर थूक दे तो आदमी मर जाये। उसके चार हजार बेगमें हैं और जिस बेगम के साथ वह रात बिताता है, वह शाह की विषैली सासो के कारण सुबह होते होते चल बसती है। शाह के पास इतना सोना और इतने जवाहरात है कि उनसे सारा गुजरात इतना ढक जाये कि उसमें घुटनो तक पैर धस जायें लेकिन यह तो भारत का श्रीगणेश है। भारत—वह तो अभी और आगे है और उसकी मशहूर चीजें यहा कहा। असली भारत तो शुरू होता है चौल से।

वह भारत के दर्शन के लिए इतना उत्सुक था कि उसकी नीद तक जाती रही। वह नाव के अगले भाग में खडा खडा बाईं ओर का पहाडी किनारा देखता रहा। शायद यहा कही? अभी नावें मोडने का समय नही आया?

सुलेमान पीछे से उसके पास आया, और नाक मलते हुए, जैसे उदासीनता से कहने लगा—

"शाम होते होते हम पहुच जायेंगे।"

रगो और लाख की जन्मभूमि खम्भात से चले हुए यह पाचवा दिन था।

एक क्षण के लिए अफ़नासी के दिल की धडकन बन्द हो गयी। क्या सचमुच मैं पहुच गया? क्या सचमुच मैं भारत की जमीन अपनी आखो से देख सकूगा? मेरे सपने सच हो रहे है और मेरे सामने आ रही हैं वे सब बाते, जो मैंने अन्धे भिखारियो से सुनी थी या फिर त्वेर की तूफानी रातों में मोमबत्तियो की झिलमिलाती हुई रोशनी में किसी पुस्तक में पढी थी।

"भारत, तुम्हें मेरे प्रणाम! इस रूसी को स्वीकार करो! उसे धोखा न दो!"

किनारे की नावें और पास दिखाई दी। उनके रस्से, मस्तूलो पर लगी एक दूसरे को काटती हुई शहतीरे, नावो के बीच बीच चलनेवाली तेज डोंगिया, सुनहरी वालू, ताड के पेडो की लम्बी और टेढी-मेढी पत्तिया, विचित्र कोणदार निर्माण, वनो से ढके हुए और सीढीदार चोटियो वाले गुलाबी मन्दिर, चौकोर खेत

सभी वाहर डेक पर निकले और उत्तेजित हो होकर वाते कर रहे थे। हसन मुस्करा दिया – किसका जी वतन को देखकर नाच नही उठता।

सामने शहर था और वही, कुछ दूरी पर, वनो से ढके हुए सीढीदार नीले-से पहाड। उनके पार भी जाना होगा। मस्तूलो की छाया नावो के आगे, लहरो को काटती हुई अन्तत रेत में प्रवेश करती-सी दिखाई देती है। नावो पर मे किनारे तक पटरे विछाये जा रहे हैं। किनारे पर ढेरो लोग जमा है।

"घोडा निकालू?" हसन पूछता है।

"निकालो!" निकीतिन कहता है। उसका गला घरघरा उठता है। वह उत्तेजित दिखाई पडता है।

किन्तु मुज़फ्फर ने घोडा पहले ही निकाल लिया है। वह उसकी रासे मज़बूती से पकडे है।

अफनामी के ओठो पर मुस्कराहट थी। वह जैसे अपने आसपास के वातावरण से वेखवर था। लोगो की चिल्ल-पो उसके कानो में पड भी रही थी, नहीं भी पड रही थी। वह हिलते-दवते पटरे पर से किनारे की ओर वढ रहा था।

चौल वन्दरगाह पर लोगो की वडी भीड थी। चारो ओर के शोरोगुल के कारण कान धरे आवाज़ न सुनाई पड रही थी। यहा सभी जगहो से नावें आया करती थीं और सभी जगहो का तरह तरह का

सामान—कहीं सूई की शक्ल की डोगियो से कीमती चीनी मिट्टी के बरतनो के बक्से बडी सावधानी से उतारे जा रहे हैं, तो कही चाय के बोरे, कही इटली की अद्भुत शराब के बडे बडे कनस्तर नावो से लुढकाये जा रहे हैं, तो कही चीनी रेशम के वे बडे बडे गट्ठर गिराये जा रहे हैं जिन्हे पहाडो और रेगिस्तानो के रास्ते अरब के समुद्री तटो तक पहुचते पहुचते पाच वर्ष लग गये हैं। यह रेशम हरमो में रहनेवाली सुन्दरियो का शृगार है। इतना ही नही, इसी वन्दरगाह पर शासको और सेनाधिपतियो के मनबहलाव के लिए दूर देशो से खरीदी हुई सुन्दरिया भी लायी जाती है—गोरी गोरी और कातर आखो वाली।

वन्दरगाह पर खडे लोगो में तमाशबीन भी होते है। वे आयी हुई नावो के लोगो के पास दौडकर जाते है, जीभ चटकारते है, ताल ठोकते हैं, अगर मौका लग गया तो कुछ सौदेबाजी कर लेते है, टुकुर-टुकुर दूसरो की विलासिता की वस्तुए देखते है और मुट्ठी-भर चावल के लिए कुछ पैसे पैदा कर लेने की ताक में लगे रहते हैं।

लेकिन आज जो लोग चौल वन्दरगाह पर एकत्र हुए थे उनके आश्चर्य का कोई ठिकाना न था।

जो भी तट पर था बस एक ही दिशा में दौडता जा रहा था, उधर जिधर समुद्र की सफेद बालू पर खडे हुए लोगो की भीड चिल्ल-पो मचा रही थी। वह देखो किसी की सब्जियो की टोकरी किसी की ठोकर से उलट गयी। सब्जिया गिर गयी। टोकरीवाला उन्हें उठाने झुका किन्तु लोगो की भीड ने उसे एक ओर ढकेल दिया और कोई कुछ चीखा-चिल्लाया। अपनी खाली टोकरी लेकर टोकरीवाला खुद भी लोगो के पीछे चल दिया। उसके सेम और

केलो के गुच्छे मिट्टी में मिल गये। लोग नगे पावो से उन्हे रास्ते से हटाते हुए दौडते रहे।

वडा-सा रगीन छाता लिये हुए एक मोटा-ताज़ा मुसलमान सडक पर फिसला, कुछ वडवडाया और फिर सभलते-हाफते आगे वढने लगा। एक औरत जिसका सिर खुला था और चमकदार वालो वाली चोटिया कायदे से गुथी थी, चट से उसके आगे निकल गयी। घघरा और कासे जैसी कलाइयो में चूडिया चमक उठी। एक बूढे कुली ने भी चिल्ल-पो सुनी, सिर पर रखा हुआ वोझ ज़मीन पर फेंका, किसी एक को फिर दूसरे को पुकारकर कहा और उनका जवाव समझे विना ही रेत पर लोगो के पीछे भागने लगा।

नगवडग वच्चे, मछुए, नाई, वढई, मल्लाह और मिठाईवाले सभी उस ओर भाग रहे थे। भीड में सभी की आखें चमक रही थी, ओठ मुस्करा रहे थे और सावले चेहरो में से मोती जैसे दात चमचमा रहे थे। पीछेवाले आगेवालो से भी आगे जाने के चक्कर में थे, कुछ लोग झुक झुककर आगे वढ रहे थे और कुछ पजो के वल खडे खडे उचककर देख रहे थे।

एक व्यक्ति के चारो ओर वहुत-सी भीड जमा थी। उसकी चमडी अत्यधिक सफेद थी, आखें नीली थी और दाढी सुनहली। यहा ऐसे आदमी को किसी ने कभी न देखा था।

निकीतिन लोगो के वीच से होकर वढ रहा था। वह मुस्करा तो रहा था किन्तु घवडा गया था। उसने इसकी कभी आशा न की थी। उसने सोचा था कि वह भारत की अजीवोगरीव चीजें देखेगा लेकिन वह तो लोगो के लिए खुद ही एक अजीवोगरीव चीज़ वन गया।

उसकी आखो के सामने तरह तरह के चेहरे और कासे जैसे रग के नगे शरीर थे। कुछ लोगो के शरीर पर तो प्राय कोई

वस्त्र न था। जवान लडकिया तक वैसी ही नगी दिखाई पड रही थी। चारो ओर चिल्ल-पो मची हुई थी। उसके पास ही मुस्कराता हुआ हुसेन चल रहा था। उसने कुछ कहा भी था, किन्तु निकीतिन सिर्फ एक ही बात समझ सका—ये है हिन्दू।

भीड के पास ही उसने मटमैले रग का एक वडा-सा जिन्दा पहाड देखा—कान सूप जैसे, आखें सिकुडनो में छिपी हुई और छोटी छोटी और नाक पेड के तने जैसी। उसने तुरन्त अनुमान लगा लिया—यह हाथी है।

भीड के वीच से उसने वोरो के पास एक टट्टू देखा। देखने में घोडे जैसा, पर क़द में गधे की तरह। टट्टू खडा खडा मजे में अपना अयाल डुला रहा था। ऐ, मेरे प्यारे

लोग सावले थे। इकहरे वदन के। स्वागतशील। सावले होने पर भी सुन्दर। औरत सुडौल। प्राय सभी के अगो पर आभूषण थे—कानो में वालिया, गले में हार, हाथो में चूडिया। उनके मस्तक पर भाति भाति की विन्दिया लगी थी—नीली, लाल। उनकी आखें तो कयामत ढाती थी—वडी, काली काली और मस्त वना देनेवाली! ओफ, कहा से मिला है इन्हे यह हुस्न! फारस के वाद पहली वार उसने विना वुरकेवाली औरते देखी थी। कैसा अद्भुत देश है यह!

हुसेन उसे एक धर्मशाला की ओर ले गया। वे सकरी गलियो में से जा रहे थे। तीसरे पहर का समय था। पर काफी गर्मी थी। ताड के पेडो, मिट्टी के सफेद मकानो और वासो के वने हुए और पत्तियो के छप्परो वाले मकानो के पास से होकर आगे वढ रहे थे। आदमियो की भीड की भीड उनके पीछे चली आ रही थी। वहुत-से उत्सुक लोग, अपने अपने आगनो से भागते हुए, पास आकर देखने लगते। वहुत-से लोग तो मकानो की छतो पर चढ चढकर उसे घूरा करते।

घुघराले बालो वाला एक साहसी छोकरा हिम्मत कर निकीतिन के पास आया और उसकी पीठ छूकर भागने की कोशिश करने लगा, किन्तु तभी अफनासी ने उसे उठा लिया और उसे हवा में प्यार से उछालते हुए कहने लगा—

"लो, यह लो!"

पहले तो बच्चा चुप रहा, लेकिन तुरन्त ही खुशी से मिमियाने लगा।

जब निकीतिन ने बच्चे को उछाला था, तब एक क्षण के लिए सारी भीड सन्नाटे में आ गयी थी, किन्तु अब सभी चिल्ला चिल्लाकर प्रसन्नता प्रकट कर रहे थे।

एक जगह आकर सारी भीड एक क्षण के लिए रुक गयी। सडक के बीचोबीच सफेद बालो वाला बूढा, चारो खाने चित पडा, ऐसे खर्राटे ले रहा था मानो घर में पलग पर सो रहा हो। लोग उससे कतराते हुए निकल रहे थे। आगे रास्ते में एक गाय मिली। उसे किसी ने भी नही छेडा। वह शोर मचाते हुए चलनेवालो की ओर बैगनी आखो से देखती हुई सूखी घास चबाती रही। आखिर उसने एक आह भरी और किनारे खडी हो गयी, मानो कह रही हो—"अच्छा, निकल भी जाओ।" भारतीयो को यह बात अच्छी लगी और कभी वे निकीतिन की ओर, तो कभी गाय की ओर देखते हुए आपस में बतियाते रहे।

धर्मशाला ताड के वृक्षो के बीच बनी थी। उसके चारो ओर एक बेंत का बाडा लगा था। पीछे आनेवाले लोग फाटक पर ही रुक गये। निकीतिन फाटक के भीतर आया और आखें फाड फाडकर देखने लगा। उसके सामने, जमीन पर, मोर फुदक रहे थे। मोरो ने रग-बिरगे और चमकीले चाद जैसे वृत्तो वाले अपने पख खोल दिये थे।

घोडे को एक दूर के सायवान में ले जाया गया। वहा और भी घोडे खडे थे।

दहलीज़ पर पगडी तथा सफेद छोटा पैजामा पहने घुघराली दाढीवाला एक आदमी आकर खडा हो गया। उसने दोनो हाथ जोडकर और कुछ झुककर निकीतिन का अभिवादन किया।

"जूते उतार दो," हुसेन बोला, "और वही दरवाज़े पर रख दो।"

अफ़नासी ने जूते उतार दिये और जब वह सीधा खडा हुआ तभी कही से काली चोटीवाली एक लडकी तसला लिये वहा आयी, उसके सामने झुकी और उसके पैर धोने के लिए हाथ फैला दिये।

निकीतिन शर्म से लाल पड गया।

"नही, नही, मैं खुद कर लूगा।"

लोगो में चख-चख शुरू हो गयी थी। कोई उसकी ओर शून्य दृष्टि से देख रहा था, कोई आश्चर्य से, कोई द्वेष से। मालिक के मुह पर नाराजी के लक्षण दिखाई पडने लगे थे। लडकी भी पानी के तसले के पास झुकती हुई सिसकिया भर भरकर रोने लगी।

"मुझसे कुछ ग़लती हो गयी है क्या?" निकीतिन ने हुसेन से पूछा।

"हा, हम लोग हिन्दुओं के बीच में हैं। तुमने उन्हें बेहद नाराज़ किया है, उनका अपमान किया है।"

"मैं नहीं चाहता था "

"हर देश के रीति-रिवाज होते हैं। इस लड़की को पैर धोने में मत रोको। पैर धोने में उसे खुशी होती है।"

"बिटिया!" लड़की का सिर थपथपाते हुए निकीतिन फुसफुसाया, "मुझे माफ करना "

"वह कहता है लड़की पैर धो ले!" हुसैन बोला।

लड़की को जैसे बल मिला और वह जल्दी जल्दी आंसू पोंछती और परदेसी की सफेद त्वचा को हल्के हल्के छूती हुई उसके पैर धोने लगी। फिर मस्त आंखों वाला चेहरा ऊपर उठाती हुई धीरे से मुस्करा दी। निकीतिन भी मुस्करा दिया। उसे किसी अन्य प्रकार से कृतज्ञता-प्रदर्शन करने में भय लग रहा था।

धर्मशाला का मालिक, हाथ जोड़े झुका झुका, पीछे हटता गया। उसने मुसाफिरों को धर्मशाला में ठहरने के लिए निमंत्रित किया और प्रत्येक को एक एक बड़ा-सा और ठंडा कमरा दे दिया।

धर्मशाला के लोग अफनासी के लिए कालीन और तकिये ले आये। उसने विनम्रतापूर्वक उन्हें स्वीकार किया, किन्तु अन्दाज़ लगाता कि यह सब कितने का होगा।

इधर खाना तैयार हो रहा था और उधर अफनासी, गठरी में से तौलिया निकाल, हाथ-मुह धोने गया।

उसने चोगा उतारा। सामने एक लड़की खड़ी थी—नौकरानी। जवान, सुडौल, करीब करीब नंगी। अफनासी उसे नंगी देखकर घबड़ा गया। लड़की जैसे मंत्रमुग्ध उसके सफेद कन्धों और चौड़ी छाती को देखती ही रही।

"ओफ कैसी मुसीबत!" अफनासी ने एक आह भरी, "अरे, पानी डालो न, क्या   "

उसने हाथ-मुह धोया और जब तरो-ताज़ा होकर सीधा खडा हुआ तो वाडे के पीछे से कुछ उत्सुक निगाहें उसे घूरती-सी दिखाई दी।

"भाई!" शरारत भरे लहजे में अफनासी बोल उठा–"मै कोई हाथी तो हू नही। फिर आप लोग मुझे घूर क्यो रहे हैं?"

जवाब में उसे उत्सुक-सी चिल्ल-पो और हसी-कहकहे ही सुनाई दिये।

सबसे अद्भुत वात तो अभी आगे आनी थी। दिन समाप्त हो रहा था और रात आ रही थी–अघेरी, उष्णकटिवन्धवाली रात। निकीतिन अपने कमरे में आ गया। उसे यह देखकर वडी हैरत हुई कि धर्मशालावालो ने उसकी कटार मागकर अपने पास रखी और उसका पता-ठिकाना पूछकर लिख लिया। कमरा साफ था, ठढा था। सिरहाने एक दिया टिमटिमा रहा था। अफनासी लेट गया और उसे दिन की घटनाए याद आने लगी। समुद्र का किनारा, लोग   कोई नगा है, किसी का पारदर्शी चादरा खिसककर कन्धो पर आ गया है ढाल लिये हुए कुछ नगे-पैर योद्धा एक पालकी लिये जा रहे हैं, और पालकी में सोने के आभूषणो से मढा हुआ कोई रईस वैठा है   हाथी लट्ठे लिये जा रहे हैं   गुलावी मन्दिर, जहा सुलेमान ने जाने की मनाही की थी   विचित्र रीति-रिवाज है यहा के।

सहसा दरवाज़ा खुला। वह झटके से उठ वैठा। एक औरत धीरे धीरे क़दम रखती हुई उसके पास आ ी। पारदर्शी साडी उसके कन्धो से ढरक रही थी। उसके लवे और अद्भुत पैरो में कडे झनझना रहे थे। उसके हाथ साडी के वाहर थे और उनमें कलाई से लेकर कुहनी तक सोने की ढेरो चूडिया थी। वह एक थाल लिये थी।

थाल उसने अफनासी के सामने रख दिया। उसके सुन्दर-से मुह पर मुस्कराहट खेल रही थी। उसके सुडौल जवान शरीर से फूलो जैसी गन्ध आ रही थी। उसकी आखें काली थी और बरौनिया गझी हुईं।

लडकी ने अपनी भापा में कुछ कहा और अफनासी के पैरो के पास बैठ गयी। अफनासी उसकी बात बिल्कुल न समझ सका।

निकीतिन झट एक ओर झुक गया।

"शुक्रिया," उसने फारसी में कहा, "अब जाओ।"

बात उसकी समझ में न आयी। उसने विचारशील मुद्रा में भौंहे ऊपर उठायी और उसका चेहरा किसी विचार से खिल उठा।

उसने हसते हुए, प्याले में कोई पेय उडेला और उसे उसके ओठो के पास लाती हुई, मुद्राओ से यह सकेत करने लगी कि परदेशी उसे पियें।

निकीतिन ने पेय पिया। पेय तेज़ पर स्वादिष्ट था। फिर लडकी ने खाने के लिए सकेत किया।

"शायद, यहा का यही रिवाज हो।" उसने सोचा।

जब तक वह खाता रहा, लडकी उसे उत्सुक दृष्टि से देखती रही। अफनासी ने इस बात पर भी गौर किया कि उसके पतले पतले नथुने कुछ कुछ काप-से रहे है।

"सुन्दर है," अनचाहे ही उसके मन में यह विचार आया। उसपर पेय का असर हो रहा था।

लडकी धीरे धीरे कुछ गाने लगी। और यद्यपि अफनासी को वह भाषा न आती थी फिर भी उसने अटकल से गाने का अभिप्राय समझ लिया था। और कैसे न समझता – उसमें कितना अनुराग छिपा हुआ था!

"तो," अफनासी ने दबी जबान से कहा, "प्यारी, अच्छा हो कि तुम चली जाओ।"

और उसने दरवाजे की ओर इशारा किया। लडकी ने उसकी बात न समझी और निराशा से उसके इशारे की दिशा में देखने लगी, फिर धीरे से हसी और उदास-सी होकर कुछ पूछने लगी।

"हे भगवान! मै तुम्हारी बात नही समझता," जैसे कराहते हुए अफनासी ने कहा, "आखिर आयी क्यो?"

और लडकी ने पास आकर उसकी गरदन पर अपने गर्म गर्म हाथ रख दिये

और, काफी हिचकिचाहट के बाद, अफनासी ने रात की यह घटना हुसेन को सुनायी।

उसने सब कुछ सुना। पर उसके मुह पर आश्चर्य की जरा भी झलक न दिखाई दी। फिर वह सिर हिलाने लगा।

"यहा का यही रिवाज है," शान्त होते हुए उसने कहा, "लडकिया हर मेहमान के पास जाती हैं और इस प्रकार अपने देवताओ की सेवा करती है।"

उस दिन के बाद अफनासी के सामने और भी अजीबो-गरीब बाते आयी।

उसने निश्चय किया कि वह सभी जरूरी घटनाओ को अपनी डायरी में लिखेगा – कही वह भूल न जाये। यह काम जरूरी है – जब डायरी पढी जायेगी तो सभी बाते पानी के बुलबुले की भाति सतह के ऊपर आ जायेंगी।

उसने पाउडर से स्याही तैयार की, मोर के पख का कलम वनाया और लिखने वैठ गया। उसने सभी पिछली वातो की याद की और सक्षेप में सव कुछ लिख लिया—कहा से आया और कौन कौन-से नगरो से होकर गुज़रा। और जव तातारो की लूट-मार तक की दास्तान लिख चुका तो एक गहरी सास ली। कलम की स्याही सूखने लगी थी और काग़ज़ हवा में फडफडा रहे थे

हसन ने कमरे में झाककर देखा और दो वार पुकारा—

'सरकार सरकार "

अफनासी ने आखें ऊपर उठायी और ऐसे देखा जैसे वह पहचान न रहा हो—

"आ? क्या?"

"खोजा सुलेमान आये हैं। खोजा हुसेन आपको वुला रहे हैं। वे वाज़ार जा रहे हैं। आप भी जायेंगे उनके साथ?"

अफनासी ने डायरी वन्द की और छिपाकर झोले में रख ली। सोचा वाद में खत्म कर लूगा। हा शहर तो मैंने अभी तक देखा ही नही। मुझे देखना चाहिए।

सुलेमान कुछ परेशान लग रहा था। उसने चुपके से अफनासी को वताया—लडाई में फ़िलहाल कोई सफलता नही मिली है। महमूद गवान राजा का मुख्य किला न हथिया सका। वह तो हिन्दुओ को भूखा ही मारना चाहता था, लेकिन उन्होने घुटने नही टेके। और फिर वर्षा भी शीघ्र ही शुरू होगी। निश्चय ही वर्षा के समय वीदर की फौज अपने नगर चली जायेगी। हा, यह खतरा जरूर है कि कही चौल पर हमला न वोल दिया जाये। जैसी कि अफवाह है उनके जहाज़ कही दूर नहीं हैं। उसे, यानी सुलेमान को तो यही रहना चाहिए। कौन जाने क्या हो जाये। उसका कर्त्तव्य है कि वह हर चीज़ की चेतावनी देता रहे

"यहा क्यो बैठे हो?" हुसेन मुस्कराया, "कल काफिला जुन्नर जायेगा। मैं जाऊगा। तुम भी सामान तैयार करो, चलो। जुन्नर ऐसी जगह है जिसपर तुम भरोसा कर सकते हो।"

"बेशक," सुलेमान ने पुष्टि की, "और बीदर का रास्ता वहा से होकर जाता है।"

"वहा सौदागरी की चीजें भी है?" निकीतिन ने पूछा, "अगर कोई फायदा न हो तो जाना बेकार है। मुझे तो जरूरत है खास खास मडियो में जाने की। अगर मै ऐसी जगह गया तो घोडा बेचकर कुछ पैसे कमा लूगा वरना ढोल से खाल भी जायेगी।"

सुलेमान हस दिया और हुसेन ने दोनो हाथ ऊपर उठा दिये—

"अल्लाह गवाह है, अगर जुन्नर और बीदर में व्यापार नही तो फिर होगा कहा?"

सुलेमान ने सलाह दी कि यहा से काली मिर्च और लौंग खरीदी जाये। यह चीजें यही से देश-भर में जाती है। हुसेन ने हामी भरी और एक क्षण बाद फुसफुसाकर कहने लगा—

"सिवा अफीम के और कुछ मत लेना। बस चुपचाप "

अफनासी चौकन्ना हो गया।

"क्यो?"

"इसकी खुली बिक्री की मनाही जो है मगर पम। ज्यादा ।मल जाता है और यह मिलती कहा है—यह मै बता दूगा।"

प्रस्ताव जरूर आकर्षक था और अगर कल ही कूच करना था तो उसे तुरन्त ही कोई न कोई निश्चय कर लेना चाहिए था।

निकीतिन हिचकिचा रहा था।

"डरो मत," जुन्नरवासी ने उसे समझाया, "इसमें ज्यादा खतरा नही। मै खुद अफीम ले जाऊगा।"

मगर अफनागी ने इनकार कर दिया। ग्मनरे भी तो कई तरह के होते है। गिर्फ पैसे के पीछे पडने मे बग्वादी का मुह भी तो देखना पडता है। बम ममाले ही लूगा और उसमे जो कुछ मिल जायेगा उसी पर सन्तोष करूगा। पहले तो देश के बारे में ही सब कुछ जानना जरूरी है।

वे बाजार की ओर गये। मुजफ्फर भी आकर उनमे मिल गया और सुलेमान से पूछने लगा कि मुझे कहा जाना चाहिए।

"अगर चाहो तो यहीं रह जाओ। यहा भी फौजियो की जरूरत है। चाहो तो बीदर चलो," सुलेमान ने रुखाई से जवाब दिया, "तुम्हारे जैसे लोग इस समय यहा बहुत है "

मुजफ्फर चुप होकर एक ओर हट गया।

"फौजी! मुफ्तखोर!" हुसेन ने धीरे से झिडका, "बस, सब-तरह टैक्स दो, ताकि इन फौजियो का पेट भरता रहे।"

"कुछ भी हो, वे हमारी रक्षा तो करते है!" सुलेमान ने उत्तर दिया।

इन लोगो के पास फिर भीड जुट गयी। सभी अफनासी को घूर रहे थे।

"सचमुच तुम्हारी रूप-रंग बडी विचित्र है," सुलेमान ने स्वीकार किया।

"हमारे मुल्क में तो सभी ऐसे होते है!" उदासीनता का बहाना-सा करते हुए निकीतिन बोला, यद्यपि दिल में वह चिन्तित था।

वे बाजार से कोई दोपहर तक लौटे। तिलमिलाती हुई गर्मी पड रही थी, किन्तु होर्मुजवाली गर्मी की अपेक्षा इसे बर्दाश्त करना आसान था। वे समुद्र की ओर चले, नहाये, नावो की ओर देखा और इस बात पर गौर किया कि हाथी कैसे नहलाये-धुलाये जाते है।

"तो फिर? तुम्हे भारत पसन्द आया?" नारियल का दूध पीते हुए सुलेमान ने पूछा।

"हा, अभी तो यही कह सकता हू।" निकीतिन हस दिया, "देखूगा आगे क्या होता है। जवाहरात मैंने अभी भी नही देखे।"

"ओह," सुलेमान ने उत्तर दिया। "जवाहरात के लिए तो तुम्हे वहा जाना होगा," और यह कहकर उसने पहाडो की ओर इशारा किया।

"कल सुबह चलेगे!" हुसेन ने जवाब दिया।

सब कुछ कायदे से चलता गया। निकीतिन ने सुलेमान से विदाई ली, उससे कहा कि वह खजानची मुहम्मद को उसका सलाम कह दे, दूसरे व्यापारियो से मिला, किसी से सामान गाडी पर ले जाने की बात पक्की की और उत्सुकता से शाम का इन्तजार करने लगा—कल जिस लडकी से मुलाकात हुई थी वह आयेगी या नही? उसने उसे अगूठी भेंट करने का निश्चय किया था। किन्तु तभी मुजफ्फर ने आकर सब गुड गोबर कर दिया। वह आकर उकड् बैठ गया और कहने लगा—

"तुम्हारे साथ जुन्नर चलू।"

"जैसी मर्जी हो "

मुजफ्फर चुप रह गया और आखें झुकाकर धीरे से इतना और कह गया—

"तुम मुसलमान नही हो।"

निकीतिन ने उसपर एक उदास-सी दृष्टि डाली।

"क्या कहते हो?"

"मैंने तुम्हारी इबादत देखी थी।"

कुछ उत्तेजित होते हुए अफनासी ने पूछा—

"तो तुमसे मतलब?"

"कुछ नही। अकेले मैंने थोड़े ही देखा था।"

"और किसने देखा था?"

"मैं समझता हू हुसेन ने भी देखा था।"

"तो फिर?"

"कोई बात नही। तुम मुसलमानों के मुल्क में हो।"

"हुसेन अच्छा आदमी है!" निर्कोतिन बीच में बोल उठा, "उसके बारे में कोई ऐसी-वैसी बात न कहो। मेरे मज़हब से तुम्हें क्या लेना-देना?"

तुर्कमन की गालों की हड्डियो में हरकत शुरू हो गयी। उसने दांत निकाले और उठ खड़ा हुआ—

"नींद-भर सोओ, ख़ोजा।"

दुष्ट मुज़फ्फ़र ने सारा मिज़ाज ख़राब कर दिया था। अफ़नासी बिस्तरे पर करवटें बदलता रहा, तकिया मीजता रहा और देर तक जगता रहा। उसके दिमाग़ में चिन्ताएं उठ रही थीं।

आस-पास धर्मशाला के सामने जुती हुई बैल-गाड़ियां और बड़े बड़े टपदार छकड़े खड़े थे। व्यापारी भाग-दौड़ रहे थे, एक दूसरे से बातें कर रहे थे।

"चलो, चलने का समय हो गया!" हुसेन बोल उठा।

अफ़नासी हसन की मदद से बोरे लाया और गाड़ी में रख दिये। मुज़फ्फ़र घोड़ा ले आया।

"रात-भर रुकने के लिए किसे पैसा दिया जाये?" निकोतिन ने हसन से पूछा।

"धर्मशाले में पैसे नहीं दिये जाते," गुलाम बोला।

कोड़ा सनसनाया और गाड़ी के पहिये चरमरा उठे।

शायद यहीं ठहर जाऊं—उसने सोचा। लेकिन शीघ्र ही यह विचार हवा हो गया। नहीं, चला ही जाऊं। मुझे किसी का डर नहीं।

और वह पूरे विश्वास के साथ काफिले के साथ साथ चलने लगा।

पाली एक छोटा-सा नगर था जो घाट की तलहटी पर बसा था। यहा अफनासी ने सिर मूडवाया और दाढी सुनहरी मेंहदी से रगा ली। उसे काफी देर तक नाई के पास बैठा रहना पडा। नाई ने उसके चेहरे पर वन्दगोभी के पत्ते रख दिये थे और उसकी दाढी कायदे की बन गयी थी। एक तो धूप से तप्त चेहरा, फिर लाल दाढी—वह मुसलमान से वहुत भिन्न न लग रहा था। हुसेन ने दोनो हाथ पीछे फेंके और आखें वन्द कर ली—

"तुम्हे कोई नही पहचान सकता।"

अफनासी हुसेन को वहुत ध्यान से देख रहा था लेकिन उसे उसके चेहरे पर ज़रा भी मक्कारी न दिखाई दे रही थी।

मुज़फ्फर कुछ कटुता से मुस्करा दिया। और किसी तरह वह मुस्करा न सकता था।

अकेला हसन वहुत खुश था। उसे अफनासी की नयी शक्ल वहुत अच्छी लगी थी। हर समय अपने मालिक की ओर लोगो का घूर घूरकर देखना हसन को अच्छा न लगता था।

जव अफनासी पाली से आगे वढा तो वडा खुश था, यद्यपि यही से सवसे कठिन मार्ग आरम्भ होता था।

उन्हे घाट पार करना था।

रास्ता सकरा था और पहाडो के साथ साथ आगे वढ रहा था। नीचे एक घाटी थी जिसमें नुकीले पत्थर जैसे सिर उठाये खडे थे। पत्थरो की कठिनता से दिखाई पडनेवाली दरारो में, रास्ते के ऊपर, कुछ झाडिया उगी हुई थी। पत्थरो पर पहिये खडखडा रहे थे। गाडिया बुरी तरह भडभड कर रही थी। लग रहा था कि यदि एक धक्का और लगा तो वे टुकडे टुकडे हो जायेंगी।

बैल पसीने पसीने हो रहे थे और थककर हाफ रहे थे। ऐसा लगता था कि जुए में से अब गिरे, तब गिरे। काफिला बराबर ऊपर चढता गया। लगता था कि वह नीले आकाश तक चढ जायेगा।

उन्हे सफर आरम्भ किये चौथा दिन था। घोडा थक न जाये इस लिए अफनासी उसपर से उतरकर पैदल चल रहा था। गर्मी और चढाई के कारण उसका जी मिचला रहा था। गाडिया अक्सर पत्थरो में फस जाती और तब लोग उन्हे कन्धो से, या पहिये पकड पकड-कर, उठाने लगते। शुरू शुरू में जो रास्ता चौडा, घास और पेडो से परिपूर्ण था, वही अब हर घटे सकरा और अधकारपूर्ण होता जा रहा था। पहाडो की चोटियो पर प्राय चौकसीवाली मीनारे दिखाई पडती थी।

तो अब आयी सबसे खतरनाक जगह। इसे बहामनी सलतनत की कुजी कहा जाता है। कहते है कि कभी यहा बीस मुसलमानो ने राजा की सारी सेना रोक ली थी। बात ठीक हो या गलत लेकिन यहा घात में बैठे रहना बहुत ही सुविधाजनक था। बेशक इस पगडडी पर दो गाडिया आमने-सामने से नही निकल सकती। ऐसी हालत में सेना की रचना के लिए स्थान मिले कहा से?

हुसेन ने बताया कि इस मार्ग के अलावा पहाडो से होकर तीन रास्ते और हैं किन्तु ये तीनो बहुत दूरी पर है और इससे अच्छे भी नही है।

कुछ समय पहले यह मराठो की भूमि थी। मराठा आजादीपसन्द और योद्धाओ की कौम है। वे मुसलमानो पर हमले बोलते थे, उन्हे लूटते थे और मौत के घाट उतारते थे। किन्तु मराठो पर भी बहुत समय तक जुल्म किये गये और उनके किलो पर अधिकार किया गया। अब यह रास्ता खतरनाक नही रह गया है। हा, जब कभी मूसलाधार

पानी बरसता है और उसकी हहराती हुई धार ऊपर से चट्टानें बहाकर लाती है उस समय अवश्य वहा आना-जाना एक समस्या बन जाती है। पर वैसे तो कोई बात नही। बेशक आदमी को सतर्क रहने की ज़रूरत है।

बस पहाडो पर चार घटे चढ लीजिये कि सारे विचार छू-मन्तर हो जायेंगे। दिमाग में सिर्फ एक ही बात घूमती रहेगी—लेटिये और छककर पानी पीजिये।

अफनासी गरदन ताने, तेज़ पत्थरो से कतराता हुआ चल रहा था। दूसरे लोग भी इसी प्रकार चुपचाप और थके हुए से आगे बढ रहे थे।

सहसा कडकडाहट की कोई आवाज़ लोगो के ऊपर से होती हुई पहाडो पर में गूज गयी। अफनासी के सामने की गाडी एकदम ठप हो गयी थी और वह उससे टकरा गया था। उसकी थकान जैसे हवा हो गयी। वह दौडा दौडा काफिले की पहली गाडी के पास गया—उसी तरफ से तो कडकडाहट सुनाई दी थी। उसने देखा—गाडी का पिछला पहिया खड्ड में गिर रहा है और गाडी एक ओर झुक गयी है। हिन्दू गाडीवान गाडी का एक किनारा कसकर पकडे है और, नगे पैरो को पत्थरो पर जमाये, उसे ऊपर उठाने की कोशिश कर रहा है लेकिन स्वय गाडी के साथ ही, नीचे चला जा रहा है और उसके सामने, नीचे की ओर, बडे-से पत्थरो पर ढेरो छोटे छोटे ककड-पत्थर पडे हैं।

अफनासी दौडता हुआ गाडी तक आया और गाडीवान के पास ही गाडी पकड ली। फिर पूरा ज़ोर लगाते हुए चिल्ला उठा—

"हसन! मुझ "

उत्तेजना के कारण उसकी आवाज़ टूट गयी। गाडी उसे भी अपने साथ ही लिये हुए नीचे खिसक रही थी।

फिर और लोग भी वही दौड आये, फिर और, फिर और उसने अपनी सारी ताकत लगा दी, लेकिन सहसा देखा कि गाडीवान

एक ओर हट गया। अफनासी ने भी, पीछे झुककर हाथ छोड़े और एक तरफ लुढक पड़ा।

गाड़ी चरमरायी और धम्म से नीचे गिर पड़ी। गाड़ी के जुए ने बैलों की गरदनें तोड दी थी। ठीक उसी समय बैल डर से चिग्घाड़े और गर्त में समा गये।

इसके बाद एक हल्की-सी धमक सुनाई दी। बैलों की चिग्घाड़ बन्द हो चुकी थी। रास्ते के कगार पर धूल जम रही थी।

गाड़ीवान दोनों हाथों में सिर थामे उदास बैठा था। उसके पास खड़ा हुआ हुसेन उसे मुक्के दिखा दिखाकर गालियां दे रहा था।

मुज़फ्फर ने खड्ड में एक नज़र डाली और सिर हिलाते हुए एक ओर हट गया।

पास ही खड़े हुए दूसरे गाड़ीवान नीची और भीरु-सी आवाज़ में बातचीत कर रहे थे।

अफनासी उठा। उसने अपनी चुटीली हथेली पर एक निगाह डाली और चोग़े में हाथ पोंछ लिया।

"सरकार, सरकार!" हसन उसे भयभीत दृष्टि से देख रहा था—"आपको कुछ हुआ तो नहीं? चोट तो नहीं आयी?"

"शैतानो," हांफते हुए अफनासी बोला, "अगर तुम सब एकसाथ तभी दौड आते तो हमने गाडी बचा ली होती मुह वा रहे थे हु-हु!" हसन का चेहरा देखते ही अफनासी समझ गया कि उसके पल्ले कुछ भी नही पडा। अब उसकी समझ में आया कि गुस्से में वह रूसी बोल गया था। वह तुरन्त शान्त हो गया। उसने दर्द से तिलमिलाता हुआ हाथ झटका और मुह सिकोडते हुए पूछने लगा—

"क्या हुआ था?"

हसन ने गाडीवानो से बाते की। उन्होंने, एकसाथ सडक, गाडी और हुसेन के सामने बैठे हुए गाडीवान की ओर सकेत करते हुए कुछ समझाना शुरू किया।

हसन सारी बातो का तर्जुमा करता गया।

"उस हिन्दू का कोई कसूर नही। बैल रास्ते में एक साप आ जाने से भडक गये थे, पहिये के नीचे से पत्थर खिसक गया था और गाडी नीचे चली गयी थी ये लोग यही कहते हैं। गुरु के पास कुछ भी नही बचा। बस यही बैल सारी जमा-जथा थे और यही एक गाडी। और कुछ नही।"

"गुरु? यह आदमी जो बैठा है?"

"हा, सरकार।"

"यह तुमने क्या किया!" निकीतिन ने आह भरी, "गाडी पर तो हुसेन का बहुत-सा सामान लदा था। उसे हम कैसे समझायें?"

हुसेन बराबर गाडीवान को गालिया दिये जा रहा था, जूते के पजे से उसे ठोकता जा रहा था और उसके सिर पर थूकता जा रहा था।

"कुत्ता कही का! तुझे नीचे जाकर मेरा सारा सामान वापस लाना होगा! मैं तेरी खाल उधेड दूगा! बदमाश कही का,

जानबूझकर बैन नीचे गिरा दिये! दुष्ट! मा के पेट में ही क्यों न मर गया! पाजी कहीं का!"

"खोजा, सचमुच बड़े दुख की बात है," हुसेन के पास आकर निकोतिन बोला, "बड़े दुख की बात। लेकिन इस गाली-गलौज से क्या होगा यहां है उतरने की जगह कोई?"

"जगह कैसी?" हुसेन चिनचिनाया, "उतरने की जगह? और अब वहां रह ही क्या गया होगा? इसे तो मार ही डालना चाहिए! इसका गला घोंट देना चाहिए, आखें निकाल लेनी चाहिए!"

"शान्त हो जाओ! आदमी बनो, खोजा।"

हुसेन सहसा चुप हो गया। उसकी सांस में कुछ घरघराहट-सी हुई और उसने चाकू निकाल लिया। अफनासी ने जूते के पंजे से चाकू उसके हाथ से गिरा दिया। हुसेन झपटने के लिए झुका ही था कि सभल न सकने के कारण गिर पड़ा, परन्तु तभी निकोतिन के सामने आ खड़ा हुआ। उसकी सांस भारी हो गयी थी और उसमें से सीटी जैसी आवाज़ सुनाई पड़ रही थी। उसकी छोटी छोटी आखें इस्पात की तरह चमक रही थीं। उसके ओठों के किनारों का थूक सूख चुका था।

"तुम " हुसेन बड़बड़ाया, "तुम कुत्ते तुम भरोगे दाम "

मुजफ्फर ने हुसेन का कधा पकड़ा और हसन निकोतिन को अपने पीछे करता हुआ, दोनों व्यापारियों के बीच खड़ा हो गया।

"मेरे रहते तुम उसे मौत के घाट नहीं उतार सकते," मुट्ठी बाधकर तथा हसन को एक ओर ढकेलते हुए निकोतिन बोला, "गुण्डों की तरह बरताव मत करो, हुसेन।"

"तुम दोगे दाम!"

हुसेन नफरत से काप रहा था। अब वह गाड़ीवान को भूल चुका था।

"वस, चलो, चलो!" अफनासी वीच ही में वोल उठा, "तुम से ज़वान लडाने के लिए मेरे पास समय नही। हसन, गाडीवानो से कहो आगे वढें!"

हसन ने गाडीवानो को पुकारा और वे अपने वैलो को वुलाने के लिए चिल्लाने और तालिया वजाने लगे।

"ओ-ओ   हो हो!"

हुसेन मुज़फ्फर के हाथो के नीचे से होता हुआ हट गया और आस्तीन से माथा पोछते, तथा विना किसी की ओर देखे हुए एक ओर चला गया

पडाव पर नौकर ने हुसेन के लिए एक अलग अलाव जला दिया। निकीतिन ने हसन को हुसेन के पास भेजा—उससे कहना हमारे पास आ जाये। किन्तु हसन मुह लटकाये लौट आया।

"उसने कहा है नही आऊगा। और   "

"हा, हा, और क्या?"

"वह आपको धमकिया दे रहा है।"

"यह वात है   इसके माने है कि खोजा हुसेन कजूस ही नही, वेवकूफ भी है। धमकी देता है! देने दो। अव हम आराम करे। हसन, दरी तो देना   "

रात में निकीतिन की नीद टूटी। अलाव के पास ही हसन भी वैठा वैठा अगारों की ओर देख रहा था।

"तुम क्यो नही सोते, हसन?" अफनासी वोला।

हसन चौक पडा और अधेरे में मुस्कराते हुए, फुसफुसाकर कहने लगा—

"कोई वात नही। यो ही! सरकार, आप आराम से सोयें।"

"वह कुछ नही कर सकता!" अफनासी बोला, "चलो लेट जाओ।"

हसन, निकीतिन के पास आया।

"खोजा, हुसेन गाडीवान से बदला लेना चाहता है। वह आपके बारे में भी कुछ जानता है और आपको भी धमकी देता है।"

"वह जान भी क्या सकता है?" धीरे से अफनासी ने पूछा, "जानने के लिए है ही क्या? और फिर क्या कर सकता है वह?"

"लेकिन गुरु को कुछ हो जाये। अगर हुसेन शिकायत कर दे कि गुरु ने जानबूझकर बैलों को ढकेल दिया है तो उसे फासी हो सकती है।"

"कौन उसकी बात का विश्वास करेगा?"

"हा, अगर आप सब कुछ ठीक ठीक कह दें तो कोई न करेगा।"

"किससे कह दू?"

"काज़ी से "

निकीतिन ने तुरन्त कोई जवाब न दिया। पहाडी चरागाह पर चारों ओर से झुटपुटा छा रहा था और जगह जगह पर जलनेवाली आग में ठंडे पडते हुए अगारे आखमिचौनी खेल रहे थे। घोडा हिनहिना रहा था। एक कुत्ता, सिर उठाये, कान खडे कर रहा था। निकीतिन ने कुत्ते की गरदन सहलायी और बोला—

"सुनो हसन उस गाडीवान को ढूंढो। उससे कहो भाग जाये। यही ठीक होगा।"

हसन ने धीरे से अपना मुह खोला, कुछ एतराज़ करना चाहा, फिर जल्दी से सिर हिलाता हुआ बोल उठा—

"अच्छा, अच्छा "

प्रात काल गाडीवानों में गुरु का कोई पता न था। हुसेन ओठ भीचे अफनासी के पास से गुज़र गया। मुज़फ्फर सीटी बजाता रहा।

दोपहर होते होते लोग एक चौडी-सी घाटी में आ गये। अब पहाड नीचे पड गये थे और हरी हरी तथा मन को प्रफुल्लित कर देनेवाली वादिया दिखाई पडने लगी थी।

उतार शुरू हो गया था। लोग उमरी नामक एक कस्बे के निकट पहुच रहे थे। यहा से जुन्नर का रास्ता छ दिन का रह गया था।

हुसेन उमरी में एक दूरस्थ सराय मे ठहर गया और अपने साथ तीन बैल-गाडिया रख ली।

हसन जैसे घबडा गया। उसने निकीतिन को सलाह दी कि वे जल्दी ही यहा से निकल जायें। वे वहा सिर्फ एक रात रहे और फिर आगे बढ गये। इतने थोडे समय में वे नगर देख भी कैसे सकते थे? उमरी की मटमैली-सी हरियाली पीछे छूट गयी। अब वे दक्खनी पहाडियो में थे। हसन मस्ती में गा उठा। वह एक बढिया हिन्दुस्तानी गीत गा रहा था। निकीतिन आश्चर्य करने लगा। उसने तो सपने में भी न सोचा था कि हसन इतना अच्छा गा सकता है।

"क्या गा रहे हो? काहे के बारे मे है गाना?" उसने पूछा।

हसन मुस्कराया और हाथ झटकार दिये।

"यह है जमीन। शीघ्र ही इसपर वर्षा होगी। मन नाच उठेगा। धान लहलहायेंगे, गेहू की बालिया फूटेंगी, लडकिया खिल उठेंगी। लेकिन मेरे मन की कली तो एक से खिली होगी—बस एक से। और अगर वह मेरा साथ न देगी तो फिर दुनिया में मुझे किसी की चाह नही—मुझे वर्षा नही चाहिए, धान नही चाहिए। लेकिन वह मेरा साथ देगी! इसलिए वर्षा, तू रिमझिम रिमझिम आ, रिमझिम रिमझिम आ!"

"सुन्दर गीत है!" निकीतिन बोला, "और गाओ"

"अच्छा सुनो," आख मटकाते हुए हसन बोला, "बडा सुन्दर गीत है यह, सचमुच बडा सुन्दर!"

हसन चुप हो गया, फिर सिर उठाकर चुटकी बजायी और लय के साथ गाने लगा–

"ओ-ओ . . . हो-हो!"

गाने की धुन बदल गयी।

गाड़ीवानों ने मुड़कर देखा। वे खीसें निकाल रहे थे। उनके पैर थिरक रहे थे। उनका दिल झूम रहा था। निकीतिन की आंखों के आगे नीले नीले हल्के-से बादल, ऊंची ऊंची घास, सिर उठाये हुए पहाड़ घूम गये . . . और जब हसन चुप हुआ तो निकीतिन की इच्छा हुई कि वह और गाये, और गाये।

"और यह किसके बारे में था?"

"यह . . . हां। राजा के पास पांच सौ हाथी हैं, हज़ारों की फ़ौज। वह सोने के पलंग पर सोता है, सोने की तश्तरियों में खाना खाता है। लेकिन मैं ज़मीन पर सोता हूं और मिट्टी के बरतन में मटर उबालता हूं, पेट भरता हूं। मेरे पास हाथी तो हाथी, कुत्ता भी नहीं। ओह, मैं बड़ा ग़रीब हूं, बड़ा ग़रीब। एक इन्सान जिसे ख़ुशी नसीब ही नहीं हुई। मैं सड़कों पर मारा मारा फिरूंगा और तोते मेरी हां में हां मिलायेंगे। मैं चाहता हूं–दाहिने जाऊं, मैं चाहता हूं–बायें जाऊं। तालाब में मछलियां देखता हूं, कपास के डोंड़ों का स्पर्श करता हूं, एक लड़की को देखता हूं–उसे प्यार करता हूं। ओफ़, बेचारा राजा! तेरे पास दौलत है, ताक़त है, लेकिन मैं, एक आज़ाद इन्सान, जो कुछ अनुभव करता हूं उसका अनुभव तू नहीं कर सकता, कभी नहीं कर सकता!"

"कितना अच्छा गीत है!" निकीतिन बोल उठा, "तुमने यह क्या कहा–'मैं चाहता हूं–दाहिने जाऊं, मैं चाहता हूं–बायें जाऊं'?"

हसन ने एक बार फिर वही गीत गाया और अफनासी सीटी बजाता हुआ कई कई वाक्यों को याद करता और दुहराता रहा।

और वह हुसैन को जैसे भूल ही गया। अब फिर वही थका डालनेवाला सफर। उसके सारे विचार बस एक ही बात पर जम गये—किसी तरह जल्दी जुन्नर पहुचू।

यहा, घाटो के उस पार, दक्खिनी पठारो में मुसलमानो के बहुत-से गाव पडे। वहा का जीवन, हिन्दुओ की तुलना में, अधिक अच्छा न था। लेकिन यहा मास मिल सकता था और मास निकीतिन ने बहुत समय से न खाया था। हिन्दू लोग तो मास खाते नही। पहले पहल अफनासी इसका कारण उनकी गरीबी समझता था, किन्तु अब उसे पता चला कि मास न खाना तो उनका धर्म है।

एक गाव मे उन्हे पता चला—अभी हाल ही में जुन्नर का शासक असद-खान यही से होकर गुजरा था। वह फौज के पडाव से आ रहा था। मुसलमान शकर राजा को हराने में कामयाब न हो सके थे और अब अपना घेरा हटा रहे थे।

पाचवें दिन आसमान में बादल दिखाई पडने लगें, गडगडाहट सुनाई पडने लगी। हिन्दुस्तान की भयानक आधी शुरू हो गयी थी। बिजली से आखें चौंधिया रही थी। इसी आधी-तूफान में सारा काफिला एक अज्ञात गाव तक पहुच गया। तूफान रात भर चलता रहा।

निकीतिन डर गया—शायद यह बारिश खत्म ही न हो। किन्तु प्रात काल बादल छटे और सूर्य के दर्शन हुए।

गाव में बैल सडको पर दिखाई पडने लगे। अधनगे किसान बैलो को हलो में जोत जातकर जुताई के लिए निकल रहे थे।

मौसम सुहावना था। सारा क़ाफ़िला, जल्दी जल्दी, अपने मार्ग पर बढ़ने लगा। रास्ते में उन्होंने कोई पड़ाव न डाला।

और जब आसमान पर फिर बादल मंडराये तो डर की कोई बात न रही—दूर की पहाड़ियों पर मकान, और ढालू चट्टान पर जुन्नर की दीवालें साफ़ साफ़ दिखाई पड़ने लगी थीं। हवा इतने ज़ोरों की थी कि लोगों की पगड़ियां उड़ रही थीं और चोग़े और घोड़ों के अयाल फड़फड़ा रहे थे। निकीतिन घोड़े की गरदन पर झुका और गाने लगा—"मैं चाहता हूं—दाहिने जाऊं, मैं चाहता हूं—बायें जाऊं..."

किन्तु भाग्य में तो कुछ और ही बदा था।

जुन्नर—अर्थात—'पुराना नगर'। कभी यह नगर राजाओं का था। किन्तु बहुत समय पहले ही मुसलमानों ने उसपर क़ब्ज़ा कर लिया था और वे सारे निशान मिटा डाले थे जो उसके अतीत के सूचक थे—उन्होंने मन्दिरों को नष्ट करके उन्हीं की नींवों पर मसजिदें खड़ी की थीं और वहां के निवासियों को मुसलमान बना लिया था।

अतीत के जुन्नर का एक ही चिन्ह रह गया था—वहां के क़िले की दीवालें।

ये दीवालें बड़ी अद्भुत थीं। उनके ऊपर के कगार और मीनारें सीधी चट्टानों पर लटकी-सी लग रही थीं। दीवालों तक एक छोटी-सी पगडंडी जाती थी। इस पगडंडी के नीचे एक भयानक खड्ड था। पगडंडी पर दो घुड़सवार तक एकसाथ न निकल सकते थे। इस क़िले के निर्माण में न जाने कितने वर्ष लग गये थे। बड़े बड़े पत्थर पहुंचाने और उनसे दुर्ग और महलों का निर्माण करने में लाखों गुलामों का खून-पसीना एक हुआ था।

ये सारी वाते निकीतिन के दिमाग में घूम रही थी। वह वरसते हुए मेंह में से नगर का दृश्य देख रहा था।

व्यापारियो और अन्य यात्रियो को किले में जाने की अनुमति न थी। पहाडी की तलहटी पर स्थानीय जनता के मिट्टी और वास के मकान थे। इन्ही मकानो के वीच में सरायें थी। यात्री इन्ही सरायो में ठहर गये। हसन नगर से परिचित था। उसने एक शान्त जगह ढूढ निकाली। मुसाफिर रात में सोने की व्यवस्था करने लगे। सराय मुसलमानो की थी, किन्तु वहा भी कुछ हसमुख, खुशदिल औरते आ गयी। वे मुसाफिरो के हाथ-मुह धोने के लिए पानी लायी और तकिये गीजने लगी।

"यहा के लोग कितने अजीव है!" निकीतिन ने गरदन हिलायी, "हसन, यह ठीक नही। इनसे कहो यहा से चली जायें।"

हसन ने सिर हिलाकर एतराज किया—

"एक ही वात है। उनके लिए आपको पैसा तो देना ही होगा, खोजा। यह धर्मशाला नही है। सुलतानो की सरायो में औरतो से टैक्स लिया जाता है।"

"और अगर मुझे इनकी जरूरत नही?"

"तो भी कोई वात नही। इन्हे कुछ तो देना ही होगा। वे आपकी सेवा करती है।"

निकीतिन वुरी तरह थक चुका था। कमरे की खिडकियो के उस ओर से सुनाई पडती हुई तेज पटपट में उसकी आख लगी और एक ही नीद में सवेरा हो गया। दीवालो के पीछे पानी की पटपट और छलछल अव भी वैसी ही हो रही थी। खिडकी में से भूरा आकाश दिखाई पड रहा था। गर्मी के वाद मौसम कुछ ठडा लग रहा था। निकीतिन ने चोगा पहना और अपने घोडे की खवर लेने

चल दिया। अहाते में पानी के कारण सांस तक लेना मुश्किल हो रहा था। जिस छत के नीचे घोडा खडा था वहा तक भागकर जाने में निकीतिन की हड्डिया तक भीग गयी थी। घोडे ने सिर घुमाया और हिनहिनाने लगा। छत ताड की पत्तियो की थी जिनमें से पानी टपक रहा था। घोडा पूरी तरह भीग चुका था और काप रहा था। अफनासी अपने कपडो से देर तक घोडे की मालिश करता रहा और उसे थपथपाता और चारा खिलाता रहा। फिर वह कपडे बदलने के लिए अपने कमरे में लौट पडा। और जैसे ही कमरे में पहुचा कि ठिठककर पीछे हट गया—जिस क़ालीन पर वह सोया था उसी पर एक साप कुडली मारे बैठा था और दूसरा खिडकी की चौखट से फुफकार रहा था।

हसन और पास-पडोस के कमरों से दूसरे लोग दौडते हुए वहा आ गये। उन्होंने लाठियो से एक साप तो मार डाला और दूसरे को अहाते में गिरा दिया।

और जब लोगों ने गौर से देखा तो कोनो में ढेरो कनखजूरे और बिच्छू दिखाई दिये। अफनासी के तो यही सोचकर रोगटे खडे हो गये कि वह मज़े में सो रहा था और ये दुष्ट उसी के पास रेंग रहे थे।

“ये आते कहा से है?” उसके मुह से निकल पडा।

“बरसात के कारण!” हसन ने सक्षिप्त उत्तर दिया, “जब पानी बरसता है तो ये भी आ जाते है। डरने की कोई बात नही। बरसात में ये कीडे-मकोडे शान्त रहते है।”

“इन्हें मार डालो!” निकीतिन कठोरता से बोला, “मार डालो न! हर रात को यो ही रेंगते रहेंगे।”

हसन चुप हो गया और जब लोग वहा से हट गये तो गहरी सास लेता हुआ कहने लगा—

"बिच्छुओ को तो बुहार डालूगा। वे खतरनाक नही होते। अल्लाह से दुआ मागो, खोजा कि कही हुसेन से भेंट न हो जाये।"

"हम यहा से चले जायेंगे।"

"नहीं, हम जल्दी नही जा सकते। चारो ओर पानी और कीचड है। कोई रास्ता खुला नही। जब तक पानी बन्द नही होता तब तक हमें यही रुकना होगा।"

इस वर्ष बरसात का मौसम कुछ बाद में शुरू हुआ था और पानी देखकर ऐसा लग रहा था मानो मानसून अपनी पिछली कमी पूरी कर रहे हो। कई दिनो और रातो तक जुन्नर के आकाश में बिजली कडकती रही, बादल गरजते रहे। फिर पानी की झडी शुरू हुई। यह ताज़गी और शीतलता को जन्म देनेवाली रूसी बरसात न थी। यह थी भारत की वर्षा कि जब झडी लगती तो कान धरे आवाज़ न सुनाई पडती, ताड की पत्तियो से ढकी हुई छतें बरसा करती, सडको और गलियो में पानी भर जाया करता, मकान तक डूब जाते, किन्तु गर्मी से निजात फिर भी न मिलती। ऐसी दशा में सडको पर निकलना सम्भव ही कब था।

निकीतिन सुबह से शाम तक सराय में ही बना रहता—कभी कमरे में रेग आनेवाले सापो, बिच्छुओ और खनखजूरो से मोर्चा लेता, तो कभी घोडे की देख-रेख के लिए दौडता-भागता। इस गर्मी में घोडा भी दुबला हो गया था।

यही एक अप्रिय घटना घटी।

एक दिन जब अफनासी कमरे में बैठा बैठा डायरी में अपनी यात्रा की घटनाए लिख रहा था तभी उसके कान में मुज़फ्फर की तेज़ आवाज़ और हसन की चीख सुनाई दी—

"सरकार! सरकार!"

अफनासी दौडता हुआ अहाते में आ गया। वस्त्रो और हथियारो से सिपाही लगनेवाले पाच आदमियो ने अहाते में उसके घोडे को घेर रखा था और मुजफ्फर और हसन को ढकेलते हुए वे उसे फाटक की ओर लिये जा रहे थे।

अफनासी दौडा दौडा सिपाहियो के पास आया और घोडे की लगाम पकडकर चिल्ला पडा—

"ठहरो! कहा लिये जा रहे हो इसे? यह मेरा घोडा है।"

एक सिपाही ने निकीतिन को अपनी म्यान से पीटा और उसका हाथ लटक गया। मुज़फ्फर ने उसपर प्रहार किया और सिपाहियो ने चाकू निकाल दिये।

"मुजफ्फर!" निकीतिन चिल्लाया—"ठहरो! घोडा क्यो लिये जा रहे हो?"

"तुम कौन हो?" लाल पगडीवाले सिपाही ने रुखाई से पूछा।

"खुरासान का सौदागर, यूसुफ "

"अच्छा! तो तुम हो! हमें तुम्हारी ही तो जरूरत है! चले आओ 'हमारे पीछे पीछे।"

"कहा? क्यो?"

"जुन्नर के हुक्मरा, आलीजाह, काफिरे-मल्कुलमौत असद-खान ने हुक्म दिया है कि तुम्हे और तुम्हारे घोडे को पकड लाया जाये। चलो! चलो यहा से! कुत्ते कही के!"

हसन ने हाथ डाल दिये। उसका चेहरा फक पड गया और वह निकीतिन की ओर ताकने लगा। मुज़फ्फर गाल की हड्डिया नचाता हुआ दो कदम पीछे हट गया। उत्सुक लोग फाटक के सामने से गायब होने लगे।

"चलो!" सिपाही ने फिर कहा और निकीतिन की पीठ में धक्का देकर उसे आगे ढकेल दिया।

"मुझे छुओ मत मैं खुद ही चलूगा!" भौहें सिकोडता हुआ निकीतिन बोला।

उसने पीछे देखा और अपने सहयात्रियो से अभिवादन करना चाहा, किन्तु सिर्फ सिर-भर हिलाकर रह गया और फाटक की ओर वढ गया।

उस दिन पानी कुछ धीमा पड गया था और सूर्य वादलो की ओट से दिखाई देने लगा था। जुन्नर की सडको पर लोगो की भीड लगी थी। सिपाही, साभर झील के नमक विक्रेता, उडीसा के निवासी, सिन्धु तट के वाशिन्दे, हिमालय से आये हुए लोग—यानी वे सव जो वहा का मौसम विगड जाने के कारण वहा रुक गये थे, अव सुहावने मौसम का आनन्द ले रहे थे।

जैसे ही अफनासी के कान में चीख पडी कि वह विना जूतो और विना पगडी के निकल पडा। सडको पर कीचड था। इसके अलावा फाटक के पास किसी ने उसे धकेल दिया और गन्दे पानी के गड्ढे में उसके पैर घुटनो तक धस गये। उसके चोगे, उसके मुह और उसकी दाढी पर कीचड ही कीचड जम गयी।

किस रास्ते से जाये, किससे न जाये इसका निश्चय करना अफनासी के हाथ में न था—सिपाही उसे सडक के सवसे गन्दे भाग से लिये जा रहे थे। कीचड उसके पैरो में लगकर छपछपा रहा था।

लोग घूम पडे और मुस्कराते हुए एक दूसरे को आखें मारने लगे। कुछ ऐसे भी थे जो उसके साथ साथ जाने के इच्छुक भी लग रहे थे।

"चोर!"

"घोडा चुराया है! चोर!" अफनासी के कानो में कुछ आवाज़ें पडी।

मिट्टी का एक लोदा उसकी छाती पर पडा और दूसरा उसके गाल पर।

"दुष्ट कही के!" उसने दात भीचते हुए कहा। उसके हृदय में टीस-सी उठ रही थी और लोगों की इस भीड के समक्ष, अपनी असहायता की कल्पना मात्र से, उसकी सास तक भारी हो रही थी। क्रोध के कारण उसकी आखो के आगे धुन्ध-सा छा रहा था। फिर भी वह सिर उठाये चला जा रहा था।

सिपाही उसे नगर के बीचोबीच मे होकर ले गये। आखिरी मकानो के पास आकर सब लोगों ने उसका साथ छोड दिया। वही से किले की चढाई शुरू होती थी। एक मुसलमान घोडे के साथ साथ आगे आगे चल रहा था। बाकी सब आगे-पीछे एक कतार में बढ रहे थे। निकीतिन बीच में था।

"यह कारगुज़ारी हुसेन की है," अफनासी ने उत्तेजित होते हुए सोचा, "यह भी अच्छा हुआ कि मैने मोर्चा नहीं लिया और भागा भी नहीं, वरना ये लोग मुझे मार डालते। और बिना घोडे के मै जाऊ भी तो कहा? मै तो कही का न रहूगा बडी गम्भीर समस्या है। देखो न, कैसे मेरा जुलूस निकालते हैं। आखिर कोई रास्ता तो निकालना ही चाहिए! और अगर मैं यह दिखाऊ कि इन लोगो की हरकत से मुझे कितनी पीडा हुई है तो? लेकिन इसमे क्या होगा! और झूठ बोलना भी तो ठीक नही। नहीं, मै कुछ न छिपाऊगा। जो होना हो, हो जाये। पर मै लोगो को मजाक उडाने का मौका न दूगा। कभी न दूगा।"

टेढा-मेढा पहाडी रास्ता ऊपर जा रहा था। जरा भी पैर फिसला या गलत कदम पडा कि घडाम से नीचे पत्थरो पर गिर पडे। रात में यहा से कोई नही निकलता

गुम्बददार सकरे फाटक के पास कुछ चौकीदार चौपड खेल रहे थे। उन्होंने लोगो को आते देखा और खेल बन्द कर दिया। वे निकीतिन को घूरते हुए उसके इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गये।

निकीतिन ने देखा – एक मोटी-सी दीवाल में दुहरा फाटक लगा था जिसमे लोहे के मोटे मोटे कब्जे थे। उसने चौकीदारो पर निगाह तक न डाली और नम और गन्धाते हुए गुम्बद के नीचे चला गया।

धूप से उसकी आखें चौंधिया गयी थी और उसका मिट्टी से मैला मुह और गन्दा चोगा चमक उठा था।

"ठहरो।" उसे हुक्म सुनाया गया।

लाल पगडी वाला चौकीदार अपनी तलवार सभालता कही भाग गया। अफनासी ने सामने एक निगाह डाली। तरह तरह के रगो वाले सगमरमर के पत्थरो के एक सीधे रास्ते के दोनो ओर ताड के पेड लगे थे। रास्ता मोज़ेक से सुशोभित एक तिमज़िले महल को जा रहा था। महल मे लच्छेदार और जटिल कारीगरीवाली कई मीनारे सिर उठाये खडी थी। महल के सामने कई इकधारे फौवारे थे। सफेद सगमरमर के तालावो में दस शक्तिशाली इन्द्रधनुपी धारे गिर रही थी। महल की खिडकियो पर वढ़िया कारीगरीवाले जगले लगे थे। रगीन सगमरमर की सडक पर मोर चल रहे थे।

पगडीवाला सिपाही वाहर आया और दूसरो को सकेत करके वताया कि "इसे यहा ले आओ।"

अफनासी को महल की ओर नही, वल्कि दाहिनी ओर एक

मामूली सडक पर से ले जाया गया। वहा, पता नही बगीचा था या झाडिया थीं।

वहा एक छोटा-सा चौक था। चौक के इर्द-गिर्द, रग-बिरगे जालो और झूलो से सुशोभित घोडे घुमाये जा रहे थे। एक एक सईस एक एक घोडे की रास पकडे था। सईस जमीन तक सिर झुकाये, घोडे को एक आलीशान मडप तक लाता और तब तक सीधा न खडा होता जब तक उसे यह हुक्म न मिल जाता—

"जाओ।"

अफनासी को धक्का देकर उसी मडप के आगे कर दिया गया। आदमियो और घोडो का घेरा जैसे एक क्षण के लिए निश्चेष्ट खडा रह गया। हरे जालवाली एक घोडी ने घोडे की ओर देखा और प्यार से हिनहिना दी। घोडा भी इस प्यार के जवाब में हिनहिना दिया और मौज में आकर पैर पटपटाने लगा।

लाल पगडीवाला सिपाही बडी विनम्रतापूर्वक झुका और छाती पर दोनो हाथ रखते हुए मडप की ओर बढा। अफनासी भी आखें सिकोडते हुए सीधा हुआ और सिपाही के पीछे पीछे चलने लगा।

मडप में कालीनो से ढके हुए गद्दो के टीले पर, पालथी मारे एक आदमी बैठा हुआ था। काली दाढी, सीधी भौंहे, बडी नाक, मोटे मोटे ओठ। पैरो में सोने के जूते।

सईसो की ही तरह यह व्यक्ति भी पिस्तई रग की कमीज़ और नीली तथा कसीदेवाली सफेद-पीले रग की मिर्ज़ई पहने था। उसके सिर पर हरे रग की एक पगडी थी जिसपर एक लाल पर लगा था। उसके बायें कान में एक बडा-सा रत्नजडित कर्णफूल था। छोटी छोटी उगलियो वाले उसके बडे बडे हाथो में पहुचिया भी थी और अगूठी भी।

इस व्यक्ति के पास ही कोई दस वर्ष की उम्र का एक मोटा-सा लडका बैठा हुआ था। घुघराले बाल, चारो ओर नीले रग से रगी हुई बडी बडी आखें। लडका नीरस उत्सुकता से सब कुछ देख रहा था। उस व्यक्ति और लडके के पीछे हबशी गुलाम थे जिनके हाथो में शुतुर्मुर्ग के परो के बने बडे बडे पखे थे और जिनकी कमर से छोटी छोटी कटारे लटक रही थी।

उस व्यक्ति के पैरो के पास एक मुशी था। उसके दायें-बायें कुछ मुलाजिम थे जिनमें से एक नोवगोरद के व्यापारी जैसा ऊचा-सा टोप पहने था।

निकीतिन ने अनुमान लगाया—मोर की तरह सजा-धजा जो व्यक्ति बैठा है, वही है असद-खान। लडके के बारे में उसका अनुमान था कि वह असद-खान का बेटा है, और दूसरो के बारे में उसका ख्याल था कि वे रईस और दरबारी है। लाल पगडीवाला घुटनो के बल बैठा और ज़मीन तक माथा झुकाया।

असद-खान ने हाथ हिलाया, मुह खोला और कुछ हुक्म-सा दिया।

निकीतिन को धकियाकर सामने लाया गया। पीछे से किसी ने उसके कन्धे दबाये कि वह भी झुककर सलाम करे। किन्तु निकीतिन ने उसे परे हटा दिया। तभी उसे घुटनो के नीचे एक चोट पडी और वह ज़मीन पर गिर पडा। सिपाहियो ने उसे इस ढग से बिठाया कि वह जुन्नर के हुक्मरा को नीचे से देखे, कायदे के साथ।

अफनासी ने ओठ भीचे, आखें ऊपर उठायी और सामने देखने लगा।

असद-खान ने अफनासी से आखें मिलायी, त्योरिया चढायी और मुह बनाने लगा।

"क्या नाम है तुम्हारा? कहां से आ रहे हो?" लोहे जैसी सख्त आवाज़ में उसने पूछा, "और किसलिए आये हो?"

अफनासी को एक क्षण का मौका मिल गया और सिपाही को परे ढकेलते हुए अकड़कर खड़ा हो गया। सिपाहियों ने उसके हाथ पकड़ लिये। फिर उसने ताकत लगाकर सिपाहियों को एक तरफ गिराया और गहरी सांस लेते हुए आगे बढ़कर बोल उठा—

"मैं रूसी हूं ... इन सिपाहियों को हटाने का हुक्म दीजिये। उन्होंने किसी चोर को तो नहीं पकड़ा है।"

सिपाही उसके पास तक आ चुके थे और अब जैसे उनपर झपट पड़े।

"ताकत का ज़ोर दिखाओगे, तो मैं कुछ न बोलूंगा," अपने आपको अंगरक्षकों के हाथों से मुक्त करता हुआ निकीतिन चिल्लाया, "बिल्कुल न बोलूंगा ... शैतान के बच्चो, छोड़ दो मुझे!"

उसे फिर ज़मीन पर गिरा दिया गया। सिपाहियों की एक भीड़ उसपर टूट रही थी और वह उनसे मोर्चा लेता हुआ देख रहा था कि दरबारी असद-खान के पास आये, उन्होंने उसके कान में कुछ कहा,

मोटा लडका डर से पीछे ठिठका और खुद जुन्नर का हुक्मराँ मुक्का घुटने पर रखकर गुस्से से चीख उठा

सिपाही तितर-बितर हो गये। अफनासी ने अपना चुटीला मुह पोछा और उठकर खून थूकने लगा। उसके मुह पर बरते पड गयी थी लेकिन उसपर क्रुद्ध-सी मुस्कान थिरक रही थी – "आखिर क्या मिला ?"

असद-खान ने इशारा किया – पास आओ।

अफनासी कुछ आगे बढा। खान के मुह पर प्रसन्नता दौड गयी। ऐसा लगा कि इस धर-पटक में उसे मजा आ रहा था। उसके मुह पर पहले जैसी कठोरता दिखाई पडने लगी किन्तु अब उस कठोरता में उत्सुकता और मिल गयी थी।

"तुम बुजदिल नही हो," खान बोला, "और अल्लाह ने तुम्हें ताकत भी दी है। चलो अच्छा है। मैं तुम्हे खडे होने की इजाजत देता हू अगर तुम खडे हो सकते हो तो।"

अफनासी के मुह में फिर खून भर गया। उसने खून थूक दिया। उसे तुरन्त कोई उत्तर समझ में न आया और खडे खडे सिर हिलाया।

"अच्छा अब तुम सच सच बताओ," खान बोला, "तुम कौन हो और कहा से आ रहे हो ?"

उसके दरबारी, दात भीचते हुए, अपने निडर खान की ओर देखकर चापलूसो की तरह मुस्करा रहे थे।

"रूसी हू। त्वेर मे आ रहा हू," यह समझते हुए, कि उत्तर उनके लिए काला अक्षर भैंस बराबर है, निकीतिन ने उनके प्रति अपनी उपहास-भावना को छिपाते हुए धीरे से कहा, "और मेरा नाम है अफनासी निकीतिन।"

"झूठ मत बोलो। तुम ईसाई हो न!" बीच ही में खान बोल उठा।

"वेशक। लेकिन खान, तुम्हारे जासूस क़ायदे के नहीं हैं। वे पूरी बात नहीं वताते। और मैं तुम्हें सव कुछ वता दूंगा। मैं ईसाई हूं, रूसी हूं, त्वेर में रहता हूं।"

खान ने भौंहें उठायीं। उसके कानों के पास सफ़ेद दाढ़ीवाला दरवारी कुछ फ़ुसफ़ुसाने लगा।

"यह ... मुल्क कहां है?" खान ने पूछा।

"यह मुल्क यहां से नहीं दिखाई पड़ता। वीच में दो समुद्र पड़ते हैं—एक हिन्द महासागर, दूसरा ख्वालीन।"

खान ने अपने आदमियों पर फिर एक नज़र डाली और कोई दरवारी फिर उसके कान में फ़ुसफ़ुसाया।

"अपने शहरों के नाम तो गिनाना ज़रा।"

"शहरों के? मास्को, नीज्नी, रस्तोव, कीएव, त्वेर, नोवगोरद, उग्लीच... सव नाम गिनाना आसान थोड़े ही है? हमारी धरती कोई छोटी-मोटी धरती तो नहीं।"

"ऐसे शहर हो ही नहीं सकते।"

"खान, ऐसे शहर हैं। आपके आदमी उनके वारे में कुछ नहीं जानते। लेकिन यह ताज्जुव की वात नहीं है। आपके शहरों के वारे में हमारे आदमियों ने भी तो कुछ नहीं सुना है। लोग तरह तरह की मनगढ़न्त फैलाते हैं ..."

"हिन्दुस्तान के वारे में सारी दुनिया जानती है," असद-खान वीच ही में वोल उठा, "और अगर तुम्हारे लोगों को भारत की जानकारी न होती तो तुम्हें ही कैसे मालूम होता?"

असद-खान के इर्द-गिर्द खड़े-वैठे लोगों ने हाथ ऊपर उठाये और आंखें फाड़ फाड़कर देखने लगे—उन्हें अपने मालिक की इस वुद्धिमानी पर आश्चर्य हो रहा था। अफ़नासी ने सिर हिला दिया।

"मुझे बड़ा तजुर्बा है, खान। सारी दुनिया देखी है मैंने। लेकिन मैं सारी बातें ठीक ठीक नहीं जानता। मुझे तो बताया गया था कि सौदागरी के ख्याल से हिन्दुस्तान एक बड़ा मुल्क है। व्यापारियों की वहां कद्र होती है। लेकिन लगता है लोगों ने झूठ कहा था।"

"समय से पहले कोई फैसला मत कहो!" निकीतिन पर एक गहरी-सी नज़र डालते हुए असद-खान ने उसे फिर रोका। "मैं तुम्हारा विश्वास नहीं करता। तुम सच बोल रहे हो इसका तुम्हारे पास क्या सबूत?"

निकीतिन को सहमा अपनी सनद की याद आयी। वह बोला—

"खान, अपने सिपाहियों से कहो कि वे मेरा थैला ले आयें। मैं तुम्हें सनद दिखा दूंगा।"

ऐसा लगा कि खान कुछ परेशान हो उठा।

"कैसी सनद?"

"हमारे रूस हुक्मरां की "

"सनद मंगाओ!" असद-खान ने अपने दरबारियों की ओर देखते हुए हुक्म दिया, "और क्या तुम्हें यहां भेजा गया?"

निकीतिन ने सोचा—"क्या मैं झूठ बोल जाऊं, इतना झूठ कि तीन समुद्र भर जायें? चाहे झूठ बोलो, चाहे सच—यहां कोई रूसी तो जानता नहीं"। लेकिन फिर जैसे अपनी ही भर्त्सना करने लगा—"झूठ बोलना ठीक नहीं। चाहिए तो यही कि इन शैतानों को धोखा दिया जाये, पर मेरी आत्मा गवाही नहीं देती। शायद ऐसा लगेगा कि मैं डर गया।"

उसने निषेधसूचक ढंग से सिर हिला दिया।

"मुझे किसी ने नहीं भेजा। खुद आया हूं। अपना खतरा उठाकर।"

"अकेले, इतनी दूर?" द्वेषपूर्ण ढग मे मुस्कराते हुए असद-खान बोला।

"अकेले क्यों? यहा गया दोस्त-अहवाब मिल गये—माज़न्द्रान में भी, काशान में भी ..."

"तुम फारस होकर आये हो?"

"हा। होर्मुज़ तक। वहा से समुद्री रास्ते से।"

"यह तो हम जानते हैं ... हा तो तुम्हारी धरती का क्या नाम है?"

"रूस।"

"रूस? तुम्हारा सुलतान कौन है?"

"हमारा देश मुसलमानी देश नहीं। रूस में सुलतान नहीं होते। राजे होते हैं।"

"तो क्या वे खलीफा के मातहत होते है?"

"वे किसी के मातहत नहीं होते। उन्हे अपने दिमाग पर भरोसा रहता है।"

"खलीफा है—अल्लाह का नुमाइन्दा।"

"और राजा—ईसामसीह का।"

"एक ही बात है।" उपदेशपूर्ण ढग मे खान बोला—"खलीफा खलीफा ही है। सबको उसी की छाया बनकर रहना चाहिए। तुम्हारे हुक्मरा मुसलमान हैं?"

"मुसलमान क्यों?" निकीतिन ने उत्तर दिया, "वे रूसी है—ईसाई धर्म को मानते है।"

खान ने कधे झुलाये और उसके दरबारी व्यग्यपूर्ण ढग से मुस्करा दिये।

"यह बात तो वैसी ही है जैसे कोई यह कहे कि हल में बैल नहीं, घोडे जोते जाते हैं," असद-खान हस पडा।

"लेकिन हमारे यहा सचमुच हलो में घोडे जोते जाते है," शान्ति से अफनासी ने उत्तर दिया। "आपके यहा बैल जोते जाते है "

असद-खान दोनो हाथ पेट पर रखे खिलखिलाकर हस पडा और उसकी दाढी आगे निकल आयी। उसके दरबारी भी हस पडे और लडका भी। मुशी भी इतने ज़ोरो से हसा कि उसके ओठ खिचकर कानो तक आ गये। पहरेदारो ने भी खीसें निकाल दी।

"अल्लाह गवाह है अल्लाह गवाह हैं कि अकेले यही मुझे यकीन दिलाता है " कठिनाई से असद-खान बोला, "तो फिर तुम लोग तुम लोग लडते होगे गायो पर बैठ बैठकर, है न?"

सब ठहाका मारकर हस पडे। लोग इस मैले-कुचैले, फटेहाल विदेशी पर खिलखिलाकर हस रहे थे जिसके चेहरे पर गम्भीरता छा रही थी और जो ऐसा ऊट-पटाग बक रहा था। पागल है या कोई मसखरा?

मोटे लडके ने सिर पर उगलिया रखकर सीग दिखाये और गाय की तरह डकारने लगा जिसे देखकर सभी लोग और भी ज़ोरो से हस पडे।

अफनासी चुपचाप खडा था और हसते हुए लोगो को घूर रहा था—ये भी बडे बेवकूफ है!

आखिर असद-खान कुछ शान्त हुआ।

"अच्छा," वह बोला, "अच्छा, मान लो घोडे तुम्हारे यहा हल में जोते जाते है। तो फिर खरबूज़े पेडो में फलते होगे क्या?"

"नही, खरबूज़े हमारे यहा नही होते," अफनासी ने जवाब दिया, "उनके लिए हमारी आबोहवा बहुत सर्द है। अलग अलग पौधो के लिए अलग अलग हालतो की ज़रूरत होती है। हमारे यहा की सर्दी में न खरबूज़ा ही हो सकता है और न तरबूज़ ही।"

"तो कैसी होती है ये सर्दियां?"

"सर्दियों में वर्फ गिरती है और लोग सिर तक जानवरों की फरदार खाल लपेटे रहते हैं और सारे दिन अंगीठी जलती रहती है "

"अंगीठी?"

"हां, घरों को गर्म करने के लिए एक तरह का चूल्हा वना लिया जाता है और लोग उसके पास वैठकर वदन सेकते हैं।"

और एक वार फिर सब हंस पड़े। घरों को भी गर्म किया जाता है—कहीं सुना है किसी ने? तो फिर गर्मी से वचने के लिए लोग क्या करते हैं?

"वह तुम्हारी धरती भी खूव है!" असद-खान वोला, "सब कुछ उलटा तुम्हारे यहां मर्द तो वच्चे नहीं जनते?"

सभी लोग खिलखिलाकर हंस पड़े।

इस समय घोड़े की टापें सुनाई दी। मंडप में चहलपहल मची। जो सिपाही थैला लेने भेजा गया था वह आ गया था।

थैला अफनासी के आगे डाल दिया गया।

"सनद दिखाओ," रुखाई से असद-खान ने हुक्म दिया। अफनासी ने थैले की चीज़ें खखोली और मास्को के गवर्नर राजा अलेक्सान्द्र की दी हुई पुरानी-सी दिखनेवाली सनद निकालकर खान की ओर वढा दी।

"यह रही।"

मुंशी ने सनद ले ली, उसे हिलाया-डुलाया और उल्टा पकडकर विचारशील मुद्रा में मुंह वनाया।

"इधर तो देना!" असद-खान चिल्लाया।

पर खान ने भी इस कागज़ को वैसे ही देखा जैसे किसी अजीवोगरीव चीज़ को देख रहा हो।

"क्या लिखा हुआ है?" खान सहसा पूछ बैठा, "यह कैसी लिखावट है?"

"खत स्लाव भाषा में है," अफनासी ने समझाया, "पत्र सभी राजाओ, मिर्जाओ, खानो और बेगो के नाम है कि वे मेरी तिजारत में किसी तरह का दखल न दें, मुझे किसी प्रकार की तकलीफ न पहुचायें। फिर इसपर मेरा नाम लिखा है—अफनासी निकीतिन। मुहर है। यह मुझे दिया है रूसी राजा ने।"

खान ने सनद गोडी-मोडी और निकीतिन के पैरो पर फेंक दी।

"अपने मन से भी बहुत कुछ कह डालना कोई मुश्किल नही। मै तुम्हारी धरती कहा है नही जानता। तुम्हारे राजो-महाराजो को भी नही जानता और जानना चाहता भी नही। लेकिन तुमने खुद इकबाल किया है कि तुम ईसाई हो। है न?"

"हा।"

"तुम इस देश का कानून जानते हो?"

"नही जानता, खान।"

"एक ही बात है। कानून न जानना—यह कोई बहाना नही। कानून तुम्हे जानना ही चाहिए था। कानून कहता है—इस सुलतान की जमीन पर कदम रखनेवाले हर गैरमजहबी को अल्लाह का मजहब मानना होगा। अगर नही मानेगा तो उसे गुलाम और जबरदस्ती मुसलमान बनाया जायेगा। अच्छी तरह सुन लिया न तुमने?"

"मुझपर रहम करो, खान "

"चुप रहो। तुम गुस्ताख हो, पर बहादुर भी हो। हम ऐसे आदमियो की कद्र करते है, बहादुरो को प्यार करते है। मै तुमसे वादा करता हू कि अगर तुम हमारा मजहब कबूल करोगे, तो तुम्हे घोडा भी वापस मिलेगा और एक हजार सोने के सिक्के भी दिये जायेंगे।

अगर मेरी बात न मानोगे तो तुम्हें जबरदस्ती मुसलमान बनाया जायेगा और घोड़े से ही हाथ न धोना पड़ेगा, वरना तब तक के लिए मेरा गुलाम बनना पड़ेगा जब तक कि तुम्हें छुड़ाने के लिए कोई मुझे एक हजार सोने के सिक्के न दे। मुझे बहादुर गुलामों की भी जरूरत है। समझे?"

"खान, मज़ाक कर रहे हो क्या ...?"

निर्सीनिन का चेहरा पीला पड़ रहा था फिर भी वह मुस्कराये जा रहा था, "मेरे लिए कौन एक हजार सिक्के देगा? नहीं ... और क्यों कर रहे हो मेरे साथ ऐसा बर्ताव? अगर यहां नियामत मना है, तो मेरा घोड़ा दो, मैं चला जाऊंगा ..."

"यह कोई बाजार नहीं है और न मैं तुम्हारे साथ सौदेबाजी ही कर रहा हूं।" असद-खान बीच ही में बोल उठा, "मुझे जो कुछ कहना था कह दिया। ले जाओ इसे यहां से! घोड़े को अस्तबल में रखो। तुम लोग इस सौदागर पर निगाह रखना ... और ऐ, रूसी, जरा तुम भी सुन लो ... तुम्हें सोचने के लिए चार दिन दे रहा हूं। ईद के दिन मुझे जवाब देना। जाओ!"

ये दिन बड़ी परेशानी में कटे। ऐसा लगता कि सूर्य निकलने के साथ ही डूबने लगता। और ताज्जुब की बात यह थी कि अफनासी के अलावा और किसी को भी ऐसा न प्रतीत हो रहा था। सब कुछ पहले जैसा ही था—शहर के उस पार की पहाड़ियां, अहाते का कीचड़, चारों ओर की रोजमर्रा की बातचीत।

अफनासी ने अपने को सभाला—लोगों से देश के बारे में पूछ-ताछ की, वक्त पर खाया-पिया, हसन से मौसम के संबंध में बातचीत की। किन्तु वह अच्छी तरह जानता था कि उसकी अवस्था असहायों जैसी

है। लोग उसकी निगरानी कर रहे हैं। भागना ठीक नही और बेकार भी होगा। परदेश में विना पैसे और माल के रहना मौत को न्योता देना है।

और इस्लाम धर्म ग्रहण करना—इसके माने हैं अपने बाप-दादो के धर्म से नाता तोडना—मैं ओलेना को न देख सकूगा, अपने मित्र सेरेगा कपिलोव से आख न मिला सकूगा। दुष्ट मिकेशिन तक मुझपर थूकेगा। सभी मुझे देखकर मुह फेर लेगे। फिर रूस लौटने का विचार हमेशा के लिए छोडना पडेगा। तव तो मेरी जिन्दगी और पैसा आयेगा किस काम? मै किस के लिए जिऊगा और कैसे? बस एक ही रास्ता है—खान की वात न मानना और अगर मुसीवत आ ही जाये तो अपनी जिन्दगी की भारी कीमत लेना

तीसरा दिन समाप्त हो रहा है। कल असद-खान को जवाव देना होगा। कल ही सब कुछ तय करना होगा।

अफनामी, मुजफ्फर और हसन सराय के कुछ कुछ अधेरे कमरे में खाने पर वैठे है। पानी की रिमझिम सुनाई पड रही है। पडोसियो की आवाज़ें आ रही है। दीवालो के उस पार कुछ दूर वीणा वज रही है। किसी गायिका के स्वर कानो में पड रहे हैं। गायिका के गाने में भाग्य का रोना रोया गया है। खाना तरह तरह का था। मेज़ पर एक नीले-से सागर में शराव थी। सागर पर काली चिडियो की शक्ल वनी थी। पर किसी ने भी शराव न पी।

"कुछ भी हो, निकल भागना चाहिए।" तुर्कमन जल्दी जल्दी कह गया।

"कहा? क्या लेकर? और भाग भी पाओगे, तो पकडे जाओगे"

"फाटक पर सिपाही खडा है," गहरी सास लेते हुए हसन वोला।

"तो क्या हम अपने आपको उसके हवाले कर दें?" गुस्से से दात भीचते हुए मुजफ्फर वोला।

"चुप भी रहो।"

"क्यों चुप रहूं, खोजा? जो होना है, सो होगा ही। अगर तुम हमारे मजहब में नहीं आना चाहते तो न आओ। फिर भाग जाओ! सिपाही को मैं ढेर कर दूंगा! और जो जो भी हमारे रास्ते आयेगा उसे ठिकाने लगा दूंगा। मुजफ्फर मेहरबानियां भूलता नहीं, अच्छे आदमी की कद्र करता है। वह उसके लिए अपनी जान तक दे देगा।"

"नहीं, मुजफ्फर, मैं यह नहीं चाहता।"

मुजफ्फर ने छाती ठोंकी।

"मेरी मां ने मुझे सिखाया था—दोस्त के दिल में अपनी अच्छी यादगार रखो और इससे अल्लाह तुम्हारे सारे गुनाह माफ कर देगा और अगर वैसा न कर सके तो वह यह गुनाह कभी माफ न करेगा। हसन से कहो अलग रहे और मेरे मामले में दखल न दे। मैं कहीं न जाऊंगा।"

"मैं क्यों अलग रहूं?" हसन बीच ही में बोल उठा, "मैं तो यहीं रहूंगा। मैं गुलाम जो हूं। मालिक को छोड़कर न जाऊंगा।"

"कल मैं भी गुलाम बन जाऊंगा।" धीरे से निकीतिन बोला।

अफनासी के मस्तिष्क में तरह तरह के विचार आ जा रहे थे। उसके गाल पिचक गये थे और वह बैठा बैठा फर्श ताक रहा था। इन तीन दिनों में उन्होंने कोई पहली बार तो यह बातचीत की नहीं थी। मुजफ्फर और हसन ने उसके दुखदर्द को अपना दुखदर्द समझा था।

निकीतिन के दिमाग में एक कटु विचार उठने लगा—"अगर उसपर यह मुसीबत न आयी होती तो उसे पता कैसे चलता कि ये लोग इतने अच्छे आदमी हैं।"

"खैर। लगता है इस मुसीबत से हमारा छुटकारा नहीं हो सकता," उसने जोर से कहा और सागर पकड़ने के लिए हाथ फैलाया, "कुछ

भी हो खान मुझे मुसलमान नही बना सकता। उसे यह देखने का मौका कभी न मिलेगा कि पैसे के लालच में कोई रूसी अपना धर्म बदल लेता है। आखिर उसकी समझ में आयेगा ही कि उसका पाला ऐसे-वैसे लोगो से नही पडा है अच्छा, विदा होने से पहले हम शराब पियेंगे। दोस्तो, उठाओ जाम! मैं अच्छे लोगो के लिए पिऊगा, रूस के लिए पिऊगा!"

उसने प्याला खाली कर दिया। मुजफ्फर और हसन हिचकिचाते हुए एक दूसरे की ओर देखने लगे।

अफनासी ने इसका मतलब समझा और हस दिया—

"क्यो, हिचकिचा क्यो रहे हो? पियो न! मेरी चिन्ता मत करो, पियो! सब ठीक हो जायेगा!"

अब, अन्तत उसने अपनी असहाय स्थिति अच्छी तरह समझ ली थी और पक्का निश्चय भी कर लिया था। फलत उसका जी हल्का हो गया था।

"मैं अब गाना गाऊगा," कुछ उठते हुए अफनासी बोला, "रूसी गाना। मुझे वह बहुत पसन्द है "

एक क्षण तक इन्तजार कर चुकने के बाद उसने गहरी सांस ली और तेज आवाज मे गाने लगा। उसकी गाने की आवाज से पानी की रिमझिम, वीणा की मधुर ध्वनि और सराय का शोरगुल सभी दब गये—

आसमान में बाज उडा
वोल्गा की धारा के ऊपर
हहराती लहरो के ऊपर
"ओफ अगर सभी मिलकर गाते!"
हसो की पातो के ऊपर
चकराता, मडराता, तिरता।

फाटक पर खड़े और नौकरानी से बातचीत करते हुए पहरेदार के कान खड़े हो गये। वीणा वादन बन्द हो गया। गायिका का गीत उसके गले ही में अटक कर रह गया। रेशम की पूरी खेप का सौदा करनेवाले दो मुसलमान गाना न समझ सकने के कारण कन्धे झुलाने और एक दूसरे को देखने लगे। सभी यह अन्दाज लगा रहे थे—यह विचित्र विदेशी गीत मुसीबत में पड़े हुए परदेसी के कंठ से निकल रहा है।

और रूसी गीत तेज और तेज़ होता गया, और प्रसन्न, स्वतंत्रताप्रिय और साहसी पक्षी की भांति बराबर ऊपर उठता गया, ऊंचे और ऊंचे।

और उसकी अन्तिम ध्वनि हवा में विलीन हो गयी। फिर भी सराय में बहुत देर तक शान्ति बनी रही। हर व्यक्ति उस क्षण की पवित्रता को समझ रहा था और लग रहा था जैसे हर किसी को डर हो कि कहीं वह उस पवित्रता में बाधक न बने। वर्षा की रिमझिम हो रही थी, बूंदें पट पट गिर रही थीं।

...मुज़फ़्फ़र और हसन दरवाज़े पर पड़ रहे। निकीतिन ने अपना थैला खोला और अपनी चीज़ें उठाने-धरने लगा। उसने साफ़ कपड़े एक ओर रखे—कल वह यही कपड़े पहनेगा। अब वह अपनी डायरी के पन्ने पलटने लगा जिसमें उसकी यात्रा का विवरण था। उसने निश्चय किया—यह डायरी वह मुज़फ़्फ़र को दे देगा। जब मुज़फ़्फ़र होर्मुज लौटेगा और किसी ईसाई को देखेगा तो वह उसे यह डायरी दे देगा। इसमें लोगों के लाभ की बहुत-सी बातें हैं। उसने कॉपी में वह सनद भी रख दी जिसे खान ने मोड़-माड़ डाला था।

पैरों पर बांधने की पट्टी, दो पुरानी पर मजबूत पेटियां—रास्ते में काम आनेवाली चीज़ें, तांबे की दावात, डोरे का गुल्ला और

सुई उसने एक ओर हटाकर रख दी। अब इनकी उसे कोई जरूरत न रही थी।

फिर उसने थैले में से, सबसे नीचे से, वे कुछ चीजें निकाली जो उसे जान से ज्यादा प्यारी थी—गले में लटकानेवाला सलीब, जो कभी उसे उसकी मा ने दिया था, ओलेना की तावीज़ और इवान की बनायी प्रतिमा।

उसने सलीब चूमा और गले में पहन लिया। फिर उसने तावीज़ लटकायी, और अन्तत इवान की बनायी प्रतिमा को अपने घुटने पर रखकर अपनी प्रियतमा का मुखड़ा देखने लगा।

ओलेना की आखें उदास लग रही थी। उसके मुख पर दुख की छाया थी। वह अफनासी को फटकारती और उसके लिए दुखी होती सी लग रही थी।

"ओलेना!" वह बोला, "मैं बरबाद हो गया, ओलेना अब मैं न लौटूगा। ओफ, मुझे तुम्हारे साथ सुख नही बदा था। लगता है मामूली आदमी के लिए भारत में भी कोई सुख नही!"

सारी रात वह भगवान की प्रार्थना करता रहा। उसे मार्या, इरीना और वसीली काशीन की भी याद हो आयी। उसके माता-पिता, जैसे जीवित दशा में, उसकी आखो के आगे खड़े हो गये। फिर उसने जलते हुए कन्यातिनो, लाल बालो वाले किसान और नाव के अपने सभी साथियो को, एक एक करके, देखा

उसे सब कोई याद आ गया। उसने सब से माफी मागी और सबको क्षमा कर दिया।

परदेश की निर्दय घुटन भरी रात कटती रही, कटती रही। मुजफ्फर और हसन सो रहे थे या कौन जाने सोने का बहाना कर रहे थे। अफनासी अधेरे में, विचारशील मुद्रा मे एकाकी बैठा था।

"शैतान के बच्चे!"

"गधा कहीं का!"

"भाले पर दम निकलेगा तेरा, भाले पर!"

"बन्द कर यह अपनी गज़-भर की ज़बान!"

आवाज़ें इतनी तेज़ और इतनी परिचित थीं कि अफ़नासी ने उन्हें तुरन्त पहचान लिया। वह चौंक पड़ा। तब उसे पता चला कि वह सो रहा था।

खिड़की में से सुनहरा प्रकाश कमरे में आ रहा था। कहीं कोई खांस रहा था। अहाते में बैल डकार रहे थे। कोई नंगे पैरों मिट्टी के फ़र्श पर होता हुआ दौड़ रहा था। औरतों की हंसी सुनाई पड़ रही थी।

अफ़नासी उछल पड़ा और चोग़ा लपेटे लपेटे दरवाज़े की ओर चला आया। उसका दिल धड़कने लगा। उसे कानों पर विश्वास करने में भी डर लग रहा था।

हसन जैसे खुशी से फूला हुआ उसके पास आया—

"ख़ोजा ... ख़ोजा ..."

बरामदे में ख़ज़ानची मुहम्मद की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी—

"वह है कहां?"

"मैं यह रहा जी, यहां!" हाथ फैलाता हुआ निकीतिन चीखा। दूसरे ही क्षण खज़ानची उसकी बांहों में बंध गया।

"ठीक," अफ़नासी की अस्पष्ट कहानी सुन चुकने के बाद ख़ज़ानची बोला, "ठीक, ठीक ... मेरा भी यही अनुमान था कि तुम मुसलमान नहीं हो।"

दरवाज़े पर मुज़फ़्फ़र और हसन को देखकर ख़ज़ानची ने भौंहें तरेरीं—

"हट जाओ। हसन, शराव लाओ   हा, तो खान ने तुम्हारा घोडा ले लिया?"

"हा," अफनासी वोला, "घोडा तो ले ही लिया, साथ ही यह भी हुक्म दिया कि मै मुसलमान वन जाऊ और एक हजार सोने के सिक्के देने का भी वादा किया है।"

"फिर तुम्हे कैसी मदद चाहिए? तुम तो वडे किस्मतवर हो।"

"मै मुसलमान नही वनना चाहता!" भौहे तरेरते हुए निकीतिन वोला, "मै अपना घोडा चाहता हू।"

"क्यो मुसलमान नही वनना चाहते?" मुहम्मद ने अपने भारी-भरकम कन्धे झुकाये, "यह तो वडे फायदे की वात है! जव तुम यहा आ ही गये हो तो यहा का कानून मानो।"

"यहा मै हमेशा के लिए नही आया हू। यहा देखू-भालूगा, फिर अपने मुल्क लौट जाऊगा।"

"लौट जाओगे? क्यो?"

"वह मेरा वतन है।"

"वहा तुम्हारा है कौन? मा, वाप, वीविया, वच्चे?"

"कोई नही।"

"तो इसके माने हैं—मकान, नौकर-चाकर, जमीन-जायदाद?"

"हो सकता है अव मकान भी न रहा हो। कर्ज में ही चला गया हो।"

"अजीव वात है!" निकीतिन की ओर देखते हुए खजानची वोला, "कौन शैतान तुम्हे जाने को कह रहा है? आदमी का वतन वहा है, जहा वह खुश रहता है। यहा तुम खुश रहोगे। अमीर वनोगे, हरम वसाओगे, गुलाम खरीदोगे।"

"नही, नही!" निकीतिन ने सिर हिलाया, "आदमी का वतन

वहा होता है, जहा उसके देशवासी रहते हैं। तुम यही वडे हुए हो। तुम्हे यही अच्छा लगता है। और मुझे अच्छा लगता है रूस में।"

"मैं तो यहा नहीं वडा हुआ। मै वगदाद का रहनेवाला हू। लेकिन मुझे तो वगदाद अपनी ओर नही खीचता   तुम वडे अजीव हो यूसुफ। देशवासी, रीति-रिवाज, परदेस   तुम यहा रहने के आदी वन जाओगे। आखिर यहा है किस चीज़ की कमी?"

"यहा अपनी धरती जो नहीं है।"

"तो वना लो न इसे अपनी धरती! जिसके पास पैसा होता है धरती उसकी होती है!"

"खज़ानची, वतन नही खरीदा जा सकता, समझे! खैर छोडो भी इसे। क्या तुम्हे खान के पास जाने में डर लगता है?"

मुहम्मद ने मुह वनाकर कहा—

"मैं तो तुम्हारी भलाई चाहता हू। मै जानता हू तुम काले कोसो से आये हो, न जाने कितने उतार-चढाव देखे हैं। और खाली शब्दो के लिए अपनी खुशी से हाथ धोना चाहते हो। तुम वहादुर हो, तगडे हो   हम ऐसे लोगो की कद्र करते है। मेरी राय है तुम मुसलमान वन जाओ। हा, और अगर न चाहते हो   "

निकीतिन खज़ानची की ओर, अपलक, देखता रहा और तड से कह उठा—

"हा, मै नही चाहता। मैं तुम्हारे कानून में वधकर अपना रास्ता नहीं वन्द करना चाहता। मुसलमान वनकर तो मैं कहीं का न रहूगा—न रूसी, न खुरासानी, न हिन्दुस्तानी। अच्छा हो तुम मेरे लिए असद-खान के पास चले जाओ।"

"तुम्हे समझाना तो वालू से तेल निकालना है। जो चाहो करो   हा, तो तुम रूसी हो, ईसाई। अच्छा तुमने खान से क्या क्या वातचीत की?"

निकीतिन से खान की जो जो बातें हुई थी वे उसने मुहम्मद को कह सुनायी और वह प्राय आख उठा उठाकर बडे ध्यान से उन्हे सुनता रहा।

"समझ गया। असद-खान को घोडे पसद है," आखिर खजानची बोला, "एक बार उसने एक अरबी घोडी के लिए पचास रुबेलिया दे दी थीं। तुम घोडा पाना चाहते हो? शायद मिल जाये।"

"कैसे मिलेगा?"

"मै असद-खान से बात करूगा।"

"तब तो मैं तुम्हारा नौकर बन जाऊगा।"

"हू-ह मुझे ऐसे नौकरो की जरूरत नही। मुझे ईमानदार नौकरो से डर लगता है।" मुहम्मद ने दात निकाल दिये, "चलो खाने पर हाथ साफ करे। मै भूखा हू। अच्छा, रूस के बारे में कुछ बताओ। मुझे तो दिलचस्पी है "

"अरे भाई! इससे तो यही अच्छा है कि तुम्ही यह बताओ कि यहा तक आये कैसे? इतनी तो झडी लगी थी। ऐसे पानी में पहुचना सचमुच बडे अचरज की बात है।"

"काम ही ऐसा था कि आना पडा। मेरे पास मालिक-अत-तुजार महमूद गवान के लिए जरूरी सन्देश है। हू-ह, मेरी क्या? तुम बताओ रूस से यहा कैसे आये? मैंने तो सुना है वहा जगली बसते है "

"आया अपनी वला से! मैंने भी बहुत कुछ सुन रखा था। लेकिन देखता हू कि यहा रूस के काम की कोई चीज नही। यहा भी तुम्हारी जमीन पर सोना नही लोटता। फारस में चीजें तो यहा से भी सस्ती होती है।"

"तो," मुहम्मद ने आपत्ति की, "तुम अभी भारत के बीचोबीच पहुचे कहा हो। जब पहुचोगे तो तुम्हे अपनी यह राय बदलनी होगी।"

"आगे जाने का कोई फायदा भी है? यही तो वाल वाल वचा!"

"कोई वात नही, कोई वात नही। सव ठीक हो जायेगा। हमें रूस का हाल सुनाओ। कहते हैं तुम्हारे यहा फर वहुत होता है।"

"होता है।"

"कैसा होता है?"

"जैसा चाहो, सेवल का, एर्माइन का "

"किस हिसाव से विकता है?"

"सेवल का तो कुल्हाडियो के वदले में मिलता है।"

"यह कैसे? कुल्हाडियो के वदले में?"

"कुल्हाडी के छेद में से जितनी खाल निकल जाये उतनी एक कुल्हाडी के वदले में मिल जाती है।"

"गप तो नही मारते हो?"

"गप! नही, सच कह रहा हू।"

"यह तो तुम्हे मालूम है सेवल की एक खाल के लिए हम कितना देते है?"

"नहीं! दस सोने के सिक्के, शायद वीस?"

"तीन-चार हज़ार।" मुहम्मद ने जैसे फुसफुसाते कहा। "सुना, यूसुफ? कही सौ खाले ले आओ तो अल्लाह का नाम लो। लेकिन नही, ये खाले तुम्हारे यहा भी इतनी सस्ती नही हो सकती!"

"क्यो! हमारे यहा हर अच्छे सौदागर के कोट में सेवल की खाल का अस्तर होता है।"

मुहम्मद खाना भूल गया और विस्मित होकर अपनी पगडी पकड ली—

"सौदागर! लेकिन हमारे यहा तो यह ठाठ सिर्फ सुलतानो को नसीव है! अच्छी एर्माइन की खाले? महगी होती हैं?"

"एर्माइन से तो तीन गुनी महगी है सेवल की खाले।"

मुहम्मद तो जैसे कराहने लगा—

"तो तुम ये खाले लाये नही!"

"लाया था, पर डाकुओ ने लूट ली।"

"ओह! ये वदमाश, कुत्ते कही के!"

निकीतिन हस दिया—

"मुझे मुसलमानो ने ही लूटा था।"

"एक ही वात है," निराशा से हाथ हिलाते हुए खजानची वोला।

"लेकिन हमारे यहा जवाहरात नही होते," निकीतिन ने वताया।

"तो वडे महगे विकते होगे? जरा सेवल की खाल के हिसाव से वताना तो उनके दाम।"

"यह हिसाव लगाना तो मुश्किल है एक अच्छे हीरे के लिए दो सौ खाले मिल सकती है।"

खजानची मुहम्मद अव अधिक वैठा न रह सका। वह उछल पडा और कमरे में चहलकदमी करने लगा।

"असद-खान अच्छा लडाका है, लेकिन है मूर्ख," चहलकदमी करते हुए खजानची वोला, "यह लडाका है, हुक्मरां नही। हा, हुक्मरा नही। जहा नही चाहिए वही टाग अडाता है "

"आज मेरा आखिरी दिन है!" अफनासी ने याद दिलायी।

मुहम्मद, निकीतिन को न देखते हुए भी, उसपर आखें गडाये था। सहसा उसे वातचीत का सिलसिला याद आ गया।

"यहा वैठो," वह वोला, "मै अभी असद-खान के पास जाऊगा। वह तुम्हारे पीछे पडने की हिम्मत नही कर सकता। हसन, गफूर, घोडा! नही वह हिम्मत नही कर सकता! मै उसे मालिक-अत-तुजार की धमकी दूगा! सुलतान की! मै "

खज़ानची मुहम्मद तैश में आकर बाहर निकल गया।

अफनासी बाहर अहाते में आया—खज़ानची चला जा रहा था। फाटक पर खड़े हुए सिपाही ने, जैसे ढुलमुल ढंग से, पैर मारे सलामी की मुद्रा में छाती पर हाथ रखा और सिर झुका दिया। सराय का मालिक मुस्करा दिया।

कमरे में हसन बचा हुआ खाना उठा ले जाने लगा।

"कोई ज़रूरत नहीं!" निकीतिन ने उसे रोका, "हम अभी खायेंगे! मुज़फ्फर को बुलाओ।"

हसन ने सिर झुका दिया—

"मुज़फ्फर चला गया, खोजा।"

"कहां?"

"किले में, फौज में भरती होने।"

"यह बात है तो फिर हम दोनों ही खायेंगे।"

लेकिन हसन दरवाज़े पर ही खड़ा रहा।

"तुम्हें हो क्या गया है?" निकीतिन ने पूछा।

"खोजा, तुम्हारे साथ बैठने की मैं हिम्मत कर सकता हूं? खज़ानची जी..."

निकीतिन उठा और गुलाम का हाथ पकड़कर दरी पर आया और उसे बिठा दिया।

"अपने दिमाग़ से खज़ानची को निकाल फेंको, समझे!" वह क्रोध से चिल्लाया, "हमने साथ साथ दुख उठाये हैं तो साथ साथ सुख भी भोगेंगे।"

दोपहर के बाद खज़ानची लौट आया। उसके पीछे पीछे एक सिपाही घोड़ा लिये चला आ रहा था। यह वही सिपाही था जो निकीतिन को ले गया था।

घोडा देते हुए सिपाही छाती पर हाथ रखकर झुका—

"खोजा, मुझपर गुस्सा मत करना। मैंने जो कुछ किया था खान के हुक्म से ही।"

खज़ानची ने दाढी पर हाथ फेरा और मोटी मोटी पलकें सिकोड ली।

"सुना है तुमने बहुत बडा गुनाह किया है।" खज़ानची बोला, "हुसेन को मारा था, हिन्दू गाडीवान की तरफदारी की थी, अफीम लाये थे, और फिर खुद असद-खान को भी नाराज़ कर दिया था! हो-हो-हो!"

"मैंने हुसेन को नही मारा, अफीम भी मैं नही लाया—यह सब झूठ है। लेकिन मैंने गाडीवान को ज़रूर बचाया था!"

"तुम्ही सोचो—असद-खान, महमूद गवान का मुसाहिब है, सत्तर हज़ार की फौज का सिपहसालार है, जुन्नर का मालिक है। कहा वह, कहा तुम। और तुमने उसे नाराज़ कर दिया, हो-हो-हो हा, पहले तो वह तुम्हारे बारे में कुछ सुनना ही न चाहता था। लेकिन मैंने कहा हमें तुम्हारी ज़रूरत है, मैं खुद तुम्हे भारत लाया हू और तुम्हारे बारे में मालिक-अत-तुजार से बात करूगा। फिर मैंने उसे फर के बारे में बताया। अब तुम्ही देख लो नतीजा—घोडा यह रहा। अब तुम्हे कोई नहीं छेड सकता।"

"मरते दम तक तुम्हारा अहसान न भूलूगा, खज़ानची। मरते दम तक।"

"अच्छा, अच्छा . मैं कुछ पीना चाहता हू। मेरे पास कही

शराब के दो सागर पड़े है। चलो पियें। मै तुमसे रूस के बारे में भी पूछना चाहता हू।"

ख़ज़ानची को कमरे में बैसे ही नशे में ऊंघता छोड निर्वीतिन घोडे की देख-भाल करने चला गया। उसे विश्वास ही न हो रहा था कि घोडा घर पर है। लगता है कि ख़ज़ानची रूसी फ़रो के सस्ते होने की कहानियां सुन सुनकर ही इतना उत्तेजित हो गया था कि उसने ख़ान से घोडा वापस लाने में एडी-चोटी का ज़ोर लगा दिया था। शुरू शुरू में तो कहता था कि घोडा शायद मिले हा। लगा तो लगा—वह तो सभी के बारे में पूछना चाहता था—रास्ते के बारे में, रूसी नगरो के बारे में। और वह ये बातें लिख भी लेना चाहता था। उसके बारे में क्या कहा जाये! बडा होशियार है! और वह भी कोई ऐरा-गैरा नहीं। ख़ुद असद-ख़ान तक उसकी बात सुनता है। पर उसे देखने में ऐसी कोई ख़ास बात नहीं लगती। सौदागर तो सौदागर। घोडो का सौदागर।

सायबान के नीचे निर्वीतिन की भेंट हसन से हो गयी। हसन घोडे की मालिश करता हुआ उससे बातें करता था।

"हसन," निर्वीतिन बोला, "तुम्हारा मालिक बहुत पैसेवाला है? बडा नामी है?"

हसन काप उठा पर अफ़नासी को पहचानकर मुस्करा दिया।

"हा, ख़ोजा, वह पैसेवाला है। बीदर में उनका अपना घर है, तालाब है, घोडे हैं, बैल हैं।"

"वह इतना मालदार कैसे हो गया?"

"मैं नहीं जानता, ख़ोजा। वह बडे बडे काम करता है।"

"समझता हू, समझता हू क्या घोडा ठीक है?"

"ठीक है, ख़ोजा, हा "

"हा? क्या? कहो न!"

"खोजा, मुझे खरीद लो।"

"कैसे?"

"मुझे खरीद लो। मै ज्यादा महगा नही हू बस छ-सात सिक्को का हूगा। अगर तुम कहोगे तो खजानची वेच देगा। तुम्हारे हाथ जोडता हू। मुझे खरीद लो, खोजा।"

निकीतिन वोला–

"सच पूछो तो मैं भी तुम्हे प्यार करता हू। देखो, मैंने कभी आदमी नही खरीदे। हमारे मजहव में ऐसा करने की मनाही है।"

"मैं ईमानदारी से तुम्हारी चाकरी करूगा। मै बहुत-से काम जानता हू। खाना वना सकता हू, मकान साफ कर सकता हू, घोडे की देख-भाल कर सकता हू। यहा का एक एक रास्ता जानता हू, यहा के लोगो को जानता हू। मै तुम्हारे काम आऊगा, खोजा।"

हसन ने सिर लटका लिया और पुआल मरोडने लगा जिससे वह घोडे के खुर पोछ रहा था।

"मैं महगा नही हू " एक वार फिर वह धीरे से वोला।

"हे भगवान!" दिल दहला देनेवाले गुलाम के इन शब्दों को सुनकर अफनासी वरवस वोल उठा, "आदमी को खरीदना एक गुनाह है और उससे भी वडा गुनाह यह है कि मै तुम्हारी मदद न करू। खैर, खजानची से वात करूगा।"

हसन खुशी से नाच उठा।

शाम होने से कुछ पहले मुजफ्फर आ गया। उसे तो कोई पहचान ही न सका। कन्धो पर हरा दुपट्टा, सिर पर लाल पगडी, कमर में चमडे की पेटी से लटकती हुई हरे-लाल काम की म्यान में रखी एक कटार।

"तुम्हारा क़र्ज़ लौटाने आया हू, खोजा," उसने शान से कहा, "दस सोने के सिक्के तुमने मेरे सफर के किराये के दिये थे और पाच आने के। हिसाब ठीक है न?"

"तुम ज्यादा गिन गये हो।"

"नही। मुझे खैरात नही चाहिए। यही रहे पन्द्रह सिक्के।"

"तो तुम असद-खान की फौज में भरती हो गये?"

"हा। देख लो न, कपडे-लत्ते, हथियार, घोडा और एक महीने की तनख्वाह पेशगी।"

मुज़फ्फर ने हथेली पर चमडे का बटुआ उछाला। बटुए में सिक्के खनक रहे थे।

"अब मैं मालदार हू। आज तुम्हारी खातिर करूगा। इजाज़त है न?"

निकीतिन ने समझ लिया था—इनकार करना उचित नही। उसने सिर हिला दिया।

"तुम्हारी दावत हमें मजूर। बस।"

मुज़फ्फर ने सराय के मालिक को बुलाया, उनसे कुछ कहा और मालिक ने बा-इज्ज़त उनके आगे सिर झुका दिया। मुज़फ्फर के ओठो पर गर्वीली और सन्तोष भरी मुस्कान बिखर रही थी। निकीतिन ने अपनी मुद्रा गम्भीर बना ली। ओह मुज़फ्फर! बेचारे का दिल बच्चे जैसा है! बडा भोला है—खुश है कि आदमी तो बना! लेकिन इस आदमी बनने के लिए उसे क्या कीमत चुकानी पडेगी यह वह नही जानता!

वे एक अलग कमरे में रेशम के कुछ फटे-पुराने तकियो पर बैठ गये। उनके सामने मिठाइया, मास, ताडी और ताजी पूरियो का ढेर लगा था।

देहलीज पर एक जवान हिन्दु वीणा बजा रहा था। उसकी थकी हुई और उदास आखें बन्द हो रही थी। वीणा की धुन मन्द थी और मुजफ्फर को तेज नशा चढ रहा था।

"मै खुश हू कि असद-खान से मिले पैसो से मैंने तुम्हारा कर्ज अदा कर दिया," मुजफ्फर बोला। उसकी आखें चमक रही थी। "तुम अच्छे आदमी हो! मैं जल्द ही तुम्हारा कर्ज अदा कर देना चाहता था। और हा, मुझे गलत नही बताया गया था—फौजी मजे की जिन्दगी बसर करता है। और सुलतान की फौज में तो और भी अधिक पैसे मिलते है।"

"खाओ तो पहले!" निकीतिन ने उसकी ओर तश्तरी बढायी।

मुजफ्फर ने मास का टुकडा ले लिया, पर खाया नही, बल्कि टुकडा अफनासी के मुह के सामने पकडे हुए कहता गया—

"बरसात खत्म होते ही हम महमूद गवान के यहा कोल्हापुर जायेंगे और वहा से काफिरो पर चढाई करेंगे। मैं बुज़दिल नही हू। मैं कैसे लौटूगा यह तुम देख ही लोगे। दो साल लडूगा फिर समुद्र के रास्ते बन्दर जाऊगा। वहा बाबा है, जुलेखा है। मजे में कटेगी जिन्दगी। जमीन खरीदूगा, बाग लगाऊगा और होर्मुज पानी पहुचाया करूगा। मेरे पडोसी की लडकी भी बडी हो रही है। बडी सुन्दर है वह। उसी से ब्याह रचाऊगा। मेरे यहा आओगे न?"

"आऊगा, जरूर आऊगा   तुम खाओ तो।"

मुजफ्फर ने कुछ घूट और उतारे और ताली बजाने लगा—

"कहा है नाचनेवालिया?"

दो नर्तकिया हाज़िर हो गयी। दोनो जवान थीं। रेशम की साड़िया पहने हुए। दोनो छातियो पर लकड़ी के प्यालो की सी चोलिया कसी थी। उनके बालो में क़ीमती रत्न जड़े थे या हो सकता है कि मामूली शीशे के टुकड़े। उनके दोनो हाथो में ढेरो चूड़िया थी और पैरो में पायल, जिनमें से हर गत पर बोल फूट रहे थे।

नर्तकिया सगीत की लय पर मेहमानो के सामने नाचने लगी। चेहरो पर चमकीली मुस्कान, बड़ी बड़ी भावपूर्ण आखें और सुडौल शरीर। शरीर में लचक इतनी कि वे स्त्रिया नही बल्कि नागिनें लग रही थीं। उनके हाथो के सर्पिल हाव-भाव बड़े ही आकर्षक थे।

आख़िर कौनसे भाव छिपे हुए थे इस नृत्य में? नाच किधर जाने का आह्वान कर रहा था? शायद उसमें एकागी प्रेम की व्यथा की व्यजना थी, शायद मनुष्य को यह आश्वासन दिया गया था कि उसे ससार के सभी सुख प्राप्त होगे। कौन जाने उसमें किस सत्य का उद्घाटन किया गया था। नाच उत्कट कामोत्तेजना, मनुष्य की जीवित आत्मा के करुण क्रन्दन और प्रेमी के प्रति विरहिणी की आकुलता का प्रतीक था।

नाच में अजीब जादू था। आखें निर्निमेष उसपर गड़ी थीं। मन उसकी लय और गत के साथ साथ बह रहा था, हृदय में आशा जन्म ले रही थी और ऐसा लग रहा था कि दुनिया बहुत लम्बी चौड़ी है, उसमें परायेपन का लेश भी नही।

मुज़फ्फर कालीन पर गिर गया। उसके माथे से शराव का साग़र टकराया और एक ओर लुढक गया। नशे में उसका हाथ चादर पर कुछ ढूढता-सा लग रहा था कि सहसा उसकी उगलिया थाली में रखी हुई राहत-लुकुम नामक मिठाई में सन गयी। उसने शरमाते हुए भौहे उठायी, कुछ वडवडाया और अपराधियो की तरह मुस्करा दिया।

नर्तकिया नाच रही थी। वीणा के सुर हवा में विखर रहे थे। अफनासी ने सकेत किया—

"वस करो!"

सगीत जहा का तहा रुक गया। थकी हुई नर्तकिया दीवाल के सहारे खडी हो गयी। उनके मुह पर नर्तकी-सुलभ मुस्कराहट नाच रही थी।

"जाओ!" अफनासी वोला, "जो कुछ यहा रह गया है उसे लेती जाओ।"

मुज़फ्फर खर्राटे ले रहा था। दीवाल के उस पार पानी की रिमझिम फिर सुनाई पडने लगी थी। भारत की अखड वर्षा शुरू हो गयी थी।

चौथा अध्याय

निकीतिन ने गिनकर देखा—वर्षा शुरू हुई थी २२ मई से और वरावर अगस्त तक होती रही थी। हा, कभी कभी पानी की झडी रुक जाती लेकिन फिर वर्षा होने लगती। जुन्नर जाते समय उसने देखा था कि भारतीय रवी की फसल काट चुकने के तुरन्त वाद से ही खरीफ की फसल काटने की तैयारी करते है। यद्यपि इस समय कीचड के कारण आना-जाना कठिन था फिर भी किसान ज़मीन

गोड़ते-बोते थे और मरियल बैलो के झुडो को हाकते दिखाई देते थे। उसने लोगों से यह भी पूछा था कि यहा बोया क्या जाता है? उसे उत्तर मिला था—गेहू, जौ और दालें।

मौसम खराब होने के कारण बाहर निकलने की भी इच्छा न होती, लेकिन जब दिन स्वच्छ होते तो वह सराय से निकल पड़ता और नगर में चहलकदमी करने लगता। उन दिनो गर्मी थी। काली मिट्टी धूप में चमचमाती रहती। बिना खिड़कियो वाले मकानो के ऊपर से वर्षा से भीगते हुए पहाड़ दिखाई पड़ते। भारत की सर्दियो में तो रूस के वसन्त का मज़ा है। पृथ्वी कैसे लहलहाती है, जुन्नर के बागो के पेड़ो में कैसे रस भर जाता है—यह सब कुछ उसने महसूस किया।

निकीतिन वसन्त पर लट्टू था। उसे इस मौसम की हर चीज़ पसद थी। जुन्नर के मदरसो से आनेवाली नीरस ध्वनिया, धूप में चमकनेवाले सुनहरे गड्ढो को छपाक छपाक कर लाघनेवाले इत्तिफाकिया क़ाफिलो के गजे ऊट और बाज़ार में चलने-फिरनेवाले लोगों के पैरो से कुचले जानेवाले मिट्टी में पड़ी हुई गाजरो के अकुर—सभी जैसे उसे मस्त किये दे रहे थे। जुन्नर के बाज़ार के बीचोबीच, फेंटो और पगड़ियो के ऊपर, तरकारियो और फलो की टोकरियो के ऊपर, शराब से भरे हुए चमड़े के थैलो के ऊपर और पानी में भीगे हुए गोबर के ऊपर उसने एक खम्भा देखा। खम्भे पर एक हिन्दू फ़क़ीर खड़ा खड़ा अपने पार्थिव शरीर को नष्ट कर रहा था। कहते हैं कि वह पाच साल से इसी प्रकार खड़ा रहा है। अब तो उसे छठा साल चल रहा था। ऐसे लोग रूस में भी मिलते थे। निकीतिन के विचार कहा से कहा पहुच गये—"कितनी उत्तेजना रही होगी उसमें कि इतने वर्षों में भी वह उसका दमन न कर सका।"

निकीतिन सिर झुलाता हुआ उसके पास से निकल गया।

एक मसजिद देखकर तो उसे और भी अधिक आश्चर्य हुआ। यह एक बडी और सीढीदार मसजिद थी जिसपर खुदी हुई मूर्तिया टूट चुकी थी। मसजिद में अटपटी-सी मीनार थी। स्पष्ट लग रहा था कि यह हिन्दुओ का मन्दिर था जिसे मसजिद बनाया गया था। उसने मन्दिर का एक चक्कर लगाया। पत्थरो की मजबूती और सुन्दरता, असाधारण रूप और आकार और शिलाओ से उसका निर्माण देख देखकर वह हैरान हो रहा था। कैसा बढिया निर्माण है!

निकीतिन ने असद-खान को कई बार देखा था—झब्बेदार खूबसूरत लाल वितान की नक्काशीदार पालकी मे लोग उसे ले जाते थे। उसके आगे आगे लोगो को रास्ते से हटाते हुए उसके नौकर-चाकर दौडते-भागते थे। जब असद-खान की सवारी निकल गयी तो निकीतिन ने उसके पीछे थूक दिया।

उक्त स्मरणीय सन्ध्या के बाद से मुजफ्फर के दर्शन दुर्लभ हो गये। उसका अधिक समय अपनी चाकरी में ही निकल जाता। हसन अपने उत्तर का इन्तजार कर रहा था। उसे अब भी आशा बनी हुई थी। निकीतिन ने उसे धीरज बधाया—

"थोडा समय दो "

किन्तु हसन के विषय में मुहम्मद से बातचीत करने का निकीतिन को कोई उपयुक्त अवसर न मिला। उसे प्रतीक्षा करनी थी।

हा, बाजार के फकीर की भाति जिन्दगी जहा की तहा नही रुकी। उसमें बराबर परिवर्तन होता रहा।

धर्मशाला के यात्रियो में अनेक फारसी, खुरासानी और तुर्कमन थे, जो अफनासी की ही भाति पहली बार भारत आये थे।

ये तरह तरह के लोग थे। पर सभी जवान थे और सभी मजबूत, और सभी की आखो से हिंसा टपकती थी। एक ही कमरे में कई जने रह रहे थे। उनके पिचके हुए पेटो पर हमेशा पेटिया कमी रहती थी। वे कम खाते थे किन्तु खाते थे नदीदो की तरह। सबके सब हमेशा साथ रहते थे। सबके सब रूखे थे। सबके सब जिज्ञासु।

और अगर कही कीमती जवाहरातो या राजा-महाराजो के महलो के खज़ानो की चर्चा होने लगती वे वहा जरूर पहुच जाते और जैसे इस चर्चा का एक एक शब्द पी जाने को आतुर रहा करते।

शायद ही कोई दिन जाता हो जब उनमें से कोई किसी से तू-तू मैं-मैं न कर बैठता हो, किसी हिन्दू दूकानदार से हाथापाई न करता हो या पीकर अड-बड न बकता हो।

इनमें से एक आदमी से, दूसरो की अपेक्षा, अफनासी की अधिक गहरी छनने लगी।

यह आदमी हिरात का खुरासानी था। उसकी उम्र पचीस की थी। वह पाच वर्षों तक उजून-हसन की सेना में रहा था और अब उसने अपना गठीला बदन और युद्ध-कला बहामनी सुलतान के हाथ बेच डालने का निश्चय कर लिया था।

उसे घोडे अच्छे लगते थे। वह हमेशा निकीतिन के घोडे की तारीफ किया करता था जिसे सुनकर अफनासी का दिल थिरक उठता था।

यह खुरासानी प्राय निःस्वार्थी था। हा, दिन हो या रात, वह खाने के लिए बाकायदा निकीतिन के पास आया करता था।

फिर थोड़े थोड़े पैसे भी उधार मागता, परन्तु साथ ही वादा भी करता कि जैसे ही वह सुलतान की फौज में भरती हो जायेगा, अपना कर्ज चुका देगा। मुहम्मद, अफनासी पर हसा करता—

"लगता है तुम अपनी फौज अलग वना रहे हो," मुहम्मद चुटकी लेता, "मगर कही सुलतान को उसके फौजियो से महरूम न कर देना!"

मुहम्मद खुरासानी को कभी एक पैसा उधार न देता। उसका कहना था कि मैं अपना पैसा पानी में नही वहाना चाहता।

"वडा कजूस है!" खुरासानी ने निकीतिन से शिकायत की। किन्तु जव उसे मालूम हुआ कि खजानची का मालिक-अत-तुजार से अच्छा रब्त-जब्त है तो उसने उसके वारे में अपनी राय वदल दी।

"होशियार आदमी है।" खुरासानी वोला।

खुरासानी को लोग मुस्तफा कहकर पुकारते थे। वह खजानची की उपेक्षापूर्ण वातो से परेशान न होता, वल्कि उन्हें इस कान सुनता और उस कान निकाल देता। साथ ही वह उसका विश्वासपात्र वनने का भी प्रयत्न किया करता।

मुस्तफा, मुहम्मद से सवाल कर वैठता—"सुना है हर फौजी को मुफ्त एक घोडा, हथियार और खाना मिलता है और ऊपर से तनख्वाह। और हा, लडाई में जो माल हाथ लगता है उसका नब्वे फीसदी फौजियो में वाट दिया जाता है। ठीक है न यह?"

"विल्कुल ठीक," खजानची ने जवाव दिया, "ऐसा न होता तो क्यो तुम्हारी सूरत वहा दिखाई देती?"

"मैं तो खुदा के फज्ल से आया हू।" शान से खुरासानी ने

जवाव दिया, "हम सव काफिरो को मिट्टी में मिलाने जा रहे हैं मुलतान के पास।"

"टिड्डिया है, टिड्डिया!" खज़ानची निकीतिन से कहने लगा, "इनके दिमागो मे यही वाते तो आती है – पेट में खाना ठूसो, शराव पीकर अड-वड वको, शरारत करो। देख रहे हो न, ये लोग असद-खान की फौज में नही जाते, जानते हैं कि सुलतान ज्यादा पैसा देता है। ऊह, खुदा का फज्ल!"

"और तुम क्या हो?" निकीतिन ने सोचा। वह जानता था कि मुहम्मद खुरासानी के स्वभाव से परिचित था किन्तु खुरासानी का दिल इतना साफ था और वह इतना स्पष्टवादी था कि निकीतिन उसपर लट्टू हो चुका था।

"उसे लफ्फाज़ी नही आती," निकीतिन ने सोचा और इसी लिए मुस्तफा उसे प्यारा था। इन 'लालचियो' में से एक के प्रति निकीतिन के उदार होने का नतीजा यह हुआ कि उसके सभी साथी अफनासी की इज्जत करने लगे। वे उसे देखकर सिर झुकाते, उसके घोडे की देख-रेख करने में उसकी मदद करते और उसके लिए सव कुछ करने को तैयार रहते।

"तुम्हारे वारे में मैंने अपने साथियो से कह दिया है," एक वार मुस्तफा ने उससे कहा, "हम सव वीदर चलेगे। साथ साथ। हम सव तुम्हारी मदद करेगे रास्ते में!"

"लो, दोस्त भी क्या वढिया मिला!" अफनासी ने मन ही मन सोचा।

खज़ानची कहकहा लगा रहा था–

"जलाले सुलतान यूसुफ कूच कर रहे है। काफिरो चौंको, सावधान हो जाओ!"

मुहम्मद रईसो की तरह रहता था। जुन्नर में उसके बहुत-से परिचित थे, वह किसी के साथ भी रह सकता था। निकीतिन जानता था कि खज़ानची के कई मित्रो ने उससे अपने साथ रहने का अनुरोध भी किया था, पर खज़ानची ने सराय से बाहर जाना न पसन्द किया।

"यहा किसी का अहसान तो नही!" खज़ानची निकीतिन को समझाता, "पैसे देता हू और जो चाहता हू करता हू।"

खज़ानची की एक ही कमज़ोरी थी--शराव। इस मामले में वह प्राय अल्लाह का कानून तोडा करता था। जब वह नशे में धुत्त रहता, तो उसके कमरे के दरवाज़े पर उसके नौकर-चाकर डटे रहते और किसी को भीतर न जाने देते।

खज़ानची को अफनासी के सामने कोई झिझक न होती। जब खज़ानची खूब चढा जाता, तो हाफिज़ की शायरी उसकी ज़बान से ढरकने लगती। इस शायरी में हुस्न की दास्तान होती और एक एक तिल पर बुखारा और समरकन्द कुरवान किये जाते।

"यदि तुम खुद मौज नही कर सकते तो फिर सुलतान की सखावत, ताकत, इज्जत का मतलव ही क्या तुम्हारे लिए?" वह शराव के नशे में वडवडा उठता, "हम सवको मरना है, इसलिए जल्दी जल्दी मौज लूटो, वहार लूटो "

"मुस्तफा भी यही कहता है!" निकीतिन ने हसी उडाते हुए कहा।

"मेरे विचारो की उसके विचारो से तुलना मत करो!" खज़ानची ने क्रोध मे आकर कहा, "कुदा और वासुरी एक ही लकडी की होती हैं, पर कुदे में से मीठा सगीत तो नही फूटता। उसके कोई रूह नही होती।"

"अच्छा, अच्छा! पियो भी! मेरे लिए सव वरावर है,"

निकीतिन न उत्तर दिया, "पर अगर जिन्दगी में मौज ही लूटना है, तो फिर ठोकर खाकर गिरना आसान है।"

परदेसी की आन्तरिक कशमकश समझकर खजानची झुंझला गया।

"देखूंगा तुम कैसे रहते हो!" वह क्रोध में आकर बोला, "मुझे अपने ईसामसीह के उसूल मत समझाओ। अगर तुम्हें अपने मजहब में इतना यक़ीन है तो फिर मेरे पास क्यों बैठते हो? हमारे रीति-रिवाजों की इज्ज़त क्यों करते हो? आं? फिर भारत से चले ही न जाओ!"

इन शब्दों ने निकीतिन की दुखती हुई रग छू दी थी। सचमुच चारों ओर परायापन था। पराये देवताओं की प्रार्थनाएं होती थीं। और उसमें कई बातों के विरुद्ध आवाज़ उठाने की शक्ति न थी। इसके विपरीत, उसे इस देश में, इसके वासियों में और उनके धर्म-कर्म में अधिकाधिक रुचि होने लगी थी।

खज़ानची मिकेशिन या काशीन से गया-बीता न था। पर उसका ज्ञान उनसे कहीं अधिक बढ़ा-चढ़ा था। जब वह देखता कि सूदख़ोर-व्यापारी मुसलमान दस्तकारों से उनकी दस्तकारियां मुफ़्त के दामों ख़रीद रहे हैं तो वह दस्तकारों का हमदर्द बन जाता। जनता में बड़े बूढ़ों की इज्ज़त, हिन्दुओं की अतिथिप्रियता और फ़क़ीर—यह सचमुच आश्चर्य की बात थी।

भारत के नाच-गानों, अद्भुत मन्दिरों और शान्त और स्वाभिमानी किसानों में निकीतिन को भारत के समाज की महान आत्मा के दर्शन हुए और उसमें प्रवेश करने की उसकी उत्कंठा और भी प्रबल हो उठी।

मुहम्मद की कहानियों से उसे भारत की समृद्धि, वहां की विविध

रोचक वातो और उसके पास-पडोस के देशो के वारे में वहुत-सी उल्लेखनीय वातो की जानकारी हुई।

खज़ानची उन दूसरे व्यापारियो की तरह न था जिन्हे सिर्फ अपने ही हानि-लाभ का ख्याल रहता है। उसने निकीतिन से लका द्वीप की चर्चा की, जहा जगली जातिया रहती थी और जिसके एक पहाड पर आदम का एक पदचिह्न सुरक्षित था। उसने उसे दूरस्थ चीन के वारे में भी वताया जहा से चीनी मिट्टी के वरतन और हाथी-दात की वनी अद्भुत चीज़ें आती थी। उसने गोलकोडा के हीरे की खानो और हिन्दुओ के धर्म का भी ज़िक्र किया।

"मै वहुत समय से इसी मुल्क में रह रहा हू," खज़ानची ने कहा, "लेकिन भारत के सारे मज़हवो को मै भी नही जानता। इन मज़हवो की तादाद वहुत ज्यादा है—कोई विष्णु को मानता है, तो कोई वुद्ध को और कोई दूसरे देवताओ को ये लोग सारी दुनिया को अपने ही देवता का अक्स समझते है। उनका ख्याल है कि आदमी एक ही वार नही पैदा होता, मरने के वाद उसकी आत्मा दूसरे शरीर—पशुओ तक के शरीर धारण करती है। इस्लाम सारे भारत में नही पाया जाता। हिन्दुओ के मन्दिरो को तो तुम खुद ही देखोगे। शायद ही तुम उनके धर्म को अच्छी तरह जान सकोगे। वे अपने धर्म-सिद्धान्तो को न सिर्फ हम लोगो से वल्कि अछूतो, दासो तक से छिपाकर रखते है।"

वेशक, निकीतिन ने यह अनुभव किया था कि जव भी कभी वह रास्ते में किसी हिन्दू से उनके रीति-रिवाजो की चर्चा छेड देता तो वे उससे कन्नी काट जाते और उसकी इन वातो का कोई जवाव न देते।

शायद इसका कारण यह रहा हो कि वे लोग उसे मुसलमान समझते थे।

"हा, कभी मैं उनसे खुलकर अपने बारे में कहूगा तो शायद वे मेरा यकीन करेंगे और मुझसे खुलकर बातें करेंगे," उसने विचार किया।

निकीतिन धर्मशाला में ही रहा। धर्मशाला के निवास के दौरान में उसकी त्वचा फिर से सफेद हो गयी। नतीजा यह हुआ कि उसके प्रति हिन्दुओ की उत्सुकता बढती गयी। पर उसकी मुसलमानी सूरत-शक्ल और उसके सगी-साथियो के कारण, पहले की ही तरह, हिन्दू उससे खिचे रहे।

एक बार अफनासी की भेंट एक हिन्दू से हो गयी। हिन्दू पत्थर के बाडे की छाया में एक बरतन में भात लिये बैठा था। निकीतिन ने उसे पुकारा और उसने चौंककर अपना दुबला-पतला और भूख से कुम्हलाया हुआ चेहरा उसकी ओर घुमा दिया। फिर, भात जमीन पर फेंकते और पीठ सीधी करते हुए वह उठा और चला गया। उसने दुबारा निकीतिन पर नजर भी न डाली। बाद में अफनासी को पता चला कि हिन्दू, परदेसियो के सामने खाना नही खाते और यदि मुसलमानो की निगाह खाने पर पड जाये तो फिर वे उसे छूते तक नहीं। उनकी दृष्टि में वह निकृष्ट हो जाता है। इस अजीब देश में उसे फूक फूककर कदम रखना चाहिए।

किसी न किसी हिन्दू से बातचीत करने की उसकी बडी इच्छा थी, फिर भी जुन्नर में वह इसके लिए अवसर न निकाल सका।

"सुनो, खोजा," एक बार उसने खजानची से पूछा, "कहते हैं कि यहा पहाडो के जगलो में बन्दरो का बादशाह रहता है और उसकी पूरी फौज उसके साथ रहती है। वहा बाजीगर घूमा करते है यह ठीक है?"

मुहम्मद अनिश्चित ढग से बोल उठा—

"हा, मैंने भी सुना है   हिन्दू लोग इन बातो में यकीन करते हैं।"

"और तुम?"

"मै क्या?" खजानची सहसा क्रुद्ध हो गया, "तुमने हिन्दू वाजीगरो को देखा है? देखा है। जो कुछ वे करते हैं उसतक हमारा दिमाग तो नही पहुचता। यह तय है कि वे अपने करिश्मे विना शैतान की मदद के नही कर सकते। प्रेतो से उनकी दोस्ती है। वे कुछ भी कर सकते है   "

निकीतिन को उसके क्रोध का कारण समझ में आ गया। प्रेतो के बारे में कहना-सुनना ठीक नही। उन वहादुर 'लालचियो' तक की आखो में उसने हिन्दू फकीरो के प्रति एक दकियानूसी भय देखा था। इतना ही नही, जब उसने स्वय उनके करतब देखे थे तो भय की एक सिहरन उसके शरीर में भी दौड गयी थी।

वेशक, सबकी आखो के सामने, विना किसी सहारे के फर्श पर खडे हुए डडे पर चढना, या ज़मीन में गडे हुए चाकुओ पर नगे सीने के बल कूद पडना मुमकिन हो सकता है, लेकिन फ़र्श पर से उठना और हवा में लटके रहना तो जरूर शैतान का ही काम है। यदि उसने ये सब बाते अपनी आखो से न देखी होती तो इन बातो पर कभी विश्वास न किया होता।

हा, यह घटना उसने शाम के समय आग के प्रकाश म भयानक सगीत और हिन्दू हमोडो की चीखो के बीच देखी थी। एक फकीर हाथ पर हाथ रखे ज़मीन से कई अगुल ऊपर धीरे धीरे उठ गया और जैसे हवा में लटक गया। फिर वैसे ही धीरे धीरे ज़मीन पर आ गया।

इस वाज़ीगरी के बाद तो आदमी किसी भी बात पर विश्वास कर सकता है!

बेशक, इस देश की हर चीज़ अन्य देशों जैसी नही। मौसम, जानवर—गिलहरिया, वनो की भाति नगर की सडको पर भागे भागे फिरनेवाले नेवले, तरह तरह के केचुलवाले साप, जिन्हे मार डालना हिन्दू पाप समझते हैं और जिनके दिख जाने पर वे उनसे बचकर नकल जाते है, वन और लोगो के रीति-रिवाज—सभी कुछ निराले हैं।

और यदि उसे सोना और जवाहरात नही भी मिलते तो इस परीदेश की जानकारी प्राप्त करना और उसकी सच्चाई का अपने वतन में वर्णन करना ही कहा का कम है? निस्सदेह यह बहुत बडी बात है! अफनासी तेरा यहा आना बेकार नही गया।

"बरसात अब जल्दी ही खत्म होगी," मुहम्मद बोला, "मै तो पहले कोल्हापुर में महमूद गवान के पास जाऊगा। और तुमने क्या तय किया है?"

"मैं बीदर जाऊगा। मुझे घोडा बेचना है। जल्द ही मैं फक्कड होनेवाला हू।"

मुहम्मद दाढी पर हाथ फेरने लगा।

"तुमने रूस के बारे में जो जो बाते बतायी है उनपर मैंने बहुत सोचा-विचारा। वहा तक पहुचने में वक्त कितना लगेगा?"

"जाने पर!" निकीतिन ने उत्तर दिया, "अच्छा काफिला मिल गया तो एक साल लगेगा बशर्ते कि रास्ते में कोई लडाई न हो। वैसे तो खतरा है ही "

"एक साल? यह तो ज्यादा नही हुआ। तुम्हारे यहा मुसलमानो पर जुल्म तो नही होते?"

"हमारे यहा विदेशो से आये हुए सौदागरो को पूरी आजादी रहती है। और भारतीयो से तो हमारे लोग अपनो की तरह मिलेंगे।

हमारे देशवासी अधिक से अधिक जानने के इच्छुक रहते है, लेकिन पता नही क्यो वे भारत के ही प्रति सबसे अधिक खिचते है।"

"सुनो, यूसुफ! मैं महमूद गवान से तुम्हारी बात चलाऊगा। वह बहुत गुनी है। शायद हम एक काफिला रूस भेजेगे। तुम उसे रास्ता दिखाओगे न?"

"जरूर," अफनासी बोला, "मैं काफिला ले चलूगा।"

"अच्छी बात है। हसन तुम्हे बीदर तक ले जायेगा और मेरा घर दिखायेगा। तुम मेरे घर रह सकते हो। वहा मेरी वापसी का इन्तज़ार करना। मैं तुम्हे बताऊगा कि महमूद गवान का क्या विचार है।"

"जरूर इन्तज़ार करूगा और हा, ख्वोजा, हसन को मेरे हाथ बेच दो।"

"हसन को? उसे तुम मेरा तोहफा समझकर ले लो न।"

"यह कैसे हो सकता है"

"पैसा-वैसा मै लूगा नही। यह कोई खास तोहफा नही है, यूसुफ। तुम मुझे रूस का रास्ता दिखाओ तो जैसे सब कुछ मिल जायेगा।"

वर्षा शीघ्र ही समाप्त हो गयी। जिस कमरे में अफनासी सोता था, एक दिन प्रात काल वही उसके कान में पक्षियो का सगीत पडा। पहले भी जब सूर्य बादलो से झाकता था, तो ऐसे ही कलरव उसे सुनाई पडते थे, किन्तु इस सगीत में कोई ऐसा आकर्षण था कि वह तुरन्त उठ बैठा।

वह सडक पर निकल आया। कल शाम तक बाडे के पास लगे हुए आडू का जो वृक्ष धूमिल और नग्न-सा लग रहा था वह आज हरा-भरा था। नाजुक पत्तियो से प्रकाश-सा फूट रहा था।

उसकी आंखों के सामने गुलाब की एक कली चिटखी, उसमें से सोने का पराग चमका और भीनी भीनी गन्ध वातावरण में फैल गयी।

बांसों की बनी, भीगी हुई छत से अप्रिय-सी तेज़ आवाज़ सुनाई दे रही थी। एक मोर, सीना फुलाये और पंख फटकारे पंजे से ज़मीन कुरेद रहा था। एक गिलहरी अस्तबल में उछल-कूद मचा रही थी। शीघ्र ही उसके पास एक और गिलहरी आ गयी और दोनों एक दूसरे के पास आकर चिचियाने लगीं।

घोड़े की तेज़ और उत्तेजित-सी हिनहिनाहट सुनाई पड रही थी।

इस दिन सराय से होकर धीरे धीरे एक क़ाफ़िला गुज़र रहा था—बड़े बड़े सींगों वाले भूरे बैलों से जुती हुई गाडियों पर भालों और तीरों से लैस, लम्बे कद के सांवले गाड़ीवान बैठे थे। उनके चेहरे विचित्र ढंग से रंगे हुए थे। गाडियों पर कुछ बच्चे भी थे, जो चिल्ल-पों कर रहे थे, और सफ़ेद और नीले दुपट्टे पहने और सिरों पर फूलों की वेनी लगाये औरतें रास्ते में एक दूसरे को पुकार-पुकारकर बतिया रही थीं।

"बंजारे आ गये!" मुहम्मद बोला, "इसके माने है, समय आ गया तुम भी जा सकते हो इस काफ़िले के साथ।"

"ये बंजारे कौन हैं?"

"घुमक्कड़ जातियां। आज यहां, कल वहां। राजे-महाराजों और ख़ानों का सामान पहुंचाती रहती हैं। शायद ये लोग असद-ख़ान द्वारा इकट्ठा की गयी मालगुज़ारी बीदर ले जा रहे हैं। तुम भी उनके साथ हो लो। वे यहां से कब कूच करेंगे इसका पता मैं लगा लूंगा।"

वंजारे तीसरे दिन रवाना हो गये। उनके साथ निकीतिन, कुछ व्यापारी और कई 'लालची' भी हो लिये, उनमें मुस्तफ़ा भी था।

जुन्नर छोडते समय अफनासी को एक बात का खेद बराबर बना रहा—वह मुजफ्फर से विदा न ले सका था। इन दिनो तुर्कमन दिखाई भी न पडा था।

"कोई बात नही, भगवान चाहेगा तो फिर मिलेगे," जुन्नर की हद पर बसे हुए आखिरी मकान से गुज़र जाते हुए अफनासी ने सोचा।

"राम, राम, राम रे राम!"

"मैंने खुद ही देखा था!"

"उसे तो पत्थरो से मार डालना चाहिए!"

अफनासी ने सिर उठाकर सडक से आती हुई आवाज़ें सुनी। अभी अभी तो उसकी आख लगी। अब लो! लेकिन आवाज़ें बराबर पास आती गयी। उसकी उत्सुकता बढ गयी और आवाज़े जैसे उसे अपनी ओर आकृष्ट करने लगी। फिर वह बाहर चला गया।

सराय के सामने से लोग एक जवान औरत को घसीटे लिये जा रहे थे। उसके बाल बिखरे थे, कपडे फटे थे और चेहरे पर जैसे कोई भाव न था।

"यह सब क्या है?" अफनासी ने हसन से पूछा।

हसन को कही से कुछ पता चला—औरत ने कोई जडी-बूटी बनाकर किसी रईस को ज़हर दे दिया है। अब लोग उसका इसाफ करने के लिए उसे पकड लाये हैं।

निकीतिन ने सिर हिला दिया।

दो दिन पहले ही उसने बीदर में प्रवेश किया था। उससे पहले कोई भी युरोपीय इस नगर में न आया था। इन्ही दो दिनो में उसने इतना कुछ देख लिया था कि कुछ पूछो नही। बेशक, नगर में उसने कोई बुराई न देखी थी—मज़बूत दीवाले, घरो के पास बगीचे, बडा-

सा बाज़ार और उसका एक भाग ऊपर से पटावदार। सडको के दोनो ओर ताड और सदावहार पेडो की कतारे। सफेद बाडो पर चमकदार फूलो वाली लताए लहरा रही थी। नगर के पूर्वी भाग में—किला। ऊची ऊची, मनहूस-सी मीनारो के सामने खाई थी। खाई के शान्त जल में सफेद कोकाबेलिया खिल रही थी। खाई के उस पार पत्थर का एक सकरा-सा पुल था। किले में तीन फाटको से होकर जाया जा सकता था। किले में चारो ओर पहरेदार और सुगी थे। वहा केवल मुसलमानो को ही जाने दिया जाता था। वहा के मकबरो के बडे बडे और रगीन गुम्बदो और किले की दीवालो के ऊपर से दिखाई पडनेवाले मडपो और महलो के बरामदो से पता चलता था कि वहा विलासिता की कोई कमी नही। वहा सुलतान मुहम्मद-शाह रहता है, वहा महमूद गवान का महल है जो इस समय लडाई में गया है। वहा दूसरे राव-रईस रहते हैं।

खज़ानची मुहम्मद का घर किले में नही, नगर में है। उसका मकान रईसाना ढग का है। दुमजिला और बाग-बगीचेवाला। बगीचे में एक बडा-सा तालाब है। तालाब में लट्ठो पर बनी एक सरचना है जिसपर शाखाए और मिट्टी के ढेर हैं। इस मिट्टी में गुलाब और चमेली खिले है। तालाब के हरे-से जल में मछलिया और कछुए तैरते दिखाई पड रहे है। वही कमल पुष्प भी है। मकान में शीतलता है, सज-धज है। बगीचे से निकलनेवाली सुगन्ध तो उसमें और भी मादकता बिखेरती है। वहा स्नान के लिए सगमरमर के दो तालाब हैं जिनमें बहता हुआ शीतल जल रहता है। और यह जल उसमें आता है एक गहरे कुए से बास के पाइपो से होता हुआ

शहर सचमुच बडा है, अद्‌भुत है।

यदि अफनासी, मुहम्मद के मकान में रहने लगे तो फिर उसे बीदर की शिकायत का मौका ही न मिलेगा।

यद्यपि अफनासी ने खजानची का रईसाना मकान देखा था, फिर भी हसन और खजानची के दूसरे चाकरो को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि अफनासी ने सराय ही में रहने का निश्चय किया है। वस्तुत मालिक की अनुपस्थिति में उसके मकान में रहना निकीतिन को ठीक न जच रहा था।

यही से सारी वात शुरू हुई। वह बाजार में चहलकदमी करता हुआ, हरे, लाल और सन्तरई रगो के रेशम, रग-विरगे रत्नो, धातु की तश्तरियो, शस्त्रास्त्रो, काले पत्थर पर बने चादी के कामवाले शृगार के सामानो और सजावट की चीजो को देख ही रहा था कि सहसा उसे लगा जैसे पैसेवाली उसकी चमडे की पेटी हलका गयी। उसे मुश्किल से ही पेटी पकडने का समय मिला था कि पीछे से किसी ने उसे जोर से धक्का दिया और जब वह घूमा तो एक बदमाश बैंगन से भरी गाडी के नीचे गायब हो गया। इतने ही में अफनासी की कमर में एक ठूसा पडा और जब वह उस ओर देखने को मुडा तो किसी ने उसे पीछे से धक्का दे दिया। अब उसने अपनी पेटी खोल ली और इर्द-गिर्द जमा लोगो को कधो से धकियाते हुए हटा दिया।

"हु-ह! शैतान कही के!"

उसने अपनी पेटी लपेटी, उसे छाती के पास छिपाया और भीड से हटकर एक ओर चल दिया। उसके पीछे पीछे एक बुढिया भी, आखें मिचकाती और बडबडाती हुई, हो ली और उसे अपनी बेटी के पास आने का न्योता देने लगी—

"अजी मेरी बेटी तो सुलतानो के काबिल है, सुलतानो के

काबिल !" बुढिया ने निकीतिन की आस्तीन पकडी और उसके साथ हो ली। ठीक है—होगी उसकी बेटी सुलतानो के काबिल !

किसी तरह उस दलाल बुढिया से अपना पिंड छुडाकर निकीतिन एक छोटी-सी दूकान पर पहुचा और कुछ मूल्यवान पत्थर माग बैठा। भूरी दाढी और पोपले मुहवाला एक मुसलमान उसे, बडी सतर्कता से, एक अंधेरे कमरे में ले गया और लोहे की पट्टियो से मढे हुए एक सन्दूक में से लकडी का एक डब्बा निकाला।

"हीरे ! सबसे बडे हीरे !"

फसी कोई मुर्गी ! हीरे की जगह काच !

अफनासी देखते ही वहा से चला आया।

और आज ही यह भी हुआ—लोगो ने उस औरत को पकड लिया था जिसने ज़हर दिया था

हसन ने सारी कहानी कह सुनायी—एक रईस की बडी पत्नी छोटी से डाह करती थी और पति को वश में करने के लिए उसे कोई दवा पिलाना चाहती थी। आखिर बडी पत्नी को एक डाइन मिल ही गयी। उसने उसे कुछ सोना दिया और दवा की एक शीशी खरीद ली। शायद उस डाइन ने ही दवा बनाने में ग़लती की थी, शायद बडी बीवी ने, किसी पेय में पति को जरूरत से ज्यादा दवा पिला दी थी—मतलब यह कि खाविन्द साहब दुनिया से तशरीफ ले गये।

बीदर ! बीदर ! और यहा की औरते ! हुन्ह !

इसी समय कहीं से अहमद नाम का एक सहयात्री आ टपका।

"सलाम !"

"सलाम ! खोजा, घोडा बेच दिया ?"

"तुम्हारे यहा घोडा बेचना ! दलाल रोडे अटकाते है—दाम गिराने की कोशिश करते है !"

"तो अल्लाउद्दीन के बाज़ार में चलोगे?"

"यह है कहा?"

"बीदर से कोई अस्सी मील। वहा शेख अल्लाउद्दीन की यादगार में प्रति वर्ष एक बडा-सा मेला लगता है और तरह तरह का सामान बिकने आता है। हज़ारो घोडे आते है वहा। चलोगे?"

"अभी नही कह सकता "

अहमद गायब हो गया। उसके सफेद सफेद दात और बाहर निकली हुई सी आखो की नीली-सी सफेदी झलक गयी।

सराय के सामने एक सकरी-सी गली थी जिसके छोर पर गवान-चौक दिखाई पड रहा था। चौक में लगभग बनकर तैयार हुए एक मदरसे की नुकीले सिरेवाली मीनारे और सुनहरे गुम्बद थे। मदरसा महमूद गवान की ओर से नगर को दिया गया एक उपहार था। मदरसे के लिए कोई तीन हज़ार दुर्लभ हस्तलिखित पुस्तको की भी व्यवस्था की जा चुकी थी।

भवन-निर्माण के कारण चौक-भर में धूल बिखरी हुई थी। वहा से ऊटो की आवाज़ें सुनाई दे रही थी। अभी हाल ही में वे सगमरमर के बडे बडे चौकोर टुकडे लाये थे।

बुरका पहने हुए एक स्त्री हल्के हल्के कदम बढाती चली जा रही थी। उसने सिर घुमाकर निकीतिन पर एक नज़र डाली।

एक हिन्दू, जिसका सिर नगा था, एक भारी-सी गाडी में धक्का लगा रहा था और पसीने पसीने हो रहा था।

कोने से तीन मोटे मोटे आदमियो की आकृतिया दिखाई दे रही थी। वे हाथ झुलाते हुए कुछ चिल्ला रहे थे। उनकी कुछ बाते कानो में पड भी रही थी—

"दस हाथ "

"टमर महगा है यह कोई रेशम नही है. "

लग रहा था—वे सौदा पटा रहे हैं।

पराया नगर। कैसे विचित्र है वह। वदमाशो की निर्लज्जता की कोई हद नही। वगीचे से निकलनेवाली शीतलता भी उसे शान्ति न दे रही थी।

"हसन! कैसा रहे अगर हम अल्लाउद्दीन के मेले में चले? क्या वहा मै अपनी लौंग और मिर्च वेच डालूगा?"

"वेच डालोगे, खोजा।"

"और वहा नयी नयी चीजें भी देखने को मिलेगी न?"

"ओह, वहा तो सारे भारत से सौदागर आते हैं। वहा देखनेवाली वहुत-सी चीजें है।"

"मेला जल्दी ही शुरू होगा?"

"परसो से।"

"यानी माता मरियम के पर्व पर। घूर क्यो रहे हो? माता मरियम यानी ईसा की मा। तुम्हे तो जानना चाहिए।"

"जानता हू। ईसा का जिक्र कुरान में भी आया है।"

"जिक्र आया है! वह एक ही तो पैगवर था। मुहम्मद तो तुम्हारी खोज है, है न?"

"खोजा, अगर पैगवर एक था तो दूसरा क्यो न होता?"

"यही तुम सव कहते हो खैर तैयार हो जाओ। अल्लाउद्दीन के मेले में चलेंगे।"

"हम खजानची का इन्तजार नहीं करेंगे क्या?"

"कव आयेगा खजानची? घोडे पर मैंने सौ रुवल लगा दिये हैं। रुवल रूमी दीनार। समझे? अव इसे वेच ही डालना चाहिए।"

"आज चले ? "

"तो क्या, तुम्हारे पास बहुत कुछ धरने-उठाने को है ? लम्बी लम्बी तैयारिया करनी हैं क्या ? "

"नही, यह बात नही अब दुपहर हो चुकी है ! "

"गावो में ज्यादा खतरनाक पिस्सू है क्या ? "

हसन हस दिया।

"खोजा, तुम होशियार आदमी हो। तुम्हारी इच्छा ही मेरे लिए कानून है। चलो।"

जब तक हसन अस्तबल से घोडा लाये लाये तब तक निकीतिन मसालो का गट्ठर ले आया और उसका इन्तज़ार करने लगा।

मेरी इच्छा कानून है। यह हसन भी बडा अजीब है। मैंने कह दिया—"तुम आज़ाद हो !" और वह सुनते ही जैसे घबडा गया और पहले तो कुछ न समझा, फिर कहने लगा—"नही, नही ! "

और अगर विचार किया जाये तो हसन का कहना ठीक था—आज़ाद हसन जायेगा कहा ? फौज में भरती होगा ? नौकरी करेगा ? फौज में जान का खतरा है और नौकर को कोई पैसा नही देना चाहता। देखो न बाज़ारो में कितने गुलाम बिकते हैं। तो फिर जायेगा कहा ? हसन के कोई सगे-सबधी भी नही। उसे मुह छिपाने को कोई जगह नही। उसे तो यही बदा है कि ज़िन्दगी-भर किसी की परछाई बना रहे। क्या हाल है बेचारे का !

आज तक हसन, निकीतिन के पास गुलाम की हैसियत से ही रहा था। और यद्यपि अफनासी देखता था कि उसका गुलाम कम खाता है और उसकी जेब का ख्याल रखता है, फिर भी पैसा तो खर्च ही होता है, खर्च ही होता है

"लाओ घोडा ! ओ-हो ! चाहते ही नही कि कुछ लादा जाये ? कोई बात नही, सह लोगे ! अच्छा तो यह टॅटुआ तो न फटकारो

वडे शैतान हो। जव वेच दूगा और कोई धमधूसर खान सवारी गाठेगा तो पता चलेगा। हा, मगर किया क्या जाये! हज़रते खान जहा वैठ गये–वैठ गये। अपने आप उतरेगे भी नही। उसकी आदत ही डाल लो   अच्छा हमन चलो अल्लाह् का नाम लेकर!"

और एक वार फिर अफनासी भारत की भूमि नापने चल पडा –खुश, अथक, दृढ निश्चयी, सतर्क, सावधान।

सितम्वर का महीना शुरू हो चुका था। पानी अव भी छुटपुट वरस जाता। पर सर्दी का मौसम निकट था। दिसम्वर दूर नही था। इस समय गर्मी और वर्षा के सकटपूर्ण महीनो के वाद साफ़ आसमान और मज़े मज़े चलनेवाली वयार आदमी को मस्त वना रही थी।

उसने दक्खन के पठारो पर निगाह् डाली और उसे याद आ गयी अपने त्वेपी की। उसने पोपलर के वडे वडे वृक्षो को देखा और उसकी मातृभूमि उसकी कल्पना के आगे घूम गयी। उसके ओठो पर एक मधुर मुस्कराहट फैल गयी।

खेतो में गेहू के ऊचे ऊचे पौधे तथा भाग की हरी हरी पत्तिया और जौ की वालिया सिर उठाये खडी थी।

वह देख रहा था और सोच रहा था–"एक ही ज़मीन, एक ही खान-पान, एक ही जैसे सुख-दुख–क्या रूसी, क्या भारतीय। काश सूखा न पडता तो ज़मीन कितना सोना उगल देती   "

एक गाव में उसने देखा—एक किसान अपने हल में नयी मूठ लगा रहा था। अफनासी ने घोडा रोका और किमान की मदद करने लगा। यह देखकर हसन को भी आश्चर्य हुआ। किसान तो पहले डर ही गया था। निकीतिन ने हल ठीक कर दिया और सुस्ताने वैठ गया। उसने पान निकाला और किसान की ओर वढा दिया। उसने पान ले लिया और कुछ पूछने और कुछ समझाने लगा। किन्तु दोनो एक दूसरे की वाते न समझ सके। निकीतिन अपने रास्ते पर चल दिया, और किसान धूप से वचने के लिए माथे पर हथेली लगाये वहा कुछ देर तक खडा खडा, उसे जाते हुए देखता रहा—साश्चर्य और स्नेहपूर्ण आखो से।

और न जाने क्यो निकीतिन का दिल भर आया

चारो ओर दूर दूर तक फैला हुआ मैदान पशुओ और आदमियो से भरा पडा था। सभी ओर सफेद, नीले और पीले तम्वू सिर उठाये खडे थे। स्वच्छ आकाश में धुए के वादल उठ रहे थे।

यही, वीदर से कोई अस्सी मील दूर, सारा भारत मौजूद था—पश्चिम से, नर्मदा के तटो से आये हुए पशु-विक्रेता, पूर्व से, दोआव से आये हुए जूट के सस्ते कपडो के व्यापारी, मलावार के तम्वाकू-विक्रेता, शस्त्रनिर्माण के लिए प्रसिद्ध गुलवर्गा क्षेत्र के सौदागर, दिल्ली और विजयनगर के जौहरी, उत्तर-पश्चिम के सूखे क्षेत्रो से आये हुए धान और कपास के दलाल और ढाका और वनारस के पडित, नागपुर और हैदरावाद के मुल्ले और सभी जगह के गरीव-गुरवे।

इस सारे के सारे जन-समूह में भिन्न भिन्न जातियो के, भिन्न भिन्न भापाओ के, भिन्न भिन्न धर्मो के और भिन्न भिन्न रीति-रिवाजो के लोग आपस में वातचीत करते, वहस-मुवाहसे करते,

हा करते, ना करते, दूसरों के आगे हाथ फलाते, उपदेश झाडते, रोते-गाते, चिल्ल-पों करते, ठहाके लगाते। दस ही दिनों में ये सब लोग अपना अपना सामान खरीद-बेचकर और तरह तरह की सूचनाए इकट्ठा कर, देश के भिन्न भिन्न भागों की ओर चल देंगे।

हसन हमेशा घोडे के पास बैठा रहता और अफनासी बाजार के चक्कर लगाया करता। वह घोडा बेचने में जल्दी न करना चाहता था। मेला समाप्त होते होते उसकी कीमतें बढ जाने की सम्भावना थी।

महीन से महीन रेशम, हाथी-दात की खुदाई की बढिया से बढिया चीजें, दुर्लभ रत्न—यहा सभी कुछ मिल सकता था। इतनी दूर का सफर करके उसे कोई पछतावा न रह गया था।

उसने हिसाब लगाया कि वह औसत दाम पर अपने मसाले और घोडा बेचकर दस ऐसे रत्न खरीद सकेगा जिनका कभी वह स्वप्न तक न देख सकता था।

इन रत्नों का मूल्य, रूसी मूल्य की तुलना में, इतना कम था कि उसे आश्चर्य हो रहा था।

"ये जवाहरात आते कहा से है ?" उसने उस हिन्दू से सीधा-सादा प्रश्न किया जिसने उसे सुलेमानी पत्थर दिखाया था।

हिन्दू ने उत्तर दिया—

"मै नही जानता। मैंने खुद ये चीजें खरीदी हैं," वह हस दिया। ऐसा लग रहा था जैसे वह बताना ही नहीं चाहता।

अफनासी विचारमग्न हो गया। उसने सुन रखा था कि गोलकोडा और रायचूर में सुलतान की हीरो की खाने है और देश के दूर दक्षिण में विजयनगर राज्य में सोने की जन्म-भूमि। पर खानों में किसी को जाने की आज्ञा नहीं। और सोने तक पहुचना भी

आसान नही। "लेकिन ये जवाहरात मिलते कहा है?" सैकडो वार तो यह प्रश्न उसने अपने आपसे किया होगा, "यह जानना चाहिए। और जब जान लूगा तो वहा जरूर जाऊगा।"

अन्तत उसने चौल से खरीदी हुई लौंग और इलाइची बेच डाली। किन्तु घोडे के लिए उसे कोई मौके का खरीदार न मिला। ऐसे बहुत-से थे जो घोडा खरीदकर उसे ऊचे दामो पर बेचना चाहते थे।

पाचवें दिन सायकाल थका-मादा अफनासी घर की ओर—उस पुरानी झोपडी में जहा वह और हसन सोये थे—लौटा। एकाकी मकानो की खिडकियो और दरवाजो के छेदो में से रोशनी और तापने के लिए जलायी गयी आग के हिलते हुए धब्बे-से दिखाई पड रहे थे। दूर शहनाई और नगाडे की आवाज सुनाई दे रही थी—कही खुशिया मनायी जा रही थी। कोई रात की चिडिया पख फडफडाती हुई उड रही थी। पास ही कही से उसकी बोली सुनाई पडी। यह पक्षी मौत का हरकारा है। कभी उसने बीदर के मार्ग में भी उसकी चीख सुनी थी। उस समय बजारे चिन्तित हो गये थे, और निकीतिन ने पूछा था—

"आखिर क्यो?"

लोगो ने उसे समझाया था—

"यह उस आदमी के मकान पर बैठता है जो जल्दी मरनेवाला है।"

"तो फिर उसे मार क्यो नही डालते?"

"नही, ऐसा नही करना चाहिए। उसके मुह से आग निकलती है। जो आदमी उसे मारने को बढता है उसके हाथ जल जाते है।"

जिधर से आवाज आ रही थी निकीतिन, डरकर, उधर ही देखने लगा। शायद वह उसी की जान लेने आया हो? किन्तु

चिड़िया चुप हो गयी और फिर उसकी आवाज़ न सुनाई दी। वह कहीं उड़ गयी थी।

जो भी हो वह चिन्तित हो उठा था। उसे लगा जैसे रात में भूत नाच रहे हैं, रहस्यमयी परछाइयां डोल रही हैं, अस्पष्ट-सी आवाज़ें सुनाई पड़ रही हैं और उसके मस्तिष्क में एकान्त जीवन के सबंध में तरह तरह के विचार उठने लगे। उसका हृदय यह अनुभव कर मसोस उठा कि उसे ज़िन्दगी में प्यार और मुहब्बत नहीं मिली, शान्ति से घर में बैठने को नहीं मिला और सारी ज़िन्दगी वह आनेवाले कल की चिन्ता करता रहा। क्या ऐसा कोई भी दिन गया था, जब उसने यह न सोचा हो कि कल कोई मुसीबत न खड़ी हो जाये? शीघ्र ही वह चालीस का हो जायेगा। अब समय आ गया है जब उसे एक जगह कदम जमाने चाहिए और ज़मीन नापना बन्द करना चाहिए। अब वह ज़्यादा सफर नहीं कर सकता। बरसात में उसके पैर दर्द करने लगते हैं। पैरों में पहली सर्दी उसे तब लगी थी जब वह नोवगोरद पर की गयी चढ़ाई में शरीक हुआ था। जब वह तेज़ चलता है तो आराम से सांस भी नहीं ले पाता। जवानी जा रही है, जा रही है जवानी।

उदाससमान, वह जलती हुई आग की ओर बढ़ा। वहां हसन किसी के साथ बैठा था। अफनासी को उस अजनबी की पीठ-भर दिखाई दे रही थी लेकिन उसके कपड़ों से और साथ ही कुछ अन्य निश्चित चिह्नों से उसने समझ लिया था कि यह कोई हिन्दू है। हसन और वह हिन्दू बातचीत करते करते यह भी देखते रहे थे कि देगची में कोदों कैसे पक रहा है। अफनासी आग के इर्द-गिर्द पड़नेवाले प्रकाश के घेरे में चला गया। हसन ने पीछे घूमकर देखा, हिन्दू उछलकर झुका और हाथ जोड़ दिये।

हिन्दू की सूरत-शक्ल पहचानी-सी लग रही थी। अफनासी के माथे पर कुछ शिकने पड गयी, मानो सोच रहा हो इसे कहा देखा है।

"खोजा यह गुरु है," दात निकालते हुए हमन बोला, "वही गाडीवान जो हुसेन के साथ था इत्तफाक से मुझे मिल गया।"

गुरु ने अपनी मुसीवतो की दास्तान वतानी शुरू की। घाटो में उस चिरस्मरणीय रात के वाद वेचारा गाडीवान जिधर सीग समाया भाग निकला। चौल वह लौट नही सकता था—लौटता तो भूखे परिवार के लिए और एक वोझ वन जाता। सभी तो उसपर आशा लगाये थे। सोच रहे थे गुरु आयेगा—पैसा लायेगा। और वह तो अपने वैलो तक से हाथ धो वैठा था। यही वैल उसके परिवार की अन्तिम आशा थे। निश्चय ही उसके किसी सवधी ने कभी किसी सर्पराज को रुष्ट किया होगा, वरना साप उसके ही वैलो को क्यो डराता? गुरु दुखी था, निराश था। यह तक उसे मालूम न था कि अव क्या करना चाहिए। वह तीन दिनो तक दक्षिण की दिशा में अकेला पहाडी रास्तो की खाक छानता रहा—एकदम भूखा, खाली पेट। राते वह या तो कन्दराओ में विताता या पेडो पर। फिर वह मैदानो में आ गया, जहा गाव शुरू हो गये थे। यहा लोग उसे कुछ खाने-पीने को दे दिया करते। पानी-वूद के दिन थे। चलना-फिरना दूभर हो रहा था, किन्तु गुरु को तो रास्ता काटना ही था—उसकी जरूरत थी किसे? लोगो के लिए यो ही जिन्दगी पहाड वनी हुई थी फिर किसी आवारा को कौन खिलाता? और वह चलता रहा। एक दिन ऐसा हुआ—यह कोई तीन हफ्ते वाद की वात है—कि उसे एक छोटे-से गाव के पास वनी मचान में रात काटनी पडी।

भोर होते होते गाँव में सुलतान की फौज ने हमला बोल दिया। अपनी मचान पर मे गुरु देख रहा था कि फौजवालो ने वहा के निवासियो के हाथ-पैर बाधे, मवेशियों को हकाया और उनके झोपडो में आग लगाकर अपने रास्ते चले गये।

गुरु चूहे की तरह चुपचाप बैठा रहा। वह डर रहा था कि कही फौजी उसे भी न देख ले। किन्तु जल्दी में किसी की निगाह उसपर न पडी। फिर वह मचान पर से कूद पडा। वह बराबर यह सोचता रहा कि इस नर्क से शीघ्र से शीघ्र निकले। उसने देखा कि हडबडी में कुछ मवेशी इधर-उधर भी छिटके। उसने यह भी गौर किया कि जगल में, एक डरे हुए बैल की दुखी आखें किसी आशा से उसकी ओर देख रही है। जब पशु आपकी पनाह में आने के लिए आपकी ओर दृष्टि लगाये हो तो आप उसकी ओर से आखें मूदकर जा भी कैसे सकते हैं? गुरु बैल को पुकारने लगा और वह गुरु की ओर बढ आया अब क्या किया जाये? कुछ दिनो तक तो गुरु भस्म मकानो की राख के पास इस इन्तजार में बैठा रहा कि बैल का मालिक लौटे और वह बैल उसे सौंप दे। किन्तु कोई नही आया। फिर यह न जानते हुए, कि उसे सुखी होना चाहिए या दुखी, वह अपने आगे आगे बैल को हकाता हुआ ले गया और जो पहला गाव पडा वही एक ब्राह्मण से सारी कथा कह सुनायी। उसने पूछा कि क्या वह इस बैल को अपने पास रख सकता है? इसे चोरी का तो न समझा जायेगा? ब्राह्मण देर तक सोच-विचार करता रहा, फिर बोला कि इस बैल को उसे देना चाहिए। भगवान ने बैल को गुरु के पास भेजा था और गुरु को ब्राह्मण के पास। इसका अर्थ यह हुआ कि बैल ब्राह्मण के पास रहना चाहिए। बात साफ़ थी, फैसला भी ठीक ही था। उसके विरुद्ध गुरु आपत्ति ही

क्या करता, यद्यपि बैल को छोडने में गुरु को दुख जरूर हो रहा था। हिन्दू ने भगवान की इच्छा के आगे सिर झुकाया और प्रसन्नतापूर्वक उसे पूरा किया। पर पहले की तरह फिर उसके सामने यही समस्या बनी रही कि वह क्या करे।

गुरु की भक्ति से इन्द्र देव प्रसन्न हो गये। उसी दिन उस गाव से होकर दक्षिण के कई व्यापारी गुजर रहे थे। उनमें से एक बडी मुसीबत में पड गया था—उसके एक गुलाम को साप ने डस लिया था और गुलाम वही, उसी गाव में, मर गया था।

व्यापारी के पास तीन गाडिया थी और हर गाडी में दो दो बैल जुते थे। अकेले तीनो गाडिया सभालना उसके बूते के बाहर था। उसने गुरु को अपने साथ रख लिया और उसे खाना देने का वचन दिया।

इसी व्यापारी के साथ गुरु यहा आ गया। यह व्यापारी बडा दयालु है। उसने गुरु से कहा है कि यदि बीदर जाने पर उसे सफलता मिली तो वह एक बैल गुरु को दे देगा।

"हा, अगर भगवान ने मदद की," गाडीवान ने गहरी सास लेते हुए कहा, "तब मैं भी घर लौटूगा "

चारो ओर रात की कालिमा फैल रही थी। कोदो पक चुका था। हसन ने देगची उतारी और निकीतिन के आगे रख दी। खिचडी में से स्वादिष्ट सा धुआ उठ रहा था।

"गुरु को भी दो न," निकीतिन ने धीरे से कहा।

"रात है," हसन ने आपत्ति करते हुए सक्षेप में कहा, "हिन्दू रात में नही खाते।"

"तुम दो तो। शायद खा ले "

किन्तु गुरु ने खाने से इन्कार कर दिया। खाना तो दूर उसने उसकी ओर ताका तक नहीं। उसके चेहरे को देखकर अफ़नासी ने समझ लिया था—इतनी देर में खानेवालों के प्रति गुरु की अच्छी भावना नहीं है, किन्तु चुप वह इसलिए रह गया कि वह अफनासी की इज़्ज़त करता था।

"जो गाय को खाना खाता है, उसपर काली का कोप पड़ता है," हिन्दू की ओर देखते हुए हसन ने उसका उपहास-सा करते हुए, भरे हुए मुह से कहा। "वह पागल भी हो सकता है ..."

गुरु ने कोई उत्तर न दिया। पर उसके चेहरे से लग रहा था जैसे वह अपने को संयम में रख रहा है। वह सिर झुकाते हुए उठ खड़ा हुआ।

"ज़रा ठहरो," अफनासी बोला, "तुम्हारे व्यापारी का क्या नाम है?"

"भावलो, सरकार!"

"वह काहे का व्यापार करता है? उसके पास जवाहरात नहीं रहते क्या?"

गुरु उत्तर देने में कुछ हिचकिचाया, फिर सिर हिला दिया—

"हैं। जवाहरात हैं उसके पास! हां है ..."

हिन्दू व्यापारी भावलो अफनासी को एक विचित्र-सा आदमी जान पड़ा। वह चालीस से ऊपर का हो चुका था। लम्बा कद। दुबला-पतला। भूरे, छोटे, घुघराले बाल। पीठ कुछ कुबड़ी जैसी। किन्तु न जाने क्यों अफनासी को ऐसा लगता कि भावलो हर क्षण अपने को तथा अपने कधों को सीधा करने को है। जब गुरु अपने साथ अफनासी को लेकर आया तो भावलो की अधखुली पलकों और

सावले चेहरे से कोई भी भाव प्रकट नहीं हो रहे थे। व्यापारी ने उदासीनता से सिर हिलाया और चुप रह गया।

निकीतिन ने तुरन्त काम की वात छेड दी। उमे जवाहरात चाहिए। गुरु ने वताया है कि आप के पास जवाहरात हैं। शायद आप मुझे अपना माल दिखाये।

भावलो के जुडे हुए से सूखे ओठ खुले। हा जवाहरात हैं तो। लेकिन अच्छा माल तो विक चुका है। जो रह गया है वह वम ऐसा ही है कि शायद ही पसन्द आये।

यह भी एक विचित्र जवाव था। कही कोई अपने दही को भी खट्टा कहता है?

"मै देखना चाहता हू," निकीतिन ने उत्तर दिया।

भावलो उठा, खेमे के कोने में गया और एक डब्बे में से जवाहरात का वटुआ निकाल लाया।

वटुए में से उसने कार्नेलियाई पत्थर, नीलम और सुलेमानी पत्थर निकाले। सचमुच ये पत्थर न वडे ही थे और न साफ ही।

अफनासी ने सभी पत्थरो को ध्यान से देखा और उन्हे वडी सावधानी से व्यापारी की ओर वढाते और एक गहरी-सी सास लेते हुए कहने लगा—

"वेशक इन्हे मै न खरीदूगा।"

व्यापारी ने उदासीनता से सारे पत्थर फिर अपने वटुए में रख लिये।

पता नही क्यो अफनासी को ऐसा लगा जैसे भावलो के पास अच्छे पत्थर तो हैं किन्तु वह उन्हे उससे छिपाना चाहता है।

"मेला भी बस बुरा ही रहा," खेद-सा प्रकट करते हुए निकीतिन बोला, "जो माल भी ढूढता हू नही मिलता। ऐसे में लौट जाने में भी कोई हर्ज नही।"

व्यापारी ने उत्तर न दिया।

"अच्छा, यह तो बतायें कि यह पत्थर आप लाते कहा से है?" भावलो को पैनी दृष्टि से देखते हुए अफनासी ने पूछा, "कहा से लाते है? ये जगहें दूर हैं क्या?"

"दूर," अनमनेपन और उदासीनता से व्यापारी ने उत्तर दिया। उसकी सूरत-शक्ल से ही पता चल रहा था कि इस बातचीत का कोई नतीजा न निकलेगा।

"यहा जिसे देखो यही जवाब देता है। और मुझे जानना है। मैं यहा का रहनेवाला नही। तुम शायद मुझे मुसलमान समझ रहे हो। लेकिन मैं मुसलमान नही। मैं दूर देश से आया हू और तुम्हारे देश के बारे में कुछ भी नही जानता।"

व्यापारी ने सिर उठाया। उसकी निगाहो से सतर्कता टपक रही थी। जिस समय से भावलो अफनासी से मिला था उस समय से अब, पहली बार, भावलो ने उसकी ओर ध्यान से देखा था।

"मैं तुम्हारे शब्दो का मतलब नही समझा!" आखिर उसने जवाब दिया, "मैं हू एक मामूली सौदागर। वेद पुरान मैंने पढे नही। लेकिन यह जानता हू कि बिना भगवान की मर्जी के पत्ता तक नही डुलता। कौन ठीक है, कौन ग़लत इसमें मेरी कोई दिलचस्पी नही।"

अफनासी ने खिजलाते हुए मुह सिकोडा।

"यहा के आदमी बडे शक्की है।" उठते हुए वह बोला, "नहीं बताना चाहते, न बताओ। मै खुद ही पता चला लूगा "

हसन को अफनासी की यह विफलता देखकर जरा भी आश्चर्य न हुआ।

"हम बीदर लौट चले।" हसन ने सलाह दी, "वहा माल आसानी से ढूढा जा सकेगा। फिर वहा चैन तो है। कहते है यहा सुबह कोई तेंदुआ एक बैल को उठा ले गया था। और तुम रात में चलते-फिरते हो। यह ठीक नही। तुम भारत को नही जानते। यहा कदम कदम पर खतरे है।"

"फिर हम लौट ही चले," सोचते हुए निकीतिन ने जवाब दिया, "जो कुछ देख चुका हू वही काफी है मेरे लिए।"

अब उसे यह आशा न रह गयी थी कि उसे किसी नयी बात का पता चलेगा, उसे कोई ऐसे आदमी मिलेगे जो उसका विश्वास करेगे। शाम होने से पहले पहले वह दरी पर लेटा और हसन का गाना सुनने लगा। उसने सोने का स्वाग रचा। तभी उसे कोई आता हुआ दिखाई दिया और किसी के अभिवादन की परिचित-सी आवाज सुनाई पडी।

अफनासी उठकर खडा हो गया। उसके सामने गुरु का मालिक भावलो खडा था

भावलो धीरे धीरे, शब्द चुन चुनकर बोल रहा था। "विदेशी के आगे गुनहगार हू। भगवान मेरी नासमझी क्षमा करे। गुरु ने मुझे चौल के रास्ते की घटना और असद-खान की नाराजी की बात बता दी है। और ये बाते उसे तुम्हारे गुलाम–हसन–से मालूम हुई थी।"

भावलो को पछतावा हो रहा था कि जो परदेशी मेरे आगे अप ने दिल की बात भी खोलकर रखना चाहता हो उसके प्रति मेरे

दिमाग में सन्देह उत्पन्न हुआ। यह मेरे लिए शर्म की बात है। मैं अपने पाप का प्रायश्चित करने को तैयार हूं।

"कैसा पाप!" निकीतिन बोला, "बैठो, तुम मेरे मेहमान हो।"

निकीतिन के लिए वह रात चिरस्मरणीय रात थी। अफनासी ने साथियों को रूस, तातारों से युद्ध और अपने मार्ग की कहानियां सुनायीं। व्यापारी एक एक बात को, जैसे उत्सुकता से, पीता जा रहा था। कभी कभी वह बीच में कुछ पूछ भी बैठता, किन्तु हर बात उसे आश्चर्य में डुबोये दे रही थी। और यद्यपि खुद उसने अफनासी को कोई जवाहरात नहीं दिये फिर भी उसने वादा किया कि वह उसकी मुलाकात बीदर के मशहूर जौहरी कर्ण और उन दूसरे हिन्दुओं से करा देगा जिन्हें माल की अच्छी परख है, जो बाजार जानते हैं।

"तुम्हें हमारा देश पसन्द आयेगा!" उसने कहा, "और हमारे लोग भी। बस जरा मुसलमानों से बचे रहना।"

साथियों के जाने के बाद हसन आग के पास आया और मन ही मन बड़बड़ाने लगा।

"क्या बात है?" निकीतिन ने पूछा।

"खोजा, तुम्हें सीख देने का तो मुझे कोई हक नहीं," विनम्र बनने की कोशिश करते हुए हसन बोला, "हां, हिन्दुओं से बचकर रहना चाहिए।"

"मुझे यह सब समझाना तुम्हारा काम नहीं!" निकीतिन ने उसे टोका, "क्या करना चाहिए यह मैं खुद जानता हूं।"

हसन, चिढ़ा हुआ सा, देगची पर झुक गया। पर अफनासी को अपनी रूखी बात का कोई मलाल न हुआ। मेरे साथ रहना है तो उसे सब कुछ बर्दाश्त करना होगा। दोनों चुपचाप सो गये।

दूसरे दिन वे साथियों के साथ बीदर की ओर चल पड़े।

बीदर में भावलो बहुतो को जानता था। उसने कुछ हिन्दू परिवारो से निकीतिन का परिचय भी करा दिया था।

भावलो ने जिस पहले आदमी से निकीतिन का परिचय कराया था वह कर्ण नाम का एक बूढा था जो रत्नो की कटाई मे उस्ताद और हीरो पर पालिश करने की कला में सलतनत-भर में मशहूर था।

"यह व्यक्ति नूरा नाम की प्रसिद्ध सुन्दरी का सगा भाई है। जानते हो नूरा के ही लिए रायचूर में खून की नदिया बही थी," भावलो बोला, "कोई पचास वर्ष से अधिक हुए कि कर्ण का परिवार दक्षिण में, मुद्गल में रहता था। उस समय नूरा चौदह की थी और कर्ण था छ साल का। बीदर का तरफदार कुतुबुद्दीन नूरा को अपनी बीवी बनाना चाहता था। अगरचे कुतुबुद्दीन मुसलमान था और नूरा हमारे पूर्वजो के देवी-देवताओ को मानती, उसने नूरा को बचाने और उसे अपनी रानी बनाने का निश्चय किया और मुद्गल पर चढाई कर दी, महाराजा के सैनिक शेर की तरह लडे। लेकिन हुआ यह कि किसी ने मुसलमानो को महाराजा के आक्रमण की पूर्वसूचना दे दी थी और वे मोर्चा लेने को तैयार हो गये थे। उन्होने मुद्गल की रक्षा की और नूरा और उसके परिवार को गुलबर्गा भेज दिया। वहा नूरा को स्वय फीरोज़-शाह के हरम में दे दिया गया। फीरोज़-शाह ने उसे देखा और उसपर लट्टू हो गया। कुतुबुद्दीन ने इसका बदला लेना चाहा। विजयनगर राज्य से लडाई थी, फिर भी यह विवाह हो ही गया होता। तरफदार जो चाहते थे कर लेते थे।"

भावलो ने मुह सिकोडा और चुप हो गया। वह कुछ सोचने लगा था।

"फिर क्या हुआ?" निकीतिन ने पूछा।

भावलो माथा खुजाने लगा।

"हा   लेकिन नूरा की सुन्दरता की खबर विजयनगर तक पहुच चुकी थी। वहा यह खबर पहुचानेवाले थे चारण और सौदागर। विजयनगर का महाराजा नही चाहता था कि हिन्दू लडकी किसी अत्याचारी के बच्चे को जन्म दे। बराबर लडाई चलती रही। ऐसी ही एक भिडन में तरफदार ने गद्दारी की। फीरोज़-शाह को तलवार का एक वार लगा था लेकिन पता नही क्या चमत्कार हुआ कि उसकी जान बच गयी   अफसोस! इस पियक्कड और ऐयाश बादशाह को तो मौत के घाट ही उतार देना था "

"तो फिर "

"फिर क्या! दो साल तक लडाई चलती रही। मुसलमानो ने खूब मार-काट की और रायचूर खाली हो गया   "

"और नूरा?"

"कौन जाने बेचारी का क्या हुआ। उसके बारे में फिर किसी ने कुछ भी न सुना। कर्ण का पिता अपने परिवार के साथ गुलबर्गा में रह गया। गुलबर्गा उस समय राजधानी थी। जब अहमद-शाह ने बीदर को अपनी राजधानी बनाया उस समय वह वहा अपने अच्छे से अच्छे कारीगरो को भी ले गया था। तभी से ये लोग यही रह रहे हैं। सिर्फ कर्ण का सबसे बडा पुत्र राजेन्द्र दिल्ली चला गया जहा उसे मार डाला गया।"

"कैसे?"

"उसने एक सौदागर पर विश्वास किया था। दोनो साथ साथ काम करते थे लेकिन जब हिसाब-किताब का वक्त आया तो उसने राजेन्द्र पर यह अभियोग लगाया कि उसने इस्लाम की मुखालफत की है। इसपर राजेन्द्र की खाल खीच ली गयी   "

भावलो के शब्दो से घृणा और आन्तरिक व्यथा अभिव्यक्त हो

रही थी। उसका चेहरा पत्थर जैसा कठोर हो गया, मुट्ठिया भिच गयीं और अगुलियो के जोड सफेद पड गये।

•इस वातचीत से निकीतिन समझ रहा था कि स्वय भावलो को भी इससे कम दुख नही हुआ है। लेकिन इसके बारे में भावलो ने कुछ भी न कहा और अफनामी ने भी कुछ न पूछा। क्यो छुये वह उसकी दुखती हुई रग?

कर्ण की कथा सुनकर अफनामी उसे जिज्ञासा के साथ देखने लगा। वह उस जौहरी से कुछ असाधारण वाते और वहादुरी के कारनामो की दास्तान भी सुनना चाहता था। जौहरी के मुरझाये हुए चेहरे पर उस अनुपम सौन्दर्य के कुछ चिह्न अब भी दिखाई दे रहे थे, जो जवानी में अकेले उसकी वहन के ही हिस्से में नही पडा था। पर कर्ण की दृष्टि रुक्ष और आवाज धीमी थी। लोगो के प्रति उसकी अपरिवर्तनशील समानता से स्पष्ट पता चलता था कि उसकी आत्मा जैसे वेहद थक चुकी है। ऐसा लगता था जैसे कर्ण के लिए दुनिया और उसकी अनुभूतियो का कोई अस्तित्व नही। जिन रत्नो को वह हाथो में लेते रहने का आदी हो गया था उन्ही की जडता जैसे उसकी आत्मा में भी प्रवेश कर गयी थी। यह वडे आश्चर्य की वात थी कि जैसे ही हीरा इस उदासीन-से व्यक्ति के हाथो में आता कि उसकी चमक अद्वितीय हो जाती।

भावलो बोला—

"कर्ण की बराबरी करनेवाला कोई है ही नही। अकेला वही है जो माणिक के ओठो पर भी आदमी की ही तरह मुस्कराहट विखेर सकता है," और विचित्र ढग से दात दिखाते हुए, आगे कहने लगा, "वैसे ही जैसे वह रगू को हसाता है।"

रगू कर्ण का पोता था। जवान और खूबसूरत। रगू की शादी एक सुन्दर शर्मीली, जवान लडकी से हुई थी। लडकी का नाम था

झांकी। रंगू एक सुन्दर-से बच्चे का पिता भी वन चुका था। वच्चा अभी पांच महीने का भी पूरा न हुआ था। रंगू अपने बूढ़े बाबा का सहायक भी था और शिष्य भी।

यह सच है कि रंगू हमेशा मुस्कराता था। निकीतिन ने भावलो की बात नहीं समझी।

"यह कैसे? वह उसे कैसे हंसाता है?" निकीतिन ने प्रश्न किया।

"रंगू, राजेन्द्र का बेटा है," भावलो ने उत्तर दिया, "यानी कर्ण के उस बेटे का बेटा जिसकी खाल खींची गयी थी। उस समय रंगू बहुत छोटा था। वह नहीं जानता कि उसके बाप की मौत कैसे हुई और यह भी नहीं जानता उसकी मौत का दोषी है कौन। लेकिन कर्ण जानता है और रंगू से छिपाता है।"

"वह उसे चिन्ता में नहीं डालना चाहता।"

"उसे बदला लेने की चिन्ता से रोक रहा है?! लेकिन उसे बदला लेना ही चाहिए।"

भावलो की आंखें सिकुड़ गयीं और नथूने क्रोध से फड़कने लगे।

"मैं खुद..." स्वतः उसके मुंह से निकल पड़ा पर उसने अपना क्रोध रोकते हुए अपने ओंठ काटे और धीरे से अपनी बात पूरी की – "कभी मैं भी कर्ण की ही तरह सोचता था ... कभी ..."

निकीतिन के नये परिचितों में एक व्यापारी था – निर्मल। निर्मल

नाटे कद का एक मोटा-सा आदमी था जो वीदर के जुलाहो से कपडे की दलाली करता था। वह उन्हे कर्ज के रूप में रुपया और सूत पेशगी दिया करता था।

निर्मल जब कभी जुलाहो के मामूली-से झोपडो में आता तो वे उससे ऐसे मिलते मानो वह उनका सबसे बडा हितैषी हो। जुलाहे उसका एक एक शब्द बडे ध्यान से सुनते और उसके आगे बडी इज्जत से सिर झुकाते। निकीतिन समझता था कि ये लोग निर्मल के बडे कर्ज में डूबे थे।

निर्मल ने अफनासी को सुझाव दिया कि वह उसका साझेदार बन जाये और वे सूत की एक बडी-सी गाठ खरीदें। निकीतिन को उसमें कोई हिचकिचाहट न हुई। स्पष्ट था कि यह फायदे का सौदा है। वह जो कुछ लगायेगा उसका उसे सात गुना मिल जायेगा। अब उसकी समझ में आया कि भारत में कपडा इतना सस्ता क्यो है—यहा कारीगरो को पैसा इतना कम जो मिलता है।

लेकिन काम वे बहुत अच्छा करते हैं। इतना महीन रेशम और अन्य तरह तरह के कपडे तैयार करते है कि देखते ही बनता है। तरह तरह की डिजाइनें—मोर, फूल, टेढी-मेढी धारिया और तरह तरह के रग देखने को मिलते है।

रगो की दुनिया का उस्ताद था उजाल। छोटी-सी छाती। सूखी हुई काठी। अधेड-सी उम्र। प्राय उसे बुखार का दौरा हो आता। लोग कहते थे कि जब वह बीमार होता, तो किसी को पहचान तक न पाता। उसकी दशा सरसाम के रोगी जैसी हो जाती। कोई न कोई चतुर आदमी उसकी इस दशा से लाभ उठाने की सोचा ही करता पर सरसाम की हालत में भी वह रगो का जिक्र न करता। इसी लिए चतुर आदमी भी रगो का रहस्य न जान पाता। भावलो ने पहले से ही

निकीतिन को सचेत कर दिया था कि वह उजाल से रगो के बनाने आदि के बारे में कुछ न पूछे वरना वह कोई बात न करेगा। वह किसी पर भी विश्वास नही करता।

उजाल के घर में ऐसे लोग प्राय आया करते जिन्हे कोई न जानता होता—कभी केसरिया रग के धूल-धूसरित कपडे पहने हुए कोई बौद्ध भिक्षु, कभी फटी-चिथी धोती पहने कोई किसान, कभी जानवरो की सी शक्लवाला कोई फकीर जिसके कधो पर तेदुए की खाल और हाथो में मोटा सोटा होता।

उजाल उनसे अकेले में फुसफुसाते हुए बातचीत करता और उन्हें चुपके से दरवाजे तक छोड आता। निकीतिन ने अनुमान लगा लिया था कि उसके पास आनेवाले ये लोग उसे तरह तरह की घास लाकर देते है।

उजाल जिन बडे बडे हडो मे कपडे भिगोता उन्ही में वह इन घासो को भी डाल देता और कपडो में अद्भुत रग चढ जाता—कभी मई के उस सायकालीन आकाश की तरह जब ताज़ी पत्तिया उसपर हरियाली छिटकाती है, कभी अगस्त की उस ऊषा की तरह जब वह छटते हुए धुध में से झाकती है और कभी जुलाई की तपती हुई भूमि पर नाचते हुए गहरे लाल रग के सूर्यास्त की तरह।

निकीतिन उजाल से रग खरीदना चाहता था और जब उसने उससे इसके लिए अनुरोध किया तो उजाल ने रग बना देने का वादा कर लिया।

निर्मल और उजाल दोनो ही विवाहित थे। निर्मल की पत्नी अपने पति से बडी लगती थी और उजाल की छोटी। उजाल की पत्नी का नाम था रेश्मा। पर निकीतिन के लिए उनकी उम्र का अन्दाज लगाना आसान न था इसलिए कि उसने, एक तरह से, उन्हे आख भरकर देखा भी न था। वे सदा बच्चो और अपने काम-काज में ही फसी रहती।

भावलो ने इन हिन्दुओ से निकीतिन की जान-पहचान करा दी और स्वय अपने किसी काम में व्यस्त हो गया। इस काम में वह किसी का भी विश्वास न करता।

प्रत्यक्षत निकीतिन को कोई विशेप सफलता न मिली। उसने घोड़ा न बेचा इसलिए कि उसके दाम कम लगते थे। और मुस्तफा ने लौटाने का वचन देकर जो पैसा उधार लिया था उसके मिलने की भी कोई उम्मीद न थी। खुद मुस्तफा तक जैसे पानी में बिला गया था। सराय में रहना आरामदेह न था—वहा बराबर भीड रहती, लोगो की निगाहे उसपर जमी रहती और घोडे और माल-असबाब का डर बराबर बना रहता।

कर्ण ने बताया कि इस समय अच्छे जवाहरात की कमी है। अभी इन्तजार की जरूरत है। जब फौज लौटती है तो बहुत-सा सामान लाती है। या तो तब जवाहरात अच्छे मिलते हैं या बसन्त में श्री-पर्वती जाने पर क्योकि हिन्दुओ के इस पवित्र तीर्थस्थान पर ढेरो हिन्दू सौदागर जाते हैं। कर्ण वहा स्वय जाना चाहता था या फिर रगू को भेजना चाहता था। वे हमसफर हो जाते।

निकीतिन ने निर्मल मे सूत खरीदने के लिए साझा कर लिया और मुनाफे और श्री-पर्वती की यात्रा के इन्तजार में एक छोटे-से मकान में रहने लगा। मकान हिन्दुओ के मुहल्लो से दूर न था—इकमजिला, मिट्टी का, जिसकी ईंटो की ऊची चहारदीवारी के पीछे एक छोटा-सा बगीचा था। यह मकान चमडा कमानेवाले एक मुसलमान का था जो उसे विरासत में मिला था। उसने यह मकान निकीतिन के हाथ बेचा था और इस बात पर राजी हो गया था कि वह कीमत का कुछ भाग पहले लेगा और बाकी के लिए इन्तजार करेगा। पिछले दो वर्षों में उसे कोई मकान तो मिल गया था। अब उसके पैर का सनीचर तो

दूर होगा। उसने हसन के साथ सारे घर की सफाई की। एक भीतरी कमरे को अपने सोने का कमरा बनाया। वहां फूस का गद्दा बिछाया और उसपर एक सस्ता-सा कालीन। सन्दूक उसने एक तरफ रख दिया।

सबसे बडे कमरे में उसने एक अच्छा-सा कालीन बिछाया, उसपर तकिये रखे। एक ओर तश्तरियों के लिए अलमारी रखी। अलमारी में हसन के चमकाये हुए लोटे और थालिया रखी गयीं और साफ धोयी हुई मिट्टी की सस्ती प्यालिया। ये सारी चीज़ें बीदर के बाज़ार में खरीदी गयी थीं।

घर को ठीक-ठाक करने में बचा हुआ प्राय सारा पैसा खर्च हो गया। पर अफनासी को तब तक चैन न मिला जब तक उसने सभी आवश्यक चीज़ें न जुटा लीं।

जब मकान का सारा प्रबन्ध हो गया तो सोच में पड गया— निर्मल से अपने लाभ का हिस्सा दो महीने से पहले मिलेगा नहीं। फिलहाल घोडे को भी खाना मिलना चाहिए। उससे फायदा तो कुछ हो नहीं रहा है। फिर अपना खाना और ऊपर से हसन का पेट भरना।

लगता है उसे कर्ज़ के लिए हाथ फैलाना ही होगा।

उसने भावलो से सलाह लेने का निश्चय किया। भावलो उसे किरोधार नामक एक बूढे के पास ले गया जो देखने में फटेहाल लगता था और चमरौटी—अछूतों की बस्ती के छोर पर एक मामूली-से मकान में रहता था। पहली मुलाकात में किरोधार ने कोई वादा नहीं किया, ज़िन्दगी की कठिनाइयों का ही रोना रोता रहा।

"कोई बात नहीं," भावलो ने निकीतिन को धीरज बधाया, "सब ठीक हो जायेगा "

और सचमुच दो दिन बाद किरोधार स्वयं अफनासी के पास आया।

हसन तो उसे अन्दर ही नही आने दे रहा था पर निकीतिन ने उसकी आवाज़ सुनी और खुद बाहर आ गया।

किरोधार ने उत्सुकता से चारो ओर देखा और पूछने लगा—"सचमुच तुम्हारे पास घोडा है?"

निकीतिन ने उसकी बात समझी और घोडा दिखाया।

किरोधार का जैसे समाधान हो गया। फिर उदास हसन की दी हुई चाय पीते हुए उसने अफनासी से सवाल किया—"तो तुम्हे रुपया चाहिए?"

अफनासी ने हा की।

"बहुत चाहिए?"

"तीस दीनार," निकीतिन बोला। उसे सन्देह हो रहा था कि इतना रुपया वह दे भी सकेगा।

"इतने कम क्यो?" किरोधार ने मुस्कराते हुए कहा, "मै तो सौ लाया हू। अगर आदमी में सामर्थ्य है तो वह सुख क्यो न भोगे?"

"ओ-हो!" अफनासी ने सोचा और कहने लगा—

"नही, सौ नही चाहिए। अच्छा पचास ले लूगा! और वापस कितना करना होगा?"

"मै ठहरा ग़रीब आदमी," वह आखें मूदते हुए कहने लगा। उसकी आकृति से लग रहा था जैसे वह सचमुच बडा गरीब और निरीह है। "मैंने पेट काट काटकर थोडा पैसा जोडा है। मैं भला किसी को क्या कर्ज़ दूगा! लेकिन लोगो की ज़रूरतें पूरी करना भी तो इन्सानी फर्ज़ है। भगवान इससे खुश होते है फिर जल्द ही तुम घोडा बेच लोगे, तुम्हे निर्मल से भी पैसा मिल जायेगा। और तुम मुझ जैसे गरीब को नुक्सान तो पहुचाना नही चाहते।"

"यह तो निर्मल के बारे में भी जानता है! बड़ा पहुंचा हुआ है।" अफनासी ने सोचा।

"मेरे पास कौनसी रकम गड़ी है!" निकीतिन ने उत्तर दिया, "तुम तो देख ही रहे हो कैसे रहता हूं। घोड़ा चाहे भी जितने को बिके, आखिर वह भी रास्ते की ही भेंट चढ़ेगा। मैं दूर देश से आया हूं न! फिर जिन्दगी यों ही मुहाल है।"

"हां, हां, हां," किरोधार ने आह भरते हुए कहा, "सभी चीज़ें बड़ी महंगी हैं। मैं खुद ही आधा पेट खाकर गुज़र करता हूं। बड़ा ग़रीब हूं। हां, हां "

"तो फिर मुझे कितना लौटाना होगा?" निकीतिन ने पूछा, "हम दोनों ही गरीब हैं, दोनों ही एक दूसरे को नाराज़ नहीं करना चाहते तो फिर कितना?"

किरोधार के चेहरे पर जैसे उदासी-सी छा गयी। उसने हाथ जोड़ दिये।

"मैं खुद नुक्सान उठा लूंगा लेकिन किसी को नाराज़ न करूंगा जो कर्ज़ लेते हैं उनसे आम तौर से क़र्ज़ का रुपया और उसका आधा और लिया है लेकिन मैं तुमसे सिर्फ तिहाई लूंगा। साठ दीनार ले लो और एक महीने बाद अस्सी लौटा देना।"

निकीतिन आखें फाड़कर देखने लगा—

"तिहाई? अस्सी?"

उसे लगा जैसे उसने समझने में ग़लती की। किरोधार तकिये के सहारे कुड़मुड़ाने लगा।

"किसी धनी के लिए तिहाई रकम ज्यादा है क्या? मैं तो यों ही कम मांग रहा हूं—सिर्फ तिहाई।"

"नहीं, तब मैं न लूंगा!" निकीतिन ने दृढ़ता से कहा।

"तो तुम कितना दोगे?" किरोधार ने बड़ी विनम्रता मे पूछा।

"दसवा हिस्सा   हालाकि यह भी बहुत है!"

"बहुत है? क्या बहुत है?" किरोधार घबड़ा-सा गया, "तुम बीदर-भर छान मारो, मुझसे कम कोई न लेगा!"

"तो भी किसी तरह जिन्दा तो रहूगा ही," निकीतिन बोला।

किरोधार ने कन्धे झुला दिये।

"मै तो तुम्हारी मदद करना चाहता हू। सिर्फ मदद "

सौदा न पटा और किरोधार चला गया। हसन ने बड़ी अनिच्छा मे उसके जूठे बरतन धोये।

"कुत्ता कही का!" हसन बड़बड़ाया, "मालिक, देख रहे हो न कैसे है ये लोग "

निकीतिन को भावलो पर क्रोध आया। "क्यो ऐसे लालची बदमाश को मेरे पास भेज दिया!"

और जैसे ही निकीतिन की भावलो से भेंट हुई कि उसने किरोधार के बारे में सब कुछ कह सुनाया। सारा किस्सा सुनकर भावलो की त्योरिया चढ गयी।

"मुझे उससे ऐसी आशा न थी। वह तो तुमसे उतना ही सूद लेना चाहता था जितना गरीब से गरीब आदमी से लेता है   खैर मै उससे बात करूगा।"

"नही, उससे तो मेरी जान ही बचाओ   वह करता क्या है? पैसा आता कहा से है उस गरीब के पास?"

"किरोधार–गरीब? किरोधार बीदर का शायद सबसे बड़ा धनी है। वह महाजन है। हर तीसरा हिन्दू उसका कर्जदार है।"

"अच्छा? तो फिर इतनी गरीबी में क्यो बसर करता है?"

"अगर ऐसे न रहता तो टैक्स देते देते उसकी दुनिया बैरंग हो गयी होती, लोग उसे लूट ले गये होते या उसका सारा पैसा छिन गया होता। वह हमेशा फूंक फूंककर कदम रखता है। आम तौर से वह दूसरों की मार्फत कर्ज देता है। तुम्हारे पास वह खुद आया था यह ताज्जुब की बात थी। इसके माने हैं वह तुम्हारा विश्वास करता है।"

"शुक्रिया," जैसे क्रोध से हंसते हुए अफनासी बोला, "मेरी इज्जत करता है। खैर हुई कि खाल नहीं उतार ली!"

फिरोधार के बारे में और अधिक बात न हुई। अफनासी ने ऋण में बीस दीनार ले लिये।

भावलो फिर बाहर जाने की तैयारी करने लगा। उसका बीदर का काम समाप्त हो गया था, शायद सफलतापूर्वक।

"तुम्हें बधाई देता हूं तुम्हारी सफलता पर।" अफनासी बोला।

भावलो ने धीरे धीरे पलकें उठायीं और उसकी ओर एकटक देखते हुए कुछ विचित्र ढंग से बोला—

"अभी नहीं लेकिन जल्दी ही काम बन जायेगा। अब ज्यादा देर नहीं है। और खुद सुलतान से।"

"ताज्जुब है!"

"क्यों? मैं तो अपने उचित फल का इन्तज़ार कर रहा हूं।"

और निकीतिन ने पहली बार भावलो का कहकहा सुना। लेकिन यह हंसी भयानक थी।

निर्मल ने, भावलो के प्रस्थान से पूर्व, एक उत्सव का आयोजन किया। उसका सबसे छोटा बेटा एक वर्ष का हो चुका था। सारा परिवार उसका 'अन्न-प्राशन' मना रहा था।

निर्मल ने इस उत्सव में निकीतिन को भी बुलाया। पिछले कुछ समय से हिन्दू लोग उसका बड़ा विश्वास करने लगे थे।

इसके कई कारण थे—उसने कर्ण के साथ साफ साफ और दिल खोलकर बातें की थी, भारत की हर चीज़ में पूरी रुचि दिखायी थी और मुसलमानों के कारण उसपर जो मुसीबतें आयी थी उनका खुलकर जिक्र किया था।

भारतीयों की जात-व्यवस्था के प्रति निकीतिन का जो तटस्थ-सा रुख था, उससे हिन्दू ज़रूर परेशान थे। एक दिन निकीतिन चमरौटी गया और वहा एक कोरी के बच्चे को गोद में लेकर उससे खेलने लगा। यह बात कर्ण के कानों में पहुची और उसने निकीतिन को समझाने का निश्चय किया।

"खुद मुसलमान तक जात-पात मानते है।" कर्ण ने अफनासी की भर्त्सना-सी करते हुए उससे कहा।

"लोगो को कैसे देखना-समझना चाहिए इस सबध में मुझे दूसरे ही ढग से शिक्षा मिली है। मेरे भगवान के सामने सब बराबर है, सब एक जैसे।"

बूढे रत्न-तराश ने आपत्ति की—

"लेकिन तुम्ही ने तो कहा था कि तुम्हारे यहा राजा हैं, योद्धा है, ब्राह्मण है   मैं जानता हू उनके तुम्हारे मुल्क में दूसरे दूसरे नाम होंगे। मगर बुनियादी फर्क तो कुछ है नही? क्या तुम्हारा राजा अपनी कन्या किसी व्यापारी को दे सकता है? या किसी योद्धा की विधवा किसी हलवाहे से शादी कर सकती है? बताओ तुम्हारे पिता कौन थे?"

"व्यापारी   "

"और तुम भी व्यापारी हो। और जो हथियार बनाते हैं उनके लडके कौन होते है?"

"आम तौर से वे भी वही काम करते है   "

"फिर फ़र्क क्या रहा?"

"फ़र्क है। हमारे यहाँ कोई भी किसान ब्राह्मण हो सकता है अगर जनता उसे चुन ले। योद्धा तो सभी हो सकते हैं—चाहे हलवाहे हों, चाहे दस्तकार। अगर दुश्मन चढ़ाई कर दे तो..."

किन्तु वर्ण मुस्करा दिया।

"इसके माने हैं कि तुम्हारे यहाँ मिली-जुली जात-व्यवस्था है। अच्छा बताओ, अगर किसान ब्राह्मण हो जाये तो वह कैसा होगा? उसे धर्मग्रन्थों की तमीज़ होगी?"

"ठीक है। वह धर्मग्रन्थों की बातें नहीं जानता... यही तो हमारा रोना है।"

"अच्छा तो एक सवाल का जवाब और दो। तुम सौदागर पैदा हुए। तुम्हारा राजा-राजा और किसान-किसान। ऐसा ही क्यों?"

"यह बात तो निर्भर है मा-बाप पर... लेकिन मेरे बाप किसान पैदा हुए थे!"

"यह बात दूसरी है!" वर्ण ने उसकी बात काटी, "कभी कभी नीची जात का आदमी ऊँची जात में आ जाता है और समाज उसे मान लेता है। हाँ, ऐसा होना कम है। लेकिन नियम-नियम है। बताओ—क्यों?"

और निर्वासित को, आपत्ति का अवसर न देते हुए, बूढ़ा रस-नरम स्वर ही कहने लगा—

"इसलिए कि जातियाँ भगवान विष्णु की बनायी हैं। उनकी उत्पत्ति दैवी है। और तुम्हारे जन्म के अनन्त कारण हैं। तुम उन्हें नहीं जानते परन्तु कारण हैं अवश्य। तुम्हें कर्म के विषय में ज़रूर जानना चाहिए। संसार में स्वत: कोई भी चीज़ जन्म नहीं लेती।

हर कार्य का कोई कारण होता है और हर कारण से किसी न किसी कार्य की उत्पत्ति होती है। मनुष्य का हर कदम उसके भावी जीवन का परिचायक है। उसका सारा जीवन ही उसके विगत कर्मों का फल है तुमने एक ऋषि की कथा सुनी है? जब ऋषि पैदा हुए तो दुम के स्थान पर एक सोटा दे दिया भगवान ने उन्हे। बेचारे सारी जिन्दगी तडपते रहे। बडी तपस्या की उन्होने भगवान की और उनसे उन्होने अपनी व्यथा का कारण पूछा। भगवान बोले कि पिछले जीवन में उन्होने एक चिडिया को ऐसा ही दुख दिया था जिसका फल उन्हें इस जन्म में मिल रहा है।"

अफनासी ने मुश्किल से हसी रोकी और उत्तर दिया—

"हमारे यहा यह नही माना जाता कि आदमी दुबारा पैदा होता है। जो मर गया, सो मर गया। मरने के बाद या तो वह स्वर्ग में जाता है, या नर्क में, या पापमोचन में और वहा तब तक रहता है जब तक स्वय भगवान उसका फैसला नही कर देते "

"लेकिन यह भी तो कर्म ही है, यद्यपि है साधारण प्रकार का। आपके यहा सब गडबड कर देते हैं।"

"तुम्हें अपनी बातो में इतना विश्वास है कि तुमसे बात करना भी मुश्किल है। मगर एक बात मैं कहूगा। हमारे यहा अछूत जैसे कोई आदमी नही। हम सब धर्म-बन्धु हैं।"

कर्ण कमजोर आखें सिकोडकर सोचने लगा।

"बडी विचित्र बात है," वह बोला, "सचमुच बडी विचित्र बात है। शायद भगवान ने सारी कृपा तुम्ही लोगो पर की हैं।"

"कैसी कृपा! लोगो को न छूना, सक्रामक रोगो की तरह उनसे बचना यह अत्याचार है। आखिर इसमें इन अछूत कहे जानेवालो का क्या दोष?"

किन्तु कर्ण ने सिर हिलाया।

"आखिर तुम समझते क्यों नही? अत्याचार! बिल्कुल नही! बल्कि यह तो उदारता है! तुम समस्या की तह तक पहुंचकर अपना निर्णय नहीं देते। यह तुमसे किसने कहा कि बुद्धिमान लोग अछूतो की इज्जत नहीं करते? इज्जत करते है। किन्तु वे उन्ही की इज्जत करते है जो जात-पात के नियमो को मानते है। ऐसे अछूत शास्त्र के नियमो को न माननेवाले ब्राह्मणो की अपेक्षा भगवान के अधिक निकट होते है आदमी एक ही जात में नित्य नही रहता। जो आदमी इस जन्म में एक जात का है, दूसरे जन्म में वह उससे ऊची या नीची जात में भी पैदा हो सकता है। इसी लिए हर व्यक्ति को अपनी अपनी जात के नियमो का पालन करना चाहिए। हमारी जात ही को ले लो। हम वैश्य है। हम अछूतो से व्यवहार नहीं रखते। उन्हें छूना सभी जातो के लिए पाप है। तुम्हारे देश में ऐसे कानून नही है इसलिए मैं तुम्हारी बात समझ सकता हू। लेकिन तुम भारत में हो और यदि तुम हमारे निकट रहना चाहते हो, तो हमारे नियमो को याद रखना।"

कर्ण के शब्दो में निकीतिन को सख्त चेतावनी का सकेत मिल रहा था। उसने निश्चय कर लिया था कि वह उसी की सलाह से काम करेगा और हा, पीडितो, दलितो और नगे-भूखे कोरियो, मोचियो, धोबियो और चमारो की तो सहायता वह न कर सकेगा

कर्ण ने देखा कि निकीतिन ने उसकी बात मान ली। वह बड़ा खुश हुआ। और जब उसने जान-पहचानवाले हिन्दुओ के बीच निकीतिन के बारे में बातचीत चलायी तो जोर देकर कहा—

"यह शख्स हमारे रीति-रिवाजो को इज्जत की निगाह से देखता है और हमारे साथ हमदर्दी रखता है। हमें भी चाहिए कि

हम उसकी इज्जत करे। उसके देश में नीची जाते नही होती। यह जरूर आश्चर्य की वात है। और वह भी तो एक अद्भुत-सा आदमी है। किसी ने इतनी सफेद चमडी और सोने जैसे वालो वाला कोई आदमी देखा है यहा? किसी ने नही देखा। हम तो कभी सोच ही न सकते थे कि इतनी सफेद चमडीवाले आदमी भी हो सकते हैं। चमडी का गोरा होना ऊची जात की निशानी है। यह याद रखना चाहिए।"

रत्न-तराश के विचारो से पूर्णत सहमत होते हुए, निर्मल ने निकीतिन को भी 'अन्न-प्राशन' उत्सव में निमन्त्रित किया।

हा, सच तो यह है कि उसे वुलाने के पहले ब्राह्मण की राय ले ली गयी थी।

ब्राह्मण राम लाल ने इस विषय में कोई आपत्ति न की। इस मौन और वूढे आदमी ने अफनासी को देखा और उसके वारे में वहुत कुछ सुना भी था। वोला –

"भगवान ने जिस आदमी को इतनी लम्वी यात्रा करने की प्रतिभा दी है, वह जरूर भगवान का प्यारा होगा। वह मामूली आदमी नही हो सकता।"

अफनासी को ब्राह्मण की वातो का कोई पता न चल सका किन्तु शीघ्र ही निर्मल के इष्टमित्रों को उसका मत मालूम हो गया और निकीतिन उनकी निगाहो मे और भी चढ गया।

उत्सव के दिन निर्मल के मकान में, उसकी जात-विरादरी के लोग जमा हुए थे।

निर्मल के साफ-सुथरे सफेद मकान के गलियारे में कोई वीस लोग एकत्र हुए थे।

निकीतिन पहली वार हिन्दुओ की किसी रस्म में शरीक हुआ और इसी लिए, उसने सव कुछ आखें फाड फाडकर देखा।

प्रथानुसार, उसने निर्मल के पुत्र को पन्ना जडी चादी की एक जजीर उपहार में दी। निर्मल की पत्नी कजली तो खुशी से नाच उठी।

वहा सभी तरह के मेहमान थे। मर्द, औरते, जवान लडकिया। सभी एक जगह थे, सभी वाते करते, सभी हसते मुस्कराते, लेकिन रूसियो की तरह ज़ोरो से नही, धीरे धीरे। सभी एक दूसरे से वडी इज्ज़त से पेश आते।

निकीतिन ने निर्मल से अनुरोध किया कि वह उसे रस्म की कार्रवाइया समझाता चले।

"जव सव मेहमान इकट्ठा हो जायेंगे तभी रस्म की कार्रवाई शुरू होगी," निर्मल मुस्कराते हुए वोला, "अभी तो सव अपने अपने काम में फसे है "

आखिर निर्मल ने सभी मेहमानो को भीतर वुलाया। सभी आकर दरी पर, कतारो में, वैठ गये। फिर निर्मल ने सिर झुकाते हुए रस्म शुरू करने के लिए उनसे अनुमति मागी।

हर शख्स ने एक वडे-से तसले में अपने हाथ-पैर धोये। इस विधि में काफी समय लगा।

फिर मेहमानो के सामने पत्तल आये जिनमें स्वादिष्ट खीर परोसी गयी।

मेहमानो ने, मुस्कराते हुए, तालिया वजायी। खुश, गुमनुम-सी, कजली उनके सामने अपने नगे वच्चे को ले आयी।

मा वेटे भी सवके साथ वैठ गये। वच्चे को खाना चखाया गया। वच्चे ने वडी रुचि से खाया।

सभी खुश थे। सभी मुस्करा रहे थे।

हिन्दुओ ने भी धीरे धीरे खाना शुरू किया। सभी दाहिने

हाथ से और बडे सुन्दर ढग से खा रहे थे। अगर किसी को प्यास लगती तो वह उगलिया पोछता और दाहिने हाथ से पानी का पियाला उठाकर पीने लगता।

रगू ने पहले से ही निकीतिन को समझा दिया था कि खाना दाहिने हाथ से खाना चाहिए। बायें हाथ से पानी पीने से वही पाप लगता है जो शराब पीने से। ऊची जातियो में शराब पीना मना है। शराब पीने के माने हैं अशुद्ध हो जाना।

निकीतिन को यह हिन्दुस्तानी रस्म पसन्द आयी—न शराब, न शराबियो की शरारते। पर उसे यह रस्म अजीब जरूर लग रही थी।

निर्मल के घर में भावलो की दशा देखकर निकीतिन को सबसे ज्यादा हैरत हुई। उसने देखा कि भावलो की उदास निगाहे दो सुन्दर और चहचहाती हुई लडकियो पर गडी हैं। अफनासी को लगा जैसे भावलो की आखें छलछलानेवाली हैं। लेकिन तभी भावलो ने निगाहे नीची कर ली। सिर्फ उसके ओठ वैसे ही फडक रहे थे जैसे सपने में किसी बच्चे के। आखिर लडकियो की चुहल से वह खुद क्यो उदास हो रहा था?

खाने के बाद, हमेशा की ही तरह, फिर हाथ धोये गये। बरामदे में औरते एक मीठी धुन गा रही थी और आदमी उन्हें सुनते हुए पान का मजा ले रहे थे। निर्मल शतरज की बिसात ले आया और उजाल के साथ जम गया। शतरज की गोटें चन्दन की लकडी की थी।

नवम्बर की यह रात, फूलो की महमह, गीतो की रसीली धुन, खुशी से झूमती हुई कजली—अफनासी के हृदय में भी एक हूक-सी उठने लगी।

काश! मैं भी इतना ही खुश होता। निर्मल की तरह मैं भी

ठाठ मे बैठता, पत्नी की प्यार भरी निगाहें महसूस करता और अपने स्वस्थ बेटे पर गर्व करता।

लेकिन इस सुख का उसे कभी अनुभव न हुआ था। यह सुख जैसे उसे बदा ही न था। पर क्यों? क्या उसने प्यार और मुहब्बत की खोज न की थी? क्या उसे औरत का दुलार पसन्द न था? क्या वह अपनी महबूबा के लिए अपनी जान कुरबान करने को तैयार न था?

और इन सबके स्थान पर थी क्षणिक भेंटें जैसे शर्माते हुए वे एक दूसरे के पास आये थे ओलेना ओलेना तो अब किसी दूसरे की बीवी बन गयी होगी। उसे भूल जाना ही ठीक होगा।

अफनासी घर लौट आया, लेकिन देर तक उसकी आख न लगी। वह न जाने कब तक हवा के सर्राटे, ताड के पेडो की सरसराहट और सडक मे आती हुई घोडे की टापें सुनता रहा—कोतवाल के पहरेदार रात में गश्त लगा रहे थे।

उसका दिल अब भी उदास था। उसकी कल्पना के सामने एक लडकी आकर खडी हो गयी—ओलेना से मिलती-जुलती, और उससे भिन्न। दुबला-पतला शरीर, लचकदार कमर—हिन्दू लडकी जैसी, भयभीत-सी उसके हाथ में अपना हाथ देती हुई। उसने लडकी का चेहरा न देखा था। पर उसे अच्छी तरह मालूम था—उसकी बरौनिया लम्बी लम्बी थीं और उसके गुलाबी गालो पर पडती हुई उनकी छाया बराबर हिल-डुल रही थी।

भावनो कही दक्षिण की ओर चला गया।

बीदर के चौराहो पर डुग्गी पीट पीटकर लोगों को बताया जा रहा था कि सुलतान की फौज की फतह हुई है, खेलना किला जीता जा चुका है और शकर राजा कही भाग गया है।

पहले की ही भांति गवान-चौक में राज-मजदूर हथौड़े चला रहे थे। मदरसे के लिए पत्थरों पर प्रेम और दया के विषय में कुरान की आयतें खोदी जा रही थीं। कभी कोई मजदूर हाथ में हथौड़ा थामे भूख से तड़प तड़पकर मर जाता। लोग उसे कब्रिस्तान ले जाते। कब्रिस्तान—शहर की चहारदीवारी के उस पार एक मनहूस और वीरान-सा मैदान था, जहां कुछ कुछ झुके हुए से पत्थर के खम्भे गड़े थे और घूम रहे थे गुस्सैल जंगली कुत्ते।

सड़कों के बीच, फिंके-गिरे आम और सरदों के छिलकों पर लोगों का पैर पड़ता और वे फिसल पड़ते। आम के छिलकों से तारपीन जैसी बू आ रही थी। यहीं किसी अफीमची की नाचती हुई निगाहें अपना खोया हुआ स्वप्न ढूंढ़ने लगतीं।

उत्तर से चिड़िया उड़ उड़कर आ रही थीं। और उड़ते हुए बगुलों की चें चें, बीदर में गिरते हुए बूंदों की तरह सुनाई पड़ रही थी।

वर्ष का सबसे मधुर काल—मजे की गर्मी, शान्त हवा, स्वच्छ नीला आकाश।

निर्मल ने पैसा लाकर दिया। यह लाभ हुआ था जुलाहों के पसीने से। निकीतिन को पन्द्रह दीनारों के सौ दीनार मिले थे। उसने कर्ण का पैसा लौटाया, एक नया चोगा खरीदा, उजाल से रंग लिये। घोड़े के भी कई बार अच्छे दाम लगे, लेकिन निकीतिन ने पक्का निश्चय कर लिया था कि घोड़े का वह एक हजार दीनार से एक पैसा कम न लेगा।

वह हिन्दुओं के पास बैठता, उनसे उनके धर्म के बारे में पूछ-ताछ करता और उनके रस्मोरिवाजों में दिलचस्पी लेता।

ब्राह्मण राम लाल ने अफनासी को अपने बराबर का समझा था इसलिए कि अफनासी ने कह रखा था कि उसके सगे-सबधी छोटी उम्र से ही लिखना-पढना और धर्मग्रन्थो का मनन शुरू करते हैं।

ब्राह्मण पूरा कर्मकाडी था। किसी के भी साथ न खाता-पीता, अपनी बीवी के साथ भी नही। ऐसे लोग आवरणी कहलाते हैं और किसी के साथ खाना-पीना पाप समझते है—पता नही किसने क्या पाप किया हो और उनके साथ खाने-पीने से वह न जाने किस पाप का भागी हो जाये।

राम लाल घटो आसन जमाये, सारी दुनिया की ओर से बेखबर, परमानन्द की प्राप्ति के लिए ध्यान किया करता।

वह कभी किसी के साथ बहस में न पडता। लेकिन जब बात आ पडती तो लोगो को समझाता—आदमी का जन्म होता है कर्म भोग के लिए। उसका जीवन-पथ बराबर दुख और प्रलोभनो से भरा रहता है। दुनिया का हित केवल भ्रम है, और स्वय दुनिया है माया, जिसका आदमी के साथ ही लोप होता है। आदमी तपस्या करता है, कष्ट उठाता है इसलिए कि वह माया पर विजय प्राप्त करे। लेकिन क्या यह बुद्धिमानी की बात है? नही। बुद्धिमान लोग जानते हैं कि कष्टो की जड है तृष्णा। इसे नष्ट कर डालो, तो सारे दुख दूर होगे, निर्वाण प्राप्त होगा।

"हमारे यहा के मठवाले भी इसी प्रकार अपने को शुद्ध करते हैं।" सोचता हुआ निकीतिन बोल उठा—"सारी दुनिया से दूर रहते हैं, मोटी मोटी जजीरे पहनते है, अपने को मारते-पीटते हैं "

"यह तो अति है," राम लाल ने उत्तर दिया, "द्विजातियो और ऊची जातवालो के लिए दूसरा रास्ता है। उन्हे निर्वाण प्राप्त करने के लिए योगी बनने की जरूरत नही। उनका रास्ता है—

सयमित जीवन, धर्म में पूरा विश्वास, ईमानदारी, क्रोध का त्याग, सच्चाई से जीवन-यापन "

राम लाल इस विषय पर बहुत समय तक बातचीत कर सकता था। अफनासी को उसकी कई बाते अच्छी लगती, कई भ्रम में डालती, तो कई पसद न आती।

ससार के बारे में राम लाल के बडे ही विचित्र विचार थे। उसके अनुसार ससार की रचना किसी ने नही की थी। वह केवल माया है। इसी माया से सब कुछ उत्पन्न हुआ है। पहले भगवान और माया अभिन्न थे फिर किसी तरह भगवान हर चीज़ में और हर कार्य में प्रकट होने लगे।

यह सारी बातें समझना अफनासी के लिए टेढी खीर थी। हा, उसे यह जानकर ज़रूर सतोष हुआ कि यदि हिन्दुओ का भगवान एक है—उसके रूप भले ही भिन्न भिन्न क्यो न हो—तो वह ईसाइयो, रूसियों के भगवान से ज़रूर मिलता-जुलता होगा।

निकीतिन को अहिसा के महामत्र ने ईसाइयो के इस उपदेश की याद दिलायी कि कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर चाटा लगाये तो बाया गाल भी सामने कर दो।

सामान्यतया हिन्दुओ और ईसाइयो के धर्म-नियम प्राय एक ही जैसे हैं—किसी की हत्या मत करो, चोरी मत करो, दूसरो की पत्नियो को बुरी दृष्टि से मत देखो

सभी लोग राम लाल और रगू के धर्म के नही थे। भारतीय लोग भिन्न भिन्न धर्मो को मानते थे। बीदर में भारतीय मुसलमान रहते थे, जो इस्लाम में होने के बावजूद कई जातो में बटे हुए थे। इसके अलावा बुद्ध मतावलबी और अपने को श्वेताम्बर और दिगम्बर कहनेवाले तथा अन्य सम्प्रदायो के लोग भी थे। सभी अपने अपने

ढग से पूजा-पाठ करने, साथ साथ न खाते न पीते, और प्राय अलग अलग रहा करते।

हिन्दुओं को और भी अच्छी तरह जानने समझने की दृष्टि से निकीतिन ने उनकी भाषा सीखने का भी विचार किया। लेकिन इसमें कठिनाइया भी थीं। वर्ण का कहना था कि भारत में ढेरों बोलिया बोली जाती हैं, लेकिन धर्मग्रन्थ लिखे मिलते है एकदम भिन्न भाषा में। फिर भी अफ़नासी ने वर्ण और रगू की भाषा ही सीखने का प्रयत्न किया।

उसने भाषा पढना इसलिए नहीं आरम्भ किया था कि, राम लाल के मतानुसार, उसे निर्वाण प्राप्त हो जाये। वह निरीह बनना नहीं चाहता था। वह तो यह चाहता था कि इस अद्भुत देश में वह आसानी से रह सके। आखिर अभी तो यहा उसे बहुत कुछ देखना था।

उसने अपने अनुभवों के सबध में मार्ग से ही जो डायरी लिखनी शुरू की थी, उसमें उसने भारतीय व्यापार तथा स्वय देखी-सुनी सभी बातों के सबध में तरह तरह की सूचनाए दाक दी थीं। डायरी का विशेष महत्त्व था, उसमें बडे काम की चीज़ें थीं, यद्यपि वे सिलसिलेवार न थीं।

प्राय उसमें मज़ेदार घटनाओं का भी ज़िक्र किया गया था। जैसे रूस में उसने 'सामोनों' के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था लेकिन यहा उसे पता चला कि सामोन सिर्फ बन्दर होते हैं। उसने यह भी सचेत कर दिया कि रूस में लोग इसपर माथा-पच्ची न करें।

इस साधारण-सी खोज से उसे कुछ कुछ निराशा भी हुई। उसे भारत के असली चमत्कार देखने की बडी इच्छा थी। लेकिन लग रहा था जैसे यहा कोई चमत्कार है ही नहीं। बेशक यहा चमक-दमक थी, देश धनधान्यपूर्ण था, ऐसे ऐसे जानवर थे जो उसने कभी न

देखे थे, उससे भिन्न धर्म के लोग थे। पर दुख-सुख यहा भी ठीक रूसियो की ही तरह थे।

"और शायद यही चमत्कार हो?" उसने सोचा। "कुछ भी हो, रूसियों को सुनाने के लिए मेरे पास बहुत मसाला हो जायेगा और अगर यहा कुछ लम्बे समय तक रह गया तो शायद और भी बहुत कुछ देख सकूगा!"

और वह इन्तजार करता रहा – घोडा बेचूगा, रगू के साथ प्रसिद्ध श्री-पर्वती जाऊगा। वहा मिट्टी के मोल हीरे खरीदूगा।

पर शीघ्र ही उसकी मानसिक शान्ति भग हो गयी और यह भी बडे अप्रत्याशित ढग से।

और यह हुआ नवम्बर के अन्त में।

पाचवा अध्याय

अफनासी जगा और ऊपर, बास की छत की ओर देखने लगा। फिर वह बायी तरफ घूमा। खिडकी पर एक गौरैया पख फडफडा रही थी। सामने बगीचे की हरियाली के उस पार नीले आकाश के टुकडे दिखाई पड रहे थे। फूलो की सुगध, उष्ण-सी मिट्टी और ताजा पानी जैसे सारे वातावरण को जीवन प्रदान कर रहे थे। भोर हो चुकी थी। चारो ओर शान्ति छायीं हुई थी।

वह सोफे पर बैठ गया और नगे पैर काले-नीले कालीन तक लटका दिये। गौरैया चहचहाती हुई उड गयी। आख मूद लेने पर उसे ऐसा लगा जैसे वह रूसी घर में बैठा है और अहाते में बरस रही है जुलाई की गरमी। किन्तु सिर के ऊपर गठीले बास झूम रहे थे, कालीन पर कढे हुए पतले और लम्बे पैरो वाले हिरन पैर समेटे

वठे थे, कोने में एक छोटी-सी मेज़ चमक रही थी, दरवाज़े पर लटकी हुई खपच्चियों की चिक हिल-डुल रही थी और हसन कुछ वडवडा रहा था।

निकीतिन उठ खडा हुआ, उसने सलीव का निशान वनाया और हाथ-मुह धोने के लिए चला गया। हसन ने चावल पहले ही पका लिये थे। उसका शाम का लाया हुआ पानी गर्म हो गया था।
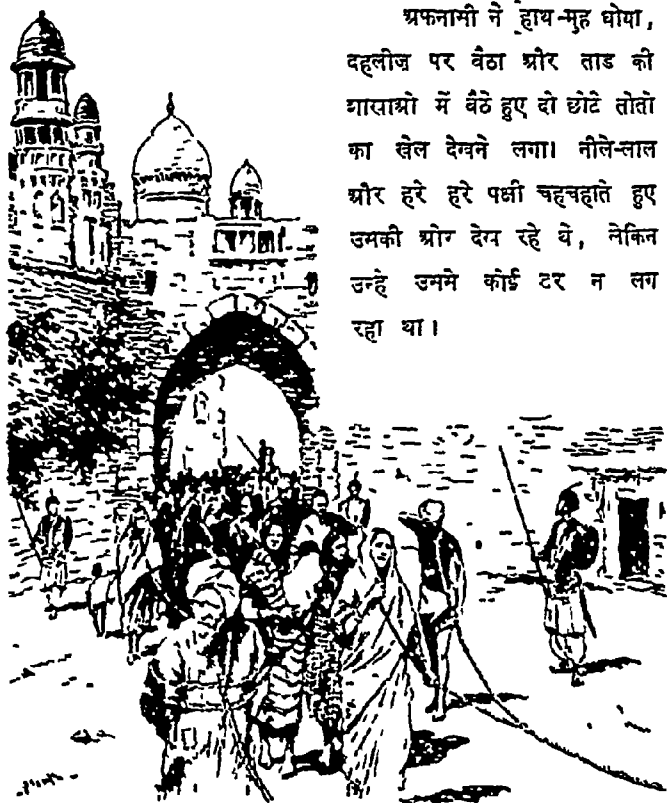
अफनासी ने हाथ-मुह धोया, दहलीज़ पर वैठा और ताड की शाखाओं में वैठे हुए दो छोटे तोतों का खेल देखने लगा। नीले-लाल और हरे हरे पक्षी चहचहाते हुए उसकी ओर देख रहे थे, लेकिन उन्हें उससे कोई डर न लग रहा था।

काश मैं इनका एक जोडा त्वेर ले जाता लेकिन अफसोस वे वहा की वर्फ न वरदाश्त कर सकेगे। कितने खूवसूरत है ये!

सुवह का समय कितना सुहावना लग रहा था। दहलीज़ पर वैठने में उसे मज़ा आ रहा था।

वह इस समय वडे रग में था। उसे याद आ रहा था वीदर का वाज़ार और वह सुन्दर नर्तकी जिसकी लचक-ठसक देख देखकर हिन्दुओ तक को आश्चर्य होता था।

दूर से धीमा धीमा शोर सा सुनाई पड रहा था। निकीतिन को आश्चर्य हो रहा था। आज शायद वुधवार नही, वृहस्पतिवार है सुलतान के जुलूस का दिन।

लेकिन नही। आज तो वुधवार ही है। तो आज वेवक्त मुसलमान कही जाने की तैयारी कर रहे हैं। उसने जुलूस देखना चाहा और कपडे पहनने गया।

जुलूस हमेशा ही वडे ठाठ का होता था। सैनिक और रईस लोग घोडो पर चढकर निकलते। एक एक रग के घोडो के दल होते, फिर लडनेवाले हाथियो की कतारे जिनपर रग-विरगी झूले लटकती –ये हाथी चलते-फिरते किले हुआ करते, जिधर वढते उधर मौत का सन्नाटा छा जाता। उनके दातो पर इस्पात के नोकदार ढक्कन लगे रहते और पीठो पर योद्धाओ के लिए हौदे होते। सिपाहियो की नगी तलवारे चमचमाया करती, सुलतान की पालकी पर, वन्दरो के सोने के कामवाले पिजडो पर और सुलतान की रखेलियो की पोशाको पर कीमती रत्न झलका करते। सीक-सलाई जैसे सुलतान के जुलूस के साथ पूरा का पूरा चिडियाघर और हरम निकला करता। आगे आगे छत्र से खेलते और रास्ता साफ करते हुए हरकारा वढा करता। वासुरिया वजा करती, डुग्गियो की डमडम कानो में

पड़ा करती और झंडे और हल्की हल्की पोशाकें हवा में लहराया करतीं।

लोग जुलूस के पीछे पीछे भागते, छतों पर चढ़ जाते और अपने को कभी नसीब न होनेवाली विलासिता को आंखें फाड़ फाड़कर देखा करते।

इसी समय अफ़नासी ने बाग़ में से देखा कि पड़ोसियों के मकानों की छतों पर लोग चढ़ने लगे। उसने भी जल्दी जल्दी बांस की एक सीढ़ी लगायी और अपने मकान की छत पर चढ़ गया। हसन वहां पहले ही से जमा हुआ इधर-उधर ताक रहा था। बायीं ओर से नगर की चहारदीवारी तक जानेवाली सड़कों पर से आवाज़ें आ रही थीं। इसके माने थे कि सुलतान का जुलूस नहीं निकल रहा है। अन्त में उसे फाटक के पीछे से आते हुए कुछ घुड़सवार दिखाई पड़े। सभी सवार भूरे रंग के घोड़ों पर चढ़े थे और सफ़ेद और हरी हरी पोशाकें पहने थे। सबसे आगेवाले घोड़े की रकाब में अल्लाह का हरा झंडा गड़ा था।

"आं! अल्लाह! अल्लाह! ऊ-ऊ-ऊ!" छतों और पेड़ों पर बैठे हुए तथा फ़ौजियों से आगे आगे चलनेवाले लोग चिल्ला उठे।

"महमूद गवान के घुड़सवार!" हसन उत्तेजित होकर चीख उठा।

कोई बीस घुड़सवार सड़क पर आ गये। उनके पीछे की सड़क एक मिनट के लिए ख़ाली दिखाई पड़ने लगी। फिर पैदल चलने वालों का तांता शुरू हुआ...

"क़ैदी लाये जा रहे हैं!" चारों ओर से यही आवाज़ सुनाई दी।

चार चार क़ैदी एक एक रस्सी से बंधे थे। सभी नंगे सिर थे। सभी सिर झुकाये, लड़खड़ाते और धूल फांकते-से चल रहे थे। सभी

थकान से चूर थे, फिर भी एक दूसरे को सहारा दे रहे थे। माताए अपनी बची-खुची शक्ति लगाकर चीखते-चिल्लाते बच्चो को छाती से चिपटाये थी। इन गदे, फटे-हाल लोगो में से कुछ ऐसे भी थे जो ताड के पत्तो से किसी प्रकार अपनी लज्जा ढके थे। सभी के पैरो में बिवाइया फट रही थी, छाले पड गये थे।

इन किस्मत के मारो का जुलूस किसी प्रकार घसिट रहा था, लेकिन लोग थे कि उत्तेजित हो होकर उनपर मिट्टी के ढेले और पत्थर बरसा रहे थे। भीड मस्त चिल्ला रही थी और सिपाही उसे ढकेल रहे थे। अफनासी का कलेजा बैठा जा रहा था।

किसी पागल नागरिक ने ऐसा साधकर एक पत्थर मारा कि वह किनारे पर लडखडा लडखडाकर चलनेवाले एक सात साल के बच्चे के सिर में लगा और बच्चा वही ढेर हो गया। बेचारा आखिरी बार चीख भी न पाया। बस, उसके कन्धे दो बार फडफडाये और फिर हमेशा के लिए शान्त हो गये। उसकी भूरी और दुबली-पतली लाश बढते हुए लोगो के पीछे रस्सी के सहारे घसिटती चली गयी।

भीड खुशी से चीख उठी।

अफनासी ने ओठ काटे और सहसा सामने झुक गया।

इस हो-हल्ले से फायदा उठाकर घेरे में बधी हुई किसी लडकी ने उस गिरे हुए बच्चे को गोदी में उठा लिया। ठीक इसी समय वह अफनासी के मकान के आगे से गुजर गयी। उसके काले काले बालो पर धूल जम गयी थी, ओठो का फेन सूख चुका था। वह कठिनाई से चलती रही। लाश का बोझ उसके लिए भारी पड रहा था। उसके दुबले-पतले चेहरे पर दुख की नही, घृणा की झलक थी।

अफनासी के मुह से निकलते निकलते रह गया—"ओलेना!"

सहसा उसके हाथ कांपे और वह अपने पर नियंत्रण न रख सका। वह जैसे मुंह बा बाकर सांसें लेने लगा। लड़की, जो फटी-सी साड़ी पहने थी, उसके आगे से निकल गयी। क्या यह भगवान का ही तो चमत्कार न था? वह पंजों पर खड़ा हो गया। ओलेना का सिर दूसरे सिरों के समुद्र में ग़ायब हो चुका था किन्तु उसने ओलेना की तरह दाहिने कंधे की ओर झुकी हुई उसकी गरदन एक बार फिर देखी, और बस!

सहसा उसे काशिन के घर की ड्योढ़ी और उस सन्ध्या की याद आ गयी।

"मेरा इन्तज़ार करोगी न, मेरी लाडली?"

"करूंगी, करूंगी ..."

क़ैदी चले गये। हसन उस शर्मनाक जुलूस के अन्त में चलनेवाले घुड़सवारों को देख रहा था। अफ़नासी नीचे उतर गया। आश्चर्य कि सतायी हुई लड़की की शक्ल ओलेना से कितनी मिल-जुल रही थी। इससे उसके दिल में हलचल मच गयी। धिक्कार है उन लोगों को जो असहाय क़ैदियों पर जुल्म ढाते हैं। इन बेचारे गुलामों को देखकर उसका कलेजा जल-सा गया।

रंगीन सुबह काली पड़ चुकी थी। सिर के ऊपर चहचहानेवाले तोते भी उस समय इसे काटने-से लग रहे थे। "जैसे तातार रूसियों पर जुल्म करते हैं!" उसने सोचा।

हसन कूदकर बगीचे में आ गया और उसके आगे मुस्कराता हुआ, कहने लगा—

"अब ख़ज़ानची का इन्तज़ार करना चाहिये। आपको हिन्दुओं के पास जाने की कोई ज़रूरत नहीं। ख़ज़ानची आपकी पूरी पूरी मदद करेगा ..."

अफ़नासी हसन की आखो में आखें डालकर देखने लगा।

"हिन्दुओ ने तुम्हारा क्या बिगाडा है जी?"

उसके मुह से निकलते निकलते रह गया—"और कौन जाने तेरे मा-बाप हिन्दू ही रहे हो। तुझे मालूम ही न हो?"

"वे सारे मुसलमानो को मार डालना चाहते हैं," हसन ने दृढता से उत्तर दिया। उसके चेहरे पर कोई भाव न थे।

अफनासी ने सिर झुकाया और उदास-सा होकर उससे पूछने लगा—

"इन कैदियो का क्या करेंगे?"

"बेच देंगे इन्हें," एक ओर देखता हुआ हसन बोला, "चावल तैयार है, खोजा। दू?"

"नही।"

अफनासी उठ खडा हुआ। उसका हृदय अशान्त था। वह जानता था कि वह असहाय है, कुछ नही कर सकता। उसका जी हुआ कही चला जाय, भाग जाय। हसन के साथ रहना उसे बर्दाश्त न हो रहा था।

"हसन, मैं रगू के पास जा रहा हू।"

हसन ने आखें फाडकर देखा और कन्धे झटका दिये। खोजा यूसुफ ने मेरे लिए क्या नही किया! उसके साथ रहकर तो मैं अपनी पहली हीनता तक को भूल गया था। लेकिन पिछले कुछ समय से खोजा बराबर हिन्दुओ के साथ रहता है। बेशक वह ईसाई है, लेकिन हसन तो मुसलमान है। काश खजानची जल्दी आ जाता फिर सब ठीक हो जाता।

निकीतिन सडक पर कुछ समय तक अनिश्चित-सी दशा में खडा रहा, फिर तेजी से घूमा और हिन्दुओ के मुहल्लो की विरुद्ध दिशा में चल दिया। क्यो? इस क्यो का उत्तर वह स्वय न जानता था

बीदर के बाज़ार में रग ही रग दिखाई दे रहा था। आज सुबह से तो वहा विशेष चहल-पहल मची हुई थी, हमेशा से कही अधिक। ठठेरे अपने काम पर वैसे ही जुटे थे, जुलाहे अपने साधारण-से करघे वैसे ही तत्परता से चला रहे थे, दूकानदार अपने अपने सौदे बेचने के लिए वैसे ही चिल्ला रहे थे, दरवेश वैसे ही चीख-चिल्ला रहे थे और खरीदार वैसे ही एक दूसरे को धकिया धकियाकर चल रहे थे। फारस के बढिया कामवाले कालीन, हिन्दुस्तान के खूबसूरत कपडे, मसाले, तरकारिया, गोश्त, थालिया, कटोरे—यह सारी चीज़ें ज़मीन पर, तख़्तो पर और बेंचो पर बिखरी पडी थी। सामान के इर्द-गिर्द अजीब चिल्ल-पो मची हुई थी।

किन्तु जिस ओर गुलाम बिक रहे थे उधर असाधारण चहल-पहल थी।

कैदी बेचारे छोटे छोटे दलो में खडे हुए अपनी अपनी क़िस्मत के फैसले का इन्तज़ार कर रहे थे। अफनासी योद्धाओ, व्यापारियो और रईसो के हरमो के जनखो के बीच से होता हुआ आगे बढ रहा था।

उसने देखा—खरीदार गुलामो के जिस्म ठोक बजाकर देख रहे हैं, उनके मुहं में उगलिया डाल डालकर उनके दातो की जाच और औरतो के शरीरो की रचना के बारे में व्यवहारिक ढग से बातचीत कर रहे हैं।

उसे हज़ारो चेहरे दिखाई दिये—उदास, रुआसे, अपमानित।

उसने उस लडकी को भी देखा। लडकी अपने मालिक के पास खडी थी। उसका मालिक एक बूढा खूसट सिपाही था जिसके मुह पर चोटो के निशान थे। वह हाथ में एक रस्सी पकडे था जिसमें पाच लडकिया बधी थी। एक अधेड-सा मुसलमान उस लडकी को खरीदना चाहता था। इस मुसलमान की बायी आख टेढी थी। उसने लडकी

के चारो ओर एक चक्कर लगाया और सिर नीचे कर उसके शरीर की जाच करने लगा। सिपाही इस खरीदार की ओर तटस्थ-सा देख रहा था। लडकी शात खडी थी। उसका शरीर तना हुआ था, सिर ऊपर उठा हुआ था और आखो से निकलकर वडे वडे आसू नीचे ढरक रहे थे।

"छ शेखतेले?" सोचते हुए टेढा खरीदार धीरे से बोल उठा, "लेकिन इसका क्या ठिकाना कि यह कन्या है?"

"अरे, तुम!" सिपाही रस्सी पकडे पकडे बोल उठा, "तो "

अफनासी अपने को न सभाल सका। वह आगे वढ आया और सिपाही के सामने खडा हो गया।

"मै खरीदूगा!" उसने जल्दी जल्दी और अस्पष्ट शब्दो में कहना शुरू किया, "उसे छोड दो यह रहे सात शेखतेले "

सिपाही ने रस्सी ढीली कर दी और निकीतिन की अजुलि में खनकते हुए सिक्के देखने लगा।

टेढे ने आपत्ति की—

"माल मै देख रहा हू। शायद मै भी सात शेखतेले दे दू।"

"मैं दस दूगा!" टेढे की ओर न देखते हुए अफनासी बोल उठा।

"गुलाम इतने महगे नही होते!" उसने एतराज करते हुए कहा।

लेकिन सिपाही बोला—

"खोजा दस दे रहे हैं। लडकी उन्ही को मिलेगी। बोलो तुम दस से ज्यादा दोगे?"

"मेरा दिमाग खराब है क्या कि एक लडकी के लिए इतना पैसा दू!"

"ऐ काने, भाग यहा से! अरे ऐसे माल के लिए तो तुरन्त दस कहना चाहिए। खोजा की आखें हैं जौहरी की आखें और दिल माशा-

अल्लाह् कितना बडा है उनका। वे समझते हैं सिपाही की मुसीबतें– तुम्हारी तरह थोडे ही हैं। इस माल के लिए मैंने खून बहाया है!"

सिपाही ने लडकी निकीतिन की ओर बढा दी।

"जा, अब ये खोजा तेरे मालिक हुए . उम्रदराज़ हो खोजा! तुमने बढिया माल खरीदा है। इसे इस्तेमाल करना और गफूर का नाम लेना। गफूर यानी मलिक-अत-तुजार का सिपाही!"

यह दुबली-पतली लडकी जडवत निकीतिन के सामने खडी हो गयी।

अफ़नासी ने उसकी कलाई पकडी और उसे बाज़ार के बीच से होता हुआ ले चला। लडकी विनम्रतापूर्वक उसके पीछे पीछे चलती रही। निकीतिन को लगा जैसे सारा बाज़ार उन्हें घूर घूरकर ताक रहा है। वह दात भींचे लोगों को हटाता हुआ आगे बढ रहा था और भीड की आखों से हटकर घर पहुचने की जल्दी में था। आख़िर बाज़ार पीछे छूट गया। वह रहा नुक्कड, वह रहा ताड का पुराना पेड और वह कुम्हार का मकान।

हसन साश्चर्य पीछे आता रहा। फिर मुह खोलकर मुस्कराया।

"खोजा, तुमने रखेली खरीदी है?" खुश होकर उसने पूछा, "बडी हसीन है। मुबारक हो। घर में रौनक रहेगी।"

निकीतिन ने उसे कठोर दृष्टि से देखा–

"चुप रहो! जाकर पानी लाओ!"

हसन मुह सामने किये किये

पीछे हटने लगा और हाथ पीछे कर चमडे की वाल्टी टटोलने लगा।

अफनासी लडकी को वगीचे में ले आया और उसे वाहर की सीढिया दिखाते हुए कहने लगा –

"वैठो।"

वह उसकी आज्ञा मानकर वैठ गयी और पथराई-सी आखो से सामने देखने लगी।

निकीतिन ने लडकी की अधखुली छाती और सावले रग के नगे पैर देखे और धीरे धीरे वडवडाता और मुक्का दिखाकर किसी को धमकी-सा देता हुआ दौडकर घर में घुस गया। कमरे में कुछ महगी किस्म के अच्छे कपडे रखे थे। उसके हाथ मे जो पहला कपडा पडा उसने उसे उठाया और यह अनुमान लगाकर कि वह लडकी के लिए ठीक होगा वगीचे में लौट आया। लडकी पहले की ही तरह अपनी जगह जडवत् वैठी थी।

लडकी की ओर देखने का प्रयत्न न करते हुए अफनासी ने कपडा उसकी ओर वढा दिया।

"यह लो   इसे पहन लो   "

किन्तु वह न हिली, न डुली। कपडा उसके घुटनो से फिसलकर ज़मीन पर गिर गया।

निकीतिन ने कपडा उठा लिया। उसपर गर्द लग गयी थी। उसने गर्द झाडी और फिर उसे लडकी की ओर वढाते हुए कहने लगा –

"यह लो।"

दरवाज़ा खुला और वाल्टिया लिये हसन उनके पास आ गया।

"पानी ले आया हू, खोजा।"

"तसला दो ... यहाँ ... इसमें उडेलो पानी ... और लेकर जाओ। यह थोडा है। जल्दी जाओ।"

हसन फिर भागता हुआ निकल गया।

अफनानी वहीं खडा खडा पैर पटकता रहा। उसकी समझ ही में न आ रहा था कि इस लडकी को कैसे समझाये कि वह नहा-धो ले। आखिर उसने उसका हाथ पकडा, उसे तसले के पास लाया और पानी दिखाकर इशारा किया—नहा डालो।

लडकी उसकी आज्ञा मानकर धीरे धीरे साडी उतारने लगी। अफनानी वहाँ से चला गया।

हसन से बाल्टियाँ लेकर उसने आज्ञा दी—

"जाओ और कर्ण या रगू को बुला लाओ।"

अफनानी पानी की छपाक सुनता हुआ अधेरे बरामदे में खडा हो गया।

फिर कोई आध घटे तक इन्तज़ार कर चुकने के बाद वह बडी सावधानी से उस दरवाज़े की ओर बढा जो बगीचे में खुलता था।

"अन्दर आ सकता हूँ?"

एक सेकड तक चुप्पी रही। उसके पश्चात् उसे उस लडकी की महीन आवाज़ सुनाई दी। लडकी ने न जाने किस भाषा में क्या कहा और अफनानी ने दरवाज़ा खोल दिया।

लडकी नीली रेशमी साडी पहने गुलाब की झाडी के पास खडी हो गयी। वह अपने धुले-पुछे हाथों से साडी का किनारा पकडे थी। उसके चमचमाते हुए काले बाल गुथे और सिर के पीछे चोटी के रूप में बधे थे। बडी बडी आखे, गोल भौंहे और हल्के गुलाबी ओठ उसकी सुन्दरता में चार चाद लगा रहे थे।

लडकी का चेहरा कुछ कुछ अफनानी की ओर झुका हुआ था।

भय, अविश्वास, आशा की क्षीण किरणें, मूक गिडगिडाहट और आश्चर्य–ये सारी भावनाए न केवल उसके चेहरे से ही, अपितु उमके सम्पूर्ण दुखी व्यक्तित्व से व्यक्त हो रही थी।

अफनासी ने मन ही मन उमकी सराहना की। उमे उसकी हालत पर तरस भी आया। वह उससे क्या कहे, क्या सुने, यह उमकी समझ ही में न आ रहा था। वह उसे देखकर वडे स्नेह से मुस्कराया और जैसे उसे समझाते हुए हाथो के इशारे से कहने लगा–यहा की हर चीज़ तुम्हारी है, तुम डरो मत। यही रहो, खुश रहो।

प्राय हाव-भाव और मुद्राए दिल की बात शब्दो से अधिक प्रकट करती हैं। शायद इसी कारण वह चौकन्नी-सी लडकी तुरन्त ही समझ गयी कि यह व्यक्ति मेहरबान है, उदार है और उसका बुरा नही चाहता। उसके ओठो पर सलज्ज मुस्कान बिखर गयी, जिसमें अफनासी के प्रति उसके विश्वास की झलक थी।

निकीतिन हसा और खुश होकर छाती ठोकता हुआ कहने लगा–

"मैं अफनासी हू। मेरा नाम है अ-फ-ना-सी!"

लडकी ने उसकी बात समझी और छाती पर फिसलती हुई साडी कापती हुई उगलियो से साधे रही।

"सीता!" अफनासी को उसकी आवाज़ सुनाई दी।

जब रगू पहुचा उस समय अफनासी और सीता पास पास बैठे थे। अफनासी के सिर पर पगडी न थी। सीता की निगाहे उसके बालो मे होती हुई उसके गोरे गोरे हाथो पर टिक गयी थी। लग रहा था जैसे वह उसे समझने का प्रयास कर रही हो।

निकीतिन की बात सुनकर रगू ने सीता को समझाया कि वह आजाद है और पूछा कि वह कहा से आयी है और उसे कैसी मदद चाहिये।

लडकी के मुह पर जैसे रौनक आ गयी। उसने रगू की बात का जवाब दे दिया।

"यह लडकी मराठा जाति की है।" रगू बोला, "हम दोनो एक दूसरे की बात समझते हैं।"

किन्तु कर्ण के पोते ने लडकी से कुछ बात और की और फिर निकीतिन की ओर विचित्र ढग से देखने लगा।

"क्या बात है? क्या कहा?" अफनासी ने घबडाकर पूछा।

"सुनो," कुछ हिचकिचाते हुए रगू बोला, "उसे जाने का कोई ठिकाना, नही। उसका गाव जला डाला गया है। उसके मा-बाप मारे जा चुके हैं और उसकी बहन उसे कोई पियक्कड सिपाही उठा ले गये। बाद में सीता ने अपनी बहन को नही देखा।"

अफनासी की भौहे तन गयी। उसने दृढता से कहा—

"खैर! अगर चाहे तो फिलहाल मेरे घर रहे। शायद हमें उसके किसी नाते-रिश्तेदार का पता चल ही जाय।"

"और अगर न चला?" रगू आपत्ति करते हुए बोला, "उसे तो अपने घर का रास्ता भी नही मालम। फिर वह है भी बहुत दूर। उसे एक महीने से अधिक तो रास्ते में ही घसिटते लग गया था।"

"तो फिर " अफनासी ने कहा, "खैर बाद में देखा जायेगा।"

"हमें राम लाल की राय लेनी चाहिये!" रगू धीरे से बोला, "इस लडकी को अपने कुटुम्बियो से मिलना ही चाहिए, अपनी जातवालो से।"

"जातवालो से? क्यो?" निकीतिन ने आपत्ति की, "वह उनके बिना भी जीवित रहेगी।"

"आदमी को अपनी जात का ही होकर रहना चाहिये," रगू जैसे अपनी बात पर अडा रहा, "मै राम लाल के पास जाऊगा। जैसा वह फैसला करेगा हम वैसा ही करेगे   अगर तुम्हे एतराज न हो तो।"

"अच्छी बात है, मुझे कोई एतराज नही," उदास होकर निकीतिन ने उत्तर दिया।

रगू उठा, लडकी से कुछ कहा और जाने की तैयारी करने लगा।

"ठहरो!" निकीतिन ने उसे रोका, "मेरे बारे में भी तो इसे कुछ बता दो। कहा से आया हू, कौन हू। वरना वह खाना तक न छुयेगी। वह भूखी है   "

रगू चला गया। सीता ने खाना खाया और उसकी ऐसी आख लगी कि बडे कमरे के क़ालीन पर मुरदे की तरह पड गयी। तभी अफनामी ने हसन को अधेरे गलियारे में खडे देखा।

"खोजा," हसन जोश में आकर बोला, "हिन्दुओ की बाते न सुनो, खोजा! यह लडकी तुमने खरीदी है। वह तुम्हारी अमानत है। यह ब्राह्मण जाने क्या क्या जड दे। इसे यहा आने ही मत दो, खोजा!"

निकीतिन सिर हिलाता हुआ वही खडा रहा।

"तुमने मेरा ख्याल किया, हसन। शुक्रिया। पर तुमने उसके बारे में कुछ नही सोचा? वह कैसे रहेगी, सोचा है? नही तो, हसन   "

खज़ानची मुहम्मद अपने आलीशान मकान के बग़ीचे में एक छोटे-से तालाब के किनारे बैठा हुआ आटे की रोटी के छोटे छोटे टुकड़े तोड़कर पानी में फेंकता और चंचल मछलियों को टुकड़ों पर मुंह मारते हुए देखता जा रहा था।

यह एक सीधा-सादा मन बहलाव था किन्तु मुहम्मद की आंखों के सामने ऐसा धुंध छा रहा था कि तालाब, मछलियां और रोटी के छोटे छोटे टुकड़े–एक एक के दो दो, तीन तीन और फिर ढेरों का स्वरूप धारण कर कहीं दूर, किसी अज्ञात दुनिया में, अदृश्य हो गये थे। उंगलियां बराबर टुकड़े तोड़तीं और उन्हें यन्त्रवत् तालाब में फेंकती जा रही थीं ... नहीं! खज़ानची का ध्यान किसी खास चीज़ की ओर न था। और सचमुच वह वास्तविकता की दुनियां में लौटना भी न चाहता था–आखिर इस दुनिया में उसे सुख था कहां? उसे लग रहा था उसे जैसे उसमें लगन और विचारों की दृढ़ता का अभाव-सा है। वह जानता था कि यह दशा उसके मन की क्लान्ति की सूचक है। किन्तु उसे इसी में सुख मिल रहा था, ऐसा सुख जिसमें व्यथा की छाप थी। वह अकेला था, सबकी आंखों से दूर।

खज़ानची को अपना शरीर कमज़ोरी के कारण भारी, थका थका और पराया जैसा लग रहा था। लोगों का ख्याल था खज़ानची बहादुर है, साहसी है, शक्तिशाली है, उसमें ज़िन्दगी है। किन्तु खज़ानची जानता था कि यह सब कुछ झूठ है, उपर्युक्त सारे गुण उसके लिए मौत की नक़ाब की तरह हैं। वह लोगों को धोखा दे सकता था पर ख़ुद अपने को धोखा देना वह नहीं चाहता था। बात सारी दिल्ली में हुई थी, कोई दस साल पहले। उस हिन्दू राजेन्द्र को लेकर। पर उस समय खज़ानची न जानता था कि इसके परिणामस्वरूप उसकी आत्मा पर मुरदनी छा जायेगी। उसने ज़िन्दगी को पकड़ना चाहा था, जीना चाहा था। उसने

सारा मान-सम्मान, सारी दौलत जोडी थी चुगलखोरी से किसी को मौत के घाट उतारकर। अब गोया कि उस कर्ज को उतारने का समय आ गया था। उसकी आत्मा कराह रही थी और वह उससे अपना पिंड छुडाने में असमर्थ था। बिल्कुल असमर्थ। कोई अस्पष्ट-सा भय बराबर उसके पीछे पडा रहता था। नौकरों-चाकरो की निगाहें, चिलचिलाती धूप में जानेवाले किसी हिन्दू की सफेद धोती, दूसरो की हंसी, फुसफुसाहट इन सभी में उसे कोई भय-सा लगा करता। कभी कभी तो खजानची का जी करता कि घायल शेर की भांति गरजे, चीखे। निराशा के दौरे के बाद उसे लोगों पर क्रोध आने लगता। दूसरो को घृणा की दृष्टि से देखना—यही तो उसे जीवित रखने में सहायता दे रहा था। दूसरे तुच्छ हैं, निकम्मे हैं, उसका यह विश्वास जैसे उसके अपने अस्तित्व को सुदृढ बना रहा था, अपनी निगाहों मे उसे ऊंचा उठा रहा था

किन्तु कभी उसे लगता जैसे यह सब धोखा है। और तब वह संकल्प कर लेता कि वह ईमानदारी की जिन्दगी बसर करेगा, किसी का बुरा न चेतेगा और अपने पुराने पापो का प्रायश्चित करने के लिए भविष्य में अच्छे काम करेगा।

और सचमुच उसने कई अच्छे काम किये भी। उसने मस्जिद में खैरात बांटी, गरीबो की मदद की, जरूरतमंदो को पैसा दिया, उन लोगो की सहायता की जिनके कारोबार चौपट हो गये थे।

बीदर में कम से कम बीस आदमी ऐसे थे जो खजानची की पूजा करते थे। वह कभी अपने गुलामों पर जुल्म न करता, उन्हे विवाह की अनुमति देता। कइयों को तो उसने आजादी भी दे दी थी। छोटे छोटे व्यापारियों को वह हमेशा रुपये-पैसे की मदद दे दिया करता। मुल्ले तो उसकी उदारता की मिसालें दिया करते थे।

लेकिन भय था कि उसके पीछे ही पडा रहता। अपनी कमजोरी के क्षणो में, जैसा उसे इस समय लग रहा था, खज़ानची आराम करता। डर से भागकर आराम करता।

खज़ानची ने कसकर आखें मीची, सिर हिलाया और कन्धे झटका दिये। उसकी उगलियो ने रोटी का वडा टुकडा तोडा और झटके के साथ तालाव में फेंका। मछलिया तितर-वितर हो गयी। किनारे पर से उसे एक छोटा-सा काला कछुआ दिखाई दिया। कछुए ने अपना लालची सिर उठाया। उसके पजे धीरे धीरे चल रहे थे। वह टुकडे की ओर तैर रहा था खज़ानची का मदहोश कर देनेवाला कमजोरी का दौरा जैसे दूर हो गया। अब सब कुछ असली हालत में अपनी अपनी जगह पर आ गया। अब अपने ख्यालो के बीच उसे ध्यान आ रहा था रूसी सौदागर का, जिसका खज़ानची मुहम्मद इन्तज़ार कर रहा था।

इस ख्याल के आते ही जैसे वह कुछ कुछ चिड़चिडा उठा।

वह पिछले दो दिनो से बीदर में था। किन्तु उसकी निगाहो के आगे खेलना की चढाई, मारकाट, आगजनी और उन पर्वताकार हाथियो की शक्लें घूम रही थी जिनके पैरो के नीचे पड़कर नगी औरतें और पागल-से पुरुष कुचल जाते थे। लेकिन रूसी का ख्याल आते ही ये चित्र भी ग़ायव हो गये। हु-ह हु-ह वज़ीरे आज़म मालिक-अत-तुजार, उसपर मेहरवान था। उसकी घोडो की खरीद से महमूद गवान वडा खुश हुआ था। जव खज़ानची ने उससे अज्ञात रूस से आये हुए विचित्र परदेसी और रूस के सस्ते सामानो का जिक्र किया था तो उसने इन वातो में भी दिलचस्पी ली थी। इसके अतिरिक्त मुहम्मद ने असद-खान के सामने परदेसी की जो वकालत की थी उसका भी महमूद गवान ने अनुमोदन किया था और यह आज्ञा दी थी कि जव वह बीदर आयेगा तो उस रूसी से वातचीत करेगा

वज़ीरे आज़म की क्या बात—ढेरो काम, ढेरो चिन्ताए। शकर राजा पर चढाई करनी है, गोग्रा फौज भेजनी है, मलाबार तट पर जाना है। विजयनगर पर चढाई करने की बात सोचनी है। फिर भी उसने उस रूसी में दिलचस्पी दिखायी।

"यह बहादुर आदमी है!" मुहम्मद को आज भी वज़ीरे आज़म के ये शब्द साफ साफ सुनाई पड रहे थे।

हा, बेशक बहादुर है। किन्तु जाने किस बात से खज़ानची इस व्यक्ति की ओर से अधिकाधिक चिन्तित और सतर्क होता जा रहा है। इस रूसी ने एक हिन्दु की रक्षा करके हुसेन के साथ बडा विचित्र व्यवहार किया था। असद-खान से भी असभ्यता से पेश आया था। और फिर बीदर में भी उसका व्यवहार बडा अजीब रहा है।

यह रूसी सीधा-सादा है। सोचता है कि बीदर में ऐसे खो जायेगा जैसा रेत में सुई। लेकिन वह नही जानता कि शहर कोतवाल की आखें चमरौटी तक पर रहती हैं। फिर वह सूदखोर किरोधार और पानी भरनेवाले वे छोकरे जो उसी कुए मे पानी खीचते है जहा से हसन लाता है। और फिर दूसरे नौकरो की तरह हसन के पेट में भी तो बात नही खटाती। फिर वे व्यापारी हैं जो निर्मल से ईर्ष्या करते हैं। इस रूसी के बारे में राई रत्ती तक मालूम है—राई रत्ती तक।

हिन्दुओ के साथ उसका मेल-जोल! बीदर में रहनेवाले व्यापारी के लिए यह कुछ खास बात नही। सबसे बुरी बात तो है कर्ण का यानी राजेन्द्र के पिता का साथ। और राजेन्द्र—खज़ानची उसका तो नाम भी ज़ोरो से नही ले सकता। हो सकता है यह सब कुछ इत्तिफाक से ही हुआ है। हा, कर्ण खज़ानची को नही जानता। वह जान भी नही सकता। और जानना चाहिये भी नही। फिर भी फिर भी

खजानची ने रोटी खत्म कर डाली। उसके ओठ भिच गये। और पलके खुली रह गयी। उसके दिल में अपने आप इस सीधे-सादे, भोले-भाले और दृढनिश्चयी आदमी पर खीझ हो रही थी जो देश के शासको के रस्म-रिवाजो, उनके कानूनो को नही मानता था। पर जब गुलाम ने रूसी सौदागर के आने की सूचना दी तो मुहम्मद ने मेहरबानो जैसा मुह बना लिया, मुस्कराते हुए उठा और हाथ बढाते हुए, उससे मिलने के लिए आगे आ गया—अभी उसने अन्तिम रूप से कोई निश्चय न किया था।

"यह फर्वरी का महीना है। हम कोई छ माह से एक दूसरे से नही मिले!" खजानची बोला और बढिया बिसात पर हाथी-दात के बने शतरज के मोहरे बिछा दिये। "सूरत शक्ल से तो अच्छे दिखाई पडते हो। कैसे हाल-चाल है?"

"हाल-चाल ठीक है," खुशी से अफनासी ने उत्तर दिया, "दिसम्बर में घोडा बेच दिया था, उमर-खान के हाथ। उसे जानते हो?"

"सुलतान के घुडसवारो का सरदार? उसने ठीक ही कीमत दी होगी।"

"हा ' "

"तो तुम बीदर में रहते हो? तुम्हे यहा अच्छा लगता है?"

"शहर बुरा नही है। लेकिन अभी तो मैंने महल ही नही देखा। मुझे कोई जाने ही नही देता।"

"महल दिखाने का इन्तजाम मै कर दूगा। तुम महल देख लोगे तुम्हारा कारोबार ठीक चल रहा है न?"

"क्या बताऊ? मै अधिकतर देखता-सुनता हू। मैंने बगाल, गगा और आसाम के बारे में बहुत कुछ सुना है। सोचता हू एक चक्कर लगा आऊ "

"फिर जाते क्यो नही?"

"समय निकला जा रहा है, दोस्त। और बगाल, आसाम जाने केलिए दो-तीन साल चाहिये। लगता है इस बार भाग्य मुझे वहा न ले जायेगा। और मै अपने देश के लिए तरस रहा हू। श्री-पर्वती ज़रूर जाना चाहता हू और गोलकोडा और रायचूर भी।"

"आ-ऽऽ! जवाहरात के लिए न   किसके साथ जाओगे श्री-पर्वती?"

"मेरे परिचित हिन्दुओ ने मुझे अपने साथ ले जाने का वादा किया है। एक रत्न-तराश है, कर्ण   तुमने उसका नाम नही सुना?"

"कर्ण   हू-ह   लगता है सुना है। कुछ भी हो सारे काफिर एक ही थैली के चट्टे-बट्टे है।"

"नही, ऐसा न कहो!" अफनासी ने टोकते हुए कहा और बिसात के ऊपर हाथ करते हुए सोचने लगा।

शतरज में खेल की स्थिति बडी विषम हो रही थी। अफनासी अपना हाथी गवाकर मुहम्मद की स्थिति खतरे में डालने की सोच रहा था। किन्तु खजानची उसका जवाब भी तो दे सकता था। आखिर अफनासी ने तय कर लिया। यदि मुहम्मद घोडे की चौथी चाल पर ध्यान नही देता तो फिर मात।

अफनासी ने बिसात पर धड से मोहरा रखा और शह दे दी।

"हा, ऐसा न कहो!" उसने अपनी बात दुहरायी। "तुम तो मुझे जानते ही हो। मै हू ईसाई। मुझे मुहम्मद या विष्णु मे क्या करना-धरना! मुझे माफ करना, मै कहूगा साफ साफ। बुरा मत मानना। पर ऐसे कुछ मुसलमान है और हिन्दू भी जो मुझे अपनो जैसे लगते है। बेशक हम अलग अलग ढग से अपना धर्म मानते है, हमारे रीति-रिवाज भी अलग अलग है, पर इनसान हमेशा इनसान रहता है न।

अच्छे, ईमानदार और सीधे-सा लोग भी होते हैं और ईमान और बुरे लोग भी। ईसाइयों में भी बुरे लोगों से कोई दोस्ती नहीं करता।"

"यह मजहब तो बड़ा विचित्र है!" निकीतिन का हाथी पीटते हुए मुहम्मद मुस्कराया। अफ़नासी ने भी जवाबी चाल चली और दाढ़ी सहलाने लगा।

"शायद ... शायद ..." अफ़नासी ने अन्यमनस्क होकर उत्तर दिया, "जानते हो कि मैं फ़ारस होकर आया हूं। मैंने मुसलमानी शहर देखे हैं। तुम्हारे गीत सुने हैं, शैरो-शायरी सुनी है। यह बड़ी खूबसूरत चीज़ें हैं। भारत में भी भले मुसलमान हैं। उनमें कारीगर भी हैं और कलाकार भी। सच पूछो तो पहले मुझे तुम लोगों की बातें पसन्द न थीं। लेकिन आज वही विचार मुझे बेहूदा लगता है। हर जगह ऐसी चीज़ें हैं जिनकी इज़्ज़त करनी चाहिये और उनसे कुछ सीख लेनी चाहिये। यही बात काफ़िरों के बारे में भी सच है। मेरा एक दोस्त है राम लाल। उसने मुझे महाभारत का क़िस्सा सुनाया है।"

"'महाभारत' का क़िस्सा सुनाया है ..."

"हां, कितना अद्भुत है यह क़िस्सा। यह ग्रन्थ तो विद्वत्ता की खान है।"

"यह सब हिन्दुओं की मनगढ़न्त है।"

"अच्छा यही सही। लेकिन बिना आग के धुआं नहीं होता। हर क़िस्सा-कहानी की कोई न कोई तो सच्ची बुनियाद होती ही है। अतीत का इतने अनूठे ढंग से वर्णन किया गया है कि मुझे तो रश्क होता है। यह हुई पहली बात। फिर हिन्दुओं के देवताओं की कहानियां ही ले लो या उनके जुलाहों, हथियार-निर्माताओं, जवाहरात पर चमक रखनेवालों या रत्न-तराशों को ही देख लो ... शतरंज के ये मोहरे भी तो हिन्दुओं के बनाये हुए हैं?"

"शायद "

"हा। हिन्दू बडा होशियार होता है, कमाल का कारीगर। मैं बिना समझे-बूझे उसके दुख का कारण नही बता सकता। हो सकता है उसका कारण उनके पुराने रीति-रिवाज हो। मैंने सुना है कि हिन्दुओ की विधवाओ को ज़िन्दा जला दिया जाता है, उनमें आदमियो की कुरबानिया होती है, बडे परिवार में लडकी के पैदा होते ही उसका गला घोट दिया जाता है। हो सकता है इसका कारण उनकी जात-व्यवस्था हो, जिसने सारी जनता को बाट रखा है। या हो सकता है अहिंसा ने ही उनका अहित किया हो यह मेरी समझ में भी नही आता।"

"हमारा ख्याल है उनकी अहिंसा हमारे अनुकूल है," शरारत भरे ढग से खज़ानची बोला, "वह सुलतानो के काम में विघ्न नही डालती।"

"ऐसा कैसे कह सकते हो तुम?" उसकी भर्त्सना-सी करते हुए अफनासी ने कहा, "इससे उन्हे सिर्फ तकलीफें ही होती है। कर्ण की ही मिसाल ले लो। उसके बेटे को किसी ने मार डाला और वह है कि चुप बैठा है। अहिंसा का पुजारी। चुप बैठने के बजाय उसे अपने बेटे की मौत का बदला लेना था। हिन्दू ऐसे ही होते हैं—सब कुछ सह लेते हैं आखिर कभी तो उनके सब्र का प्याला भरेगा ही।

और तब उनके दुश्मन अपना सिर भी न छुपा सकेंगे। तुम तो खुद ही जानते हो कि अपने अत्याचारियों की तुलना में इनकी संख्या कितनी अधिक है!"

मुहम्मद ने उत्तर न दिया बल्कि बराबर बिसात पर नज़र गड़ाये रहा। निकीतिन ने ख़ज़ानची पर निगाह डाली। ख़ज़ानची की आंखें शून्य-सी लग रही थीं। वह कांपते हुए हाथ से कोट का कालर झुला रहा था। वह भारी सांस लेते हुए बिसात पर निगाह दौड़ाने लगा।

"यह लो। अब मैंने फांस लिया तुम्हें!" निकीतिन हंस दिया, "तुम्हें घोड़ा चलना था। और अब – मात ... चलो नयी बाज़ी बिछाओ... मैं काफ़िरों को बुरा-भला नहीं कह सकता..."

मुहम्मद ने फिर बाज़ी बिछायी और अपने को पूरी तरह संभाल लिया। अफ़नासी के शब्दों ने उसे सहसा जिस मानसिक उलझन में डाल दिया था उससे वह किसी प्रकार उबरा। नहीं, इस रूसी को कुछ नहीं मालूम। फिर भी मुहम्मद के दिल में डर बैठा ही रहा।

ख़ज़ानची गोटें चलता हुआ बोला –

"अहिंसा .. यह तो सिर्फ़ फ़िलसफ़े की बात है... सच यह है कि कर्ण अपने दुश्मन को नहीं जानता।"

"नहीं। अहिंसा उनका धर्म है। कर्ण अपने दुश्मन को जानता है," अफ़नासी ने शांति से उत्तर दिया, "जानता है, लेकिन मुंह नहीं खोलता... मुझे उस बूढ़े पर तरस आता है। कितने वर्षों से वह अपनी आत्मा पर जब्र कर रहा है! और क्यों?"

"और अगर तुम होते तो... खोलते मुंह?"

"ज़रूर... मगर, ख़ज़ानची, ज़रा अपने मोहरे का भी ख्याल करो। अपनी चाल वापस लो।"

खजानची ने हसने की कोशिश की और अपने बादशाह को गिरा गया।

"मै हार मानता हू   आज खेलने के मूड मे नही हू। चलो पी जाय।"

"तो तुम्हारा पीना जारी ही है?"

"जिन्दगी में खुशी है कहा   मैंने यह नही सोचा था कि तुम हिन्दुओ के साथ यारी करोगे। सचमुच नही सोचा था। शायद उसकी कोई खास वजह हो? जितने मुह उतनी बाते   "

"बात क्या है?"

"तुम्ही अन्दाज लगाओ!"

खजानची ने सोत्साह मिठाई की तश्तरिया उसके आगे बढा दी और प्याले में शराब उडेलने लगा।

"नही, यह बात न उठाओ।"

"कोई राज की बात है क्या? लोग कहते है बडी हसीन है   "

"सुनो खोजा, वह मेरी बहन की तरह है। समझे? कोई जरूरत नही कि   "

"वह तुम्हारे मकान में तीन महीने से रह रही है, बहन की तरह?! छिपाओ मत, दोस्त! यह ठीक नही! मै उसकी सेहत की कामना में पिऊगा, बडी खुशी से।"

निकीतिन ने चादी का प्याला हथेली में ढक लिया।

"सुनो जी, तुम्हें मेरे बारे में यह सब मालूम कहा से हुआ?"

"ऐ   नौकरो की जबानें दो दो हाथ की होती है और पडोसियो के भी तो आख-कान होते है। पियो न।"

अफनासी उदास हो गया और सोचने लगा।

"मुझे कुछ नहीं मालूम लोग क्या क्या बकते है," कुछ क्षण चुप रहने के बाद वह बोला, "बस मै एक ही बात कहूगा– वह सचमुच मेरी बहन की तरह है।"

"यह तो और भी खराब है," मुहम्मद ने आखें मिचकायी, "मैंने सुना है कि तुम उसे बहन कहकर पुकारते भी हो। हिन्दू औरत को–बहन कहकर! छि! और यहा बीदर में जहा हिन्दू रहते हैं सुलतान की मेहरबानियो की वजह से ही!"

"यह बात तो पहले से ही समझता हू!" उदास होकर निकीतिन ने व्यग्य से सिर हिला दिया।

"देखो, मेरी राय मानो!" मुहम्मद ने दोस्ताना ढग से निकीतिन का घुटना छुआ, "उसे रखेली कहकर पुकारा करो। यह बात लोगो की समझ में तो आयेगी और फिर तुम मुसीबतो से भी बचे रहोगे।"

"मैं ऐसा नहीं करूगा! मैं डरपोक नही हू, समझे?"

"तुम बडे दृढनिश्चयी हो! सच्चे आदमी हो! पर सावधान रहना और हा, मुझे इसमें ज़रा भी शक नही कि जल्द ही तुम उसे रखेली कहकर पुकारोगे, सचमुच तुम यही करोगे!"

"देखो, खोजा, मुझे ऐसा मज़ाक पसन्द नही!"

"अरे अरे, तुम तो गर्म हो गये! अच्छा छोडो यह सब! आखिर शब्द होते क्या हैं?–सिर्फ धुआ! हवा चली और वह उड गया। चलो पियो, और पियो! मैं तुम्हारा दोस्त नही हू क्या? मैं तुम्हे महल दिखाऊगा, तुम्हारे बारे में रईसो और वैज्ञानिको से बातचीत करूगा। तब तुम देखोगे असली बीदर। तुम्हे मुझसे मिलने का पछतावा कभी न होगा। फिर हम रूस काफिला भेजेंगे। फर लेने। साथ में हीरे ले चलेगे। यूसुफ! हमें आपस में झगडने की

ज़रूरत नही। हम दोनो की वहुत-सी एक जैसी चिन्ताए भी हैं। हम दोस्ती के नाम पर पियेंगे आ! तुम मुझे शतरज में मात देने तो नही आये ? "

खज़ानची वरावर अफनासी के प्याले में शराव ढालता और गप्प लडाता रहा। हा, उसने इसके वाद हिन्दुओ से निकीतिन की मित्रता के वारे में कुछ न कहा।

अफनासी मुहम्मद के आने की कव से राह देख रहा था। वह सोच रहा था कि खज़ानची की सहायता से वह मुसलमानो से सुपरिचित होगा, किन्तु सीता के वारे मे खज़ानची की वाते सुनकर उसे काफी दुख हुआ।

फिर भी वह खज़ानची के स्वभाव और नगर के रीति-रिवाजो को समझते हुए उसे क्षमा करने के लिए तैयार था।

और जव अफनासी घर पहुचा तो सचमुच वह खज़ानची से हुई वातचीत जैसे भूल ही गया। उसे खुशी हो रही थी कि इस समय वह सीता के पास था। सीता उसकी ज़िन्दगी के निकट थी। उसका उसके जीवन में इतना महत्त्व था।

अफनासी के मन में क्या था, इसे कोई न भाप सका। सीता पिछले तीन महीनो से उसके घर रही थी और अफनासी के लिए ये महीने प्रेम और पीडा, हर्ष और विषाद के महीने थे।

व्राह्मण राम लाल ने अपना फैसला दे दिया था—शायद इस लडकी के सगे-सवधी होगे। अगर अफनासी उसके भोजन और रहने-वसने की व्यवस्था करने को तैयार है और वह उसके सगे-सवधियो को ढूढने में उसकी सहायता करना चाहता है तो यह लडकी उसके पास रह सकती है।

मीता निकीतिन के साथ रहती रही। इस सीधी-सादी और भोली-भाली लडकी ने पहले ही दिन रगू की पत्नी झाकी से अपने छोटे-से जीवन की रामकहानी कह डाली। सीता का पिता, अण्णू, किसान था। उसके पास थोडी-सी जमीन और सब्जियो का एक वगीचा था। वेशक, उसका धान और उसकी सब्जिया कभी उसके लिए पूरी न पडती। उसे टैक्स देने होते, वढता हुआ कर्ज पाटना होता, देवताओ को दान-दक्षिणा देनी होती। लेकिन अभी तक ऐसा कभी न हुआ कि उनके पास तन ढकने को कपडा न हो और किसी दिन खाना नसीव न हुआ हो। गाव के आसपास के जगलो में जामुन, महुआ, नारियल और खजूर उगते थे। मीता की मा मझोरी खानेवाले कद-मूल वीनने में माहिर थी। हा, उनके पास एक मुअर और एक अच्छा वैल भी था। सीता उनकी दूसरी लडकी थी। उसकी वडी वहन का नाम था वेगमा। वह वडी सुन्दर निकली। इसी लिए लोग उसे गाव से हटाकर एक दूर नगर में ले गये जहा वह प्रेम और धनधान्य की देवी लक्ष्मी के मन्दिर की देवदासी वन गयी। चौदह वर्ष वाद वेगमा पिछले साल ही घर आयी थी। उसके आते ही घर में आनन्द की वर्षा होने लगी थी। वेगमा के पास ढेरो कपडे और साज-शृगार की सामग्री थी, और मुह पर लगाने के तरह तरह के रग। वह ऐसा नाचती, ऐसा गाती कि कोई उसके सामने टिक न पाता। उसे वेद और पुराण पढाये गये थे। अव आसपास, दूर दूर तक, उस जैसी इज्जतदार दूसरी कोई औरत न थी। जव वह घर लौटकर आयी तो उसके मा-वाप हर्ष से आसू वहाने लगे।

किन्तु वेगमा मा-वाप के घर अधिक दिनो तक न रह सकी। ब्राह्मण रामप्रसाद ने उसे अपनी पत्नी वना लिया।

सीता के परिवार के लिए यह और भी अधिक सम्मान की वात थी।

इसके वाद फिर मुसीवतें उनके सामने आयीं। गर्मी के वाद पानी-वूंद के दिन आये। मवेशियों के लिए यह काल मवमे अधिक मकट का था। मीता के परिवार का वैल मर गया।

मीता के पिता अण्णू ने महाजन पटेल से कर्ज़ लेना शुरू किया। सूखे के कारण वह ममय से कर्ज़ न पाट सका। रामप्रसाद और वेगमा अपने परिवार की सहायता करना न चाहते थे। रामप्रसाद को अण्णू पर इसलिए क्रोध आया करता कि वह राजा के पास से आये हुए लडकियों के खरीदार के हाथ मीता को वेचना न चाहता था।

कर्ज़ दिनोदिन वढता रहा। पटेल ने अण्णू को तवाह कर डालने की धमकी दी, किन्तु साथ ही यह वचन भी दिया कि यदि सीता उमकी पत्नी वन जाये तो वह कर्ज़ माफ कर देगा।

पटेल वूढा था। कद्दू जैमा सिर और दुवली आखें। फिर भी लोग उमकी इज्ज़त करते थे। वह पचायत का पच था। उसी पर सारे परिवार की ज़िन्दगी निर्भर थी। अण्णू ने अपनी स्वीकृति दे दी

रामप्रसाद के ज़रिये मीता की मगनी हो गयी। ब्रह्मा और लक्ष्मी को भेंटे चढायी गयीं। पटेल ने अण्णू का कर्ज़ माफ कर दिया और मीता के लिए चादी की पायले खरीद दी।

इम वर्ष विवाह और गौना होना था।

सीता वहुत रोयी चिल्लायी। उमने न जाने कितने देवी-देवताओं की मनौतिया मानी – वे ही उमकी रक्षा करें। वेगमा सीता से नाराज़ थी। कौन जाने वेगमा ठीक ही नाराज़ हो रही हो सीता की जान वच गयी लेकिन वहुत वडी कीमत पर।

उनके गाव में पहले भी लोगो ने लडाई की बातें सुनी थी। पर, लडाई मे तो सैनिक, सुलतान और राजे लडते हैं, जनता तो लडती नही। किसी को यह आशा न थी कि उनपर भी मुसीवतो का पहाड टूटेगा।

मुसलमानो ने गाव पर यकायक हमला कर दिया और सारा धान, सारी साग-सब्जिया और सारे मवेशी उठा ले गये। उन्होंने किसानो को मौत के घाट उतारा और औरतो की लज्जा से होली खेली।

वेगमा के साथ तो दुखान्त घटना घटी। पर वस्तुत उनका क्या हुआ था यह सीता तक नही जानती थी।

सीता को किसी ने घोडे पर पटक दिया और जव मा वेटी को वचाने दौडी तो भाले से उसका काम तमाम कर दिया। पिता का भी सिर फोड डाला गया था। जव सीता को लोग लिये जा रहे थे तो उसका पिता, खून मे नहाया हुआ, जमीन पर पडा था।

सीता और दूसरी लडकियो को सुनसान रास्तो से हकाया गया जव तक कि वे खेलना के उपनगर क्षेत्रो के खेमे तक न पहुच गयी।

सिपाही हर रात कभी एक लडकी को, कभी दूसरी को, अपने पडाव में ले जाते और उनपर वलात्कार किया करते।

लडकियो के झुड में वरावर रोना पडा रहता। कई लडकियो ने तो अगले जन्म की यातनाओ तक से निडर रहकर आत्महत्या ही कर ली। सीता ने भी उन्ही के रास्ते चलने का निश्चय किया था। इस वेइज्जती की जिन्दगी से तो यम के क्रोध का निशाना वन जाना ही अच्छा था।

लेकिन तभी युद्ध शुरू हो गये। मुसलमानो ने कई वार खेलना पर चढाई की और आखिर उसे ले लिया। नगर जला डाला गया।

अब तो कैदियो की सख्या और भी अधिक हो गयी। लडाई दूर के क्षेत्रो में होती रही, और सीता और कुछ अन्य लडकियो को हरकारो की एक टुकडी के साथ वीदर भेज दिया गया।

इस कहानी से निकीतिन का दिल दहल गया था। वह बराबर यही सोचता रहा कि किस प्रकार सीता की मदद करे कि वह अपने दुखो को भूल जाये। लेकिन प्राय उसकी चिन्ताए कारगर न होती। वे तो सीता के घावो पर जैसे नमक छिडका करती।

उसने उपहार में सीता को देने के लिए एक माला खरीदी। माला कासे की थी, जिसपर सोने का काम था। उसकी पत्तियो पर इतनी महीन नक्काशी थी कि अफनासी उसपर लट्टू हो गया था।

वह सोच रहा था कि सीता इस उपहार से फूली न समायेगी–भारतीय नारिया ज़ेवरो की दीवानी होती है न। लेकिन नेकलेस को देखते ही सीता की घिग्घी बध गयी, उसके ओठ असहायो की तरह कापने लगे और आखें छलछला आयी कौन जानता था कि उसकी मा के पास भी ऐसी ही एक माला थी?।

अफनासी ने खीझकर माला ज़मीन पर पटक दी। किन्तु सीता आह भरती हुई उसके पास आयी और माला उठाकर गले में पहन ली। उसका चेहरा फक पड गया था।

निकीतिन ने सीता की आखो में अक्सर आसू देखे थे। सीता झाकी की सहेली बन गयी थी। झाकी ने ही अफनासी को बताया था कि सीता अपने को अपने माता-पिता की हत्या का अपराधी समझती है और इसी लिए दुखी रहती है।

"फिर तुम्ही उसे समझाओ न कि सचमुच वह अपराधी नही!" अफनासी ने झाकी से कहा।

झाकी ने अपनी सुरमई आखें झुका ली और कोई उत्तर न दिया।

रगू ने इस मामले में अफनामी से साफ माफ कह दिया था कि वह सीता की हरकतें ठीक नही समझता। आखिर, उसने अपने मगेतर से अपना पिड छुडाने के लिए भगवान से क्यो प्रार्थना की थी? उसने मा-बाप और देवताओ की इच्छा के विरुद्ध काम किया था, इसी की तो सजा मिल रही है उसे

"उसपर इतने जुल्म हुए फिर भी तुम उसी को दोषी बताते हो?" क्रोध से अफनासी ने दात निकाल दिये, "कमाल की सूझ है तुम्हारी अच्छा। सफाई रहने दो। हा उससे मेरी ओर से कह दो कि उसका कोई दोष नही।"

"तुम्हारी बात मैं कह दूगा।"

रगू की बात सुनकर सीता केवल इतना ही फुसफुसा पायी–"यह तो बडे मेहरबान हैं " और रो दी।

अफनासी की जिन्दगी मुसीबत बन गयी थी। अपने ही घर में उसे ऐसा लगता मानो मुरदा पडा हो। सीता के दुखो का अनुभव करके उसे जितना ही दुख होता, उतना ही वह यह समझा करता कि सीता उसके दिल के और भी निकट आती जा रही है।

पहले पहल तो उसने स्वय अपने से ही असलियत छिपाने का प्रयत्न किया और बराबर अपने मन को समझाता रहा कि सीता के प्रति उसके हृदय में सिवा दया और सामान्य उत्सुकता के और कोई भावना नही। किन्तु, वह अपने को धोखा दे रहा था।

सीता के अपने गाव मे लौट जाने और उसके बूढे मगेतर के विचार मात्र से अफनासी की दिन-भर की खुशी पर पानी फिर जाता और वह उदास हो जाता।

रातो में वह बगलवाले कमरे मे सीता की सासे सुना करता। उसके मन में न जाने कौनसा तूफान उठने लगता, उसके ओठ सूखने

लगते और वह मुश्किल से अपने को सभाल पाता, मुश्किल से उसका विचार अपने दिमाग से हटा पाता

"नही, यह बिल्कुल मुम्किन नही! बिल्कुल नही। उसका धर्म दूसरा, रहन-सहन का ढग दूसरा। मैं उसे सुखी न कर सकूगा। और दुख तो वह न जाने कितने भोग चुकी है "

फिर उसे एक विचित्र-सा ख्याल आया—सीता को क्यो न अपने साथ ले जाये, उसे ईसाई बना ले, उसके साथ ब्याह कर ले?

त्वेर में वह उसकी वकालत कर लेगा। लेकिन क्या वह भी उसे चाहती है? और क्या वह अपने वतन मे नाता तोड सकेगी, रूस तक के रास्ते की टक्करे सह सकेगी, विदेश की आदी बन सकेगी?

उसके दिमाग में तरह तरह के सन्देह उठने लगे। उसने बडी सतर्कता से सीता पर नजर डाली, अपने सन्देहो को निराधार समझकर उनसे दूर रहने का प्रयत्न किया, पर फिर भी तरह तरह की भावनाए, तरह तरह के विचार उसे मथने लगे।

झाकी की मार्फत सीता ने घर में शिव की स्थापना करने के लिए अफनासी की अनुमति ले ली। शिव की स्थापना हो गयी और हिन्दुओ की प्रथानुसार उसने अफनासी के पग पखारना शुरू किया।

यह सब देखकर हसन को परेशानी हो रही थी। उसके और सीता के बीच बैर रूपी एक गहरी खाई थी, किन्तु यह बैर उदासीनो जैसी चुप्पी और तिरस्कार-प्रदर्शन से आगे न बढ सका।

एक दिन एक भगी, रास्ते में उत्सुकता से अफनासी को देखता हुआ कई मिनटो तक वही खडा रहा। तभी सीता जोरो से चिल्ला पडी। वह क्रोध से काप रही थी। भगी तुरन्त नौ दो ग्यारह हो गया।

निकीतिन ने सीता से बातचीत करने का प्रयास किया। उसे अछूतो से सहानुभूति थी। उसे उनके बच्चों पर दया आती थी जो रास्ते में पडे अनाज के दाने बीना करते थे, पेट भरने के लिए। किन्तु सीता इस मामले में मग्न थी।

"मेरे गाव में एक ऐसा घर जलाया गया था जिसपर अछूत की छाया पड गयी थी," उसने दृढता से कहा।

उसे समझाने-बुझाने में कोई फायदा नहीं। उसे समझाने के माने हैं उसे और भी दुखी करना।

"नहीं, वह गैर है!" अफनासी ने विचार किया, "गैर!"

और सहसा निकीतिन को लगा जैसे किसी की प्रतीक्षा-सी करती हुई सीता की भयभीत दृष्टि उसपर पड रही है। उसे लगा जैसे उसने जो कुछ निश्चय किया है, वह ठीक नहीं और समय बीतता गया। इस बीच सीता में भी परिवर्तन दिखायी पडने लगा। पहले वह लोगो से डरती और एकान्त में बैठी बैठी कढाई किया करती थी, लेकिन अब वह अक्सर काम छोडकर बगीचे में उछलती-कूदती और तोतो को तग किया करती। कभी कर्ण के घर जाती और झाकी के बच्चे के साथ खेलती, तो कभी मस्त होकर गाने लग जाती।

खुशी के इन क्षणो का स्थान और भी अधिक दुख के क्षण लेते। अफनासी का तो जैसे दिमाग ही खराब हो रहा था। एक दिन तो यह नौबत आ गयी कि वह अपने को सभाल न सका और फूट पडा।

एक दिन सीता रत्न-तराश की पत्नी को उसके घरेलू काम-काजो में मदद देने के लिए उसके यहा अकेली चली गयी। शाम होने आ रही थी, अधेरा बढ रहा था। अफनासी बगीचे में आ गया।

हसन फूलो के साथ खुट-पुट कर रहा था। निकीतिन गुलाव के पौधो की सिचाई में हसन की मदद करने लगा, पर उसके कान वरावर सडक पर लगे रहे। फिर, उसने झारी एक ओर रखी और ताडो के वीच चहलकदमी करने लगा। सघ्या सघनाती जा रही थी, आकाश में अर्द्धचन्द्र तैर रहा था, सितारे टिमटिमा रहे थे अफनासी की निगाह सप्तर्षि नक्षत्र पर अटक गयी। सप्तर्षि नक्षत्र, जैसे निचाई पर, वडे विचित्र ढग से चमक रहा था—रूस की तरह नही।

निकीतिन न जाने कितनी देर तक उधर निगाहे गडाये रहा। उसके हृदय में अपने वतन के लिए हुडक उठ रही थी। उसे अकेलापन काटने दौड रहा था। उसकी आधी से अधिक जिन्दगी वीत चुकी थी लेकिन वास्तविक और स्थायी सुख उसे नसीव न हुआ था। अव यहा, विदेश में, उसे कौन पूछेगा? सीता? रात हो रही थी—अधेरी, अजनवी-सी, उष्ण कटिवध की रात सीता की फिक्र उसे सताने लगी।

"हसन!" उसने कर्कश स्वर में पुकारा, "मेरे साथ चलो! जल्दी!"

उसने पेटी कस ली। पेटी में कटार लटक रही थी। पर, तभी उसे वाडे के पीछे से कदमो की आहट सुनाई पडी।

सीता लौट आयी थी। उसे रत्न-तराश पैहुचा गया था। वह हसती हुई कमरे में चली गयी। निकीतिन चुपचाप उसके पास आ गया। उसका दिल जोर जोर से धडक रहा था। उसके ओठ लकडी जैसे सख्त हो रहे थे। वस वह इतना ही कह सका—

"रात हो चुकी है तुम्हे इतनी देर तक वाहर रहना चाहिए क्या?"

वह उसके पास आयी, और कांपते हाथ अपने कोमल गालों पर रखे घुटनों के बल वहीं जड़वत् बैठ गयी।

कुछ समय बीता। सीता ने अफ़नासी से अनुरोध किया कि वह उसे भी अपने साथ श्री-पर्वती ले चले।

और जिस ढंग से सीता ने श्री-पर्वती जाने की बात चलायी थी उससे निकीतिन ने समझ लिया था कि वहां जाना उसके अपने हित में भी है। उसने उसे वहां ले जाने का वादा किया। सीता फिर से शान्त हो गयी और उसकी खुशी ग़ायब हो गयी, पर अफ़नासी को उसकी आंखों में एक नयी विचित्र चमक दिखाई दी जिसने उसके दिल की कली खिला दी।

जब अफ़नासी खज़ानची के यहां से लौटा तो उसके हृदय में सिवा प्रेम की हिलोरों के और कुछ भी न था।

...खज़ानची मुहम्मद अफ़नासी को विदा कर वापस आया और उसे इतनी कमज़ोरी महसूस होने लगी कि वह कठिनाई से ही अपने सोफ़े तक पहुंच सका। उसने अपने ग़ुलामों को वहां से हटा दिया और खुद आधा मुंह खोले, मरी हुई मछली की भांति, वहीं बैठा रहा।

यह सब संयोग की बात थी। जिस भय को वह निर्मूल समझ रहा था अब वही जीवित होकर उससे बदला लेने को बढ़ रहा था। यह रूसी... आया और खज़ानची के मुंह पर थूककर चला गया। लेकिन खज़ानची साहब मुस्कराते रहे, चुप रहे। बेशक खज़ानची को भय लग रहा था, वह घबड़ा रहा था—मानो सभी को सच्ची बात मालूम हो ही गयी थी और उसके बदले का वक़्त आ रहा था... कर्ण! उसे सब कुछ मालूम है, लेकिन चुप है... चुप है, पर सब कुछ जानता है!

मुहम्मद ने कुछ ढूढने का प्रयत्न किया और पानी से भरा कटर उसके हाथ लग गया। उसने पानी प्याले में भरा और बडे बडे घूट उतारने लगा। पानी दाढी से उछलता हुआ छाती और पैरो की खबर लेने लगा। अब वह समझ रहा था—उसकी सारी जिन्दगी, सारी खैराते, पापो के लिए किये गये सारे पश्चात्ताप, दान-दक्षिणा—इन सब पर पानी फिर जायेगा।

उसे अपनी जिन्दगी बचाने की फिक्र करनी चाहिए।

सीता सामने देखती हुई, गुलाबी साडी हाथ से सीने पर ही रोके, सडक पर चली जा रही है। साडी पर चादी की लहरें-सी बनी हैं। यह साडी अफनामी की ओर से सीता को दिया गया नया तोहफा है। इसमें तो वह खिल उठती है। पुरुष उसे घूम घूमकर देखते है। एक सिख उसे देखकर जबान चटखारता है। चोटीधारी एक जवान ब्राह्मण, अपनी पत्नी के साथ जाते हुए भी, कनखियो से सीता को देख रहा है। वेषभूषा से सीता ऊची जाति की लग रही है, किन्तु ब्राह्मण उसे नही जानता।

सीता न तो सिख की ओर देखती है, न ब्राह्मण की ओर ही। बेशक, पुरुषो की निगाहे उसके हृदय में गुदगुदी पैदा करती हैं। पर, साथ ही उसे क्रोध भी आ जाता है। उसे ऐसे घूरने का किसी को भी अधिकार नही। किसी को भी नही, सिवा एक के। उसका विचार आते ही वह हसना और उछलना-कूदना चाहती है।

"आह कैसा मधुर है यह प्रात काल! बाडे के पीछे चिडियो की चहचह! और पैर! ओफ, कितने हल्के पड रहे है वे, और शरीर! जैसे उसमें बेहद ताकत भर गयी है।

"हे लक्ष्मी महारानी, हे जगदम्बे, तेरा गुन कभी न भूलूगी। मैंने तुमसे कुछ भी तो नहीं मागा। लेकिन तुमने मुझे सारी जिन्दगी ही भेंट कर दी! वह दूर देश का वासी। गोरा-चिट्टा बदन–ब्राह्मणो मे श्रेष्ठ। सोने जैसे वाल!

"मैंने नयी साडी पहनी और वह खुश हो होकर मुझे निहारने लगा। उसने मेरे हाथ पकडे और झुलाने लगा। और मेरा भी जी हुआ कि उसके सीने मे चिपट जाऊ   ओह!"

सीता के पैर जैसे स्वत बढते जा रहे थे। उसका चेहरा गुलाबी पड रहा था। वह गहरी सासे ले रही थी।

वह उसे प्यार करती है!

श्री-पर्वती के पवित्र नगर में पहुचकर वह भगवान शिव के मन्दिर में उन्हे अपने मन की बात बतायेगी–वह इस अज्ञात जात-पात वाले परदेसी को प्यार करती है। और यदि देवता उसपर रुष्ट न हुए तो वह उसी की होकर रहेगी जिसे वह चाहती है, प्यार करती है।

सीता सडक पर चल रही है। उसकी गुलाबी साडी उसके दुवले-पतले बदन के इर्द-गिर्द लहरा रही है। उसके छोटे छोटे पैर जैसे जमीन पर पडते ही नहीं–"हे लक्ष्मी महारानी, हे जगदम्बे, तेरा गुन कभी न भूलूगी " सीता कर्ण के मकान की ओर चली जा रही है। झाकी चक्की पीस रही है। सीता दौडी दौडी जाकर झाकी को आलिगन करना चाहती है पर वह उसे रोक देती है।

"तुम्हे तो काली ने घेर लिया है!" क्रोध का बहाना करती हुई झाकी बोली, "तू तो मेरे कामो में दखल देती है!"

सीता उछल पडती है और सिर के ऊपर हाथ बाधती हुई एक ही स्थान पर नाचने लगती है। फिर गा उठती है–

संजनवा, पनिया भरन मै गयी
पनघट पै तुम्हरी आखो से आखें चार हुई
छलकी सिर पर भरी गगरिया छन में उलट गयी।
जल तो सारा चला गया पर याद तुम्हारी रही
घर पर सबने शोर मचाया अपमानित मै हुई।
सास ननद ने डाटा डपटा और कहा कलमुही
घडा प्यार का होय न रीता प्रीत की रीत यही।

रगू गाना सुनता है और घर से निकल जाता है। वह और झाकी एक दूसरे पर एक नजर दौडाते है।

"अफनासी क्यो नही आया?" रगू पूछता है।

"उसे नगर में कुछ काम है।"

झाकी एक आह-सी भरकर रह जाती है।

"झाकी, क्यो इतनी गहरी सासे ले रही हो तुम?" उसके सामने बैठती हुई सीता पूछने लगती है।

"यो ही।"

"नही, बताओ न! बताओ भी!"

"अफसोस, वह हमारे देवताओ को नही मानता। आदमी अच्छा है वह।"

"क्या इस कारण राम लाल उसकी कम इज्जत करता है?"

"अरे, नही नही मै सोच रही थी कि अगर अफनासी हमारे देश में पैदा हुआ होता, तुम्हारा पति होता, तो कितना अच्छा होता। लेकिन यो शादी असम्भव है। हम उसकी जात-पात तो नही जानते।"

सीता उछल पडती है। उसका चेहरा लाल हो उठता है और आखें छलछलाने लगती है।

रंगू नाराज होकर पत्नी को झिड़क देता है—

"तुम बेकार की बेसमझी बात कर रही हो, सावी।"

और गुलाबी साड़ी फिर लहरा उठती है। सिर झुकाये हुए सीता दीवाल के सहारे सहारे चली जा रही है। उसका मन उदास है। बेशक, इस आदमी की जात-पात का कोई ठिकाना नहीं ... ओफ, उसके बाल हैं कि सूरज की किरणें, उसकी चमड़ी कितनी गोरी है, ब्राह्मण से भी गोरी ... लेकिन उसकी जात-पात का कुछ पता नहीं।

धर्म के निर्मम और निर्दय सिद्धान्त! सीता उन्हें अच्छी तरह जानती है और भय से काँप उठती है।

जो लड़की किसी नीची जातिवाले से प्रेम करती है उसे उसके नाते रिश्तेदार कुत्ते की तरह घर से निकाल देते हैं, उसपर पत्थर बरसाते हैं। और दूसरे जन्म में भी उसे नरक यातनाएँ सहनी पड़ती है।

और गुलाबी साड़ी मिट्टी की चहारदीवारी से सटी सटी आगे बढ़ रही है।

हे राम! कब वह शिव के मन्दिर पहुँचेगी और कब उसके भाग्य का फैसला होगा?

इंदर में रहते हुए अफनासी को हिरातवासी मुस्तफा की जरा भी याद न आयी। आखिर शैतान तो शैतान ही है, कर्ज नहीं पाटना चाहता। वह हाथ लगे भी कैसे? और कर्ज कोई इतना बड़ा तो था नहीं कि अफनासी मुस्तफा की खोज में भागता फिरे। पर मुस्तफा को निकीतिन की याद आती रही। उसने तीन बार अफनासी को देखा था और किसी गली में घुसकर भीड़ में गायब हो गया था। पैसा लौटाना उसके लिए मुसीबत थी। इसके अलावा, मुस्तफा के इस प्रकार बरताव करने का एक कारण और था। मुस्तफा को विश्वास हो गया था कि रूसी व्यापारी का मन साफ नहीं है। मुलतानी तख्त के दुश्मन

को कर्ज़ लौटाना अक्लमदी नही है। और, मुस्तफा बेवकूफ बनना नही चाहता था। नही! एक बात और थी—मुस्तफा को एक ऐसा राज़ मालूम था जिसका अगर उसके मालिक, सुलतान के घुड्दल के सरदार खान उमर को पता चल जाता तो उसे जगलो में डलवा दिया जाता जहा गीदड उसे नोचकर खा गये होते

कभी मुस्तफा खतरे के डर से कापने लगता, तो कभी उसकी लोभ-प्रवृत्ति चचल हो उठती। सुख-समृद्धि हाथ फैलाये जैसे उसके स्वागत को खडी थी लेकिन उसे क्या करना चाहिए, बस यही उसकी समझ में न आ रहा था। उसकी बात का विश्वास कौन करेगा? कोई नही। फिर उसके पास कोई सबूत भी तो नही। बेशक जो कुछ उसने देखा था, जो कुछ सुना था उसका एक एक शब्द वह बता सकता था।

और मुस्तफा ने ऐसी चीज़ देखी और वे बातें सुनी कि पहले तो उसे अपने आख-कान तक पर विश्वास न हुआ।

खान उमर की नौकरी में आने के कोई तीसरे या चौथे हफ्ते मुस्तफा को महल की गश्त लगाने की ड्यूटी दे दी गयी। उसका काम था खान के बाग की दीवाल से लगे लग एक दूर की गली का चक्कर लगाना। इस जगह सिवा महल के चौकीदारो के सरदार के और कोई न जा सकता था। यह गश्त मुस्तफा को दी गयी थी क्योंकि एक दिन पहले उसने सरदार को भी पिलायी थीं और खुद भी पी थी। इसी लिए सरदार ने उसे यह काम दे दिया था। और चूकि खुद सरदार का सिर घूम रहा था इसलिए उसने यही ठीक समझा कि मुस्तफा को ऐसी जगह लगा दिया जाये कि उसे झपकी ले लेने का मौका मिल जाये मुस्तफ़ा दो बार तो उस गली तक गया फिर यह देखकर कि चारो ओर शान्ति है और दर्द से उसका सिर फटा जा रहा है वह एक घनी

झाडी में घुस गया। यहा मज़े की ठडक थी। वह वही लेटकर सुस्ताने लगा। अपने वफादार गुलामो पर अल्लाह बडा करम करता है। मुस्तफा ने आखें बन्द कर ली और सोने की कोशिश करने लगा। पर, उसे मिचलिया आ रही थी और नीद उससे कोसो दूर थी।

तभी उसे कुछ आवाज़ें सुनाई दी। एक आवाज़ कुछ रूखी और धीमी थी। यह थी खान उमर की, और दूसरी किसकी थी यह वह तुरन्त न समझ सका।

पहले कुछ क्षणो तक तो उसे लगा जैसे लोग उसी को ढूट रहे है और इसी लिए वह वहा दबा पडा रहा। खान उमर काहिल सिपाहियो पर ज़रा भी रहम न करता था।

"खान, मुझे खुद महाराजाधिराज ने तुम्हारे पास भेजा है।" मुस्तफा ने सुना।

"सबूत दो।"

"यह रहा।"

कुछ क्षणो तक चुप्पी रही फिर खान की आवाज़ सुनाई दी—

"अब कहो "

मुस्तफा ने थोडा-सा सिर घुमाया और उसे घनी झाडियो में से खान की चौडी पीठ और किसी अधेड उम्र के हिन्दू का परिचित-सा चेहरा दिखाई दिया। मुस्तफा ने इस हिन्दू को कही देखा जरूर है कही? मगर कहा? हा, याद आयी। बाज़ार में रूसी ख्वोजा यूसुफ के साथ। मुस्तफा जैसे एक एक शब्द पी जाने के लिए उतावला हो रहा था।

हिन्दू ने हाथ जोड़े।

"आला खान! महाराजाधिराज ने आपके और आपके प्रतिष्ठित संबधियो के सम्मान में ये जवाहरात भेजे हैं। इन्हें ले और समझ ले कि शोहरत आपके कदम चूमने को बेकरार है। विजयनगर हमेशा आक़िलों और बहादुरो की क़द्र करता है "

"तो किस चीज़ की ज़रूरत है?"

"कोई ज़रूरत नही, आला खान! हमारे महाराजा महान और निस्वार्थी है। उन्होने कहलाया है कि उनके दिल में काबिल दुश्मनो की भी इज्ज़त है और अगर वे उनसे सेवा चाहते है तो वे सेवा के लिए हमेशा तैयार रहेगे "

खान उमर ने हुंकारी भरी।

"तो? वे किस तरह की सेवा करने को तैयार है और किस लिए?"

"आला खान! मुझे माफ करना! बात मैं सोलह आने सही कहूगा। सुलतान की फौज को खेलना लेकर ही चैन न मिलेगा। महाराजाधिराज जानते हैं कि महमूद गवान विजयनगर पर चढाई करना चाहता है। हज़ारो बेगुनाह और बहादुर सिपाही कुरबानी के लिए तैयार हैं। अगर फतह हुई तो सेहरा महमूद गवान के सिर होगा और हार हुई तो उसकी ज़िम्मेदारी वह अपने सिर न लेगा "

"उसे जितनी शोहरत मिली है वह हमारी ही वजह से मिली है!"

"यही तो महाराजाधिराज का कहना है। वे बडे बुद्धिमान हैं। लडाई नही चाहते। वे सुलह करना चाहते हैं। लेकिन वे महमूद गवान से बातचीत न करेंगे। वे नही चाहते कि कोई नौबढ आदमी उनका शासक बन जाये। वे उसका विश्वास नही करते।"

"फिर वे विश्वास किसका करेंगे?"

"फ़ौज के किसी ख़ानदानी सरदार का। आपके सुलतान अभी भी कच्ची उम्र के हैं। वे तो वज़ीर के असर में रहते हैं।"

"यह बात तो सही है।"

"आला ख़ान! महाराजाधिराज आपका विश्वास करेंगे। वे तजुर्बेकार और खानदानी आदमी की बात मानने को हमेशा तैयार रहते हैं और मदद के लिए अपनी सेना भेजने को भी तैयार हैं।"

दो मिनट तक ख़ान उमर हिन्दू के सामने चुपचाप खड़ा रहा, फिर बोला—

"मेरे साथ आओ..."

मुस्तफ़ा तब तक वहीं पड़ा रहा जब तक आवाज़ें ग़ायब न हो गयीं। फिर उसने अपनी ढाल उठायी और घुटनों के बल रेंगता हुआ वहां से हट गया। कांटों से उसका चेहरा घायल-सा हो गया था, किन्तु दर्द जैसे उसे लग ही न रहा था। वह अपनी पीली पीली आंखें खोले बराबर रेंगता रहा। गली में पहुंचकर उसने चैन की सांस ली।

"ग़द्दारी! ग़द्दारी! क्या करूं? कहां भागूं? किससे कहूं? सरदार से, सिपाहियों से, सुलतान के किसी नौकर से?"

यद्यपि उसने बहुत अधिक पी रखी थी, फिर भी प्राकृतिक सतर्कता ने उसकी बड़ी मदद की।

और जब चौकीदारों के सरदार रहीम ने पहरा बदलने के समय, सिर हिलाते और जैर्से फटकारते हुए उससे कहा—

"क्या शकल बना रखी है, जी!" तो मुस्तफ़ा ने बुदबुदाकर केवल इतना ही कहा—

"गिर गया था..."

रहीम बड़बड़ा रहा था—"मुझे चकमा दे रहा है, भला ऐसी शकल इस क़ाबिल है कि आदमियों को दिखाई जाये?" और यद्यपि

अब अपने महत्व के प्रति जागरूक हो जाने के कारण बड़े काम का सिद्ध हो सकता है—और इसी लिए उसके भीतर एक आग-सी जल रही थी—फिर भी वह अपराधी की भांति सरदार की डांट सुनता रहा। उसने निश्चय कर लिया था कि फिलहाल चुप रहेगा। वह अभी तक यह तय न कर सका था कि वह यह रहस्य की बात कहे तो किससे कहे।

उसने हिन्दू व्यापारी का नाम भी मालूम कर लिया था—भावलो। वह व्यापारी इसी का परिचित था, उसका सम्बंध विजयनगर के राजा से था, उसी को खान उमर के पास भेजा गया था और उसी ने उमर के साथ कोई साज़िश की थी

मुस्तफा सोच रहा था कि अगर मैं गद्दारी की खबर सुलतान को दे दूं तो उमरखान को फांसी होगी और मुझे घुड़सवारों की कमान दी जायेगी और खान का महल और जागीर भी। वह अपने भावी मान-सम्मान और समृद्धि की कल्पना से तरबतर हो रहा था लेकिन वह किससे कहे? और सुलतान कहां है उसके पास?

मुस्तफा का जी हुआ कि वह हिम्मत की बेरहमी से सोचकर रो पड़े। कौन जाने वह धोबी का कुत्ता ही बनकर रह जाये—न घर का न घाट का? हुन्ह!

लेकिन बदकिस्मती की मार! एक दिन उसने घोड़े की ठीक मालिश न की और खान उमर ने उसे बीस कोड़े लगाये जाने की आज्ञा दी। अब अगर वह खान के खिलाफ कुछ भी कहेगा तो खान तुरन्त यह आड़ ले लेगा कि उससे बदला लेने की चाल चली गयी है। खान ने हिन्दू से क्या बात की थी इसे तो किसी ने न सुना, लेकिन कोड़ों से जो मुस्तफा की पीठ लाल कर दी गयी थी उसे कम से कम पचास आदमियों ने देखा था। गवाह! मुस्तफा को कोई रास्ता न सूझ रहा था। वह दांत भींचकर रह गया।

एक दिन किले में घूमते हुए उसकी निगाह खज़ानची मुहम्मद पर पड गयी।

खज़ानची मुहम्मद गवान के बहुत निकट था। खज़ानची शिया था और खान उमर सुन्नी। खज़ानची भारत के लिए विदेशी था, पर खान उमर के सगे-सबंधी दक्खन के पुराने खानदान के थे। ऐसे लोगों के बीच कभी दोस्ती नहीं हो सकती। और पुराने खानदानियों और महमूद गवान के आदमियों के बीच कितनी बडी खाई है इसे दुनिया जानती है। यह सच है कि खज़ानची रूमी की तरफदारी करता है, लेकिन वह रूमी के बारे में मुह भी न खोलेगा। जो भी हो, बीदर में अकेला खज़ानची ही एक ऐसा आदमी है जिसे रईसों के महलों में जाने की इजाज़त है और मुस्तफा उसे जानता है।

मुस्तफा ने खज़ानची से मिलने का निश्चय किया।

पहले पहल तो खज़ानची उससे मिलना भी न चाहता था लेकिन जैसे ही नौकर ने दरवाज़ा खोला कि मुस्तफा पैर अन्दर रखते हुए उससे कहने लगा कि वह उसकी खबर खज़ानची को कर दे, वह बडे ज़रूरी काम से आया है।

आखिर उसे भीतर आने की इजाज़त मिली। खज़ानची सोफे से उठा भी नहीं बल्कि वैसे ही सफेद पैजामा पहने वहीं बैठा बैठा हुक्का पीता रहा। उसने मुस्तफा की ओर देखा और लापरवाही से सिर हिला दिया किन्तु मुह से एक शब्द भी न कहा।

"खोजा, आप से मिलने आया!" खज़ानची के आगे सिजदा करते और चापलूसी-सी करते हुए मुस्तफा कहने लगा।

मुहम्मद मुस्तफा की ओर देखता हुआ चुपचाप धुआ उडाता रहा।

"खोजा, अल्लाह आपको बरकत दे!" मुस्तफा बोला, "सेहत तो ठीक है न, और काम-धाम कैसा चल रहा है?"

बातचीत कैसे चलायी जाये यह मुस्तफा की समझ में न आया। उसका जिस अनमने ढग से वहा स्वागत हो रहा था उससे वह हतोत्साह न हुआ, पर खजानची की चुप्पी जरूर उसके मार्ग में बाधक बन रही थी।

आखिर मुहम्मद बोला—

"मै देख रहा हू, खुशकिस्मती तुमपर मुस्करा रही है। तुम खान उमर की फौज में हो न?"

"हा, सरकार!"

"बडी उदासी मे बोल रहे हो। खान उमर तनख्वाह अच्छी नही देता क्या?"

"नही। लेकिन वह सुन्नी है "

"ओह, तो कब से यह फिरकापरस्ती तुममें आ गयी है? जमाना हुआ?" मुहम्मद उपहास करते हुए हस पडा।

किन्तु मुस्तफा का उत्तर अप्रत्याशित रूप मे गम्भीर और विचित्र था—

"जब मे बीदर में आया हू। इससे यहा मदद मिलती है उन्हें जो कुछ देख-समझ सकते हैं।"

खजानची मुह मे धुए के बादल निकालता और उसे चुपचाप ताकता रहा।

"तो तुमने क्या देखा-समझा है?"

"बहुत कुछ, खोजा बहुत कुछ। लेकिन मै ठहरा एक अदना आदमी "

लग रहा था जैसे मुस्तफा अधेरे में कुछ टटोल रहा है। उसने खजानची पर एक पैनी नजर डाली मानो उसके अनुमोदन की प्रतीक्षा कर रहा हो।

"वैठो," मुहम्मद वोला, "अच्छा अच्छा, सुनाओ अपना हाल-चाल   तुम यहा   रूसी के साथ आये थे न?"

इन शब्दो में जो तीखापन था वह मुस्तफा से छिपा न रह सका। लग रहा था जैसे वह और अफनासी कोई सच्चे दोस्त नही रह गये। मुस्तफा ने सारी वात जानने-समझने का निश्चय किया।

"हा, उसी के साथ। वस यही वह मुझे नही दिखाई पडता।"

"अफसोस   अव वह मालदार आदमी है न।"

ओहो! यह वात खीझ के साथ कही गयी थी।

"मै जानता हू। उसने अपना घोडा खान उमर के हाथ वेच दिया था," वडी सतर्कता के साथ मुस्तफा वोला, "खान उमर ने तो दाम भी अच्छे दिये थे।"

"जिसके पास इतनी वडी जागीर हो उसके लिए अच्छे दाम देना कोई मुश्किल नही," खज़ानची वडवडाया, "वडे से वडे ईमानदार शिया के पास उसकी दौलत का दसवा हिस्सा भी न होगा   लेकिन वह तो तुम्हारा मालिक है न   "

"हमारा मालिक तो एक ही है—अल्लाह।" खज़ानची की आखो में देखता हुआ मुस्तफा धीरे से वोला, "मेरा मजहव मुझे खान उमर की सखावत या उसकी नाराजी से ज्यादा प्यारा है।" जिस ढग से मुस्तफा ने यह शब्द कहे थे और अपने शब्दो पर विचित्र ज़ोर देकर उसने जिस प्रकार खज़ानची की आखो में देखा था उससे खज़ानची ने भाप लिया था कि इस आदमी के यहा आने का कोई राज़ ज़रूर है।

मुहम्मद ने आखें मिचकायी।

"तुमने कहा था तुम्हे कोई ज़रूरी काम है। क्या काम है?"

मुस्तफा ने पीछे मुड़कर देखा फिर आँखें नीची कर ली। अगर उसने खज़ानची को पहचानने में गल्ती की है तो फिर ख़ैरियत नहीं। लेकिन बात सीधी थी—या तो वह खज़ानची के सवाल का जवाब दे वरना वहा से चला जाये।

"क्या? तुम्हें कोई राज़ की बात मालूम है क्या?" मुहम्मद उत्साह के साथ फुसफुसाया।

मुस्तफा ने सिर उठाया। उसके गालों की हड्डिया फड़कने लगी। खज़ानची ने उसे लोभी दृष्टि से देखा।

"हा, मालूम है," फुसफुसाते हुए मुस्तफा ने जवाब दिया।

मुस्तफा के जाने के बाद खज़ानची जोश में आकर दाढी पर हाथ फेरने लगा। मुहम्मद जैसे बदल ही गया था। वह सीधा खड़ा हुआ, दृढतापूर्वक कदम बढ़ाने लगा। उसने गुलाम को आज्ञा दी कि वह उसकी सबसे छोटी पत्नी को बुला लाये। तभी उसकी निगाह चाय के कमरेवाले कालीन पर पड़ी जिसका कोना उल्टा हुआ था—उसने ताली बजायी और जब डरा हुआ नौकर उसके पास दौड़ा आया तो उसपर चोटों की बौछार करने लगा। सारे घर को जैसे साप सूँघ गया। बस पहले दो हफ्तों में तो ऐसा लगा था जैसे मालिक घर में है। इसके पहले तो वह अकेला बैठा बैठा या शराब पीता रहता या हुक्का। केवल एक बार ही रूसी सौदागर को किले के महल और मकबरे तथा सुलतान का मशहूर राय-महल दिखाने ले गया था, जहा दीवालों पर जड़े हुए चौकोर पत्थरों पर सुनहरे अक्षरों में कुरान की आयतें खुदी थीं। किन्तु वहा से लौटने पर तो खज़ानची और भी उदास रहने लगा। घरवालों ने देखा कि किसी बात ने उसे अशान्त कर रखा है

बारह साल की एक दुबली-पतली लड़की, फातिमा, सनवार
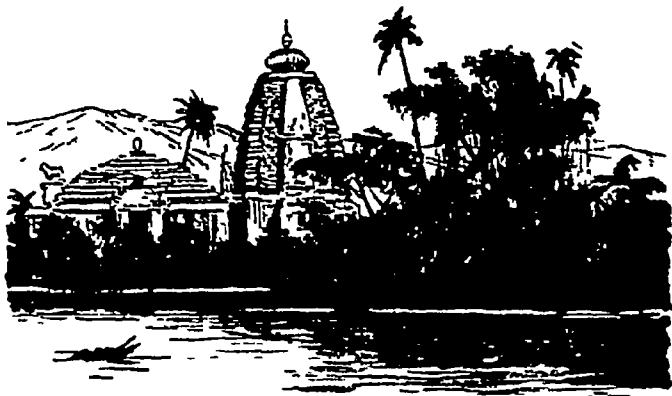
पहने मुहम्मद के घुटनो पर वैठ गयी श्रौर मेंहदी से लाल हाथ उसकी गरदन में डालकर उसका आलिगन करती हुई पूछने लगी—

"इस फौजी ने तुम्हे इतना खुश कर दिया है क्या?"

लेकिन खजानची ने कोई उत्तर न दिया।

प्राय एक सागर से दूसरे तक फैली हुई कृष्णा नदी, दक्खन के पठार को काटती हुई वह रही है। मार्ग में उसमें आकर छोटी-वडी कई सहायक नदिया मिलती है—मलप्रभा, भीमा, तुगभद्रा। कृष्णा नदी पूर्वी घाटो से गुज़रती हुई वगाल की खाडी में डेल्टा वनाती है। साल में दो वार इस नदी में भयकर वाढ आती है और वह अपने पाट की सीमाओ को लाघती हुई मैदानो और तटो के वास के जगलो में प्रलय का दृश्य खडा कर देती है। नतीजा यह होता है कि वनो से चिडियो के झुड, जगली सुअर और दहाडते हुए वाघ भाग जाते हैं। प्रकृति की इस भयकरता के समय अकेले घडियाल ही स्वतत्र रूप से विचरा करते हैं अपने शिकार की तलाश में।

जिस जगह कृष्णा पूर्वी घाटो से कुछ पहले दक्षिण की ओर मुडती और वाद में पहाडो से टकराती हुई सहसा उत्तर की ओर घूम पडती है वही भगवान शिव का मन्दिर है जिसका निर्माण अनेको पीढियो में हुआ है।

यही, इसी तीर्थ-स्थान में, अप्रैल के महीने में, प्राय देश-भर के नर-नारी आते हैं—साधु-सन्यासी, फकीर, व्यापारी। सभी की अपनी अपनी चिन्ताए होती हैं, अपनी अपनी भावनाए।

यहा बीमार आते है भगवान से नीरोग होने की प्रार्थना करने के लिए, योगी आते है जो दुनिया से मुह मोड चुके है, गरीब आते हैं और अमीर आते हैं अपने वैलो पर

यही निकीतिन, सीता, रगू और क्षाकी तथा बीदर के कुछ और व्यापारी वैलो पर आये थे। उनका रास्ता साफ था और गावो, मैदानो और कटे हुए जगलो से होकर पडता था। वगाल की खाडी से उठनेवाला शीत मानसून अब शान्त हो चुका था किन्तु अभी कडाके की गर्मी का समय न था। हवा साफ थी। दक्खन की नीरस-सी प्रकृति धीरे धीरे हरियाली से सजने-धजने लगी थी। यात्रियो के मार्ग पर तरह तरह के छोटे-बडे मन्दिर पडते थे, जिन्हे देखकर अफनासी को गिरजो की याद आ जाती थी। हर मन्दिर अपने ही ढग से वना था—कोई पत्थरो के मकान जैसा होता और उसके खम्भो पर मनुष्यो की आकृतिया खुदी होती, किसी में स्तम्भों की प्रचुरता और मुख्य फाटक पर पत्थर के हाथियो और शेरो की मूर्तिया होती, कुछ के शिखरो की वनावट सीढीदार होती और हर सीढी पर कई बुर्ज-से होते और उनके छोर पर कलश रखा होता। मन्दिरो पर पशुओ और मनुष्यो की नग्न पाषाण आकृतिया बडी कुशलता से बनायी गयी थी। वे स्वप्नलोक की सी लग रही थी। उन्हे देखकर सहसा यह विश्वास ही न हो पाता कि इन्हें मनुष्यो के हाथो ने बनाया होगा। एक एक हाथी की मूर्ति बनाने में

शायद सौ सौ साल लगे होंगे। ओफ, कितने संयम और साहस की जरूरत है इस कला में!

यह था सीता का देश और यह थी उसके धर्मबन्धुओं की कला, उसकी जाति की आत्मा। और इस देश की आत्मा थी यहा बसनेवाले लोग!

कई मन्दिरों में सीता ने दान-दक्षिणा दी। यहा तरह तरह के मन्दिर थे—अग्नि देव का मन्दिर, प्रेम और धन-धान्य की देवी लक्ष्मी का मन्दिर और बुद्धि और व्यापार के देवता गणेश का मन्दिर। सीता ने सबसे अधिक दक्षिणा चढायी लक्ष्मी और गणेश के मन्दिर में। इससे निकीतिन काफी प्रभावित हुआ।

गाववासी तीर्थयात्रियों से बडे स्नेह से मिलते। सीता अफनासी को बराबर दिखाती जा रही थी—हमारे गाव में ऐसा ही कुआ था, ऐसा ही तालाब, ऐसा ही बछडा। अफनासी को सीता की आखो में दुख की झलक दिखाई पड रही थी। वह बार बार यही सोचता जा रहा था कि वह अपनी धरती हमेशा के लिए छोड भी सकेगी, रूस में रह भी सकेगी?

कभी कभी अफनासी को बीदर के अपने जीवन के अन्तिम सप्ताहों की याद आने लगती। उस समय उसके मन में तरह तरह की शकाए उठा करती किन्तु इनका कारण क्या था यह वह न जानता था।

खजानची उदास होता जा रहा था, वह जैसे ईद का चाद हो गया था। बातचीत के समय कभी सामने न देखता। उसे खजानची से क्या लेना-देना था? और हा ऐसा लगता है जैसे मुस्तफा ने भी शहर में कई बार उसका पीछा किया है। नही यह सब बेवकूफी की बाते हैं। मुस्तफा तो खुद उससे भाग्ता है किरोधार भी उसके यहा आया था। उसने उसके घर की सभी चीजो को घूर घूरकर देखा भी था। लेकिन परेशानी की क्या बात! वह बीदर के अपने घर मे हसन को छोड ही आया है। वह घर की देख-भाल कर ही लेगा। वहा कौन क्या ले जायेगा। जो माल-मता उसके पास था वह तो अब भी उसके बटुए में है।

बेकार के ख्याल! बीदर में उसका जीवन कोई बुरा नही रहा। उसने वहा के महल देखे थे, यह देखा था कि गहरे गहरे कुओ से पानी, नलो द्वारा किस प्रकार महलो में पहुचाया जाता था। उसकी अच्छे-भले लोगो से जान-पहचान हुई थी—महमूद गवान का इतिवृत्त लेखक फरिश्ता, शायर अबू अली, नजूमी नेफी इनमें से थे।

फरिश्ता नाटे कद का एक गोल-मटोल आदमी था। जब हसता तो मुह ऐसे खुल जाता मानो बीच से कटा हुआ तरबूज हो। उसने रूस के बारे मे बहुत कुछ पूछा था, वहा के राजाओ के नाम अपने पास लिख लिये थे और रूस की फौजो के बारे में भी कुछ सवाल किये थे। अफनासी ने उसे हसी-मजाक में जवाब दिया था कि रूस में सभी फौजी हैं, सभी को युद्ध-कला सिखायी जाती है और अच्छा हो कि लोग वहा न जायें इतिवृत्त लेखक ने परा की कलम से अपने गोल गोल नथुने फुलाते हुए एक आह-सी भरी थी और सब कुछ लिख लिया था।

अबू अली शायरी करता था। उसे कोई खाना भले ही न दे, लेकिन बहादुरो की तवारीख तथा लडाइयो और हसीनाओ की दास्तानें पढने के लिए दे दे, तो फिर शायर को कुछ नही चाहिए।

अबू अली सल्तनत-भर में प्रसिद्ध था। उसका बाप भी शायर था, लेकिन ज़िन्दगी में उसने एक गलती की थी। एक बार उसने अपनी शायरी पहले सुलतान को न सुनाकर किसी दूसरे को सुनायी थी। नतीजा यह हुआ था कि उसकी आखें निकाल ली गयी थीं, ज़बान काट ली गयी थी और कानों में सीसा भर दिया गया था। उसे मानो जताया गया था कि अपनी हैसियत न भूलो।

अबू अली को अपने पिता की याद है और आज भी वह उदास हो उठता है।

निकीतिन ने उसे मिकूला सेल्यानीनोविच की पुरानी गाथा सुनायी और शायर के दिल की कली खिल गयी। उस गाथा में इतना जोश था कि अबू अली अपने आंसू न रोक सका।

नजूमी सेफी इन सब से भिन्न था। बूढ़ा और एकान्तप्रिय। रातों को मीनार पर निकल जाता और तारों की गति का अध्ययन किया करता। तारे देखकर ही वह आदमी की तकदीर बता देता। कहते हैं वह उस खानदान से था जिसके किसी चिराग ने वर्तमान सुलतान के परदादा को, जो उस समय एक मामूली सिपाही थे, यह बताया था कि ये तख़्तनशीन बनेंगे, सुलतान बनेंगे।

अफनासी की इच्छा थी कि सेफी उनकी भी एक जन्मपत्री बना दे किन्तु उसने अपने पैदा होने का समय और ग्रहों आदि के बारे में जो कुछ नजूमी को समझाया उसे वह न समझ सका। यह अफसोस की बात थी—भविष्य जान लेना भी कितने कौतूहल की चीज़ है। और बूढ़ा सेफी, आदमी भी कितने मज़े का है। उसने आकाश के बारे में न जाने कितनी आश्चर्यजनक बातें बतायी थीं। उसने कहा कि वह यह भी बता सकता है कि कोई अज्ञात तारा नौ वर्ष बाद कहां होगा।

वह कुछ अक लिखता और आकाश में किसी रिक्त स्थान की ओर सकेत करता हुआ कहता – वहा उदय होगा वह तारा।

बीदर बडी दिलचस्प जगह है! पर रास्ते में उसे और मजा आ रहा है। उसे अपनी आत्मा निष्कलुप-सी लगती है, यद्यपि रास्ता बहुत आसान नही है। उसके रवाना होने से पहले बीदर से तीन बैल-गाडिया चली थीं और वे ढेर हो गयी थी। कहते है उनपर भेडियो ने हमला किया था। यहा भेडिये छोटे छोटे होते है, लेकिन बडे खखार होते हैं और जब निकलते है तो बडे बडे झुडो में। भगवान न करे उनका सामना हो जाये

सीता के गाने की मधुर ध्वनि सुनना, उसके बल खाते हुए शरीर और मुस्कराते हुए चेहरे को एकटक देखना, रगू की दास्तान सुनना, किसानो की झोपडियों में रात बिताना, घास और झाडियो की खुशबू का आनन्द लेना कितने दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है. इन सब में।

सडक पर भीड बराबर बढती रही। लोग पहाडियो और छोटी छोटी नदियो से होते हुए ताड के पेडो और घाटियो के बीच मे टेढे-मेढे रास्तो पर चल रहे थे।

उन्हे मार्ग में एक माह लग गया था। अब उनके सामने कृष्णा का कलकल करता हुआ जल, शान से सिर उठाये हुए ऊचे ऊचे पहाड और मन्दिर की भूरी भूरी उदास-सी दीवाले दिखाई दे रही थी।

सीता, रगू और अपने इर्द-गिर्द के सैकडो लोगो के मुह पर निकीतिन को एक जैसे भाव दिखाई पड रहे थे – प्रसन्नता, व्याकुलता, भीरुता, आशा और चिन्ता के भाव

वैलों को स्थानीय निवासियों की देखरेख में छोड, रग्, मीता और झाकी के साथ उसने कृष्णा पार कर उसके दक्षिणी किनारे पर जाने का निश्चय किया।

लोग चमडे से ढके हुए डब्बों* में चढ चढकर पार उतर रहे थे। डब्बे प्राय तेज़ बहाव में पडकर नाचने लगते और उनमें थोडा-बहुत पानी भरने लगता। डब्बों को खेनेवाले बराबर व्यस्त थे। अफ़नानी मीता का हाथ पकडे था। कई बार तो उनके डब्बे के बिल्कुल ही पास कुछ भयानक घडियाल भी दिखाई दे जाते। वे छिछले पानी में भी पडे रहते और लोगों की चिल्ल-पों सुनकर भी करवटें न लेते। अफ़नानी ने उनकी ओर न देखने का प्रयत्न किया। वह जानता था—यहा लोग बडी बडी दूर से आदमियों की लाशें लाते हैं और घडियालों का पेट भरते हैं।

अभी अभी एक अधफुकी लाश चिता से निकालकर नदी में प्रवाहित की गयी थी। काश, इन चिताओं पर उसकी नज़र न पडती! सारे तट पर चिताओं का धुआ दिखाई दे रहा था। लोग कैसे विश्वास कर लेते है कि घडियाल के पेट में जाकर आदमी को मुक्ति मिलती है!

उसने मीता पर एक दृष्टि डाली। वह उत्तर में बस मुस्कराकर रह गयी।

डब्बे किनारे लगे। अफ़नानी कूदकर मीता को हाथ का सहारा देने लगा।

उनके सामने मन्दिर की दीवाले थी—पत्थर की बडी और भूरी भूरी दीवाले जिनपर बारह पक्तियों मे पाषाण मूर्तियों के रूप मे भगवान शिव के भिन्न भिन्न स्वरूपो और लीलाओं के चित्रण हुए थे।

---

* डोंगियों।

भगवान शिव की इस नगरी में सर्वत्र चहल-पहल थी। मुसलमान चौकीदारो को प्रवेश-शुल्क अदा कर चुकने के पश्चात् हजारो लोग नगरी में प्रवेश कर रहे थे। यहा प्रति दिन हजारो की सख्या में लोग पूजा पाठ करते थे, दान-दक्षिणा देते थे। मन्दिरो की ज्योति अखड रूप से जला करती थी। भक्त लोग फूल खरीद खरीदकर मन्दिर के देवताग्रो और मुख्य मन्दिर के बाहर काले पत्थर की बनी भीमाकार गौमाता पर चढा रहे थे।

नगर की चहारदीवारी के पास पडे व्यापारियो के तम्बुग्रो मे आपको सभी चीजें सुलभ हो सकती थी—देवताग्रो की कासे की मूर्तियो से लेकर रत्न राशि तक।

कर्ण ने झूठ नहीं कहा था। यहा हीरे सस्ते थे। निकीतिन ने कई दुर्लभ और ग्राबदार हीरे खरीदे। कौतूहलवश वह मन्दिरो में भी गया। मन्दिर में प्रवेश पाने के लिए आदमियो को सिर के बाल और स्त्रियो को चोटी का एक हिस्सा कटाना पडता था। बहुत-से लोग तो अपनी सारी चाद घुटवा डालते। मन्दिर मे जूता पहनकर जाने की मनाही थी। पत्थर की सीढिया इतनी जला करती कि लोगो के पैर तक झुलस जाते। जटाधारी फकीर, शरीर पर बाघ और चीते की खाले डाले, यात्रियो का आचल पकड पकडकर भीख माग रहे थे। सीता की निगाह में ये भिखारी भी साधु-सन्तो से कम न थे। वह इन्हे उन्मुक्त हस्त से दान-दक्षिणा दे रही थी।

मन्दिरो के भीतर अधेरा था और लम्बे लम्बे दीवटो पर ज्योतिया जल रही थी जिनके प्रकाश में भीतर के स्तम्भ तथा मूर्तिया मन्दिरो की सुनहरी और कासे की दीवालो में झलक रही थी। सुखद शीतलता जैसे पत्थरो से उठ उठकर चारो ओर फैल रही थी, पर समस्त दिशाओ मे देवी-देवताओ के तरह तरह के—

पक्षियों, सर्पों और पशुओं के–चेहरे भक्तों की ओर बड़े भयानक ढंग से घूर रहे थे।

एक मन्दिर में शिव, अपने ढेरों हाथों में कुडलियों वाले सर्प पकड़े, ताडव नृत्य कर रहे थे। एक दूसरे मन्दिर में वह किसी विराट दैत्य के पखों पर बैठे थे तो तीसरे मन्दिर में मानव की खोपड़ियों के बीच खड़े थे जगह जगह धूप और सूखे फूलों की सुगन्ध आ रही थी। वासुरी, शहनाई, वीणा तथा अन्य वाद्यों की ध्वनि और हजारों मृदगों की धा-धिन धा-धिन कानों में पड़ रही थी। देवदासिया मन्दिरों की शोभा बढा रही थीं। यौवन से गदराती हुई, एक से एक सुन्दर। पारदर्शी साड़िया पहने और बहुमूल्य रत्नों से लदी हुई। वे देवताओं के स्तोत्र गातीं और अपने नृत्य में भगवान शिव और अन्य देवी-देवताओं की जीवन-लीलाओं को व्यक्त करतीं।

सगीत की धुन बढती गयी और देवदासियों के नृत्य की गति भी। अन्तत, सिवा वासुरी की एक हल्की-सी धुन के, सारी धुनें बन्द हो गयीं। देवदासियों ने परमानन्द की अवस्था में, अपने सारे वस्त्र उतार डाले। अब दर्शकों के कानों में उनके घुघरुओं, अगूठियों और चूड़ियों की टुनटुन ही पड़ रही थी सारा दृश्य जैसे निर्लज्जता और मस्ती का द्योतक था। निकीतिन बाहर चला आया। उसका सिर ऐसा भन्ना रहा था मानो नशे में हो। उसने देखा कि बाहर आनेवाले हिन्दुओं की आखों में एक ज्वाला धधक रही है। यह वह नशा था जो उनपर उत्तेजक सगीत, भयानक मूर्तियों, देवदासियों की सुन्दरता और उन्माद की अवस्था के कारण छा रहा था रगू ने बताया कि देवदासिया बड़े और रईस घरों की लड़किया होती हैं। उनके माता-पिता बचपन में ही उन्हें मन्दिरों में दे देते हैं, जहा पुजारी उन्हें वेद, पुराण और नृत्य-कला सिखाते

हैं। ये लड़किया अपनी सुन्दरता से मन्दिरो की सेवा करती हैं। उन्ही के कारण मन्दिरो में अधिक चढावा चढता है। और वे तब तक यह कार्य करती है जब तक पचीस की नही हो जाती। इसके पश्चात् वे अपने घर लौट आती हैं।

"और यह कोई बात नही? उन्हे घर में आने दिया जाता है?" सावधानी से निकीतिन ने पूछा।

रगू की समझ में कुछ न आया।

"क्या आने दिया जाता है? उनके लौटने से सारा परिवार खुशी से झूम उठता है। देवदासी सबसे अच्छी कन्या समझी जाती है। तुमने सीता की बहन के बारे में तो सुना ही होगा "

निकीतिन अपनी परेशानी व्यक्त न करते हुए नृत्य में दिखाये गये भावो के बारे में पूछने लगा।

"आज तुमने नृत्य में राम और सीता के प्रेम की कथा देखी है," रगू कहने लगा, "लका का राक्षस सीता को हर ले गया था। लका में सीता को हजारो राक्षसो के पहरे में रखा गया था। गरुड और वानर सेना ने राम की मदद की थी। वानरो ने एक दूसरे से अपनी पूछें फसा फसाकर सागर पर एक पुल-सा बना लिया था। राम की सेना की राक्षसों पर विजय हुई। इस प्रकार सीता का
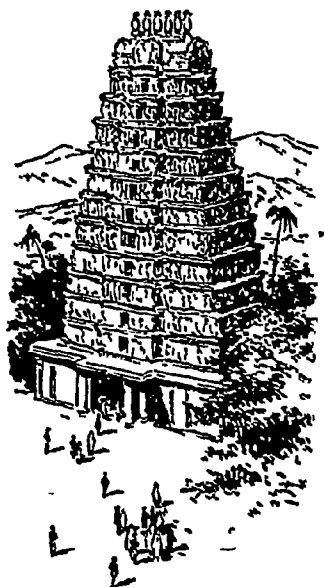
उद्धार हुआ था। यह प्रेम और श्रद्धा की कहानी है। कल तुमने सर्पसत्र की कथा देखी थी ''

निकोतिन की जिज्ञासा पर सीता खुश थी। सीता ने भी उसे बहुत सी बाते समझायी। श्री-पर्वती के मन्दिर की दीवालो के किनारे किनारे चलती हुई वह उसे पत्थर की अनेकानेक मूर्तिया दिखाती और उनके अर्थ समझाती—यह देखो वराह अवतार में शिव प्रलय जल में से पृथ्वी का उद्धार कर रहे है वह देखो मत्स्यावतार शिव

"भगवान हर समय जीव-जन्तुओं का ही अवतार क्यो धारण करते है ?"

"क्या ? भगवान—वे तो सर्वत्र है। ससार की हर वस्तु उन्ही से जीवन का प्रकाश पाती है न।"

वह तो निकोतिन से भी अधिक आश्चर्यचकित हो रही थी।

सीता, रगू और दूसरे हिन्दुओं की बातो से अफनासी ने अन्तत उनके धर्म के मूल सिद्धान्तो को समझ लिया था।

हिन्दू सारे ससार को भगवान का ही रूप मानते है। भगवान का यह रूप क्षणिक, मायिक और अबोध्य है। उनके अनुसार जीवन की गति अनन्त है। मनुष्य बार बार जन्म लेता है। वह सर्प, पक्षी या देवता आदि में से किस योनि में प्रकट होगा यह उसके कर्मो पर निर्भर है। अगले जन्म में सुखी रहने के लिए मनुष्य को चाहिए कि वह अपने धर्म और जात के सिद्धान्तो पर अडिग रहे। दुख इस ससार का नियम है और जो कोई इसका विरोध करेगा उसे कष्ट भुगतने पडेगे। जीवन पानी का बुलबुला है। मनुष्य को चाहिए कि वह परमब्रह्म में लीन होने का प्रयास करे। इसके दो मार्ग हैं। पहला—ध्यान-धारणा का, जो केवल द्विजो के लिए है

और दूसरा योगी मार्ग, जो सबके लिए है। दूसरा रास्ता वह है जिसमें इन्द्रिय निग्रह करके मनुष्य सासारिक कर्म करता रहता है।

"ठहरो, मै तुम्हे यहा कुछ कर्मठ योगी दिखाऊगा," रगू ने वादा किया।

और अफनासी ने उन्हे देखा भी। यह घटना शिवरात्रि के वाद की है। शिवरात्रि अफनासी ने सीता और अन्य हिन्दू मित्रो के साथ वडे मन्दिर में भगवान शिव की मूर्ति के पास ही वितायी थी। भगवान शिव की पाषाण-मूर्ति—वानर का लाल लाल मुख, पन्ने जैसी हरी-हरी आखें, लम्बी पूछ, वायें हाथ में सोने से मढा हुआ त्रिशूल और दाहिना भक्त के सिर के ऊपर सधा हुआ।

उस रात फूलो की वहार थी और इतनी उदासी कि आदमियो के रोगटे खडे हो जाते। सगीत कुछ इस विचित्र ढग से चल रहा था मानों कोई भविष्य कथन कर रहा हो। देवदासिया झूम झूमकर नाच-गा रही थी।

धूप की गध के साथ साथ सारे वातावरण में किसी असाधारण घटना के घटने का भी भान हो रहा था।

अन्तत भोर हुआ। देवदासिया हवा में तैरती-सी, द्वार की ओर वढी। उनके कठो से निकलनेवाले उन्मादी सगीत का हजारो कठ एक साथ अनुकरण करने लगे। भक्तो का समूह जैसे सुधबुध खोकर देवदासियो के पीछे चल रहा था।

पहाडो के उस पार सूर्य के दर्शन हो रहे थे। किन्तु, मशालो का धुआ, वढती हुई भीड पर, रेखाओ के रूप में छाता जा रहा था। देवदासिया गाती जा रही थी, चलती जा रही थी, गाती जा रही थी, चलती जा रही थी इस प्रकार भीड नगर-द्वार को

पार कर गयी। कृष्णा का जल दिखाई पड़ने लगा। देवदासियो के सगीत ने तीखी, भयानक और करुण कराह का रूप ले लिया था

और अफ़नासी ने देखा कि भीड में से कुछ लोग छटे, कृष्णा के किनारे की पहाड़ियो पर चढे और नदी के पानी में कूद पडे। एक दो पाच उसने जल की ओर देखा और भय, घृणा और व्यथा से उसकी बोटी बोटी काप उठी। कृष्णा नदी में ढेरो घड़ियाल थे।

अफ़नासी को पसीना आ गया। ओफ, भगवान के भक्त क्या नहीं करते? ज़िन्दगी-भर विनम्रता दिखाओ, आज्ञा मानो, आखिर में परिणाम यह। हु-ह यह सब उसके लिए नही।

रगू ने अफनासी की दशा देखी पर यह सोचकर रह गया कि वह इस दृश्य से बडा प्रभावित हुआ है।

"वे ब्रह्म में मिल गये!" रत्न-तराश बोला, "उन्हे परमानन्द की अवस्था प्राप्त हो गयी "

परमानन्द, परमानन्द, परमानन्द! निकीतिन का कितने ही धर्मों से साबक़ा पड चुका था! हर धर्म अपने अपने ढग से मुक्ति का मार्ग दिखाता था। पर सभी धर्म एक बात से सहमत थे—मनुष्य को इस ससार में कोई सुख नही, उसका जीवन भगवान की इच्छा पर निर्भर है और सुख अकेले परलोक में मिल सकता है।

आखिर हिन्दू धर्म, अन्य धर्मों की अपेक्षा किस अर्थ में बुरा था?

सीता सारी रात भगवान शिव के चरणो में पडी रही थी। वह पीली पड गयी थी। किन्तु जब उसने अफनासी की ओर देखा उसकी आखें चमक उठी।

"मैंने सब कुछ भगवान से कह दिया है," नदी से लौटते समय सीता ने फुसफुसाते हुए कहा।

अफनासी ने उसका हाथ थपथपाया और सिर हिला दिया। शायद अब वह शान्त होगी।

खेमे में से झाकी उन्हें हाथ के इशारे से बुला रही थी। उसके पास ही एक कुबडा-सा आदमी खडा खडा धूप में आखें मिचिया रहा था। निकीतिन ने उसे तुरन्त पहचान लिया।

"भावलो! " अफनासी ने दूर से ही उसे पुकारा, "ऐ! भावलो! तुम यहा! कहा से आ रहे हो?"

सीता जहा की तहा ठिठक कर खडी हो गयी और जडवत् भावलो की ओर देखने लगी। फिर, जैसे मन्त्रमुग्ध-सी उसकी ओर बढ़ी। लगता था कि भावलो भी इस भेंट से चकित हो उठा था।

"दादा, तुम मुझे भूल गये क्या?" सीता ने पूछा और "अफनासी सीता की यह फीकी-सी आवाज सुनकर चकित हो गया।

"सीता, अण्णू की बेटी?" अविश्वास से भावलो बोल उठा, "अफनासी, यह सब कैसे हुआ?"

"दादा," सीता बीच ही में बोल उठी, "आप हमारे यहा तो नही गये थे?"

"गया था। तुम्हारे पिता जी समझ रहे है तुम मर चुकी हो।"

"तो वे जिन्दा है?"

"हा, जिन्दा हैं।"

सीता बैठकर रोने लगी। उसने दोनो घुटनो पर सिर रख लिया।

भावलो पहले भी कई बार सीता के गाव में गया था और उसके सारे परिवार को जानता था।

"भावलो दुखी है!" झाकी चुपके से निकीतिन से बोली, "फौजियो ने उसकी आखो के सामने उसकी पत्नी और उसकी दोनो

बेटियो को मौत के घाट उतार दिया था लेकिन वह है अच्छा आदमी।"

पाचो लोग अगीठी के पास बैठकर अपनी अपनी कहने-सुनने लगे। सीता एकदम बदल गयी थी। वह अफनासी से आखें चुरा रही थी और घबडा गयी थी।

"मैं तुम्हे तुम्हारे पिता के पास पहुचा दूगा," भावलो ने सीता को वचन दिया, "वह तो खुशी से फूला न समायेगा। आजकल क़र्ज़ में डूबा हुआ है।"

शाम को जब अफनासी और सीता अकेले रह गये तो अफनासी ने उससे पूछा—

"तुम अपने पिता के पास जाना चाहती हो?"

सीता ने अपनी गर्दन न उठायी। उसने धीमी-सी आवाज़ में कहा—

"हा।"

"मैं तुम्हे न जाने दूगा।"

सीता चुप रह गयी, किन्तु इस चुप्पी से भी उसका विरोध स्पष्ट प्रकट हो रहा था। अफनासी फिर बोला—

"मैं तुम्हें न जाने दूगा!"

"तुम देवताओ की इच्छा के विरुद्ध नही जा सकते," सीता फुसफुसायी, "भावलो कोई सयोग से नही आ टपका। भगवान शिव मुझे रास्ता दिखा रहे हैं।"

अफनासी ने उसके कधे दबाये। सीता की आखें उसे जडवत् देखती रही। निकीतिन ने अपने हाथ गिरा दिये और घूमकर तेजी से चल दिया। उस रात वह बिल्कुल न सोया, बल्कि कृष्णा के किनारे बैठा बैठा जलतरगो के साथ चन्द्र किरणो की क्रीडा देखता रहा

दो दिन और बीत गये। सीता भी जैसे सूख गयी थी। लग रहा था मानो किसी ने उसे अन्दर ही अन्दर चूस लिया हो। जब कभी निकीतिन पास होता तो वह चौंक पड़ती। उसके मुह से बोल तक न फूटते।

रगू और झाकी, जैसे चिन्तातुर, उसके सबब में फुसफुसा फुसफुसाकर रह जाते। भावलो भी चुप था। यह सब कुछ अफनासी के लिए असह्य हो रहा था।

एक दिन किसी की चिता धूधू कर रही थी और अफनासी और भावलो वही पास खडे थे। अफनासी ने भावलो से पूछा—

"अब तुम कहा जाओगे?"

"खेलना लौट जाऊगा। वहा मेरे सगे-सबधी हैं।"

"तो सीता के गाव से होकर जाओगे?"

"हा।"

निकीतिन ने एक आह भरी, ज़मीन से घास का एक तिनका उठाया और उगली से ममलने लगा। घास महमहा उठी।

"यह मौक़ा है। सीता अपने पिता के पास जा सकती है," निकीतिन बोला, "वह इस अवसर को भगवान् की इच्छा समझती है। उसे अपने साथ ले जाओ न।"

"अच्छी बात है," भावलो ने उत्तर दिया, "तुम तो जानते ही हो कि उसकी मगनी हो चुकी है?"

"इससे मुझे क्या लेना-देना!"

सीता उस गाव जा रही है जहा उसका जन्म हुआ था यह जानकर भी सीता को कोई प्रसन्नता न हुई। वह पहले की ही तरह अनमनी, उदास बनी रही।

एक दिन वाद विदा की घडी भी आ पहुची।

"नमस्ते!" भावलो की वैल-गाडी के पास खडी होकर सीता बोली, "यह चादर ले लो, मैंने तुम्हारे यहा करघे पर वीनी है

निकीतिन ने उसका हाथ पकडा, जोर से दवाया और फिर छोड दिया।

"नमस्ते," वह धीरे से वोला।

गाडी आगे वढने लगी। निकीतिन रास्ते में खडा हो गया। वह देख रहा था सीता का धूमिल पडना हुआ चेहरा, साडी की अदृश्य होती हुई सिलवटें और अन्तत विलीन होती हुई उसकी सम्पूर्ण आकृति

निकीतिन ने सिर लटका लिया। उसे धूल में वने पहियो के निशान दिखाई पड रहे थे। अभी हवा चलेगी और इनका भी नामोनिशान मिट जायेगा।

निकीतिन को रग की आवाज़ सुनाई दी। किन्तु वह सिर झुका कर दूसरी ओर, कृष्णा के किनारे किनारे चलने लगा, ठीक उसी रास्ते पर जो उसे एक महीना पहले भगवान की इस नगरी में लाया था, सिर्फ एक महीना पहले।

छठा अध्याय

श्री-पर्वती से वीदर लौटने के वाद निकीतिन ने सीता को भुलाने का प्रयत्न किया, किन्तु न भुला सका। जव घर में अवू अली उसे रुदाकी और उमर खैयाम की रुवाइया सुनाता और जव वह फारसी के चुनिन्दा शेरो को, जिनका विषय पूर्वी देशो की सुन्दरियो का यशवर्णन होता, अपने लिए लिख लेता उस समय भी अफनासी वरावर

उसे याद करता रहता। उसे ये सुन्दरिया उसकी कृशकाय वन्दिनी की ही तरह लगा करती। जब कभी घर में कपडे लेने के लिए घोबी आता तो उसे सीता की याद आ जाती, क्योंकि घोबी के आते ही सीता जैसे सिर पर आसमान उठा लेती थी।

स्वय कर्ण के यहा भी निकीतिन यदा-कदा ही जाता, क्योंकि वहा भी सीता की याद उसका पीछा न छोडती—सीता झाकी की सहेली थी न!

वह घटों कोई काम न शुरु कर पाता, निरुद्देश्य वीदर की सडको और तग गलियो में इस आशा में मारा मारा फिरा करता कि उसका प्रेम इन्ही गलियो में छूट जाये, खो जाये।

जून का महीना, चिलचिलाती हुई घूप। गर्मी से झुलसकर पेडो की पत्तिया तक टूट टूटकर गिरने लगती। कुए भी इनेगिने ही थे। उनपर प्यासो की भीड लगी रहती—कोई कटोरियों में पीता, तो कोई चुल्लू में। प्राय पानी देखते देखते सूखकर रह जाता और यदि उसकी कुछ बूदें जमीन पर गिरती तो तुरन्त ग़ायव हो जाती और उनकी जगह छोटे छोटे सूराख वन कर रह जाते।

शाम के समय मकानो के वाहर नर-नारियो के छोटे-छोटे समूह इकट्ठे हो जाते। उनके चेहरे अस्पष्ट-से दिखाई देते और उनके रगविरगे कपडे धूमिल-से। वह वहा से गुज़रता चला जाता। उसे देखकर लोग अपनी वातचीत वन्द कर देते, और कुछ तो झुककर उसे अभिवादन भी करने लग जाते। इनमें से कुछ को वह जानता तक न था किन्तु उत्तर वह प्रत्येक को देता।

अफ़नासी के चेहरे पर उदासी भरी हल्की-सी मुस्कान दौड जाती। इस समय उसे मदद की जरूरत थी। लेकिन उसे मदद

देता कौन? और झूठी सान्त्वना से वह अपना मन वहलाना न चाहता था।

भारत में रहते रहते उसे एक वर्ष हो चुका था। अब हर समय वह मन ही मन यही प्रश्न किया करता—अब लौट न चला जाये? वह बहुत घूम चुका था और भारत के व्यापार के बारे में अपनी डायरी में बहुत कुछ लिख भी चुका था। तो अब रहने का क्या तुक?

परन्तु फारस से जो खबरें बीदर आती थीं वे उत्साहवर्द्धक न होती थीं। उजून हसन की फौजों ने इस्पहान के रास्ते के यज्द तथा अन्य नगरों पर अधिकार कर लिया था और गुरमीज अरब और खोरासान से कट गया था। उजून हसन का इरादा सारे फारस पर कब्जा करने का था। उसने अपने पुराने दुश्मन जेहनशाह को मारकर उसकी सेना को मिट्टी में मिला दिया था। इसके अलावा वह आजरबैजान पर भी कब्जा कर लेने की सोच रहा था।

उसके इस रास्ते से जाने का कोई सवाल ही न था। एक रास्ता और था— मक्का होकर। पर ईसाइयों का मक्का होकर जाना उचित न था। तो क्या उत्तर में विन्ध्य पहाड़ों को पार कर फिर रेगिस्तानों और पहाड़ों की खाक छानते हुए चला जाता? अबू अली ने बताया कि इस तरह बुखारा तक आसानी से जाया जा सकता है। लेकिन यह कहना सम्भव न था कि इस रास्ते में उसे कितना समय लगेगा। हो सकता है उसका मुकाबला तातारों से हो जाये। और कौन जाने सराय और मास्को के बीच युद्ध चल रहा हो? अगर ऐसा हो तो हथकड़ियां पड़ेंगी और यदि फौरन मार न डाला गया तो अत्याचारों का शिकार होना पड़ेगा। ओफ! बदकिस्मती! भारत से निकलकर जाने का कोई रास्ता नहीं! और रुपया तो ऐसे वह

रहा है जैसे अप्रैल के सूर्य से तपकर बर्फ। घोडा बेचने से जो पैसा मिला था उसका तीन चौथाई तो खाने-पीने और घूमने-घामने में ही खर्च हो गया। अब, अगर भारत में और रहना पडा तो फिर कुछ न कुछ तो सोचना ही होगा। लेकिन क्या? बस एक ही रास्ता रह गया है—जवाहरात बेच डालना और गोलकोडा और रायचूर की सुलतान की खानो में जाना। बेशक वहा जाने की मनाही है किन्तु रगू ने कहा है कि बहुत-से लोग यह खतरा मोल लेते है, वहा जाते हैं और गोलकोडा में काम करनेवाले गुलामो से हीरे मिट्टी के मोल खरीदते हैं।

उसे भी यही रास्ता अख्त्यार करना होगा। यह फायदेमन्द भी होगा—एक तो वह खुद रास्ता जान लेगा, दूसरे रूसियो के लिए उसके बारे में लिख देगा।

उसके दिमाग ने उसे यही सलाह दी थी। किन्तु उसका दिल उसे अज्ञात कोकन के गाव कोठूर में बुला रहा था। इस गाव की स्मृति उसके मानस में घुल मिल गयी थी।

सोते समय यही विचार उसके दिमाग में उठ रहे थे। जागने पर भी उसे उनसे मुक्ति न मिली थी। वह सोफे पर पडा पडा, बास की छत की ओर देखता हुआ, जाने क्या क्या सोच रहा था। भारतीय व्यवस्था के अनुसार आदमी का जीवन तीन भागो में बटा हुआ है। पहला—जब आदमी पढता-लिखता है, दूसरा—जब वह श्रम करके अपने पूर्वजो के ऋण से उऋण होता है और दाम्पत्य जीवन के नियमो का पालन करते हुए सन्तति पैदा करता है, और तीसरा—जब वह ध्यान-धारणा के माध्यम से परमसुख प्राप्त करता है।

अपने पिता की सहायता करते हुए और खुद काम करते हुए अफ़नासी ने भी पढा-लिखा था—अब भी तो वह सीख ही रहा है।

और सन्तति ने तो भगवान ने उसे दूर ही रखा है। वृद्धावस्था शान्ति में कटेगी यह विचार भी उसे बड़ा विचित्र लग रहा है। नहीं, जिन्दगी को सिद्धान्तों के चौखटे में नहीं कसा जा सकता। यह बात सच लगती है। उसने इंजील अवश्य पढ़ी है, फिर भी वह ढंग का ईसाई तक न सिद्ध हो सका। सारी युवावस्था में उसका आचरण इंजील के अनुसार कभी न रहा—उसने शत्रुओं को क्षमा नहीं किया, संसार के शक्तिशाली लोगों के आगे घुटने नहीं टेके, परलोक की बात नहीं सोची और अकेले शरीर की जरूरतें पूरी करने में ही लगा रहा।

कभी कभी अफनासी को लगता—काश उसके पास वे धर्मग्रन्थ होते जिन्हें रास्ते में तातारों ने लूट लिया था। तब वह समझ पाता कि आसपास क्या घट रहा है। किन्तु वे ग्रन्थ थे कहां! अफसोस! अब तो वह अपने वारों तक को भूल गया था, और रह रहा था मुसलमानी कैलेंडर के अनुसार। कब कौन व्रत होगा, कब कौन त्योहार, इसकी उसे कोई सुध न रह गयी थी।

यह एक ऐसा पाप था जिसे भगवान कभी माफ न करेगा। बस एक ही सन्तोष है—ईसाइयों के लिए एक नया देश खुल गया है। यहां से वह बहुत-सी जरूरी जरूरी चीजें ले जायेगा—कुतुबनुमा, भारतीय नक्शे और चीन और नये नये धर्मों के बारे में अनेकानेक सूचनाएं, जिनके विषय में रूस के लोग अनुमान तक नहीं लगा सकते। अज्ञात मुल्कों के साथ रूस के संबंध दृढ़ होंगे, व्यापार और विज्ञान का रास्ता खुलेगा। वह सोचता था कि भिन्न भिन्न धर्मों के लोगों को कुएं के मेंढक बनकर नहीं रहना चाहिए। हर राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को कुछ सिखा सकता है और उससे कुछ सीख भी सकता है। धर्म कौनसा ठीक है इसका फैसला करना बहुत कठिन है। इसका पता

तो कालान्तर में ही चलेगा। समय की सीमा लाघकर तो कोई देख नही सकता।

और कौन जाने उसने ईसाइयो की जो चिन्ता की है उसे देखते हुए भगवान उसके पापो को माफ ही कर दे। भारत के लोगो और भारत देश के प्रति मैत्रीपूर्ण अनुभतियो से गद्गद उसके मस्तिष्क में इसी प्रकार के विचार चक्कर लगा रहे थे।

प्राय उसे लगता कि यदि उसके साथ इवान लप्शोव होता तो वह रूस के कलाकारों और पादरियो के लिए भारत के मन्दिरो, देवी-देवताओ, महलों, बाजारो, जगलो और पशुओ के चित्र बनाता और यह सब कितना अद्भुत होता।

अफनासी ने इस प्रकार के चित्र प्राप्त करने की पूरी कोशिश की, किन्तु अभी तक उसे अधिक चित्र न मिले थे। इस दिशा में उसे सिर्फ एक ही बार सफलता मिली थी।

बात यो हुई। निकीतिन के नगर लौटने तक पर खजानची मुहम्मद वही बीदर में रहा। उसने अफनासी का अच्छा सत्कार किया और उसे उसके हिन्दू मित्रो की कोई याद न दिलायी। बस एक बार यह जरूर पूछा कि अफनासी की जानपहचान जौहरी आवलो से तो नही है? और जब अफनासी ने इसका उत्तर हा में दिया तो उसने इतना और कह दिया कि जब वह आये तो मुझे बता देना, उससे कुछ काम है। बीदर के रईसो ने भी निकीतिन के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। उन्होंने खजानची की मार्फत उसे बुलाया भी था। उनका निमत्रण अस्वीकार करना अशिष्टता होती, यद्यपि, असद-खान से हुई भेंट की याद करके, वह इन स्थानीय रईसो से दो हाथ दूर ही रहना चाहता था। वह बीदर के इन रईसो से एक-दो बार मिलने गया था किन्तु उसे विश्वास हो गया कि उनके बारे में उसका जो कुछ ख्याल है वह सही है।

ये रईस उससे बड़े तपाक से मिलते। उसे अपने महल और शेरों, हिमालय के भालुओं और तेंदुओं के बाड़े दिखाते, उससे बराबर वालों की तरह मिलते, अपने संगीतज्ञों और नर्तक-नर्तकियों से मिलाकर उसे चकित करने का प्रयत्न करते, उससे रूस के बारे में पूछते, लेकिन अफनासी को लगता कि उसके मेज़बान के घर आये हुए मेहमान उसे वैसे ही देखते मानो वह कोई पढ़ा-लिखा बन्दर, या कोई दुर्लभ-सा जीव हो। वे उसके ईसाई धर्म की खिल्ली भी उड़ाना चाहते किन्तु उन्हें महमूद गवान का डर था, क्योंकि, लोगों का कहना था कि उसकी आज्ञा थी कि रूसी को किसी भी प्रकार नाराज़ न किया जाये।

निकीतिन को दूसरों की अपेक्षा तरफ्दार फरहत-खान अधिक पसन्द आया। यह तरफ़दार महमूद गवान का कोई निकट का दोस्त था।

तरफ़दार एक जवान आदमी था। स्वस्थ, गठीला। उसके ठाठ देखकर तो लोगों की आँखें खुली की खुली रह जातीं। उसे दुर्लभ वस्तुएं संग्रह करने का शौक था। उसने तरह तरह के गुलदान, तसवीरें और कालीन इकट्ठे किये थे। इन दुर्लभ वस्तुओं से महल के तीन बड़े बड़े हाल भरे हुए थे। निकीतिन आँखें फाड़ फाड़कर देख रहा था। उसकी समझ ही में न आ रहा था कि क्या क्या देखे— चीनी मिट्टी के लाल, सुनहरे और कामदार गुलदान, अंडे जितना बड़ा हीरा या एक इंच में बीस हज़ार गाठों वाला कालीन, जो सत्तर वर्ष में बनकर तैयार हुआ था

फरहत-खान अपने को एक प्रसिद्ध ज्ञानी समझता था। जब उसे यह विश्वास हो गया कि उसकी समृद्धि ने निकीतिन पर बड़ा प्रभाव डाला है तो उसने अफनासी को धर्म के विषय में बहस करने को ललकारा।

अफनासी उसका उत्तर बडी शिष्टता से देता था। वह फरहत-खान की भावनाओ के विरुद्ध कुछ भी कहने-सुनने में हिचकता था। तरफदार को यह अच्छा लगता और वह खुद आत्मसन्तोष की भावना से अपनी वक्तृता का प्रदर्शन करता रहता।

सारी वहस आकर इस वात पर ठप्प हो गयी–फरहत-खान ने समझ लिया था कि अफनासी को ईसाई धर्म के वारे में कोई खास ज्ञान नही।

निकीतिन ने कोई वहस नही की। इतना ही कहा कि वह यहा एक परदेसी है और उसे अपने धर्म के अनुसार ही भगवान की प्रार्थना करने का अभ्यास है।

फरहत-खान, खिलखिला कर हस पडा। वोला–"मै तुम्हारी सभी तरह की मदद करने को तैयार हू और मुझे विश्वास है तुम पक्के मुसलमान वनोगे।"

"तव तो मै काफिला रूस न ले जा सकूगा," अफनासी ने उत्तर दिया, "सभी नगरो के लोग तो मुझे जानते हैं।"

उत्तर सुनकर तरफदार सोच में पड गया। आख़िर उसे रास्ता सूझ ही गया।

"अच्छी वात है," वह वोला, "इवादत तुम अपने ढग से करो। यह कोई अहम वात नही। अहम वात यह है कि दिल क्या मानता है। क्या मैंने तुम्हे विश्वास नही दिलाया?"

"तुमने वडे गुर की वातें वतायी हैं। तुम्हारी सलाह वडे काम की है," निकीतिन ने उत्तर दिया, "मैं इस पर अभी और विचार करूगा। और अगर मै तुम्हे तुरन्त कोई जवाव न दे सकू तो मुझे दोष न देना।"

"अल्लाह का झडा कभी न कभी तो उन मुल्को में गडेगा ही

जिनके बारे में तुमने बताया है," तरफ़दार ने पूरे विश्वास के साथ कहा, "तुम इन देशो को जानते हो। तुम अगर जरूरी कदम उठाओ तो हम उसकी वाजिब क़द्र करेगे।"

निकीतिन ने बातचीत को दूसरी दिशा में मोडने का प्रयास किया और पुस्तको के विषय में चर्चा करने लगा।

फ़रहत-खान वहम की बात तो भूल गया और एक दुर्लभ हस्तलिपि ले आया। हस्तलिपि में बडे अद्‌भुत चित्र बने थे।

उसके पास 'नल-दमयती' की तीन प्रतिया थीं।

निकीतिन ने हस्तलिपि की इतनी प्रशसा की कि फरहत-खान भी बडी उदार मुद्रा का प्रदर्शन करने लगा—उसने रूसी के समक्ष खाल में लपटी हुई भारतीय काव्य की एक प्रति रखी और कहा कि अपने प्यार के तोहफ़े के रूप में त्वेर के वैज्ञानिक के लिए यही उसकी भेंट है।

अफनासी ने सिर झुकाकर भेंट ग्रहण की और वादा किया कि वह अपने देशवासियो से कहेगा कि भारत का फरहत-खान बडा विद्वान और बडा गुणी है।

यह उपहार सचमुच बडा मूल्यवान था और इससे निकीतिन प्रभावित हुआ। वह बहुत समय तक अबू अली से लिखना-पढना सीखता रहा। वह चाहता था कि यदि वह भारत से कुछ मुसलमानी पुस्तके रूस ले जाये तो उन्हें पढ तो सके। वह सचमुच कुछ पुस्तकें अपने साथ ले जाना चाहता था। पुस्तको में बहुत-सी उपयोगी बातो का ज़िक्र रहता था।

अफ़नासी कई बार फरहत-खान के महल में गया था। गुलाबी महल, सर्पिल स्तभो वाले बडे बडे शीतल हॉल, दीवालो पर मढे हुए कीमखाब।

फ़रहत-खान एक निर्दयी फौजी सरदार का पुत्र था, फिर भी उसे

युद्ध-कला से कोई लगाव न था। उसे रुचि थी विज्ञान में, ज्योतिष में, कीमिया की रहस्यमयी विद्या में। खान का सबसे निकट का दोस्त था एक अरबी सेफी। तपेदिक के मरीज जैसा दुबला-पतला आदमी, जिसके शरीर तक से तेजाबो की गन्ध आया करती। वह मिट्टी से सोना तैयार करने के प्रयोगो में लगा रहता था।

अफनासी ने सेफी का कारखाना भी देखा। यहा बडी बडी देगो में कोई द्रव उबल रहा था और बोतलो में से, नलियो द्वारा कुछ बदबूदार बूदें नीचे टपक रही थी। वही ढेरो शीशिया थी जिनमें भिन्न भिन्न रगो के चूर्ण रखे थे।

फरहत-खान के ओठो पर एक गर्वपूर्ण मुस्कान बिखर गयी। उसने बताया कि इन प्रयोगो पर वह कोई तीस लाख दीनार खर्च कर चुका है। अब शीघ्र ही वे सोना प्राप्त कर सकेगे। दुनिया ने जो जो सिद्धिया देखी है उन सबसे अधिक जरूरी, सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण उसका यह प्रयोग होगा।

"मेरी फौजें मुझे कभी धोखा न देंगी!" जिस जगह सेफी काम कर रहा था उधर, दुर्गन्धि से भरे हुए तहखाने की ओर इशारा करते हुए फरहत-खान ने कहा।

निकीतिन ने जान लिया था कि ऐसी कमजोरी भी बडी दुर्लभ होती है। पर फरहत-खान की इसी विशेपता के कारण तो वह उसकी ओर आकृष्ट हुआ था।

दूसरे रईसो में इस प्रकार की कोई कमज़ोरिया न थी। इस

विचित्र तरफदार के बारे में निकीतिन का जो मत था उसकी पुष्टि शायद अबू अली ने भी की थी। उसने तरफदार की दी हुई भेंट की बडी प्रशसा की थी।

इस प्रकार [जून बीत गया। पेत्रोव दिवस, यानी उलुक-बैराम, को महमूद गवान की फौजें बीदर लौट आयी। अफनासी के भाग्य पर इस घटना का बडा प्रभाव पडा, अगरचे वह उसकी कोई आशा न करता था। उससे जवाहरात सस्ते दाम पर मागते थे। साथ ही सुना जाता था कि फौज हीरे-मोतियो के ढेर के ढेर ला रही है। इस अफ़वाह से बीदर के बाज़ार में जवाहरात के भाव गिर गये थे। निकीतिन ने थोडे-से सुलेमानी और कार्नेलियाई पत्थर खरीदने का निश्चय किया। रूस जाते समय वह उन्ही से राह-खर्च चलाना चाहता था। उसे ये पत्थर बडे सस्ते मिल गये थे, फिर भी उसे कोई प्रसन्नता न हुई।

"मालिक-अत-तुजार भी कैसे बेमौके लौटा है!" वह सोचने लगा, "करू क्या, बदक़िस्मती जो साथ दे रही है!"

फ़ौज के आने से उसे कोई खुशी न हुई।

सेना ने नगर में बडी शान से प्रवेश किया। कोकन के विजेताओ और गोआ पर अधिकार कर लेनेवालो का जनता दिल खोलकर स्वागत कर रही थी।

बीदर में दो दिनो तक ज़ोरदार जशन मनाया गया। फौज वापस आयी थी उलुक-बैराम के बडे मुसलमानी त्योहार पर। यह निस्सदेह एक विशेष शकुन था। सारे नगर में यह बात मशहूर हो गयी थी कि वज़ीरे आज़म ख़ुदा का पैगम्बर है और उसका जन्म ऐसी ग्रह-दशा में हुआ है कि वह सारी दुनिया में इस्लाम का नाम रोशन करेगा। हर मुह से एक समाचार यह भी सुन पडता था कि स्वय सुलतान और उसकी मा वज़ीर से मिलने गयी थी और वज़ीर ने उन्हें बडे बडे

तोहफे दिये थे। यह बात भी सुनने में आयी थी कि वज़ीर ने सुलतान को जवाहरात से भरे सोने के तीस थाल और उनके सगे-सबंधियो को ऐसे दस दस थाल दिये थे। एक एक थाल इतना बड़ा था कि उसपर भुना हुआ पूरा का पूरा बकरा रखा जा सकता था। कहते है कि सुलतान की मा ने महमूद गवान को अपना भाई कहकर पुकारा, उसे 'मीरे जहा' का खिताब और ज़मीन दे दी।

खज़ानची मुहम्मद बहुत समय तक वज़ीरे आज़म की नि स्वार्थता और उसके श्रमसाध्य एव निष्ठापूर्ण जीवन की ही बाते करता रहता था।

वह कहा करता था कि जीवन-भर महमूद गवान ने अपने सामने एक ही लक्ष्य रखा था—पृथ्वी पर अल्लाह की ताकत को मज़बूत बनाना और मुसलमानी राज्य से मिलकर न रहनेवाले काफिरो को शिक्षित बनाना। इसी लक्ष्य ने महमूद गवान को बहुत ऊपर उठा दिया था।

"तुम्ही देखो, वह कितना सीधा-सादा है! ठाठबाट की दुनिया में तो जैसे रहता ही नही।" खज़ानची ने कहा, "तभी तो लोग उसे तख्त का सहारा कहते हैं?"

"और उसके पास बहुत-से फौजी हैं क्या?"

"बीस हज़ार!"

"और पुराने तरफदारो के पास?"

"किसी के पास भी दस हज़ार से ज़्यादा नही।"

निकीतिन हस दिया—

"तो फिर उसे अपने घोडे पर झाल-झालर लटकाने की क्या ज़रूरत!"

खज़ानची ने अपनी आखें मिचकायी।

"ऐसा मज़ाक करने की सलाह मैं तुम्हें न दूगा।"

"मैं दूसरो की सलाह के विना भी जिन्दा रहने का आदी हो गया हू," निकीतिन ने उत्तर दिया। वह मुहम्मद के इस गर्वपूर्ण ढग से वातचीत करने पर चिढ गया था।

दो दिनो तक तो वीदर में जशन मनता रहा। तीसरे दिन नशा उतरने लगा।

हसन को पानी लाने के लिए सुवह से ही भेज दिया गया था। जव वह लौटा तो साथ में एक खवर भी लेता आया—

"खोजा, मालिक-अत-तुजार ने अपने फौजियो को आज्ञा दी है कि वे अपने जवाहरात न वेचें।"

"यह कैसे?"

"मनाही हो गयी है। सारा शहर कह रहा है!"

अफनासी को अपने कानो पर विश्वास करने में भी भय लग रहा था। पर हसन को इसके वारे में ठीक ठीक पता न था। निकीतिन वाजार जाने की सोचने लगा। अभी उसने अपना भोजन समाप्त भी न किया था कि दरवाज़े पर दस्तक हुई। कोई व्यापारी उसे पूछ रहा था।

"क्या काम है?" जल्दी जल्दी चावल के कुछ कौर निगलते हुए निकीतिन वोला।

नाटे कद और छोटी गर्दनवाला एक व्यापारी सामने आकर खडा हो गया। उसने वडी विनम्रता से सिर झुकाया और कहने लगा कि उसे वताया गया है कि निकीतिन के पास जवाहरात हैं। वह कुछ जवाहरात वेचना तो नही चाहता?

"नही," अफनासी वोला।

"अच्छी क़ीमत दूगा। वहुत अच्छी।"

"नही।"

इस अजनबी को बाहर तक छोड आने के बाद अफनासी ठहाका मारकर हसने लगा।

"सूघ लिया है न! तो, अब चारो ओर से दौड पड़ेंगे!"

सभी ओर के सौदागर बाज़ार में टूट पडे थे। उनके चेहरे मुरझाये हुए थे और उनपर घबराहट के चिह्न नज़र आ रहे थे। निकीतिन को, अभी कुछ ही दिन पहले खरीदे हुए सुलेमानी और कार्नेलियाई पत्थरो के तिगुने दाम मिल रहे थे। अब इस बात का निश्चित पता चल गया था कि यदि फौजी अपने जवाहरात व्यापारियो के हाथ बेचेंगे तो उन्हे फासी दे दी जायेगी। मालिक-अत-तुजार ने घोषणा की थी कि सारे जवाहरात वह स्वय खरीदेगा।

"हु-ह, कितना नि स्वार्थी है यह वज़ीर!" निकीतिन ने सोचा, "मुनाफा मारने की सोच रहा है।"

यह एक अप्रत्याशित सफलता थी – एक अनपेक्षित लाभ। निकीतिन ने उस दिन तक प्रतीक्षा करने का निश्चय किया जब बाज़ार में जवाहरात ढूढे न मिलेगे। तभी वह अपने फालतू जवाहरात बेचेगा।

जब वह घर लौटा तो बहुत खुश था। ओसारे में ही उसे एक लाल खाल की ढाल दिखाई दे गयी। हसन मुस्करा रहा था। कमरे में, कमर पर हाथ रखे, मुज़फ्फर मुस्करा रहा था।

पुलाव की प्रतीक्षा करते करते वे मिठाइया खा रहे थे और बातचीत कर रहे थे। मुज़फ्फर ने खेलना पर धुआधार हमला किया था। जब वह सीढी लगाकर क़िले पर चढ रहा था तो दुश्मनो ने सीढी गिरा दी थी जिससे उसे ऐसी चोट लगी कि बेहोश हो गया। जान इसलिए बच गयी कि किसी लाश पर गिरा था। क़िले की खाई में ही उसे सुबह होश आया। आक्रमण विफल कर दिया गया था। वह स्वपक्षियो और विपक्षियो के शरीरो के बीच पडा था। उसी की आखो

के सामने एक ज़ख्मी मुसलमान ने खिसकते हुए खाई से निकल जाने का प्रयत्न किया था, किन्तु दीवाल की ओर से आते हुए एक तीर ने उसे वहीं ढेर कर दिया था। मुज़फ्फर ने मुर्दा बने रहने में ही अपनी ख़ैर समझी। अगरचे प्यास के मारे उनका हाल बुरा हो रहा था फिर भी वह कई घंटों तक धूप में पडा रहा। उसका सिर किसी के ठंडे पैरों से सटा हुआ था। कितना समय बीत गया था इसका उसे कोई पता न चला। सहसा उसे अपनी अर्द्धचेतना में जगली चीखें सुनाई दी। भयभीत मुज़फ्फर की आखों के सामने एक भयानक दृश्य था। किले में से तेंदुए छोड दिये गये थे। लग रहा था कि इन पशुओं को अरसे से भूखा रखा गया था। वे खाई में इधर-उधर चक्कर लगाने और ज़ख्मी और जीवित सिपाहियों को अपना कौर बनाने लगे। भागने से कोई लाभ न था। मुज़फ्फर ने किसी की तलवार खींची—अपनी तो बहुत पहले ही खो चुका था—और इन्तजार करने लगा। एक तेंदुआ उसपर झपटा परन्तु उसका तलवार से स्वागत किया गया। लेकिन एक वार काफी न था। पशु के पंजों से ज़ख्मी हो जाने पर भी मुज़फ्फर काफी समय तक उसके साथ जूझता रहा और अन्तत दोनों ज़मीन पर गिरे और गुड्ड-मुड्ड खाई में लुढकने लगे। बस उसे आखिरी चीज़ जो दिखाई दी वह थी खूनी फेन से सना तेंदुए का खुला हुआ मुह और जलती हुई आखें दूसरी बार जब उसे होश आया तो रात हो चुकी थी। तेंदुआ उसी के ऊपर मरा हुआ पडा था। किसी प्रकार वह सारी शक्ति बटोरकर, खिसकता हुआ, खाई से बाहर निकला और मुसलमानी खेमों तक पहुच गया।

"मुझे पक्का यकीन है कि काफ़िर हमसे नफरत करते हैं।" मुज़फ्फर सख्ती से बोला, "मैंने देखा था कि किस प्रकार उन्होंने मुसलमानी गावों को तबाह और बरबाद किया और औरतों और बच्चों

को मौत के घाट उतारा। तभी से मेरा दिल पत्थर का हो गया था। मैं घाव अच्छा होने तक का भी इन्तजार न कर सका। मेरे मन में बदले की आग भडक उठी। मैं गोआ गया। वहा मुझे घाव लगा। मेरा हाथ कट गया था। लेकिन अब तो ठीक है। देखो न कितने मजे से हिला-डुला सकता हू। हा, मैंने अपनी जान तक की बाजी लगायी। पर आज मुझे अकेले काफिरों पर ही गुस्सा नही आ रहा है। तुमने कुछ सुना?"

"जवाहरात के बारे में?"

"हा! यह तो लूट है, लूट। मेरी चीज, जिसके हाथ चाहू बेचू। खून बहाकर तो ये पत्थर हाथ लगे है। और अब मुझे वजीरे आजम के आगे नाक रगडने को मजबूर कर रहे हैं। यह तो बेइन्साफी की हद है। मैं महमूद गवान को जवाहरात न दूगा।"

"इस मामले में मैं तुम्हे कोई राय नही दे सकता।"

"नही बेचूगा और उसके मुह पर कह दूगा कि तुम डाकू हो।"

"इतने गर्म मत हो, मुजफ्फर," निकीतिन ने समझाया।

परन्तु मुजफ्फर को शान्त करना असम्भव था। आखिर वह महमूद गवान को गालिया देता हुआ वहा से चला गया।

उसी दिन निकीतिन कर्ण से मिला। उसके घर में सभी परेशान थे, घबडाये हुए थे। रगू ने फुसफुसाते हुए कहा कि सस्ते जवाहरात पाने की आशा में उन्होंने घर का सारा हीरा-मोती बेच डाला था। सारे परिवार पर सकट छा रहा था। अब क्या करना चाहिए यह किसी को भी न सूझ रहा था।

"मैंने तुम्हारी मदद जरूर की होती," सोचता हुआ निकीतिन बोला, "लेकिन शीघ्र ही मैं जानेवाला हू।"

"हम तुम्हारा कर्ज जल्द लौटा देंगे!" रगू ने वचन दिया।

"कैसे ?"

"मुझे जवाहरात खरीदने जाना होगा।"

"कहीं दूर ?"

"गोलकोंडा।"

"सुलतान की खानों में ? लेकिन इसकी तो मनाही है ?।"

"हां, पर किया क्या जाये ? खतरा उठानेवाला कोई मैं पहला आदमी तो हूंगा नहीं।"

निकीतिन ने अपनी दाढ़ी सहलायी।

"कोई और रास्ता नहीं ?"

"कोई बात नहीं। मैं किसी तरह पहुंच ही जाऊंगा। मैं रास्ता जानता हूं और कुछ पहरेदारों से भी मेरी जानपहचान है। शायद तुम भी मेरे साथ चलो ?"

"जल्दी मत करो। मुझे सोचने का मौक़ा दो   सोचने दो   "

मुजफ्फर की बात याद आते ही अफनासी ने सहसा कर्ण से पूछा–लोग ठीक कहते हैं क्या, कि राजाओं के सिपाही मुसलमानों के गांवों को तबाह और बरबाद करते हैं और घायलों पर हिंसक पशु छोड़ देते हैं ?

"लड़ाई में क्या नहीं होता! सभी तरह की निर्दयता बरती जाती है!" आह भरते हुए रत्न-तराश ने उत्तर दिया। "देखो न, हम मुसलमानों के साथ मजे में रह सकते हैं और अगर वे हमारे धर्म के मामले में दखल न दें, हमसे जजिया न लें तो हमारी उनकी दुश्मनी का कोई कारण नहीं। लेकिन बीदर के शासक इसे नहीं समझते। वे जुल्म करते हैं और जवाब में उनपर भी जुल्म किया जाता है। मैंने इन सवालों पर काफी विचार किया है। मुसीबत की जड़ तो यह है कि हमारे धर्म अलग अलग हैं। विद्वान ब्राह्मण सब के लिए

एक मजहब का रास्ता ढूंढ रहे हैं। जब कभी यह रास्ता मिल जायेगा तो फिर हमारे देश जैसा सुखी दुनिया का कोई देश न होगा।"

"भगवान करे ऐसा ही हो!" अफनासी बोला, "लेकिन माफ करना, मैं अविश्वासी हू।"

इस अप्रिय प्रसग को बदलने की दृष्टि से हाथ ऊपर उठाते हुए अफ़नासी बोला—

"खैर, फिर देखा जायेगा   और हा मुझे एक बात और याद आ गयी। मेरा एक दोस्त है—महमूद गवान का मित्र। पता नही कैसे भावलो को जानता है। उसने मुझसे कहा है कि जब वह आये तो मैं उसे खबर कर दू। यदि मैं चला जाऊ तो तुम उसे खबर करा देना।"

"कौन है यह आदमी?" कर्ण ने पूछा।

"खजानची मुहम्मद। एक व्यापारी है। तुम उसे जानते हो?"

कर्ण घबडा गया और असहाय की तरह निकीतिन को घूरने लगा। उसका दाढी सहलाता हुआ हाथ काप उठा। उसे जैसे सिर हिलाने की भी शक्ति न रह गयी।

वही झाकी भी किसी काम से आ गयी थी। उसने अफनासी को देखा और कुछ पूछने लगी। अफनासी ने उत्तर दिया और दोनो खिलखिलाकर हस पडे। कर्ण की बात जैसे उसे भूल ही गयी। कर्ण ने गहरी सास ली। और जब बच्चे के रोने की आवाज सुनकर झाकी चली गयी तो फिर पूछने लगा—

"बताओ न, यह कौन खजानची? तुम उससे कहा मिले थे? उससे मिले बहुत दिन हुए क्या?"

अफनासी ने मुहम्मद से मिलने की सारी बात बता दी।

"तो तुम उसे जानते हो क्या?" अपनी बात समाप्त करते हुए अफ़नासी फिर बोला।

"नहीं, नहीं वह कोई दूसरा आदमी था," हिन्दू बोला, "हां कोई दूसरा आदमी।"

इतने ही में उजाल आ गया। बेचारे को फिर बुखार का दौरा आ गया था। कहने आया था कि यदि वह बीमार पड जाये तो झाकी उसकी पत्नी की मदद कर दिया करे।

निकीतिन उजाल को उसके घर तक छोडने गया। उजाल के पीले पटे हुए माथे पर पसीने की बूंदें झलक आयी थी। उसने अपने कंधे झुला दिये और घर की दहलीज पर बैठकर अपनी रोगी आंखें बन्द कर लीं।

"कुछ ही दिनों में मेरे पास नये नये रंग हो जायेंगे। लोगे?" वह बुदबुदाया।

"लेटो और काढा पियो," अफ़नासी ने उसे राय दी, "रंगों की बात हम फिर कर लेंगे।"

उजाल चुप हो गया। उसे कपकपी चढ आयी। निकीतिन ने दरवाज़े को धक्का दिया और उजाल को, हाथो का सहारा देते और घसीटते हुए, भीतर ले आया। रेशमा भी नम्रतापूर्वक आयी और अपने पति को गद्दे पर लिटाने में निकीतिन की मदद करने लगी। उसने धीरे से पानी उंडेला और दवा तैयार करने लगी।

"मैं कल आऊंगा," निकीतिन ने वादा किया।

रेशमा ने उसपर एक उदास और थकी हुई सी दृष्टि डाली।

दूसरे और तीसरे दिन निकीतिन उजाल के घर न पहुंच सका। उसका प्राय सारा समय अपने कामकाज में लग गया था। उसने कुछ जवाहरात बेच डाले थे और उनसे उसे अच्छी रक़म मिल गयी थी।

पर दलालो से सौदा पटाते पटाते उसकी जबान भी तो घिस गयी थी।

खास तौर से उसके पीछे पड गया था शवाइत से आया हुआ एक भारतवासी, जो अपने साथ मुश्क लाया था। इस व्यापारी से एक यही लाभ हुआ था कि उसने उसे बताया था कि उसके इलाके में हिरनो की बहुतायत है।

इस प्रकार तीन दिन बीत गये। चौथे दिन अफनासी को पता चला कि उजाल चल बसा। निकीतिन अन्तिम विदाई के लिए उसके घर गया। घर में शान्ति थी। रेशमा, मुह और बालो पर राख मले, चुपचाप लाश के चरणो पर बैठी थी। लाश सफेद कफन से ढकी थी। कुछ सगे-सबधी घर-भर में दौड धूप कर रह रहे थे और अन्त्येष्टि के लिए टिखटी और लकडियो के बारे में पूछ-ताछ कर रहे थे।

निकीतिन ने निर्मल को देखा और मस्कार के लिए कुछ रकम भेंट की। पैसा देने पर वह वापस चला आया। परिवार के इस सकट को देखना उसके लिए असह्य हो रहा था।

उसी दिन रगू ने फिर गोलकोडा जाने की बात छेड दी।

"अभी नही कह सकता, जरा ठहरो," निकीतिन बोला, "मैंने अभी तक कोई निश्चय नही किया।"

उसे अब भी सन्देह था कि वह बीदर से जा भी सकेगा। शायद उसे महमूद गवान से मिलने के लिए प्रतीक्षा ही करनी है। आखिर खजानची ने तो कहा ही था कि वजीर उससे मिलना चाहता है। फिर बारिश भी हो रही है, बारिश

दूसरे दिन प्रात काल बाज़ार में उसे अजीब चिल्ल-पों सुनायी पडी। लोग किले की ओर भागे चले जा रहे थे। निकीतिन भी लोगों की उसी उत्सुक भीड में मिल गया।

किले के सामने के मैदान में सब कुछ पहले जैसा ही था। फाटकों पर वैसे ही ब्राह्मण मुंशी बैठे थे, वैसे ही चौकीदार पहरा दे रहे थे, कगूरेदार दीवालों के पीछे से इमारतों की रूपरेखाए वैसे ही झाक रही थी और खाई के किनारे किनारे ताड के पेड वैसे ही मरसरा रहे थे।

किले के पुल के सामने आठ स्तम्भों पर खून से सने आठ सिर टगे थे। किसी एक पर पगडी थी, बाकी खाली सिर थे।

ये सिर थे उन व्यापारियों और सिपाहियों के जिन्हे सलतनत की हुक्म-उदूली करने के कारण वज़ीरे आज़म की आज्ञा से फासी दी गयी थी। इन लोगो ने उन हीरे-मोतियो के साथ मनमानी करने का दुस्साहस किया था जिन्हे महमूद गवान स्वय खरीदना चाहता था।

अफनासी और आगे बढा। बायीं ओर से दूसरा सिर उनके बिल्कुल सामने था। उसके चेहरे पर बाज जसी तेज़ और गोल गोल आखें अभी तक वैसी ही जडी हुई थी। उसकी मूछो पर खून जमकर सूख गया था। एक मिनट तक तो अफनासी उसे पहचान ही न सका। फिर सहसा मुज़फ्फर का चेहरा उसके सामने कौंध गया। चेहरा मौत से पहले ही ऐंठ गया था।

उसी दिन उसने रगू को अपना निश्चय कह सुनाया—"मैं तुम्हारे साथ गोलकोंडा चलूगा।"

सामान जुटाने में उसे अधिक समय न लगा। उसने बैल और एक गाडी खरीदी और चार दिन बाद रगू के साथ बीदर से निकल

गया। हुसन फिर खाली घर की देखभाल करता रहा। जाने के पहले उसने खजानची से भी विदा ले आने की सोची थी किन्तु पता नही क्यो आखिरी वक्त में उसने यह विचार छोड दिया। ऐसा लगा जैसे उसे अपने दिल के किसी कोने से यह आवाज सुनाई पडी हो—"अच्छा हो इसी तरह विना किसी से कुछ कहे-सुने वीदर से निकल जाओ।"

वज़ीरे आज़म, सौदागरों का सरदार, महमूद गवान महल के पुस्तकालय में एक मकरी-सी खिडकी के सामने खडा हुआ, वाहर वाग की ओर टकटकी लगाये देख रहा था—ताड के पेडो और फूलो के पौधो के वीच मोर नाच रहे थे। उनकी खूवसूरत पखिया खुली हुई थी। वज़ीर के कानो में खजानची मुहम्मद की आवाज पड रही थी।

पुस्तकालय का कमरा चौकोर था जिसकी दीवालो पर लकडी की खूवसूरत कारीगरी की गयी थी। दीवालो से लगी हुई ढेरो अलमारिया थी जिनमें काली, नीली, लाल और पीली चमडे की जिल्दवाली पुस्तके रखी थी। कुछ अलमारियो में अरवी, चीनी और हिब्रू भाषाओ की दुर्लभ हस्तलिपिया थी।

सूर्य की रोशनी मेहरावदार और सकरी खिडकियो में से होती हुई पुस्तकालय के कमरे में फर्श पर विछे कालीनो और कोने में पडी एक छोटी-सी लकलकाती हुई मेज़ को प्रकाशित कर रही थी। और आकाश-गोल के चारो ओर लगे हुए धातु के घेरे में से चिनगारिया-सी निकलती दिखाई दे रही थी।

वाहर से महमूद गवान शान्त लग रहा था किन्तु नये षड्यत्र के समाचार ने उसके हृदय को झकझोर डाला था। उसके मन में अस्पष्ट-सी चिन्ताए उठने लगी थी।

महमूद गवान ने दुनिया में वहुत कुछ देखा था। उसे न जाने कितनी सफलताए मिली थी। लोग उसके आगे सिजदे करते, उसकी

चापलूसी करते, उससे ईर्ष्या करते और उसे खुश करने के लिए सभी कुछ किया करते। बीस दरबारी कवि उसकी विद्वत्ता, महानता, दयालुता और निर्भयता का गान किया करते। इतिहासकार फरिश्ता तवारीख के लिए उसके प्रत्येक कार्य का खुलकर वर्णन किया करता। फ़रिश्ता पुस्तकीय ज्ञान के क्षेत्र में सचमुच बेजोड़ था किन्तु ज़िन्दगी का उसे कोई अनुभव न था। जब महमूद गवान फौज के सामने आता तो हजारों कंठ उसकी जयजयकार करने लगते। सारा संसार उसपर ईर्ष्या करता, किन्तु वह दिल से कभी खुश न रहता।

बस वह उन्हीं क्षणों में विस्मृति की दुनिया में रहा करता जब वह प्रकृति और नारी सौन्दर्य के विषय में गज़लें लिखता, अरस्तू की दार्शनिकता पर टिप्पणियाँ तैयार करता या युद्ध में अपने सैनिकों का नेतृत्व करता। परन्तु वह अच्छी तरह जानता था कि यह सब आत्मवंचना है। दुनिया के हुक्मरां और दुनियावालों के कारनामों की खबरें करनेवाले उस पाक परवरदिगार अल्लाह की ताकत के आगे उसकी हस्ती ही क्या थी!

जब महमूद गवान छोटा और नासमझ था तभी उसे लगा कि ज़िन्दगी में सबसे बड़ी चीज़ है, शक्ति और अधिकार। वह गिलियन के एक अपमानित दरबारी का पुत्र था। वह था बुद्धिमान और शक्तिशाली। वह प्रायः इस आशा में रहता कि कभी अपनी ग़रीबी से उसका पिंड छूटेगा और उसे खिलअती भेड़ों की मनमानी से निजात मिलेगी। इन भेड़ों को दूसरों के जीवन से खेलने का अधिकार मिल गया था, इसलिए कि उनके पास पैसा था, उनके रसूख थे।

महमूद गवान सर्वशक्तिमान सूबेदारों और उनके दरबारियों से नफरत करता था। अगर उसे उन सभी की गर्दनें मरोड़ डालने की ताकत होती, जिनके आगे उसे झुकना पड़ता था, तो उसको खुशी की इन्तिहा न रहती।

उसके दिल में अपने अपमान की इतनी जबरदस्त आग धधका करती थी कि उसका मानव-प्रेम ध्वस्त हो गया। वह ज़ालिमो से घृणा करता था इसलिए कि वे ज़ुल्म करते थे, और मज़लूमो से नफरत करता था इसलिए कि वे ज़ुल्म बरदाश्त करते थे।

उसने अपने सामने एक लक्ष्य रखा था—पूर्ण स्वाधीनता का लक्ष्य। उस तक पहुचा जा सकता था—महलो का चक्कर काटकर, चापलूसी करके, नीचता दिखाकर, गद्दारी करके, लोगो की हत्या करके। महमूद गवान, इसी रास्ते पर चला था। और अब, जब उसने अपने विगत जीवन पर एक दृष्टि डाली तो उसकी निगाहो के सामने विषधरो के विष, चुगलिया और खून की नदिया सभी कुछ एक साथ घूम गये बेशक, पासा पलट भी सकता था और उसे मौत के घाट उतारा जा सकता था, उसकी बोटी बोटी उड़ाई जा सकती थी, परन्तु उसने जो कुछ किया था सुलतान के नाम पर किया था, काफिरों से जेहाद करने के नाम पर किया था, और महलो में रहनेवाले उसके शत्रु—पुराने रईस—अपनी अपनी सोच रहे थे, अपनी छिनी हुई आज़ादी वापस पाने के चक्कर में थे। उसने, तरफो का उत्तराधिकार समाप्त कर, अपने इन शत्रुओ को कही का न रखा था और जो कल तक रईस थे आज मामूली सेवक रह गये थे। उसने तरफो की सख्या में बहुत वृद्धि कर दी थी और नई नई तरफो के प्रधानो के पदो पर अपने आदमी भर दिये थे। नतीजा यह हुआ था कि पुराने रईस अब दो टके के रह गये थे।

इन सभी कारणो से सुलतान की शक्ति बहुत अधिक बढ गयी। पर उसके शत्रुओ ने उसे कभी नही बख्शा।

महमूद गवान के मन में कोई आवाज़ यह कहती-सी लग रही थी—"तूने सुलतान के लिए नही अपने लिए किया है, तूने अपने

रास्ते में उन लोगों को माफ किया है जो तेरी निजी योजनाओं की पूर्ति में बाधक बनते थे।"

जो भी हो उसे अपनी इस शपथ पर गर्व था कि वह कभी मिहामन की ओर आंख उठाकर भी न देखेगा।

परन्तु यह शपथ बेकार-सी थी। वह अच्छी तरह जानता था कि बाहरी शत्रुओं के रहते अंदरूनी झगड़े बड़े खतरनाक साबित होंगे। फिर, सुलतान के तख्त की ओर हाथ बढ़ाने में मौत का खतरा भी तो था।

समय के साथ ही साथ महमूद गवान अपने को इस्लाम का संरक्षक, तख्तोताज का मुहाफिज और काफिरों की मक्तूल मौत समझने लगा था। वह अपनी सभी इच्छाओं को पूरा कर सकता था। उसका शब्द ही कानून था। पर जिन्दगी ने उसे उन नियामतों से महरूम कर रखा था जिनके सपने हर इन्सान देखता है—सच्ची दोस्ती, सच्ची मुहब्बत और दिली सुकून। उसके चारों ओर दुश्मन मंडरा रहे थे। सभी मालिक-अत-तुजार की घात में थे। हर समय उसकी स्थिति जंगल के तेंदुए तथा शिकारियों से घिरे हुए चीते या जंगली हाथी जैसी हो रही थी।

" यह रूसी सौदागर साज़िश करनेवालों को जरूर जानता होगा, मेरे मुहाफिज!" ख़ज़ानची ने मुहम्मद गवान से कहा, "वह बड़ा निडर आदमी है जिसने मेरी जान बचायी थी।"

मालिक-अत-तुजार की आंखें मोती और गुलाब के फूलों से हटकर मुहम्मद के चेहरे पर जम गयीं। उसने अपनी झुर्रियोंदार पलकें ऊपर उठायीं।

"कौन रूसी सौदागर?"

"रूसी, मेरे आका, रूसी, जिनसे आप बात करना चाहते थे।"

"हां, याद आयी। यह हिन्दुओं को कैसे जानता है?"

"वह जवाहरात की खोज में आया है, साहबे जलाल। उसने हिन्दुस्तान की कहानियां सुनी थी। उसके मुल्क में मशहूर है कि हिन्दुस्तान की सरे ज़मीन पर सोना रेत की तरह लोटता है। वह हिन्दुओ के साथ श्री-पर्वती भी गया था।"

"अब वह कहा है?"

"बीदर में।"

"अच्छी बात है। मैं खुद उससे मिलूगा जाओ। मै तुमसे बहुत खुश हू, मुहम्मद। तुम्हे इनाम शाम को मिल जायेगा। जाओ।"

खजानची झुकता हुआ द्वार की ओर बढ गया।

वज़ीरे आज़म ने ताली बजायी, और एक मुक्त दास हाज़िर हो गया। यह एक सीरियाई था—कुत्ते की तरह ईमानदार और मछली की तरह चुप्पा।

"मुझे उन लोगो के नामों की सूची चाहिए जो दक्षिण से—रायचूर से, कोलर से या आलन्द से—बीदर आये हैं या आयेंगे," महमूद गवान ने हुक्म दिया, "मलिको और खानों के महलो पर अपने आदमी लगा दो। मैं जानना चाहता हू कि इनमें से किसके यहा हिन्दू आते-जाते हैं।"

दास चला गया। पुस्तकालय में शान्ति छा गयी। महमूद गवान के कानो में मोर की नृत्य-धुन पड रही थी।

महमूद गवान एक छोटी-सी मेज़ के निकट• बैठ गया। उसके लिए सास लेना भी कठिन हो रहा था। महाराजा के एलची के आने से भी वह खीझ उठा था। तो, उमर-खान के हाथों मुझे मौत के घाट उतार देने की ठान ली गयी है! फिर यह रूसी सौदागर आखिर ये गैर-मजहबी लोग हिन्दुस्तान आते क्यो हैं, उन्हे क्या जरूरत कि हमारी दौलत का पता चलायें, हमारे रहन-सहन के बारे में जानें-समझें। असद-खान ने उस ईसाई से हम-मज़हब बनने की माग पेश करके ठीक ही किया था।

मुहम्मद का कहना है कि सौदागर को किसी बात का कोई शुबहा नहीं। तो फिर वह यहीं रहे और इस्लाम क़बूल करे। उसे हिन्दुस्तान से बाहर जाने की इजाज़त नहीं होनी चाहिए। उसकी आंखें बहुत कुछ देख चुकी हैं, उसकी याददाश्त बहुत कुछ क़ायम रख सकेगी।

वज़ीरे आज़म जानता था—ईसाइयों के मुल्कों में लोग सरसाम की हालत में भी हिन्दुस्तान का ही नाम लेते हैं। वेनिस, गेनोआ और स्पेन जानेवाले सौदागर ख़लीफ़त में यही ख़बरें सुनाया करते कि ईसाई सम्राट हमले की तैयारियां कर रहे हैं। परन्तु हिन्दुस्तान का रास्ता वे नहीं जानते। यह देश उनके लिए एक अज्ञात देश है। और अच्छा है लोग तब तक इसके बारे में कुछ न जानें जब तक उसपर एक ही सुलतान का एकछत्र राज्य नहीं हो जाता। अगर रूसी चला गया तो वह ईसाइयों को तरह तरह की ख़बरें देगा—यहां काफ़िरों से लड़ाई चल रही है, बड़ी हाय-तोबा मची है। और अगर होशियार हमलावर हिन्दुस्तान आने का फ़ैसला करेंगे तो इन ख़बरों से फ़ायदा उठायेंगे। मुसलमान विजेताओं ने भी तो अपने ज़माने में वही किया था। हां, हां। रूसी यहीं रहेगा। फ़रों के लिए कोई क़ाफ़िले नहीं भेजे जायेंगे।

और उमर-ख़ान! उसे किसी न किसी दिन पता चलेगा ही कि भाला किस तरह शरीर में घुसता है और कैसे तड़प तड़पकर उसकी जान निकलती है! अल्लाह का सब्ज़ परचम विजयनगर के महलों पर लहरायेगा। और जब महमूद गवान की घुड़सेना हिन्दुस्तान को लंका से अलग करनेवाले जलडमरूमध्य तक पहुंचेगी तो उसके बहादुर सिपाही उत्तर की ओर बढ़ेंगे, पूर्व की ओर बढ़ेंगे, दिल्ली में तहलका मचायेंगे, गंगा की घाटी फ़तह करेंगे और तब बीदर के सुलतानों का हिन्दुस्तान सारी दुनिया को ललकारेगा—चीन से लेकर स्पेन तक और तभी अनेकों जातियां उसके पीछे पीछे ग़ुलामों की तरह चलेंगी!

महमूद गवान धीरे से मुस्कराया किन्तु उसके पतले और टेढे-मेढे ओठ वैसे ही जड बने रहे। वह पुस्तकालय से होता हुआ, छोटी मेज़ तक चला आया। मेज पर एक चिकना काग़ज़ पडा था जिसपर वुलवुल के विषय में कोई अपूर्ण कविता लिखी थी। महमूद गवान ने एक गज़ल फिर से पढी—

मेरे बाग़ मे वहार आयी है, शवनम गुलावो पै छायी है
नज़ाकत होठ इनकी देखें, रुलाई नैन इनसे सीखें।
पर ये चूमें तो किसको चूमें और ये रोयें तो किस पै रोयें
इनके लिए तो वस वुलवुल गीत लेकर आयी है।

महमूद गवान आराम-कुर्सी पर बैठ गया। उसने लेखनी उठा ली। वह गुलाव से ईर्प्या कर रहा था। वुलवुल ने उसका हृदय द्रवित कर दिया था।

उसके मन में तरह तरह के उद्‌गार उठने लगे और धीरे धीरे उसकी लेखनी आगे वढने लगी। विस्मृति के क्षण उसके सामने थे।

वग़ीचे में मोर शोर मचा रहे थे, परन्तु उसे कुछ भी सुनाई न पड रहा था।

वज़ीरे आज़म के पास से लौटकर खज़ानची मुहम्मद को वडी राहत मिली। उसकी पाक ज़िन्दगी का सिला उसे खुद अल्लाह ने दिया था और अपने ज़ाती दुश्मनो से वदला लेने के लिए उसे अपने हाथ भी न रगने पडे थे। नही, खज़ानची ने अपना रहस्य जाननेवाले कर्ण से वदला नहीं लिया था। उसने तो सज़ा दी थी सुलतान के शत्रु को, इस्लाम के दुश्मन को। मुहम्मद को इसमें ज़रा भी सन्देह न था कि कर्ण भावलो की सहायता करता था और उसे सारी साज़िशो का पता था।

उसने अफ़नामी के बारे में ज़बान तक न खोली। क्या यही उसकी सखावत का सबूत न था? बेशक राजेन्द्र की बात जानकर रूमी ने अनजाने उसे रुष्ट किया है, पर क्या हिन्दुओं की नयी साज़िश खज़ानची की इस धारणा को उचित नहीं ठहराती कि प्रत्येक हिन्दू ऐसा दुश्मन है, जिसे मौत के घाट उतार देना चाहिए? भले ही उन्हें किसी भी तरह क्यों न मार डाला जाये?

मुहम्मद की बाछें खिल गयीं। जब से अफ़नामी श्री-पर्वती से लौटा है तब से खज़ानची को यह पक्का विश्वास हो गया है कि अफ़नामी भावलो के यहां आने का कारण नहीं जानता। निकीतिन ने उससे वादा किया था कि जब भावलो लौटेगा तो वह उसकी खबर खज़ानची को कर देगा। इसी लिए ख़ज़ानची को अफ़नामी पर कोई सन्देह न रह गया था।

जिस दिन मुहम्मद वज़ीरे आज़म के यहां से वापस लौटा था, उसी दिन उसने रूमी सौदागर को बुला भेजा। वह अफ़नामी से मिलना चाहता था। वह इस परदेशी से बातचीत करके अपने में फिर से आत्मविश्वास और दृढ़ता का अनुभव करना चाहता था।

परन्तु खज़ानची की आशाओं पर पानी फिर गया। उसका नौकर यह खबर लेकर लौटा कि रूसी सौदागर कहीं चला गया है और सितम्बर से पहले वापस न आयेगा।

सबसे बुरी बात यह थी कि रूसी अकेला ही न गया था। वह गया था राजेन्द्र के बेटे के साथ।

और एक बार फिर खज़ानची को चिन्ताओं ने घर दबाया। आखिर फिर अफ़नासी ने उसे नाराज़ कर दिया।

"तो वह अपनी कब्र आप खोद रहा है!" क्रोध से खज़ानची बोल उठा, "अल्लाह गवाह है कि अब आगे से मैं अपने दुश्मनों

के दोस्त पर करम का हाथ न रखूगा। उस परदेशी ने महमूद गवान के बुलावे का भी इन्तज़ार न किया! वज़ीरे आज़म अपनी यह हुक्म-उदूली वरदाश्त न कर सकेंगे!"

इस समय तक निकीतिन बीदर से बहुत दूर निकल चुका था और पूर्व में हीरे के लिए जगत् प्रसिद्ध, गोलकोडा की ओर जा रहा था। सवसे कम उसे वज़ीरे आज़म और खज़ानची मुहम्मद का ही ध्यान आ रहा था, और यदि उसे सलतनत की राजधानी की याद भी आती तो रगू से केवल यही कहने के लिए-

"अब तो बीदर में ठहरूगा नही, सिर्फ उससे होता हुआ जाऊगा। अब वतन जाऊगा! वक्त भी तो हो गया है!"

उसे लगा जैसे एक बार फिर उसमें साहस और शक्ति का स्रोत फूट पडा है।

रास्ता एक पगडडी से होकर जाता था-वे उन मुसलमान पहरेदारो की नज़रें वचाते हुए जा रहे थे जो खानों की दिशा में जानेवाली हर सौदागर की गाडी को सन्देह की नज़रो से देखा करते थे। रास्ता वडा ऊवड-खावड था। कभी पहिये पत्थरो या पेडो की जडो से टकराकर उछलते तो कभी कीचड में धस जाते, और फिर मुश्किल से निकल पाते। कभी कभी मुसाफिर घने जगलो में, उन उलझी हुई लताओ के वीच से होकर जाने लगते, जो उनका रास्ता रोके पडी रहती और जैसे ही गाडी उनपर से होकर गुज़रती कि कट जाने के वावजूद भी वे जुडी-सी दिखाई देती। वर्षा जैसे जल का मुक्त दान कर रही थी। कभी पानी की झडी लगती तो कभी सूरज की तपती हुई किरणें मनुष्य का शरीर जलाने लगती। किन्तु निकीतिन प्रकृति की इस मनमानी पर केवल हस-भर दिया करता। उसके लिए कीचड, गर्मी या गाडी के हिचकोले यानी कोई भी चीज़ दुस्साध्य न थी।

"तुम तो बड़े ही सहनशील हो।" बड़ी इज्जत से, रगू ने उससे कहा।

अपनी कठोर-सी जगह पर उछलते हुए निकीतिन ने उत्तर दिया—

"अरे भाई, रूस में तो इससे भी बड़ी मुश्किलों का मुकाबला करना पड़ा था "

जब रास्ता थोड़ा-बहुत ठीक हुआ तो रगू ने गाना शुरू कर दिया।

उसने हलवाहों और शिकारियों के गीत गाये, भक्ति और विवाह के गीत गाये।

निकीतिन ने बड़ी प्रसन्नता से उसके गीत सुने। क्या भारत, क्या रूस, गीतों ने सदा ही मनुष्य का साथ दिया है—उसके श्रम में, उसके आराम के समय, उसके सुख में, उसके दुख में। इसलिए गीत मनुष्य की आत्मा के ज्यादा निकट रहा है, सुबोध रहा है और यद्यपि अफनासी उसके बहुत-से शब्दों को समझ न पा रहा था फिर भी उसका भाव उसे अक्षरश समझ में आता जा रहा था।

"पता है तुम्हे, मैं बहुत-से विदेशियों को जानता हूं किन्तु हम लोगों के प्रति जितनी उदारता तुममें है उतनी मैंने दूसरों में नही देखी," रगू बोला।

"भारत—यह देश तो मेरे दिल की धड़कन है।" अफनासी ने उत्तर दिया, "तुम्हारे लोग मेरे हृदय के उतने ही निकट हैं जितने मेरे अपने लोग हैं। मैं उन्हें रूसियों से कम प्यार नही करता। तुम लोग भी मेहनत करते हो और हम लोग भी। तुमपर सुलतान और राजा-महाराजा जुल्म करते हैं और हमपर तातार और सामन्त लोग। पर अपनी कठिनाइयों के बावजूद भी न रूसियों की ही महान

आत्मा कुठित हुई, न भारतीयो की ही। इसी की तो मुझे खुशी है, रगू। इसी की तो खुशी है।"
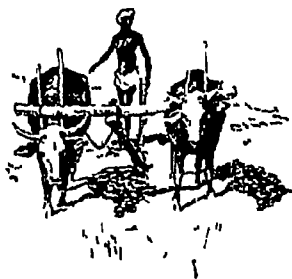
इन दिनो उसे अपना भविष्य स्पष्ट दिखाई दे रहा था। उसे बहुत-से काम करने थे—गोलकोडा जाकर हीरे खरीदना, बीदर लौटना, सीता के गाव जानेवाले मुसाफिरो का पता चलाना, अपने प्रेम की दूरस्थ प्रतिमा को आख-भर देखना और यदि वह किसी दूसरे की पत्नी हो चुकी है तो उससे विदा लेना, समुद्र तक जाना और फिर रूस का सफर।

जगलो में रग-विरगे फूल खिल रहे थे। उसने कुछ चमचमाते और महकते हुए पुष्प तोडे और उन्हें सूघने लगा। गन्ध मीठी थी किन्तु वह उससे परिचित न था। उसके दिल में यह विचार उठा कि रगू को समझाऊ कि रूसी रमाश्का और लान्दिश की सुगन्ध कैसी होती है।

खेतो की जुताई कर रहे देहातियो को देखते हुए उसने अपना सिर हिलाया।

"तुम लोग अपनी जमीनो में खाद नही देते!" वह रगू से बोला, "अगर उसमें गोवर की खाद दी जाये तो सोना उगलने लगेगी ज़मीन!"

रगू हस पडा।

"गोवर हमारे यहा जलाने के काम आता है! उसे दवा के काम में लाते हैं और उससे मकान पोतते है," वह बोला, "ऐसी चीज को हम जमीन में दफनायें? क्या कहते हो तुम!"

खेतो में पानी ही पानी भरा था। गाव में हर झोपडे के सामने क्यारिया थी जिनमें धान के पीले पीले पौधे उग रहे थे। कुछ दिनो वाद उन्हे हटाकर खेतो में रोप दिया जायेगा। धान का हर छोटा पौधा, वडी होशियारी से, एक जगह मे हटाकर किसी दूसरी नयी जगह लगा दिया जाता है। इसके वाद मौसम आता है जौ का और उसके वाद गेहू का। फिर खूब साग-सब्जिया, फिर पहली फस्ल। और फिर मालगुज़ारी इकट्ठा करनेवाले, महाजन और सूदखोर

रास्ते में कोई कस्वा पडता है—मिट्टी के छोटे छोटे और गीले मकान, मीनार, कस्वे की चहारदीवारी की टूटी हुई अथवा पानी से ध्वस्त मिट्टी की दीवाले, वहा लापरवाही से खडे चौकीदार, अवभूखा गाव, जिमके चारो ओर ढेरो जगल हैं जिनमें से भोर के ममय जगली हाथी नदी की ओर जाते दिखाई पडते है। निकीतिन और रगू गाडी के पीछे, एक के वाद एक, पहाडी पार करते, आपस में गप्प लडाते और पान चवाते हुए आगे वढ रहे थे। अफ़नासी की तो वाछें खिली जा रही थी। उसे लग रहा था जैसे वह दोस्तो से घिरा है। यह फारस नही, जहा सौदागरो से ज्यादा लुटेरे रास्ते में मिलते हैं। यह है भारत जहा पुराने रीति-रिवाज उसकी धरती से चिपके हुए है, जहा लोगो की जान लेना और उनका माल-असवाव लूटना मवसे वडा पाप ममझा जाता है, जहा घर का मालिक खुद भूखा मरना गवारा कर लेता है, पर घर आये मेहमान को भूखा नही रहने देता।

रास्ता प्राय सुनसान था। कभी कभी एकाध फकीर दिखाई पडता जिसकी गरदन में लोहे की जजीरो से वधा भारी पत्थर लटका होता। वूदा-वादी के समय, भ्रमण करते हुए योगी भी मिल जाते थे। ऐसे मौसम में इन योगियो को यह भय न रहता कि पृथ्वी पर

रेंगनेवाला कोई प्राणी उनके पैरो तले दबकर मर जायेगा। कभी कभी उनकी भेंट किसी छोटे-मोटे काफिले से हो जाती—दो-तीन गधे, ऊट और चार-पाच थके थके-से आदमी, सभी मुस्कराते और मजे में रास्ता नापते, और कभी, दुनिया-भर का चक्कर लगानेवाले खुशमिज़ाज मदारी दिखाई पड जाते।

योगी पास से गुजर जाते हैं। वे आपके मन की बात वैसे ही ताड लेते है, मानो शीशे में से देख रहे हो। काफिले के लोग आपको सचेत करते हैं—अगली पहाडी के पीछे नदी पर बना हुआ पुल टूट गया है, पर बायी तरफ का पानी छिछला है। मदारियो को अगले गाव तक जाना है। वे भी साथ हो लेते हैं, जजीरो में बधे हुए बदर उछलते-कूदते उनके साथ चलते हैं। मदारी बडे कुतूहल से निकीतिन के बारे में पूछते हैं, और यह भी पूछते हैं कि क्या वह एकाध सिखा-सिखाया बन्दर खरीद लेगा? कीचड में फसी गाडी में कन्धा देकर उसे रास्ते पर लाते हैं।

नदिया पार करना सबसे कठिन काम है। वे किनारे तोडकर बढती हैं, फैलती है और सिर्फ वही लोग उन्हे पार करने का खतरा उठा सकते है जो छिछली जगहें जानते हैं।

निकीतिन को विश्वास था कि गोलकोडा का रास्ता तीन हफ्तो का है। किन्तु पन्द्रहवे दिन प्रात काल, जब उन्हे अपनी यात्रा फिर से आरम्भ करनी थी, उसी समय अफनासी को हल्की हल्की ठडक लगी और उसका सिर पिराने लगा। उसने रगू से कुछ न बताया, पर दोपहर होते होते उसकी तकलीफ बढ गयी और वह अपनी कमज़ोरी न छिपा सका। उसे कपकपी चढी, उसका सिर जैसे फटने लगा और मतली होने लगी। रगू ने अफनासी की चचल निगाहें देखी और घबडा गया। उसने जल्दी जल्दी बैल सामने ही दिखाई पडनेवाले निकटस्थ गाव की ओर फेर दिये।

गाड़ी के झोंपड़ों की ओर बढ़ते समय तो अफ़नासी की आंखें तक न खुल रही थीं। उसकी समझ में भी प्राय: कुछ न आ रहा था।

भयंकर शीत-ज्वर ने उसके दांत खट्टे कर दिये थे।

जब वह कुछ कुछ ठीक महसूस करने लगता तो टकटकी लगाये छत की ओर देखता और यह याद करने का प्रयत्न करता कि वह है कहां, उसे हो क्या गया है। और जब रंगू उसके सिर पर झुकता तो अफ़नासी मुस्कराने का प्रयत्न करता। अर्द्ध-उन्माद की दशा में उसे लगता कि पीने की कोई चीज़ उसके सामने लायी जा रही है और कोई तेज़ काढ़ा उसके मुंह में डाला जा रहा है। हर हरकत से उसे व्यथा होने लगती। उसने शान्ति से पड़े रहने का प्रयत्न किया। उसके ज्वर ग्रस्त मस्तिष्क में तरह तरह के धुंधले चित्र बन बनकर मिट रहे थे।

निकीतिन कराहने लगता, उसका शक्तिशाली शरीर थरथराने लगता, उसका मुंह पीला पड़ जाता, बेहोशी धर दबाती...

दसवें दिन निकीतिन की हालत कुछ सुधरी। अब वह पहली बार अपनी चारपाई पर बैठ, और चारों ओर आंख भर कर देख सकता था। मामूली-सी झोंपड़ी, मामूली-सी साज-सज्जा। देहलीज़ पर एक औरत बुरक़ा पहने बैठी थी। निकीतिन ने अनुमान लगा लिया कि वह मुसलमानी गांव में है। जब उस औरत ने मेहमान को उठते हुए देखा तो वहां से चली गयी और तभी रंगू आ गया। उसके चेहरे पर चिन्ता और खुशी दोनों ही झलक रहे थे। रंगू ने हाथ फैलाये, पर निकीतिन के पैर लड़खड़ाये और रंगू ने उसे लिटालने का यत्न किया और प्याला उसके मुंह से लगा दिया।

"आखिर भगवान ने हमारी प्रार्थना सुन ही ली।" रगू फुसफुसाया, "तुम लेटे रहो, लेटे रहो। तुम अब भी कमजोर हो "

"हम हैं कहा?"

"दोस्तो के यहा फिक्र न करो। जल्दी ही ठीक हो जाओगे।"

"वर्षा अब भी हो रही है?"

"करीब करीब रुक गयी है लेटे रहो। बोलो मत।"

निकीतिन की हालत धीरे धीरे सुधरती रही। उसकी ताकत धीरे धीरे बढ रही थी। सफर पर आगे बढ़ने की बात तो रगू अभी सुनना भी न चाहता था।

इस प्रकार वे गफूर के इस छोटे-से मकान में कोई दो हफ्ते और पडे रहे। गफूर एक गरीब मुसलमान था। उसी ने इन लोगो को पनाह दी थी। वह बडा मेहनती था और सुबह से शाम तक अपने छोटे-से खेत में पसीना बहाता था। उसके तीन छोटे छोटे बच्चे थे जो मकान के इर्द-गिर्द, अनाथो की तरह खिसकते और चक्कर लगाते थे। गफूर की शान्त पत्नी सारे दिन मेहनत करती—खाना बनाती, चिडियो की देखभाल करती और कभी कभी खेतो में जाकर अपने पति के कामो में हाथ बटाती।

गफूर सयमी और चिन्ताशील व्यक्ति था। जब खेतो से लौटता तो अफनासी के आगे सिर झुकाता, उसका हालचाल पूछता और किसी ओझा या मुल्ला को दिखाने की सलाह देता। किन्तु उसने यह कभी नही पूछा कि निकीतिन है कौन और कहा जा रहा है।

गफूर के पडोसी भी जिज्ञासु थे। अफनासी ने प्राय इस बात पर गौर किया था कि, ये पडोसी उसमें दिलचस्पी दिखा रहे हैं।

जब अफनासी को कुछ और ताकत आयी तो वह घर मे बाहर निकलकर पुराने ताड के वृक्ष के नीचे बैठने, रगू से बातचीत करने और गाव को नज़र भर कर देखने लगा।

यह गाव हिन्दू गाव जैसा ही लग रहा था। फ़र्क़ इतना ही था कि यहा सुग्रर नही थे। किन्तु मामूली-से घर, लोगो के ख़राब-से कपडे—ये सब हिन्दुओ की ही तरह थे।

वहा रहनेवालो की बातचीत भी हिन्दू गाववालो जैसी ही थी। वे भी बाते करते थे अपने छोटे छोटे खेतो की, वर्षा की जो इस वर्ष कम हुई थी, और कर्ज़ो की।

वहा के ग़रीब किसानो ने खुलकर रगू से बातचीत की और उससे अपने दुखडो का रोना रोया। धूप और ग़रीबी से कुम्हलाये हुए उनके चेहरो से हिन्दुओ के प्रति किसी भी द्वेष की झलक न मिल रही थी।

तो, जब तक मालगुज़ारी वसूल करनेवाले कारिन्दे, खिलजी के दर्शन न हुए तब तक सब कुछ ठीक चलता रहा। खिलजी खुट्टे दातो वाला एक घमडी-सा आदमी था। दाढी काली, नाक टेढी। शाम होते होते गफूर के मकान में पहुचा। उस समय सूरज डूबने की तैयारिया कर रहा था, गाव के इर्द-गिर्द की पहाडिया नीली पड रही थी और सध्या की लाल चादर में लिपटे हुए जगलो के मुह पर धीरे धीरे स्याही पुती जा रही थी। लोग गाय-बैलो को हकाते हुए घर ला रहे थे। किसान खेतो से लौटने लगे थे।

लगता था कि कारिन्दे को मालूम था कि गफूर ने अपने घर काफिरो को टिकाया है। वह बडी शान से घर की ओर बढा और निकीतिन को बैठा देख, उससे कोई पाच कदम दूर ठिठक गया, कुछ क्षणो तक विदेशी को घूरता रहा। फिर मकान मालिक को पुकारने लगा जो भेडो को आगन में हका रहा था।

"ए गफूर! ये लोग कौन है?"

गफूर घूम पडा और कारिन्दे के आगे झुककर सिर नवाने लगा।

"सलाम हुजूर!" उसने जवाब दिया, "ये मुसाफिर हैं।'

"ये यहा कैसे? इन्हे क्या चाहिए?"

निकीतिन पत्थर पर से धीरे धीरे उठा। उसका मुरझाया और पीला पडा हुआ चेहरा तमतमा रहा था।

"और तुम्हें क्या चाहिए जी?" गफूर को उत्तर देने का अवसर न देते हुए निकीतिन ने रुखाई से पूछा, "यहा टपक कैसे पडे? मुझसे बातें करना तुम्हें अच्छा नहीं लगता क्या?"

मालगुज़ारी वसूल करनेवाला घूम पडा और घृणा से अफनामी की आखो में देखने लगा। परन्तु उसके चौडे कधे और चमचमाती हुई सख्त आखें देखकर उस घमडी का क्रोध कुछ ठंढा पडा। पर खिलजी अपनी ताकत जानता था।

"मैं जिससे चाहूगा, उससे बात करूगा!" उसने बात काटी, "गफूर, इन लोगो के ज़िम्मेदार तुम हो। ये मशकूक आदमी है।"

कारिन्दा बिना इधर-उधर देखे वहा से खिसक गया। निकीतिन का जी हुआ कि वह इस बदमाश को पकडकर उसका दिमाग दुरुस्त कर दे, किन्तु गफूर की दयनीय आखें देखकर उसकी बधी हुई मुट्ठिया खुल गयीं।

दूसरे दिन पता चला कि खिलजी ने कई किसानो को, इस बात

के लिए उकसाया था कि वे इन काफिरो को मारपीट कर उनका माल-मता छीन ले।

गफूर वेचारा परेशान हो उठा।

"यह खिलजी वडा वदमाश है!" श्राह भरते हुए वह वोला, "कहता है कि इस लूटमार के लिए किसी को कोई मजा न दी जायेगी अरे वदमाश!"

"गफूर! तुमने हमें पनाह दी। वहुत वहुत शुक्रिया!" निकीतिन वोला, "मैं समझता हू कि इस गीदड को श्रौर अधिक न चिढाया जाये। रगू, कल हम कूच करेगे।"

रात में उसने अपनी पेटी खोली, एक सफेद सुलेमानी पत्थर निकाला श्रौर घर में रखी एक हाडी के नीचे रख दिया। श्रौर सुवह, जव थोडा थोडा प्रकाश फैल रहा था, उसने स्वय वैल तैयार किये श्रौर रगू को जगाया। गफूर अभी तक नही जगा। सारा गाव मजे की नीद सो रहा था। निकीतिन की गाडी धीरे धीरे गाव छोडकर आगे वढ रही थी। गोलकोडा की खानो तक का रास्ता चार दिन से अधिक का न रह गया था।

निकीतिन ने गोलकोडा की अद्‌भुत खानो के वारे में तरह तरह की कहानिया सुन रखी थी। किन्तु जव उसने वहा की नुकीली पहाडिया श्रौर नीचे नीचे जगल देखे तो उसे निराशा-सी होने लगी। इस प्रकार के जगल दक्खन के पठारो में प्राय मिलते थे। किन्तु मुसलमान पहरेदारो के तम्वुओ की कतारे श्रौर उत्तेजित रगू को देखकर यह पता चलता था कि गोलकोडा की अद्‌भुत जमीन उसके सामने ही है।

निकट के एक जगल में किसी का तम्वू दिखाई पडा। तम्वू

के पास ही धुए के छल्ले भी आसमान में उठ रहे थे। निकीतिन ने अपने बैलो को ताड के पेडो की ओर वढा दिये। एक लम्बी दाढीवाला मुसलमान मिलने के लिए आगे आया। धूप से वचने के लिए माथे पर हथेली रखकर उसने आनेवालो पर एक नजर डाली।

मुसलमान ने अपना नाम नही वताया, हीरे के वारे में कुछ कहना-सुनना ठीक न समझा और कायदे का वरताव भी नही किया। किन्तु रगू जरा भी परेशान न हुआ। उसे सतोप ही हुआ।

"इसके माने हैं मव कुछ पहले जैसा ही है!" उसने निकीतिन को समझाया, "यह आदमी हीरे का दलाल है। ऐसा आदमी तुरन्त भप जाता है। वह हमसे डरता है। तो, माने हैं कि हीरे मिल सकते हैं। हमें तम्बू लगा देना चाहिए। फिर मैं किसी जान-पहचानवाले को ढूढूगा।"

किन्तु उन्हे किसी जान-पहचानवाले को ढूढने की नौवत न आयी। इधर निकीतिन और रगू तम्बू लगा रहे थे और उधर एक सिपाही झाडियो के पास से, खेमे के पास आकर खडा हो गया।

उसकी निगाहो से दोस्ती का कोई सकेत न मिल रहा था। उसका एक हाथ तलवार की मूठ पर था।

"यहा से अपना तम्बू-सम्बू हटाओ तो, जल्दी।" मिपाही ने निकीतिन से कहा, "अगर तुम मौत के मुह में नही जाना चाहते तो यहा से भागो तो।"

"अरे भाई!" निकीतिन ने कहना शुरू ही किया था कि मिपाही ने उसे रोक दिया—

"यह सव समेटो-समाटो! या फिर बुलाऊ आदमी "

तभी झाडियो में से रगू निकल आया। उसके ओठो पर मधुर मुस्कान थी।

"अमा रशीद, तुम!" उसने सिपाही को पुकारा, "तुम अभी तक यही हो?"

सिपाही के माथे पर एक मोटी-सी शिकन पडी। फिर वह भी मुस्करा दिया।

"अरे, बीदर के बाशिन्दे!" वह बोला, "तुम हो?"

"हा, मेरे भाई, मैं। मेरे बैल थक गये हैं। सोचा थोडा सुस्ता लू। मुझे अफसोस है कि तुम्हे तकलीफ हुई, लेकिन खुशी भी है कि तुमसे मुलाकात हो गयी!"

सिपाही ने मूठ पर से हाथ हटा लिया और कोट की आस्तीन से माथे का पसीना पोछने लगा।

"कैसी तेज़ गर्मी है!" वह बोला, "बहुत दिनो के निकले हो, रगू? बीदर की क्या खबर है?"

एक ही मिनट बाद तीनो तम्बू के भीतर जम गये और शराब के जाम चलने लगे। रगू ने नही पी किन्तु रशीद ने किसी को यह मौका ही न दिया कि कोई उससे पीने को कहे। वह तुरन्त जुट पडा।

"अच्छा, मज़े से रहो यहा!" खुश होकर सिपाही बोला, "लेकिन अब वक्त बदल गया है, रगू। अब ज्यादा पैसा देना होगा। हमारा नया सरदार पैसे को दात से पकडता है। दो सोने के सिक्के मुझे दो और पाच उसे।"

रगू ने सौदा पटाने की कोशिश की किन्तु रशीद ने हाथ झुलाते हुए मना कर दिया।

"शीऽऽ मुझे जरूरत से ज्यादा पैसा नही चाहिए। पर, अगर आराम की जिन्दगी वसर करना चाहते हो तो विना चीं-पचड किये पैसा हवाले करो।"

"अच्छा, हम देंगे।" निकीतिन बोला। सिपाही ने उसकी ओर देखा और खुश हो गया।

"सौदागर, मैं तो पहले ही तुम्हारी तरफ खिंचा था। अच्छी बात है। अब मैं तुम्हारे पास आया करूगा ताकि तुम्हारा मन न ऊबे।"

और वह अपनी छोटी छोटी आखें सिकोडता और तोद झुलाता हुआ हस दिया।

पैसा लेकर रशीद जाने लगा।

"हा," परदा उठाते हुए वह बोला, "यहा भेडिये रहते हैं। बैलो को वचाये रखना। अच्छा, सलाम।"

रशीद के जा चुकने के वाद रगू ने सिर हिलाया।

"वहुत पैसा माग लिया वदमाश ने।" सोचते हुए रगू बोला, "वहुत लेकिन खैर कोई वात नही। है वह भरोसे का आदमी। जिसका पैसा लेता है उसका काम कर देता है।"

"हम हीरे खरीदेंगे कैसे?" निकीतिन ने पूछा, "कहा जाना होगा हमें?"

"वे खुद ही यहा आ जायेंगे," रगू हस दिया, "चलो कुछ टहनिया वटोर लायें। हमें चावल पकाना है।"

गोलकोडा पर रात्रि की गहनता वढने लगी थी। चारो ओर सन्नाटा था। चौकीदारो के तम्वुओ के सामने जलती हुई आग की

चिनगारिया दिखाई पड रही थी। कही गीदड भो-भो कर रहे थे, कही लकडवग्घे चिग्घाड रहे थे।

"वक्त हो रहा है!" रगू वोला।

उसने अलाव में सूखी टहनिया लगा दी। आग एक क्षण के लिए दव जाती, फिर सहसा भभक उठती और लगता जैसे उसकी लपटें नीला आकाश छू लेगी।

"अलाव तेज़ जलता रहे!" रगू ने कहा, "हम इन्तज़ार करेगे।"

और दोनो घुटनो के वीच सिर रखकर वह वडी सावधानी से रात की ध्वनिया सुनने लगा। निकीतिन भी चुपचाप सुनता रहा—जलती हुई टहनियो की चटाख, वैलो की घटियो की टुनटुन, सिर के ऊपर से गुज़र जानेवाले रात्रि के किसी पक्षी की सरसराहट।

इन दिनो निकीतिन काफी थक चुका था। वह वहुत कमज़ोर हो गया था। आखिर वह भी भारत के कष्टो से वच न सका था। उसे मृत रगसाज की याद आने लगी थी।

"चौल के अलावा और कौन कौन वन्दरगाह है?" निकीतिन ने शान्ति भग की।

"गोआ, दाभोल "

"और सीता के गाव से कौन वन्दरगाह नज़दीक पडेगा?"

"दाभोल जाने की सोच रहे हो क्या?"

"हा, रगू।"

"मैं तुम्हे पहुचाऊगा वहा।"

"अरे, क्या कहते हो इतनी दूर!"

"तो क्या अव मैं तुम्हारा दोस्त नही रहा?"

निकीतिन आकर रगू के पास बैठ गया और उसके कन्धे पकड़कर उसे छाती से लगा लिया। फिर दोनो पास पास बैठे हुए काले काले और मूक अन्धकार की ओर देखने लगे।

"बताओ अफनासी, क्या सोच रहे हो तुम?" काफी देर तक चुप रहने के बाद आखिर रगू ने शाति भग की।

"मेरा धर्म यह सिखाता है," निकीतिन ने धीरे धीरे कहना शुरू किया, "कि सभी लोगो को भाई भाई की तरह रहना चाहिए। जब मै जवान था तो त्वेर में लोगो को झूठ बोलते सुनकर मुझे तैश आ जाता था। इसके लिए मुझे हानि भी काफी उठानी पडी थी। मैंने यह समझ लिया था कि रईसो में सत्य के दर्शन नही हो सकते। इसी लिए मेरा जी उदास हो गया था। मैंने सारी दुनिया का चक्कर लगाया है। लोग कैसे रहते है यह मैंने अपनी इन्हीं आखो से देखा है। मैं उत्तरी मुल्को में घूमा-फिरा, जर्मन प्रदेश गया, तुर्की गया, नाव पर ज़ारग्राद भी गया—सभी जगह एक ही बात और अब तुम्हारे साथ हू। तुम्हारे दुख-दर्द हमारे दुख-दर्दों से अधिक मीठे नही। मैंने अनुभव किया है कि हर जगह आदमी खुशी के सपने देखता है, अपने अपने धर्म के अनुसार भगवान के भरोसे रहता है, अपने अपने विचारो से शान्ति प्राप्त करता है। ऐसी हालत में भलाई में विश्वास डिगने लगता है पर अपने हृदय की थाह लेने पर पता चलता है कि मनुष्य का विश्वास अडिग है। और जानते हो ऐसा क्यों होता है? इसलिए कि दुनिया में इन्सान सुखी नही रहता। और यदि यह सही है तो उसे, सुख की मजिल तक ले जानेवाला सच्चा रास्ता ढूढना चाहिए। मैं वह रास्ता नही जानता। उस रास्ते का राज मुझे आज तक न मालूम हो सका। फिर भी मै समझता हू कि यद्यपि भगवान के भिन्न भिन्न रूप हैं और हमारी आपस में भी कितनी ही भिन्नताए

हूँ, फिर भी सभी के लिए सुख का रास्ता एक ही होगा, वैसे ही जैसे दुनिया के हर इन्सान के लिए दुख की अनुभूति एक ही होती है "

रगू ने अविश्वास से सिर हिला दिया।

"तुम्हारे विचार तो बडे ऊचे है," उसने उत्तर दिया, "परन्तु सुख की धारणाए अलग अलग है "

"नही!" निकीतिन ने आपत्ति करते हुए कहा, "नही! आदमी एक ही प्रकार से अनुभव करता है—युद्ध दुखदायी है, भूख दुखदायी है, रईसो का अत्याचार दुखदायी है ठीक नही है क्या?"

"ठीक है। यह बात तो ठीक है," रगू बोला।

अफनासी और रगू बातों में इतने फस गये कि उनका ध्यान आग की ओर से हट गया। आग धीमी पड गयी। उन्होने उसपर कुछ सूखी लकडिया और डाली और दोनो उसे फूक फूककर सुलगाने लगे। लपट भभक उठी और निकीतिन ने आग की गर्मी से लाल पडा हुआ चेहरा ऊपर उठाया। कुछ क्षणो के लिए जैसे उसे कुछ भी न सूझा। उसकी आखो के आगे लपटो के घेरे ही नाचते रहे। फिर इन घेरो में से उसे किसी आदमी का एक ढाचा-सा दिखाई दिया। वह आग की दूसरी ओर, घुटनो के बल बैठा हुआ, गहरी और उदासीन-सी दृष्टि से, अफनासी को ताक रहा था। रगू आग का चक्कर-सा लगाता हुआ उस ढाचे के पास आया, उसके कधे ठोके और हथेली फैला दी।

ढाचे ने कुछ कहा और रगू ने ओठ हिला दिये।

"क्या बात है?" अफनासी ने पूछा।

"यह निगल्लू है," रगू ने अबोध्य-सा उत्तर दिया और रात्रि के अतिथि को चावल परोस दिये।

अफनासी ढाचे के पास आया। गोलकोंडा का यह गुलाम मंत्रमुग्ध की तरह रगू के हाथो की एक एक हरकत देख रहा था। गुलाम की गर्दन काप रही थी। वह इतना सीक-सलाई था कि हड्डी का ढाचा-सा लग रहा था। पर था यह एक इन्सान, जिन्दा इन्सान।

गुलाम के आगे चावल आये। उसने चावल गटके और ताड का पत्ता चाटने लगा।

इसी बीच रगू तम्बू में गया और कोई जडी ले आया। गुलाम ने वह जडी भी निगल ली।

अफनासी उसे साश्चर्य देखता रहा।

गुलाम कापने लगा। उसकी आखें जैसे बाहर निकलने लगी। उसके लिए सास लेना भी दूभर हो गया

कुछ ही मिनटो में सब कुछ हो गया। रगू ने आग के पास खडे होकर कुछ किया, पानी से कुछ साफ किया और निकीतिन को पुकारकर कहने लगा—

"यहा आओ।"

अफनासी उसके पास चला आया। रगू की हथेली पर दो हीरे दमक रहे थे। आग की चमक में ये रत्न लाल दिखाई पड रहे थे। गुलाम इन लोगो की ओर न देखते हुए फिर चावल पर जुट गया। अब वह अच्छी तरह चबा चबाकर खा रहा था, धीरे धीरे और गम्भीरता के साथ।

"यह क्या है ऐसा हमेशा होता है क्या?"

"नही," रगू ने जवाब दिया, "दूसरे लोग भी होते हैं, जो शरीर में घाव कर लेते है और हीरे उनमें छिपा लेते है। परन्तु हीरे निगल जाना अधिक महफूज चीज है। इसे कोई भी पहरेदार

नही भाप सकता। पर निगल्लुओं के साथ पेश आना प्रिय बात नही है। इसमें चावल अधिक खर्च होता है, लेकिन किया क्या जाये?"

"बडी विचित्र बात है!" निकीतिन बोला, "शैतान जाने यह सब है क्या! और अगर वह पकडा जाये?"

"तो उसे मार डाला जायेगा "

"इसके माने हैं कि मुट्ठी-भर चावल के लिए आदमी मौत का खतरा मोल लेता है?"

"बेचारे गुलाम तो भूख से यो भी मरते हैं। इस तरह वे किसी न किसी प्रकार अपने को ज़िन्दा तो रखते है। कुछ लोग इन्ही चावलो को खाकर मजबूत बनते हैं और भाग निकल सकते हैं।"

"तो यहा हीरे इतने सस्ते है। मैं नही जानता था!" निकीतिन बोला, "मै नही जानता था!"

गुलाम चावल खाकर उठने लगा।

"इसे अभी और दो!" निकीतिन ने जल्दी जल्दी कहा, "उसे भर पेट खा तो लेने दो!"

परन्तु रंगू ने, निषेध-सा करते हुए, गर्दन हिलायी।

"नही। ज्यादा खाने से इसे नुक्सान होगा। वह मर भी सकता है "

गुलाम के अंधेरे में ग़ायब हो जाने के बाद एकदम सन्नाटा छा गया।

"यह तो युगो से होता चला आया है!" आखिर रगू बोला, "ये हीरे हम नही लेगे तो कोई दूसरे लोग ले लेगे।"

निकीतिन ने आह भरी, एक अगारा उठाकर आग में रखा और अपनी गन्दी हुई उगली की ओर देखते हुए सिर हिलाने लगा—

"इस चीज की तो मैंने कभी आशा न ही की थी आज और अधिक की कोई जरूरत नही।"

रगू ने आग में सूखी लकडिया नही लगायी। आग धीरे धीरे बुझने लगी। निकीतिन चटाई पर लेट गया और बुझती हुई लपटो की ओर देखने लगा। उसका दिल भारी और उदास था। उसे अच्छी नीद भी नही आयी। प्रात काल उठने पर रात के सन्देह उसे केवल कमजोरी के फल मात्र लगे। वह यहा हीरो के लिए आया था और वह हीरे प्राप्त करेगा, भले ही वे उसे किसी प्रकार ही क्यो न मिले। उसके पास हीरे होकर ही रहेगें। वह वहा रह गया।

वे लोग यहा अक्तूवर तक बने रहे। गुलाम तो कभी कभी ही आते थे। अधिकतर हीरे बहुत छोटे होते थे, फिर साफ भी न होते थे। अक्तूवर तक रगू और निकीतिन को इतने हीरे मिल चुके थे कि खर्च वगैरह निकालकर उन्हे कुछ लाभ भी हो सकता था।

अब अफनासी बीदर चलने के लिए रगू से बराबर इसरार करता रहा।

अक्तूबर के आरम्भ में उन्होने अपने तम्बू उखाड़े और बीदर की ओर कूच किया।

सातवा अध्याय

"तुम कौन हो?"

कुछ घुडसवार पहाडी के पीछे से निकले और रास्ता रोक लिया। वे मुसाफिरो के पास आये। मुसाफिरो के लिए छिपने को कोई स्थान न रह गया था।

"मुसलमान सिपाही।" भय से रगू फुसफुसाने लगा।

निकीतिन भी घवडा गया। वे वीदर तक का वहुत काफी रास्ता पार कर आये थे। अगर अव कुछ हुआ तो वडी कोफ्त होगी। रगू मे पहले ही यह तय हो गया था कि यदि पहरेदारो से कभी कुछ कहने-सुनने की ज़रूरत हुई तो वे यही कहेगे कि वे लोग उडीसा के राजाओ से जवाहरात खरीदने गये थे। अभी तक इस तरकीव से काम चलता गया था। और अगर इन सिपाहियो ने विश्वास न किया और छान-वीन की और उन्हे कुछ शक हो गया तो?

निकीतिन, वैलो को मभालता हुआ, वरावर यह सोचता रहा कि उनका सावका मुसलमानो की टुकडी से पहली वार न पडा था। उसे लग रहा था जैसे भारत की हालत उखाडे गये दीमक जैसी हो गयी है। सिपाही जल्दी जल्दी कही जा रहे है। कही कोई युद्ध तो नही छिड गया?

इमी वीच मुमलमानो की टुकडी और पास आ गयी। निकीतिन भौंहे तरेरने लगा। सामने का सिपाही रईसाना ढग की वर्दी में था। उसका चेहरा अफनासी को वहुत कुछ परिचित-सा लगा। उसका घोडा तक परिचित था—सफेद खूवसूरत घोडा। उसे कुछ कुछ याद आने लगा

"मुस्तफा!" अफनासी चिल्लाया, "अगर तुम मुस्तफा न हो तो खुदा का मुझे कुफ्र!"

सिपाही ने भी निकीतिन को पहचान लिया। एक ही क्षण में सिपाही के चेहरे पर घवडाहट के कुछ भाव दिखाई दिये परन्तु उसने, जैमे अपने को मभालते हुए, वडे लोगो जैसी हसी हस दी।

"मौदागरो को छोड दो। वे हमारे दोस्त है!" गाडी को घेर रखनेवाले सिपाहियो से मुस्तफा ने कहा। सिपाहियो ने फौरन ऐसा ही

किया। निकीतिन ने आश्चर्य से मुस्तफा की ओर देखा जिससे मुस्तफा को बडी खुशी हुई।

"अजी, तुम्हें तो पहचानना मुश्किल हो गया!" अफनासी बोला।

"हुन्ह   और अपने घोडे की याद है?" मुस्तफा ने दात निकाल दिये और घोडे की रास खीच ली।

"मेरा घोडा तुम्हारे पास?! इसे तो खान उमर ने खरीदा था!"

"हा वही है! इसका नाम तुम्हारे नाम पर ग्याउर* रखा गया है। और खान उमर, खान था जरूर लेकिन अब तो डफली वन गया है।"

अपने ही मज़ाक पर खुश होकर, मुस्तफा हो-हो कर हसने और दूसरे सिपाहियो की ओर देखने लगा। वे भी मुस्करा दिये।

"मेरे पल्ले कुछ नही पडता   " निकीतिन वोला, "पहेली वुझा रहे हो।"

"लगता है, अरसे से वीदर नही गये!" सिपाही ने आखें सिकोडी, "वस, पैरो का सनीचर उतारते रहते हो? ढेरो खवरे हैं, ढेरो और हा, यह तुम्हारे साथ कौन है?"

मुस्तफा ने सदिग्ध दृष्टि से रगू की ओर देखा और निकीतिन जैसे सतर्क हो गया।

"मेरा गाडीवान," उसने होशियारी से उत्तर दिया, "क्यो?"

"तुम रत्न-तराश रगू को तो नही जानते?"

मुस्तफा दोनो की ओर पैनी दृष्टि से देखने लगा।

"क्यो नही जानता," निकीतिन वोला। उसे किसी वुराई का शक हो रहा था, "उसके साथ ही तो मैं वीदर से चला था।"

---

* काफिर।

"कहा ? "

"हम लोग आठ दिनो तक साथ साथ रहे फिर अलग हो गये। शायद वह श्री-पर्वती चला गया। तुम्हे उमसे क्या लेना-देना ? "

"वह सुलतान का दुश्मन है। तुमने बुरे लोगो से दोस्ती पाली है, यूसुफ।"

"तो वह कोई दुश्मन है? क्या किया है उसने ? "

"इसे बताने में बडा वक्त लगेगा! वह अपने दादा के साथ खान उमर की साजिश में शामिल था। उसके दादा की तो खाल खींची ही जा चुकी है। अकेला रगू कही निकल भागा। पर वह भी हत्थे चढेगा ही।"

"ऐसा नही हो सकता!" निकीतिन बोला।

"इस साजिश का पता चलाने में मैंने खुद मदद दी थी!" बडे गर्व से मुस्तफा बोला, "और हा तुम भावलो सौदागर को जानते थे। उसे भी फासी दे दी गयी। खजानची मुहम्मद की मेहरबानी से तुमपर कोई आच न आयी। उसने तुम्हारी पैरवी की थी और वजीरे आजम से कहा था कि तुम इन हिन्दुओ को ऐसे ही जानते हो। तुम बेखटके बीदर लौट सकते हो।"

इन खबरो से चौंक कर अफनासी को समझ ही में न आया कि वह क्या उत्तर दे।

फिर सिपाही ने लापरवाही से उसकी ओर देखा, सिर हिलाया और घोडे को चलने का इशारा किया।

"तुम्हारा सफर आराम से कटे!" वह बोला।

अफनासी ने अन्यमनस्कता से, हाथ अपने सीने पर रखा। सारे सिपाही एक ओर बढ गये।

"रगू!" निकीतिन बोला, "यह साजिशवाली बात ठीक है क्या?"

रगू की आखो में आसू छलछला आये। वह शून्य दृष्टि से दूर की पहाडिया देखने लगा। उसके मुह से बोल तक न फूट रहे थे। उसने सिर्फ निषेधसूचक ढग से सिर हिला दिया।

जब बीदर का रास्ता कोई एक दिन का रह गया तो रगू और निकीतिन एक दूसरे से अलग हो गये। रगू को एक गाव में अफनासी की प्रतीक्षा करनी थी और निकीतिन को यह पता चलाना था कि कर्ण के परिवार का क्या हुआ। उसे खजानची मुहम्मद से यह भी पूछना था कि जो कुछ मुस्तफा ने कहा था वह सच है या नही। और यदि कर्ण जीवित है, तो उसे उसकी रक्षा के लिए कोशिश करनी चाहिए।

अफनासी ने बीदर के द्वार में प्रवेश किया। उस समय वह चिन्तित, और परेशान था। उसका दिल भी भारी हो रहा था। उसका अपना क्या होगा इस चिन्ता ने उसे नगर की परिचित गलियो में भी चैन की सास न लेने दी। फिर मित्रो की चिन्ता भी उसे सता रही थी।

नगर में सब कुछ जैसे पूर्ववत् था। सकरी गलियो में ऊट गुर्रा रहे थे। दुबले-पतले कुली भारी बोझो के नीचे दबे जा रहे थे। जवान मुसलमान छोकरिया सिर से बुरका उठाकर अपने मिलने-जुलनेवालो की ओर देख देखकर मुस्करा रही थी। बटेरे लड रही थी, लोग बाडे की परछाइयो में उकड़ू बैठे इस खेल का मजा ले रहे थे और हुसका हुसकाकर पक्षियो को उत्साहित कर रहे थे। फेरीवाले चक्कर लगा रहे थे। उनके मुह से पसीना टपक टपककर जमीन पर गिर रहा था। दो विवाहित हिन्दू स्त्रिया माथे पर नीली बिन्दिया लगाये आपस में चटर चटर कर रही थी। और हल्के नीले आकाश में बादल जैसी हल्की,

दूध जैसी सफेद और मेघ जैसी उदास महल की रूप-रेखाए दिखाई पड रही थी।

परन्तु फिर भी मव कुछ पूर्ववत् न था।

अफनासी जल्दी जल्दी अपने घर की ओर वढा। उसके पडोसी, वृढे कुम्हार ने उसे पहचाना और अपने दरवाजे पर से ही झुककर अभिवादन करने लगा। अफनासी मुस्कराया। उसने वैल रोके और गाडी से उतरकर घर का दरवाजा खटखटाने लगा। हसन ने उसकी आहट सुन ली थी और दस्तक के ढग से ही मालिक को पहचानकर, विना कुछ पूछे-गछे, दरवाजा खोलने के लिए नगे पैरो भागा चला आया था

यहा कोई परिवर्तन न हुआ था। कूडा माफ किया जा चुका था, फर्श पर झाडू लग चुकी थी। अफनासी सोफे पर वैठकर अपने इर्द-गिर्द देखने लगा। उमे ऐसी खुशी हो रही थी मानो अपने वतन लौटा हो। किन्तु यह खुशी क्षणिक थी।

"हसन!" अफनासी ने पुकारा, "वताओ, यहा क्या क्या हुआ था? कुछ जानते हो?"

हसन दरवाजे की चौखट पर खडा हुआ। उसने इधर-उधर वडी सतर्कता से एक निगाह डाली—यह जानने के लिए कि उसकी वात कोई सुन तो नही रहा है, फिर निकीतिन की ओर वढ आया।

"यहा की हालत वडी खराव है, खोजा!" वह फुसफुसाया, "वडी खराव मैं तुम्हे सव कुछ वताऊगा और अगर तुम्हे कोई वात वुरी लगे तो मुझपर गुस्सा मत होना। तो जो कुछ हुआ और जो कुछ मैं जानता हू वह तुम्हे वता रहा हू"

हसन ने आद्योपान्त वे सारी बातें कह डाली जिन्हे निकीतिन पहले ही मुस्तफा से सुन चुका था। बस उसने उसमें ब्यौरे की बाते और बढ़ा दी। फिर जैसे परेशान-सा होकर कहने लगा–

"बहुतो को तो यही सुनकर हैरत हो रही थी कि इस साजिश में कर्ण का हाथ हो सकता है। फिर यह अफवाह भी सुनाई पड़ने लगी हा आप परेशान मत हो! बेशक रत्न-तराश की जान-पहचान मावलो से थी। और यह भी खबर उडी कि खजानची मुहम्मद अल्लाह गवाह है, मैं उसका वफादार गुलाम रहा पहले खजानची दिल्ली में रहता था। वही कर्ण का बेटा राजेन्द्र भी रहता था "

"यह क्या कह रहे हो तुम?" निकीतिन पूछने लगा। उसका गला सूख रहा था, "नही, यह नही हो सकता।"

"खोजा, तुमने कुछ सुना है इसके बारे में?"

"मैंने तो यह सोचा भी न था कि खजानची "

"लोगो का कहना है कि वही। अब उसे यह मालूम हो चुका था कि बाप को अपने बेटे के कातिल का पता चला और उसने अपना पुराना हिसाब बेबाक़ कर दिया।"

अफनासी उठ बैठा–

"हसन, तुमने यह बात सुनी कहा?"

"नौकर-चाकर कह रहे है बाजार में भी चर्चा है

"हे भगवान!" अफनासी के मुह से निकल गया, "अरे कर्ण के बारे में यह बात तो मैंने ही उससे कही थी मैंने!"

हसन चौंक पडा–

"तुमने, खोजा?"

"कौन जानता था? कौन सोच भी सकता था?" दुखी होकर

निकीतिन चिल्ला पड़ा, "अच्छी बात है, मिया खजानची, अच्छी बात है!"

हसन ने क्रुद्ध अफनासी का हाथ छुआ।

"सावधान रहना, खोजा!" उसने कहा, "खजानची मुहम्मद महमूद गवान का नजदीकी दोस्त बन गया है। वह है साप। और सापो के लबी जिदगी होती है।"

"मैं देखता हू कि अब तुम भी उसकी तरफदारी नही करते? कभी तो उसके लिए आखें बिछाये रहते थे "

हसन ने सिर लटका लिया—

"खजानची यहा आया था। तुम नही थे। बडा लालपीला हो रहा था उसने मुझे खूब मारा पीटा और जब मैंने कुछ कहने के लिए मुह खोला तो मेरे मुह पर थूक दिया। बोला मैं गुलाम हू लेकिन मैं गुलाम तो नहीं हू। तुमने तो मुझे आजाद कर दिया है न?"

"हा," निकीतिन ने उत्तर दिया, "तुम गुलाम नही। चाहते तो तुम भी उसके मुह पर थूक सकते हो। तुम उससे ईमानदार आदमी हो अफ़सोस कि आदमी आदमी को तुरन्त नही पहचान पाता!"

और उसकी मुट्ठिया भिच गयी।

कमजोर आखो वाला ब्राह्मण राम लाल, ताडव मुद्रा में शिव की स्वर्ण-प्रतिमा पर निगाह डालते और अफनासी से नजर चुराते हुए, बोला—

"हमारे मुह से तो हसी मजाक़ में भी झूठ न निकलेगा "

"अच्छा, जो कुछ आप जानते है, वह तो बता दें।"

"अफवाहें ठीक होगी इसमें मुझे कोई विश्वास नही।"

अफ़नासी तत्काल दरी पर से उठ पडा। उसने इस सतर्क और भयभीत बूढे से कुछ पूछकर व्यर्थ ही अपना समय बरबाद किया।

"नमस्ते।" निकीतिन रुक्षता से बोला। ब्राह्मण ने हाथ अपनी छाती पर रख लिया।

अब अफ़नासी निर्मल के घर की ओर चल पडा। शायद कपडो का यह व्यापारी ही कुछ जानता हो।

वह बडे बडे डग भरता, और छाह में चलने की भी परवाह न करता हुआ, अपने रास्ते बढ रहा था। सास लेना तक उसके लिए कठिन हो रहा था। परन्तु, उसने अपनी चाल नही धीमी की।

रगू के सिर पर कितनी बडी मुसीबत टूट पडी थी—रत्न-तराश के घर में न कर्ण ही था और न झाकी और उसका बेटा ही। और फिर कोई यह तक न जानता था कि उनका हुआ क्या।

निकीतिन ने सोचा—सारे बीदर में अकेला मै ही बेचारे रगू की मदद कर सकता हू। मैने उसे दोस्त कहकर पुकारा है। लेकिन मदद कैसे करू? और क्या करू? झाकी के पास तक पहुचने का कोई सूत्र मिले तो कुछ किया भी जाये, यदि सचमुच कर्ण को मार डाला गया है।

निर्मल उसे घर ही में मिल गया। वह बास की छत के नीचे खडा हुआ कपास के गट्ठर उतारने में लोगो की मदद कर रहा था।

निर्मल ने अफनासी को देखा और, सहसा घबडाकर, उसे घर के भीतर ले गया। निकीतिन कडवी हसी हस पडा। निर्मल के चेहरे से ही पता चल रहा था कि राम लाल की भाति वह भी बीदर की घटनाओ से बेहद डरा हुआ है।

नारियल का पानी पीने से इनकार करते हुए, अफनासी ने तुरन्त अपने आने का उद्देश्य कह डाला।

निर्मल ने उदास होकर हाथ फैला दिये—झाकी का क्या हुआ कौन जाने? भावलो के साथ कर्ण को भी फासी दे दी गयी थी। उन दोनों के सिर खम्भों पर लटकाये गये थे। खान उमर की खाल खीचकर उसकी लाश सारे शहर में घुमायी गयी थी। दसियों हिन्दुओं को गिरफ्तार किया गया था। भगवान की कृपा है कि मैं अभी तक बचा हुआ हू! नही नही, मैंने कुछ नही सुना! और अगर निकीतिन झाकी की मदद करना चाहे तो अपने मुसलमान हिमायतियो के पास जाये। वे तो सभी कुछ जानते हैं।

रास्ते में निकीतिन अपने कुछ और हिन्दू दोस्तों से मिला और आखिर खाली हाथ घर लौट आया। कुछ लोगो ने रगू के कष्टो के प्रति सहानुभूति प्रकट की, कुछ चुप रहे परन्तु उनमें से एक भी ऐसा न था जिसे सचमुच किसी बात की कोई जानकारी होती। बस एक ही चारा रह गया था—किले में जाना। अफनासी ने निश्चय किया कि वह फरहत-खान से मिलेगा। कभी इस तरफदार ने उसमें और रूस में रुचि दिखायी थी, उसे पुस्तक भेंट की थी और मदद करने का वादा किया था। शायद वह

निकीतिन' तालाब में अच्छी तरह नहाया-धोया और मुसलमानी कपडे पहनकर तैयार हो गया। चूडीदार पैंजामा, हल्का कुरता, सिर पर पगडी। वह हसन को पुकारकर कहने लगा—

"मेरे साथ चलो! मेरा छाता लिये रहना शान बढाने के लिए।"

जब निकीतिन हसन के साथ बीदर के किले के एक फाटक पर पहुचा, उस समय सूर्य डूबने की तैयारी कर रहा था।

दीवालो पर आखें चौंधिया देनेवाली धूप पड रही थी और ताड के पेड, गतिहीन, वायु में अकडकर रह गये थे। सभी चीजों से जैसे

गर्मी फूट रही थी। मौसम को देखते हुए दिन बेहद गर्म लग रहा था। फाटक पर बैठे हुए मुंशियो में चहलपहल शुरू हुई। अफनासी ने अपना नाम बताया और यह भी कि वह कहा जाना चाहता है। पहले तो इतना कह देना काफी समझा जाता था, लेकिन अब पख की कलम दावात में ही पडी रही। मुशी ने उसका नाम नही लिखा और दो पहरेदारो ने भाले लेकर उसका रास्ता रोक दिया।

"काफिरो को अन्दर जाने की मनाही है!"

"मुझे तो फरहत-खान के पास जाने की हमेशा इजाजत रहती थी!" क्रोध से निकीतिन बोला। उसने पहरेदारो की आखो में देखा।

"कह तो दिया कि काफिरो को अन्दर जाने की मनाही है," पहरेदारो ने उदास मुद्रा से दोहराया। उनके चेहरो पर कोई भाव न थे। अफनासी ने ओठ भीचे, मुडा और निकल गया। हसन भी उसके पीछे पीछे चलता रहा।

आज निकीतिन के घर में सन्ध्या उदासी बिखेर रही थी। अफनासी सोफ़े पर पडा पडा सोच रहा था कि उसे क्या करना चाहिए। हसन चुपचाप चूहे की भाति बगलवाले कमरे में खडबड करता रहा।

निकीतिन का दिल भारी हो रहा था। रगू को इस समय कितनी व्यथा हो रही होगी, वह इसकी कल्पना करते हुए करवटें बदलता रहा। उसकी किसी प्रकार मदद करनी ही चाहिए, करनी ही चाहिए! परन्तु हसन की आवाज़ से उसके विचारो में बाधा पडी।

"खोजा!"

"क्या है?"

"मै क़िले में जाऊगा।"

"तुम?!"

"हा मैं। मैं मुसलमान हू। मुझे जाने देंगे।"

निकीतिन बैठ गया। यह बात पहले उसके दिमाग़ में क्यों नहीं आयी?

"ठीक है, हसन! तुम जाओ, वहां फरहत-ख़ान के महल का पता चलाना और कुछ ऐसा करना कि वह तुम्हारी बात सुने। फिर कहना कि मैं उससे मिलना चाहता हूं। कोई बड़ा ज़रूरी काम है।"

"आप फ़िक्र न करें, ख़ोजा," हसन ने सिर हिलाते हुए कहा, "मैं सब कर लूंगा। और अगर ख़ान पूछे कि काम क्या है?"

"तो कहना, मैं नहीं जानता। बस यही जानता हूं काम ज़रूरी है।"

"अच्छी बात है, ख़ोजा। कह दूंगा।"

उस शाम को चले तो देर हो चुकी थी। सुबह सुलतान अपने दोस्त-अहबाबों के साथ शिकार खेलने गया था। तीसरे दिन कहीं हसन क़िले में दाख़िल हो पाया। वह सीधे फरहत-ख़ान के पास गया। उसने निकीतिन का सन्देश उसे सुना दिया। तीसरे दिन, शाम के समय फ़रहत-ख़ान ने अपने पहरेदारों के साथ निकीतिन को लाने के लिए एक पालकी भेजी।

निकीतिन ने उत्तेजित होकर तरफ़दार के महल 'रौनक़े दिल' की ओर देखा। पालकी उठानेवाले हबशी कहारों के हर कदम के साथ महल नज़दीक आ रहा था। वही फ़ौवारा, वही प्रवेश-द्वार, सगमरमर की वही सीढ़ियां, वही खम्भे...

फरहत-ख़ान भीतरी बगीचे में नक्काशीदार लकड़ी के मंडप में मेहमान का इन्तज़ार कर रहा था।

अफ़नासी ने तरफ़दार के आगे सिर झुकाया और ज़ोरों से मुस्करा दिया—

"आख़िर किसी तरह तुम्हारे पास आ ही गया, ख़ान!"

"कौनसी परेशानी में मुब्तिला हो गये हो तुम?" फ़रहत-ख़ान

ने पूछा, "तुम तो बीदर से यकायक गायब ही हो गये   इधर मुझपर भी एक मुसीबत ग्रा पडी," तरफदार ने ठढी सास ली।

"कैसी मुसीबत?"

"मेरा सेफी मर गया। ज़हरीली भाप उसकी नाक में चली गयी थी। ग्रब मुझे एक नये ग्रादमी की ज़रूरत है!"

"मुझे तुमसे हमदर्दी है, खान," खुले दिल से निकीतिन बोला, "सेफी मेहनती ग्रादमी था।"

"ग्रौर ईमानदार भी!" फरहत-खान ने तर्जनी उठाकर कहा, "यह खासियत सचमुच बहुत कम लोगो में मिलती है!"

दोनो चुप हो गये। निकीतिन को न जाने कैसा लग रहा था। बात कैसे शुरू की जाये यह उसकी समझ ही में न ग्रा रहा था। इसी समय तरफदार ने ग्रपनी उत्सुक निगाहे उठाकर जैसे उसकी मदद की।

"मैं तुम्हे तकलीफ दे रहा हू, मुझे माफ करना, ग्राला खान," ग्रफनासी ने ग्रपनी बात शुरू की, "खान उमर की बीदर में साज़िश खुल गयी थी   "

फरहत-खान ने काली ग्रौर हल्की भौंहे ऊपर उठायी ग्रौर सिर एक ग्रोर झुका दिया।

"उमर-खान की साज़िश," निकीतिन ने दृढता से कहा ग्रौर तरफदार की ग्राखो में ग्राखें डालकर देखने लगा, "कौन कौन पकडा गया है ग्रौर क्यो, उन सबका फैसला करना तो मेरा काम नही, हा मैं रत्न-तराश कर्ण को जानता था।"

"उसे तो फासी दे दी गयी।"

"यह तो मैं जानता हू। बेकार ही उसकी जान ली गयी।"

"तुम्हारे पास इसका सबूत है?"

"है।"

"क्या संबूत है?"

"मेरी बात ग़ौर से सुनना, ख़ान। मैं जानता हूं कि इस साज़िश का भंडाफोड़ किसने किया — ख़ज़ानची मुहम्मद और ख़ान उमर के सिपाही मुस्तफ़ा ने।"

"ठीक। अब ख़ज़ानची सुलतान की शिकारी बाज़ों वाली टुकड़ी का सरदार है और मुस्तफ़ा घुड़सवारों की एक टुकड़ी का।"

"...किसे पकड़ना चाहिए इस मामले में सिर्फ़ उन्हीं की सुनी गयी है।"

"वे इज़्ज़तदार आदमी हैं। उन्होंने तख़्त की हिफ़ाज़त की है।"

"सुनो ख़ान। कभी मैंने ख़ज़ानची की जान बचायी थी और उसने भी जुन्नर में मेरी मदद की थी।"

"हम जानते हैं।"

"यह बड़ा नीच है और झूठा भी। उसने अन्याय से कर्ण को फंसा दिया। पुराना हिसाब बेबाक़ किया है।"

"अगर हम यह भी मान लें कि कोई पुराना हिसाब बेबाक़ किया गया है तो फिर कर्ण को फंसाना अन्याय कैसे हुआ?"

"इसलिए कि जब इतने वर्षों बाद भी कर्ण ने ख़ज़ानची से बदला नहीं लिया तो वह सुलतान के विरुद्ध कैसे साज़िश कर सकता था?"

"बदला नहीं लिया?"

"ख़ज़ानची ने उसके बेटे को मार डाला था..."

निकीतिन ने फ़रहत को राजेन्द्र और ख़ज़ानची के बारे में सभी सुनी-सुनायी बातों, स्वयं अपनी अनिच्छित ग़द्दारी और बीदर में फैली हुई अफ़वाहों के बारे में सब कुछ बता दिया।

"अब मुझे याद आता है कि जब मैंने उससे कर्ण की चर्चा चलायी थी तो वह क्यों इतना घबड़ा उठा था," क्रोध से निकीतिन

बोला, "उस दिन मैंने ही शतरज की सारी वाज़िया जीती थी फिर भी वह चुप रह गया था। इसका अर्थ है कि उसका दिल साफ नही है!"

"लेकिन तुम्हारा यह सबूत कोई सीधा सबूत नही " तरफदार ने सतर्कता से जवाब दिया, "सिर्फ अन्दाज़ो और अफवाहो की विना पर किसी को गुनहगार ठहराना ठीक नही।"

"तो सबूत मै ढूढ लूगा। जानते हो वह मुझे भी तख्त का दुश्मन ही ठहरायेगा।"

फरहत-खान मुस्करा दिया।

" उसका विश्वास किया जा सकता है अभी कुछ ही पहले उसने महमूद गवान के सामने तुम्हारी पैरवी करते हुए कहा था कि जिन हिन्दुओ ने साज़िश में भाग लिया था उनसे तुम्हारी वहुत कम जान-पहचान है।"

"मुझे ऐसी पैरवी नही चाहिए!"

"मगर तुम यह गुत्थी सुलझाओगे कैसे? तुमने जो कुछ खज़ानची के वारे में कहा है उससे तो तुम्हारी ही वात उलटी पड़ती है। इससे तो यह सावित होता है कि वह सच्चा है, ईमानदार है और साथ ही साथ नीच है, मन का काला है। और इतनी खासियते एक ही आदमी में हो कैसे सकती है?"

"ऐसा आदमी विना फायदे पर आख रखें कुछ नही कर सकता। शायद इसलिए उसने मेरी पैरवी की है कि वह रूस जाना चाहता था।"

फरहत-खान ने आखें नीची की, वायें हाथ की अगूठी छुयी और शान्ति से उत्तर दिया—

"यह गलत है। वह जानता है कि कोई काफिला रूस नही जायेगा। तुमने सलतनत के वज़ीरे आज़म, महमूद गवान की मेहरवानियो

की कोई परवाह नही की थी। और उसी ने यह फैसला किया है कि तुम अब वीदर के वाहर नही जा सकते। और हा, शहर कोतवाल ने अपने पहरेदारो को यह हुक्म दे रखा है कि वे तुम्हे शहर के वाहर न जाने दें। वज़ीरे आज़म का कहना है कि इस्लाम कवूल करने पर ही भारत की ज़मीन पर तुम सफर कर सकोगे।"

और यह देखकर कि अफनासी चुप है फरहत-खान ने, एक क्षण चुप रहने के वाद, कहा—

"मेरी सलाह है कि तुम जल्दी करो।"

निकीतिन ने सिर लटका लिया।

"सोचूगा। अच्छा, एक मामले में मेरी मदद करो। मैं जानना चाहता हू कि कर्ण के पोते की स्त्री कहा है। उसने तो कोई गुनाह नही किया था। और उसका वेटा भी "

"मैं पता लगाने की कोशिश करूगा महमूद गवान का फैसला तुमने चुपचाप मान लिया? या शायद तुमने खुद ही यह फैसला कर लिया है कि तुम्हारा ईसाई मज़हव वाहियात है?"

"शायद " निकीतिन ने सीधा जवाव न दिया, "खान, मैं ठहरा तुम्हारा गुलाम। अब जाने की इजाज़त दो।"

"जाओ!" शान के साथ फरहत-खान ने आज्ञा दे दी।

यदि जाते समय निकीतिन ने मुडकर देखा होता तो उसने यह ज़रूर समझ लिया होता कि तरफदार उसे चकित दृष्टि से देख रहा है। इसका कारण भी था। रूसी सौदागर वरावरी का वर्ताव करता है, वडे लोगो पर इल्ज़ाम लगाने में नही डरता और हिन्दुओ की वकालत करता है और किससे? सलतनत के एक वाइज़्ज़त रईस से!

आखिर फरहत-खान ने तय किया कि यह सव वडा विचित्र है और धीरे से हस दिया।

किन्तु अफनासी ने न तो उसकी हैरानी पर ही कोई ध्यान दिया और न उसकी मुस्कराहट ही देखी। वह तो पहले ही बाग से बाहर हो चुका था।

हबशी कहारों ने उसके सामने पालकी झुकायी और पहरेदार पालकी के इर्द-गिर्द आ गये। जुलूस चल पडा।

परन्तु, किले के फाटक पर उसे कुछ देर प्रतीक्षा करनी पडी। कोई घुडसवार तेज़ आवाज़ में पहरेदारो को डाट बता रहे थे।

"सुअर के बच्चो!" निकीतिन को अशिष्ट-सी आवाज़ सुनाई पडी, "मैं दिल्ली के सुलतान का अमीर हू! तुम्हें अपनी बदतमीज़ी की कीमत चुकानी होगी! मुझे जाने दो!"

निकीतिन पालकी से झाकने लगा। फौजी वर्दी पहने हुए एक घुडसवार, तलवार की मूठ पर हाथ रखे, पहरेदार पर बरस रहा था।

परन्तु पहरेदार, अपने ऊपर नाराज़ होनेवाले इस आदमी के घोडे की छाती में भाले की नोक अडाये, उदासीन-सा खडा था।

"यहा तो एक ही सुलतान है–आफताबे जमा, आला मुहम्मद!" पहरेदार बुदबुदाया, "ठहरो, अभी हमारा सरदार आता है।"

अफनासी ने पालकी की धोक लगायी और परदा गिरा लिया। मुझे इन अमीरो या पहरेदारो से क्या लेना-देना! तो इसके माने है कि मैं रगू की कोई मदद नही कर सकता। मैं तो खुद ही इस दईमारे शहर में कैदी हू!

हबशी मज़े मज़े चलते रहे। पालकी धीरे धीरे हिलती रही। रात आसमान से उतरती रही।

निकीतिन की निराशा अकारण न थी। बीदर की सलतनत में महमूद गवान के शब्द ही क़ानून थे। रूसी यात्री के सिर पर खतरे की घटी बज रही थी।

दूसरे दिन अफनासी के एक कृत्य से तो आग में घी ही पड़ गया। उसके पास खज़ानची मुहम्मद का भेजा हुआ एक गुलाम आया, परन्तु अफनासी ने जाने से इन्कार कर दिया और बिना कोई बहाना किये हुए।

हसन बेहद घबड़ा गया था। परन्तु निकीतिन को सतोप था। उसे क्रोध भी आ रहा था और खुशी भी हो रही थी। वह समझ रहा था—इस इन्कार की मुझे गहरी कीमत चुकानी पड़ेगी। परन्तु शाति के क्षणो में भी उसे इसके लिए कोई भी पछतावा न रह गया था। आखिर उसने वही तो किया था जिसकी गवाही उसके दिल ने दी थी। इसके माने है कि उसने ठीक किया था। बेशक, खज़ानची समझ लेगा कि वह आया क्यो नही, परन्तु यदि वह बदला लेना चाहेगा तो अफनासी भी अपनी बचत ढूढ ही निकालेगा, अगर ज़रूरत पड़ी तो तलवार भी उठायेगा।

उसकी दशा कसे हुए तात जैसी हो रही थी। वह सतर्क था और किसी भी अप्रिय घटना का मुकाबला करने को तैयार।

दिन पर दिन बीतते गये परन्तु कोई घटना न घटी। लगता है सभी लोग 'उसे भूल चुके है। वह इसका कारण न समझ सका। अपनी ऊपरी सुरक्षा में उसे कोई विश्वास न रह गया था और इसी लिए जब वह दिन में भी शहर घूमने जाता तो तलवार बाधकर—पता नही कब, कौन; किस कोने से उसपर हमला कर बैठे। इस समय खज़ानची सब कुछ करा सकता है। अभी तक उसे किसी ने नही छेडा इसका एक ही कारण उसकी समझ में आ रहा था। प्रति दिन सैनिकों की छोटी छोटी और नयी टुकडिया बीदर से बाहर भेजी जा रही थीं, और यह बात किसी से भी छिपी न थी कि वज़ीरे आज़म नये हमले की तैयारिया कर रहा है। इस बार

चढ़ाई विजयनगर पर होगी। विजयनगर सबसे बड़े हिन्दू महाराजा की राजधानी थी। इस समय वज़ीरे आज़म सुलतान के अधीनस्थ राजाओ के पास हरकारे भेज भेजकर उनसे फौज, हाथियो, घोड़ो और खाने की जिन्सो की माग कर रहा था।

बेशक, इस होहल्ले में रूसी सौदागर की किसे सुध रहती?

परन्तु मुहम्मद क्या सोच रहा है?

वह उसे कभी न बख्शेगा—यह बात साफ थी। आखिर वह कुछ करता क्यो नही?

अफनासी सोच-विचार में अपना ही सिर खपा रहा था। खज़ानची का बर्ताव ज़रा भी उसकी समझ में न आ रहा था।

परन्तु अफनासी बहुत-सी बातो से अनभिज्ञ था। यह भी न जानता था कि वह दिल्ली का अमीर कौन था जिसे उसने फरहत-खान के पास से लौटते समय किले के फाटक पर देखा था। यदि वह इसे जानता होता तो सारी बाते साफ हो गयी होती, तब उसे यह सुनकर आश्चर्य न हुआ होता कि कोई तीन हफ्ते बाद खज़ानची की मौत सुलतान के शिकार के समय हुई थी और उसके शरीर को शिकारी तेंदुए ने चीरकर रख दिया था।

अफनासी के लिए अब इस खतरनाक दुश्मन से बचाने के लिए भगवान को धन्यवाद देना ही बाकी था।

असल में बात दूसरी ही थी जो न किसी की आखो ने देखी थी और न किसी के कानो ने सुनी थी।

बेशक निकीतिन ने यह समझने में गलती नही की थी कि खज़ानची उससे बदला लेगा। जब खज़ानची को मालूम हुआ कि अफनासी ने उसके पास आने से इनकार कर दिया, तो पहले तो उसके कान खड़े हुए और वह घबड़ा गया। उसने अनुमान लगाया

कि रूमी जो कुछ भी जानता है सब को सुना सुनाकर कहेगा। लगता है उसने फरहत-खान से सब कुछ कह दिया है। अब दूसरो से भी कहेगा। और अगर उसके कहने की जाच-पडताल की जाये, तब तो खजानची कही का भी न रहेगा। उसके पापपूर्ण अतीत को महमूद गवान कभी माफ न करेगा। इसलिए नही कि उसका अतीत अन्धकारपूर्ण था—वैसे कम ज्यादा किसका नही होता—पर इसलिए कि उसके बारे में सभी जान जायेंगे।

अपने भविष्य के बारे में सोचते हुए खजानची को कपकपी भर गयी। वज़ीरे आजम को अपनी सच्चाई और ईमानदारी पर गर्व जो था।

परन्तु, इस एक चोट के बाद उसपर एक चोट और पडी और वह बौखला उठा।

सुलतान के नज़दीक पहुचने के लिए उसने क्या क्या नही किया था। खान उमर की साज़िश का भडाफोड होने से तो उसकी शोहरत मे चार चाद लग गये थे। अब खजानची महज़ सौदागर न था, यद्यपि था वह मशहूर। अब वह दरबारी था और दौलत और इज्ज़त के दरवाजे उसके लिए खुल गये थे।

खज़ानची पहली बार सुलतान के दरबार में पहुचा, डरा डरा-सा, सुलतान के शिकारियो की पोशाक में—सोने के कामवाली शानदार हरी हरी वर्दी में।

यद्यपि सुलतान की प्रातःकालीन हाथ-मुह धोने की रस्म में उसका स्थान उतना महत्त्वपूर्ण नही था—खानो, अमीरो और सेनापतियो के पीछे और सईसो और शिकारी बाजो की टुकडी के बीच—फिर भी उसे सन्तोष था, इसलिए कि उसे सबसे अन्तिम पंक्ति में नहीं खडा होना पडा था।

खज़ानची बाजो की टुकडियो का सरदार था। यह साधारण काम न था। एक बाइज्ज़त काम था। ऐसे व्यक्ति से सुलतान बरावर यह राय ले सकता था कि वह शिकार के लिए किधर जाये और कौन कौन चिडिया अपने साथ रखे। ऐसा आदमी तो हमेशा सुलतान की निगाहो के सामने रहता है। वह वहुत कुछ कर सकता है वहुत कुछ! बस वह चापलूसी करता रहे, जी-हुजूरी करता रहे और सुलतान से अपनी माग तब पेश करे जब शिकार कामयाब रहा हो।

सुलतान खज़ानची से पाच ही कदम पर तो जा रहा था पर उसने खज़ानची की ओर देखा तक नही। फिर भी खज़ानची कुछ आगे झुक गया। उस पहले ही दिन उसे अपने भीतर विजय के गर्व का अनुभव हो रहा था।

शीघ्र ही वह अपनी नयी जिन्दगी का आदी हो गया और उसी की धारा में वह चला। उसके पुराने भय जैसे मिट गये। दरबार में उसकी दिल्ली के अपने किसी जान-पहचानवाले से भेंट नही हुई थी। उसे लग रहा था जैसे वह ठोस ज़मीन पर खडा है, निडर, अचल। हिन्दुस्तान में आदमी को ढेरो कामयाबिया मिल सकती हैं! हा, ढेरो! वह बगदाद के कुम्हार का बेटा है और अब आला सुलतान मुहम्मद का एक दरबारी! उसका भविष्य अभी और भी उज्ज्वल दिखाई पड रहा है। आखिर बीदर का सुलतान है ही कौन? अट्ठारह साल का छोकरा ही तो, जो अव्वल दरजे का ऐयाश है। महमूद गवान की मदद से मुल्क-भर की सुन्दरिया उसे खेलियो के रूप में भेंट की जाती है। सुलतान को तो मन वहलाना ही चाहिए! आफतावे-ज़मा को फिक्रो में मुब्तिला रहने की कोई ज़रूरत नही! महमूद गवान यही कहा करता है। सुलतान के

दरबार में शराब की नदिया बहती है, अफीम के घुए के बादल उड़ते हैं, सुन्दरियों की ता-थेई मे ज़मीन कापती है और गाने के समय दो सौ गवैये और तीन सौ बजवैये अपनी कला से दुनिया को चकित करते है। प्रातःकाल सुलतान का चेहरा पीला रहता है, सूजा रहता है। उसकी निगाहे शून्य जैसी दिखाई पड़ती हैं, मुह के कोने मुरझाये रहते हैं सुलतान को तो मन बहलाना ही चाहिए! महमूद गवान यही कहता है, और हुकूमत का बोझ रात दिन अपने कधो पर लिये लिये फिरता है।

हा, सुलतान को तो मन बहलाना ही चाहिए! खज़ानची यह सब समझता है। अभी सुलतान की कच्ची उम्र है, और उसमें राजकाज में दख़ल देने की काबिलियत नही है और वज़ीरे आज़म ने उसके ऐश के जो साधन जुटा रखे है उनसे मुह मोडना उसके लिए मुम्किन नही।

तो कभी तो वह समय आयेगा ही जब वह इस सकल्पहीन, चिडचिडे और चचल सुलतान से अपना मतलब गाठेगा? खज़ानची की विचारधारा यही टूट गयी। महमूद गवान ने तो उसपर एहसान किया था। अभी तो उसे पूरी फरमाबरदारी के साथ सुलतान की चाकरी करनी चाहिए। अभी

परन्तु खज़ानची मुहम्मद को तकदीर की एक ऐसी ठोकर लगी कि उसके सारे सपने और सारी योजनाए मिट्टी में मिल गयी।

दिल्ली के अमीर को खज़ानची से ऐसा बदला लेना था, जिससे खज़ानची बेहद डरता था। यह अमीर दिल्ली से भाग आया था। वह अपने उस शासक के ख़िलाफ साज़िशो में उलझ गया था, जो उस ज़माने से प्राय शक्तिहीन हो रहा था। निस्सन्देह दिल्ली के कुछ जागीरदार भी अमीर के ख़िलाफ हो गये थे। यही कारण

था कि उसे आकर बीदर में शरण लेनी पड़ी थी। वह यहाँ अपनी तीन हज़ार की सेना लेकर महमूद गवान की सेवा करने आया था। वज़ीर ने बड़ी खुशी से उसका स्वागत किया था।

दिल्ली से भागकर आये हुए इस अमीर को देखते ही खज़ानची की जैसे सुध बुध खो गयी। इस अमीर के भाई ने खज़ानची की सूदखोरी वाली कमीनी हरकतो से बरबाद होकर आत्महत्या कर ली थी।

मुहम्मद की दशा बहुत कुछ उस खरगोश जैसी हो रही थी जो दो कदम आगे, अपने ऊपर घात लगाये हुए विषधर के सामने घास में जडवत् खड़ा रह गया हो। और जिस प्रकार खरगोश अपने ऊपर सर्प के टूट पड़ने का इन्तज़ार करता है, उसी प्रकार मुहम्मद भी अपने दुश्मन की पहली चाल का इन्तज़ार करने लगा।

इसी लिए इन दिनो उसे अफ़नासी निकीतिन की कोई सुध न आयी थी।

और उसके दुश्मन ने भी कोई प्रतीक्षा न की। वह खज़ानची को क्षमा नही करना चाहता था। दिल्ली के अमीर ने सुलतान की शिकारी बाज़ो की टुकड़ी के इस सरदार के रूप में अपने उस दुश्मन को पहचान लिया था जिसने उसके खानदान को लगभग चौपट कर दिया था। सोने की कुछ मुद्राओ ने कतिपय बीदरवासियो की ज़बानें खोल दी थी और अमीर को मुहम्मद की सारी कारगुज़ारियो का पता चल गया था।

अमीर हैबत उस खानदान से था जिसका एक पुरखा हैबत-खान दो शताब्दियो पहले अवध में सूबेदार था और दिल्ली में कुप्रसिद्ध था। अमीर हैबत-खान का नाम अपने इसी प्रपितामह के नाम पर पड़ा था।

अमीर खानदानी अपने इस वुजुर्ग के दुखद अन्त को याद रखने के वजाय उमकी शक्ति और साहस की कहानिया सुन सुनकर ही फूले न समाते थे। वेशक इसमें सत्य का अश अवश्य था, पर पूरा मत्य यह था कि उसने नशे की झोक में किसी की हत्या कर डाली थी और सुलतान वलवन के हुक्म से उसे, कोडे लगाये जाने के वाद, मृत व्यक्ति की विधवा को सौंप दिया गया था जिसने इस पियक्कड स्वेच्छाचारी का गला अपने हाथो से काटकर उसे मौत के घाट उतार दिया था।

परन्तु सुलतान वलवन का ज़माना कभी का लद चुका था। उसने जिन राव-राजाओ की ताक़तें छीन छीनकर उन्हें अशक्त वना दिया था, अव वे सुधर रहे थे। उपर्युक्त खानदान के इस चिराग–अमीर हैवत–में पुरानी आदतो की जडें गहराई तक चली गयी थी। वह किमी भी वात में अपने पुराने वुज़ुर्ग से कम न था–उसमें उन्ही जैमी स्वेच्छाचारिता, उन्ही जैसी निर्ममता, उन्ही जैसी हृदयहीनता और उन्ही जैसी ऐयाशी आज भी मौजूद थी।

वीदर में अपने दुश्मन को पहचानकर, पहले तो, अमीर हैवत ने उसे सरे वाज़ार ठोकने और उसकी वेइज्ज़ती करने का निश्चय किया। परन्तु यह था वीदर और अमीर यह न जान मका कि यदि उमने ऐसा किया तो दरवारी इसके वारे में क्या रुख अपनायेंगे। महमूद गवान कभी किसी की मनमानी न वरदाश्त कर पाता। और फिर, किसी की सरे वाज़ार वेइज्ज़ती करने को उचित ठहराना भी आसान न था। इस औचित्य को प्रमाणित करने के लिए सवसे पहले अमीर के लिए यह स्वीकार करना ज़रूरी होता कि वह और उसका मृत भाई ज़रूरत पडने पर किमी के सामने हाथ फैलाने और क़र्ज़ लेने में सकोच न करते थे। धन-कुवरो को मिट्टी में मिलानेवाली

और बातो को छोड दें तो भी अकेले एक यही बात अमीर के नाम पर कालिख पोत देने को काफी थी। नही, अमीर हैवत उन लोगो में से न था कि अपना बदला लेने से बाज आता।

नवम्बर के मध्य में सुलतान ने घोषित किया कि वह जगली सुअरो का शिकार करना चाहता है। और एक दिन, जुमेरात को, प्रात काल किले से एक शानदार जुलूस बाहर निकला – घुडसवार, हाथियो की टुकडिया, हरम, तम्बू, शराब और तरह तरह के खाने लादे हुए ऊट।

खज़ानची मुहम्मद एक भूरे घोडे पर सवार, अपने शिकारी बाजो की टुकडी के साथ सुलतान के हरम के ठीक पीछे चल रहा था। उसका दिल धडक रहा था। आज भी अमीर ने उसे बडी तीखी दृष्टि से देखा था और अपने साथियो से कुछ कहा था।

चारो ओर भीड शोर-गुल मचा रही थी और खज़ानची, मन ही मन कापता हुआ भी, ऊपर मे मुस्करा रहा था।

शीतल प्रात, साफ आकाश, चमचमाती हुई रग-बिरगी वर्दिया, सुलतान की रखेलियो के हसी-क़हकहे, तोतो की बोलिया, नगाडो की गडगडाहट, बिगुल की आवाज़ – इनमें से कोई भी चीज़ खज़ानची को न सुहा रही थी।

वह जैसे नीद में आगे बढ रहा था और चारो ओर जैसे उसपर कोई सकट झपटा पड रहा था।

बीदर से कोई नौ मील दूर पडाव डाला गया। यही पहाडियो में गुम होती हुई एक छोटी-सी नदी बह रही थी। नदी के इर्द-गिर्द बाम और बेंत के वन थे। पानी के ऊपर वृक्षो की जडें लटकी हुई थी। नदी के ऊपर उडती हुई भयभीत बत्तखें और हस बादलो की तरह लग रहे थे। और यही इसी मैदान में, जगली सुअर पहली बार दिखाई पडे थे।

खज़ानची मुहम्मद ने भी सवों के साथ घुडदौड में भाग लिया। उसने देखा कि शिकार के लिए सिखाये गये चीते और वाघ जगली सुअरो पर छोडे गये। एक क्षण के लिए खज़ानची अपनी चिन्ताए भूल गया। पर इसी समय उसने देखा कि कुछ घुडसवार उसे शिकारी वाजो की टुकडी से एक ओर ले गये। उसके आगे आगे घोडे पर अमीर हैवत चल रहा था और अमीर के पास ही में उसके कुछ खास दोस्त-अहबाब।

उनके पास ही काले काले लचकदार तेदुए लम्बी लम्बी ज़जीरो में वधे हुए थे और पागल की तरह कूद रहे थे।

सारी घटना कैसे घटी यह किसी ने भी न देखा। जब खज़ानची मुहम्मद की चीख सुनकर उसके पास चलनेवाले लोगो ने घूमकर देखा, तव तक सव कुछ खत्म हो चुका था। खज़ानची ज़मीन पर पडा था, उसकी रीढ की हड्डी चीर दी गयी थी और अमीर हैवत और उसके सिपाही लहूलुहान मृत शरीर के पास से क्रुद्ध तेदुए को एक ओर हटा रहे थे। किसी को यह तक सदेह न हुआ कि उसे जाल रच कर मारा गया था। फिर खज़ानची कोई इतना वडा आदमी तो था नही कि उसकी मौत से सुलतान के शिकार पर कोई प्रभाव पडता। लोगो ने इसके वारे में सुलतान तक को खवर न की। उसके रग में भग नही पडना चाहिए! खज़ानची की लाश तुरन्त वहा से हटाकर, वीदर लाकर, दफना दी गयी। उसके उत्तराधिकारी का सवाल तय करना कोतवाल का कर्तव्य था।

खज़ानची की मौत की कहानी सुनकर अफनासी ने सलीव का निशान वनाया।

"सच्चाई भगवान देखता है!"

और यद्यपि यह वात ईसाई धर्म के विरुद्ध थी, फिर भी यह

सच था कि निकीतिन के हृदय में खज़ानची के प्रति रचमात्र भी सहानुभूति न रह गयी थी। उसका भाग्य अच्छा था कि वह एक खतरनाक दुश्मन के पजे से छूट गया। और यह अच्छा ही हुआ।

जिस दिन अफनासी को खज़ानची की खबर मिली थी उस दिन वह विशेष रूप से उदास था। उसने सुलतान के नगर से बाहर जाने का फायदा उठाया और शहर से निकल जाने का प्रयास किया। परन्तु उसे जाने की अनुमति न मिली। गुप्त रूप से उसकी निगरानी हो रही थी। आखिर, भारी दिल से, वह बीदर के अपने घर में फिर लौट आया। फरहत-खान ने उसे उसकी मागी हुई सूचना भी न दी थी, और खुद निकीतिन रगू की सहायता करने में असमर्थ था।

फिर हो क्या? और एक बार फिर उसकी निगाहे किसी आशा में हसन पर टिकी और एक बार फिर वह उसका काम करने को राजी हो गया।

वह रगू के पास गया और उससे कह आया कि अभी कुछ और इन्तज़ार करना चाहिए। अभी इन्तज़ार करने की ज़रूरत है।

आठवा अध्याय

चार महीने और बीत गये। हल्की ठढक के दिन भी गुज़र गये। चिलचिलाती हुई गर्मी पडने लगी थी। पक्षी अन्यत्र उड जाने की तैयारी कर रहे थे। सारसो का झुड किलकारिया भरता हुआ भटक रहा था। बटेर आखो से ओझल हो चुके थे। खेतो में उनकी तेज़ आवाज़ें न सुनाई पड रही थी। हस भी, चौंधियाते हुए प्रकाश

में, काफी उचाई पर उड रहे थे। वीदर के तालावो के ऊपर वहनेवाली सान्ध्य वायु में वत्तखो के परो की फडफडाहट गूज रही थी। साप केंचुल वदल रहे थे।

निकीतिन अव भी शहर ही में रह रहा था। वह कई वार फरहत-खान के पास भी गया था। झाकी के वारे में उसे इतना ही पता चल मका था कि उसे कोतवाल के हरम में दे दिया गया है। उसे वहा से वापस लाना असम्भव था। खवरे तो यह भी सुनने में आ रही थी कि कोतवाल उसपर लट्टू है। अफनासी ने हसन द्वारा यह दुखद समाचार रगू को कहला भेजा और हसन ने आकर वताया कि यह खवर सुनते ही रगू के दिल पर कोई भयकर चोट लगी और वह उससे एक शब्द भी कहे-सुने विना कही निकल गया।

स्वय अफनासी की स्थिति भी डावाडोल थी। भाग निकलने के दो प्रयत्नो में असफल रहने के वाद अव वह फ़रहत-खान से भी किसी दया की आशा न कर सकता था। इस प्रकार की प्रार्थना से तरफ़दार सिर्फ परेशान ही होता। फिर आजकल फरहत-खान काम में वुरी तरह व्यस्त था—सेना तैयार करनी थी, अपनी तरफ़ में जाना था, मालगुज़ारी वसूल करने के लिए सख्ती करनी थी, चढाई के लिए तैयारिया करनी थी। ऐसे में उसे रूसी सौदागर में कौनसी दिलचस्पी हो सकती थी?

इन्ही दिनो नौरोज़ पडा। मुसलमानो का नया वर्ष का त्योहार, जो मुहर्रम के वाद पडता है। यह दिन शिया अपने इमाम हुसेन की याद में मनाते हैं।

धार्मिक नियमो के अनुसर मुसलमान नौरोज़ के एक महीना पहले से ही हर शाम अपने मकानो की छतो पर आग सुलगाते हैं।

ग्राग की लपटें, एक दूसरे की ग्रोर देख देखकर, जैसे ग्राख मिचौनी खेलती हैं, हिलती-डुलती है। लगता था कि सारा वीदर ग्रग्नि की जिह्वा पर उडकर इस पापी ससार से दूर भागा चला जा रहा है। धुग्रा देती हुई ग्राग जैसे इस्लाम की शक्ति का नारा लगा रही थी। मुसलमान उस ग्राग को देखता ग्रौर उसका कलेजा ठढा हो जाता—उसे लगता जैसे वह ग्रपने ही मादरे वतन में रह रहा है।

निकीतिन को रूस की याद हो ग्रायी। उसका दिल भर ग्राया।

विजयनगर के विरुद्ध लडने के लिए महमूद गवान ने सेनासहित जिन जिन राजाग्रो को ग्राने का न्यौता दिया था वे सव नौरोज़ के वाद से वीदर में एकत्र होने लगे थे। ये राजे, वीदर की चहार-दीवारी के पास ग्रपनी सेनाए छोडकर, स्वय नगर की सडको से होते हुए किले की ग्रोर जाते थे।

सोने, मोतियो ग्रौर जवाहरात से लदे हुए राजे-महाराजे हाथियो की झूलो की शोभा वढा रहे थे। महावत चमचमाते हुए ग्रकुश हिला रहे थे।

दो राजे ग्रपने साथ कुछ कम सेना लाये थे। वज़ीरे ग्राज़म ने क्रुद्ध होकर उन्हें तव तक के लिए किले में वन्द कर रखा था जव तक उनकी ग्रोर से वीस वीस हाथी ग्रौर कुछ हज़ार की पैदल सेना ग्रौर नही ग्रा जाती। राजाग्रो ने इस हुक्म के ग्रागे सिर झुकाया भी था। निकीतिन ने लडाई की ये ज़ोरदार तैयारिया देखी ग्रौर सैनिक के रूप में भरती हो जाने का विचार करने लगा। उसे लग रहा था कि रास्ते में भाग निकलना उसके लिए कठिन न होगा।

यही प्रार्थना लेकर वह फरहत-खान के पास गया ग्रौर यह जानकर उसे वडी प्रसन्नता हुई कि उसकी मुराद वन ग्रायेगी। ग्रव वह भी ग्रपने सफर पर निकल सकेगा। फरहत-खान ने वताया कि

अफ़नासी को उसी की फौज के साथ जाने का हुक्म मिल गया है। उसे हाथियो की सेना के साथ साथ चलने को कहा गया।

इस प्रकार, मार्च के अन्त तक कही उसे बीदर की नज़रबन्दी से निजात मिली।

भारी भारी हाथी मन्थर गति से चल रहे हैं। उनकी पीठ पर से अनन्त दूरी तक, दक्षिण में जाती हुई सेना फीते जैसी दिखाई पडती है। दौडते हुए ऊट, और उनपर भालो और तीर-कमानो से लैस सिपाही, घुडसवार और सख्त कदम बढाती हुई पैदल फ़ौज।

सुलतान की फौज, महमूद गवान की फौज, फरहत-ख़ान की फौज रगबिरगे कपडे, हवा में लहराते हुए सब्ज़ परचम। सभी तरफदारो की फौजें एक ही दिशा में, विजयनगर की ओर बढ रही है। महमूद गवान दक्षिण में हिन्दुओ की ताक़त को तहस-नहस कर डालेगा। न जाने कब से वज़ीरे आज़म इनके सपने देख रहा है, आखिर अब उसके सपने साकार होगे। हर रोज़ सवेरे और शाम को मुल्ले अपनी अपनी नमाज़ में अल्ला ताला से इस्तदुआ करते है कि वह मुहाफ़िज़े तख्त और जलाले काफ़िरान, महमूद गवान को फतह अता करे।

खुद वज़ीरे आज़म भी अल्लाह से यही दुआ मागता है। निकीतिन ने उसे कई बार नज़दीक से देखा है। और वह क्यो न दुआ मागता! विफलताओ का सामना करना दूसरो की अपेक्षा अकेला वही सबसे अधिक जानता है। सारे राज्य की पूरी शक्ति इस आक्रमण पर लग गयी है। इस चढाई पर बेतहाशा धन फुक रहा है।

डेढ लाख सिपाही—सभी को खाना चाहिए, सभी को हथियार। उन्हे विजयनगर की ओर जो बढना था। फिर हाथी, घोडे, ऊट,

गोले, बारूद—इन सब के लिए सोने की जरूरत है, इनपर बेहद खर्च बैठता है।

इन सब से मुनाफा भी होना चाहिए, वरना   वरना सलतनत की ताकत पानी का बुलबुला बनकर रह जाये और यदि ऐसा हुआ तो फिर कभी बहामनियो को वह शक्ति नसीब ही न होगी। इसके माने हैं कि एक बार फिर तख्त पलटने लगेगा, एक बार फिर महमूद गवान की ताकत जवाब देने लगेगी   वजीरे आजम खुदा की इबादत करता है।

निकीतिन चारो ओर एकटक देख रहा है, उसका अन्तर काप रहा है। उसे मौका मिलते ही भाग खड़ा होना चाहिए, सतर्क पहरेदारो की आखो में धूल झोक कर। सवाल सिर्फ यही है कि वह मौका उसे मिलेगा कब। अफनासी सैनिको की पलटनें देखता हुआ अन्दाज लगाता है, सोचता-विचारता है। और पलटनें मैदान से होकर

चली जा रही हैं। अभी मौका नही है। मैदान में निकल भागने की कोई युक्ति नही। वह हसन की ओर देखता है, हसन की ओर जो हर हारे-अटके में उसके साथ है, जो सब कुछ जानता है।

खज़ानची मुहम्मद के भूतपूर्व गुलाम में बडा परिवर्तन आ गया है। वह अब एक साल पहले का हसन नही रहा।

और यह परिवर्तन आया था बिल्कुल अनजाने। शायद अफनासी को ही वैसा लग रहा था—वह हर समय हसन के साथ रहने का आदी जो हो चुका था। खैर, कारण कुछ भी क्यो न हो, अब हसन चुप्पा न रह गया था और न हर किसी के आगे घुटने टेकता या मिजदा ही करता था। अब तो अफनासी उसके साथ सीता के बारे में भी बाते कर सकता था और निकल भागने की अपनी योजना पर भी।

"रायचूर के उस पार," हसन कहता है, "वहा, कृष्णा नदी तक जानेवाले रास्ते में पहाड शुरू हो जाते हैं। वहा से निकल भागना आसान रहेगा "

निकीतिन हसन की बात सुनता है। अब तो रायचूर की लाल-सी मिट्टीवाली ज़मीन भी पीछे छूट चुकी है और सेना मकरे-से दर्रों से होकर आगे बढ रही है।

यहा ऊचे ऊचे पहाड है और ऊबड-खाबड रास्ते। एक ऐसे ही रास्ते पर पहाड गिरने से सौ आदमी और बीस हाथी साफ़ हो चुके हैं। इनमें से कुछ हाथी, कही नीचे पडे हुए, पैर टूट जाने के कारण बडी दर्दनाक आवाज़ में चिग्घाड रहे है और सेना है कि बढ रही है, बढ रही है। सिपाहियो के चेहरो पर शान्ति है। लगता है जैसे उन हाथियो की आवाज़ सैनिको के कानो में नही पडती।

हसन की आशाए सफल न हुईं। पहाडों में निकल भागना तो

श्रौर भी कठिन है। इधर-उधर कतरानेवाला कोई छोटा-मोटा रास्ता तक नही, पीछे लौटना सम्भव नही—पीछे तो जहा तक निगाह जाती है, पलटन ही पलटन दिखाई पडती है। फिर बिना रास्ता जाने पहाडो पर चढना श्रौर श्रनजानी जगहो में भटकना भी तो मुम्किन नही—कौन जाने वहा शेरो या बाघो से सामना हो जाये।

निकीतिन फौज के साथ साथ कृष्णा नदी तक पहुच जाता है। वह इस नदी का जल पहचानता है—पागलो की तरह बहनेवाला जल, निर्ममता का प्रतीक उसका काला रग।

कृष्णा के तट पर फौज दो दिन के लिए पडाव डालती है, नदी पार करने की तैयारी करती है, श्राराम करती है।

फरहत-खान का एक हरकारा श्रफनासी के पास श्राता है। तरफदार का सुझाव है कि निकीतिन खान के ही साथ चलनेवाले उसके नौकरो की पलटन के साथ श्राकर मिल जाये।

खबर बुरी थी, फिर भी बाह्यत वह ऐसी मुद्रा बनाता है जैसे उसे खान की मित्रता की बडी चिन्ता है। निकीतिन समझता है—या तो श्रभी या कभी नही।

"खान से कह दो, श्रा रहा हू," वह हरकारे को उत्तर देता है। हरकारा श्रब भी तरुण है, "बस, थोडे-से कर्ज वसूल करने हैं, कर लू, श्रौर श्राया।"

हरकारे के चेहरे पर श्रनादर सूचक मुस्कान बिखर गयी। सौदागर से श्रौर उम्मीद ही क्या की जाये? हरकारा घोडे को एड लगाता है श्रौर घोडा पिछले पैरो पर घूम जाता है।

निकीतिन हसन को पुकारता है।

वे चुपचाप श्रपनी तैयारिया करने लगते हैं। पास ही चार सिपाहियो ने, जो पासा उछाल रहे है, हरकारे से हुई उसकी बातचीत

सुन ली थी। अब-तब कुछ मुसलमान उनके पास से होकर आ-जा रहे हैं। जब तक हसन रेशमी कपडे में कुछ पुस्तकें बांधता है और कुछ खाना रखता है तब तक अफनासी खिलाडियों के बीच आ जाता है।

लालची भूरे हाथ पासा फेंक रहे हैं और चार जोडी आंखें उसे उछलते-गिरते देख रही हैं।

अफनासी जमीन पर एक चमचमाता हुआ दीनार गिरा देता है जिसकी झन्नाहट सुनकर सिपाहियों की चखचख बन्द हो जाती है। असली बात खिलाडियों की समझ में तुरन्त नहीं आती। पर, धीरे धीरे उनके खीझे हुए चेहरों पर मुस्कान बिखर जाती है और वे मुह बा देते हैं। सचमुच का दीनार! अभी तक तो वे लोग उधार खेल रहे थे, भावी लाभ की आशा में। बेशक खेल में गरमी आ चुकी थी, लेकिन कौन जाने हारनेवाला लडाई में मार ही डाला जाये तो! सौदागर धोखा नहीं देगा। वह तो फौरन पैसा दे रहा है। वह दीनार पर दीनार दाव पर लगा रहा है। उसने कनखियों से देखा– हसन जाकर तम्बुओं के पीछे गायब हो चुका है। शीघ्र ही वह पहरेदारों की कतार भी पार कर लेगा। वहा बांस के जगल के पास वह इन्तजार करेगा अफनासी के हाथ कापते हैं। उसका दुर्भाग्य कि वह बराबर जीतता ही जा रहा है। ज़रूर भी हो ये दीनार। यह जीत तो सारा गुड गोबर किये दे रही है। पर जीतते हुए आदमी उठकर जा भी तो नहीं सकता।

निर्दीनिन पासा फेंकता है दो और तीन एक और चार एक और दो आखिर वह दीनार हार ही गया।

अफनासी सिपाहियों को पैसा चुकाता है, और हाथ फैलाता हुआ उठ खडा होता है। वह अब अधिक नहीं खेल सकता। ऐसे तो वह मिनटों में कगाल हो जायेगा।

सिपाही बड़े खुश हैं और हसते हुए, उसे धीरज बधाते हैं। निकीतिन अपने चारो ओर बेचैनी से देखता है। उसका गुलाम कही ग़ायब हो गया। उसे ढूढना चाहिए। आप लोग मेरा सामान देखते रहेंगे न? मैं जल्द ही लौट आऊगा फौजी चिल्लाते हुए हामी भरते हैं और सिर हिलाने लगते हैं। खोजा, तुम निश्चिन्त रहो!

"ये लोग हाथ मारने से कभी बाज़ न आयेंगे!" निकीतिन समझता है। लेकिन अब उसे इस बात की कोई चिन्ता नही।

वह इधर-उधर सुलगती हुई आग से होता हुआ शिविर के उस पार तक चला जाता है। सिपाही अपने अपने कामो में लगे हैं। निकीतिन ऐसी मुद्रा बनाता है मानो कुछ ढूढ रहा हो। यह रहा नौकरो का तम्बू – उसके सामने एक लम्बे-से बास पर घोड़े की पूछ बधी है कुछ दाढी-वाले ठहाके मार मारकर हस रहे हैं घुड़सवार अपनी तलवार पैनी कर रहा है हर कदम पर उसे ऐसा लगता है जैसे परिचित चेहरे उसे घूर रहे हैं। उसका दिल बैठा जा रहा है।

"ठहरो!"

यह पहरेदारो की कतार है। सिर पर ज़िरहटोप डाटे और हाथो में भाले और ढाल लिये एक पहरेदार उसे नज़दीक आने का इशारा करता है। वह धीरे धीरे उसके पास जाता है। उसे कुछ बास काटने हैं। यह रही कुल्हारी। पहरेदार अनमनेपन से सिर हिलाता है और मुड जाता है। निकीतिन का कठ सूख जाता है। वह भावहीन पहरेदार की पीली ढाल पर बने चादी के कामवाले छल्ले देखने लगता है। फिर, धीरे धीरे वह बासो की ओर बढता है। बस, अब बास कोई पचास कदम ही रह गये है। अफनासी झुककर अपने बूट ठीक कर लेता है। बस जल्दी न करनी चाहिए।

उसके और शिविर के बीच का फासला बढता ही जा रहा था।

उसे ऐसा लगता है कि उसे कोई तीर का निशाना बना दे रहा है। आखिर वही हुआ जिसका उसे भय था। उसके पीछे लोग, पूरे अधिकार के साथ और धमकियां देते हुए, चीख-चिल्ला रहे थे।

परन्तु अफनासी मुडकर नही देखता। दो ही छलागो में वह जगल तक पहुच जाता है। उसके मजबूत हाथ बास हटा रहे हैं और कधे उन्हे एक ओर झकझोर रहे हैं। उसका शरीर पसीने पसीने हो रहा है, उसकी पगडी गिर पडी है, वह घने घने बासो से होकर बढता है, गिरता है, उठता है, दौडता है "हसन! हसन!" अफनासी जगल में चीखता है। पर हसन पहले से ही उसके पास खडा है। उसके मुरझाये हुए चेहरे पर खतरे की आशका से मुरदनी-सी छा गयी है। दोनो टेढे-मेढे रास्तो पर दौड रहे हैं, तब तक दौडते हैं जब तक अशक्त होकर जमीन पर नही गिर पडते। शुरू शुरू में न तो वे कुछ देखते ही हैं, न सुनते ही। उनकी आखो के सामने अधेरा छा जाता है, लेकिन फिर जैसे उन्हे सब कुछ दिखाई पडने लगता है। उनके शरीर में खून का दौरा इतना तेज हो जाता है कि उसकी सर सर कानो तक में सुनाई पडती है। आखिर यह दौडा शान्त होता है। कुछ मिनटो तक दोनो चुपचाप कुछ सुनते हैं। परन्तु उन्हे सुनाई पडती है, अपरिचित पक्षियो की चें-चें। बेशक, उनका कोई पीछा नही कर रहा है। निकीतिन आस्तीन से माथा पोछता है, सूखे और गर्म ओठ चाटता है और हसन की ओर देखता हुआ कह उठता है—

"खून पोछ डालो, हसन तुम्हारे गाल में चोट आ गयी है।"

फिर भी उसे विश्वास नही होता कि उसका भाग निकलने का प्रयास सचमुच सफल हो गया है। वह उठता है और हसन को सकेत करता है—चल देना चाहिए, तुरन्त चल देना चाहिए।

कृष्णा नदी के तट पर घने घने दुर्भेद्य वन हैं। लताए एक दूसरी में

इस तरह उलझी हुई रहती हैं कि आदमी के लिए वन में प्रवेश करना खतरनाक है। परन्तु, दोनो जैसे उनकी छाती चीरते हुए बढे जा रहे है। इन शीतोष्ण वनो में भी जैसे निकीतिन को सन्तोष है। अब कोई डर नही।

सन्ध्या जल्दी जल्दी उतर रही है। भगोडे पेडो पर चढ़ जाते हैं। जमीन पर रात बिताना खतरे से खाली नही। सोना भी तब तक असम्भव है जब तक आदमी अपने को शाखा से न बाध ले। प्यास जैसे उनका दम तोडे दे रही है। उन्हे भूख की याद हो आती है। परन्तु निकीतिन खुश है। वह स्वतत्र है, अपना मालिक है। और अब कई महीनो बाद वह खुलकर हस रहा है। पास ऊघते हुए छोटे छोटे बन्दर, उसके कहकहो से डरकर, जैसे उत्तर में चिचियाते जा रहे है।

"जाने भी दो महमूद गवान को बिना हमारे!" निकीतिन चिल्लाता है और उसे अपनी प्रतिध्वनि सुनाई पडती है—"हमारे आरे आरे "

जगलो की शीतोष्ण रात। कितनी उदाम, कितनी भयानक। दिन की रोशनी में भी यहा अधेरा रहता है, नमी रहती है। डालो पर कुछ खड खड हुई, बन्दर चिचियाये और हवा में कोई तेज गरज-सी गूज गयी नीचे अधेरे में दो हरी हरी आखें चमकी और फिर सब कुछ शान्त हो गया, अधेरे मे ढक गया

निकीतिन और हसन, एक दूसरे से सटे हुए से, बैठे हैं। जैसे ही उनके कानो में कोई सरसराहट पहुची कि उनके हाथ अपनी अपनी तलवारो की मठ पर पहुच जाते है। भोर होते होते अफनासी ऊघने लगता है। उसकी आखें खुली थी और वह अर्द्धचेतन जैसी अवस्था में था।

दिन निकला और वे, सूर्य के प्रकाश में रास्ता ढूढते हुए, अपनी राह चल दिये। दूसरी रात उनके लिए मुसीबत की घटी सिद्ध हुई।

निकीतिन की शक्ति जवाब दे रही थी। उसने आँखें बन्द की ही थीं कि हसन की भयानक चीख सुनकर सकपका गया, उसका कलेजा मुह को आ गया। उसने देखा कि एक बडा-सा सर्प हसन के शरीर के चारो ओर लिपटा हुआ है और उसका दम घुट रहा है। गुलाम का हाथ तलवार तक न पहुच पा रहा था। बाद में क्या हुआ इसे निकीतिन भली भाति न समझ सका। पहले क्षण उसे यह जानकर बडा आश्चर्य हुआ कि उसकी तलवार सर्प के शरीर में ऐसे घुस गयी मानो मक्खन को काट रही हो। उसने साप के ठडी आखो वाले सिर के चार टुकडे कर डाले परन्तु उसके कुछ कुडल अब भी हसन के बदन में लिपटे हुए थे। वह इन कुडलो को देर तक काटता रहा। उसकी समझ में यह तक न आ सका कि वह उन्हे खीच ले सकता था।

हसन कराह रहा था। उसकी पसलिया बुरी तरह दुख रही थी। उसकी छाती और पीठ में नीली नीली बरतें पड गयी थी। दूसरे दिन चल-फिर सकना उसके लिए असम्भव था। खाने की चीजें समाप्त हो चुकी थी और प्यास बुझाने के लिए ओस काफी न थी। अफनासी ने हसन को कधो पर लादा और जिस ओर से आये थे उसी ओर चल पडा—मैदान की ओर।

उन्हे रास्ते में दो दिन लग गये। भूख, प्यास, थकान, चिन्ता और दर्द ने उन्हे बेहाल कर रखा था। आखिर उन्हे कृष्णा के दर्शन हुए। अफनासी रुक गया। उसने हसन को जमीन पर लिटा दिया।

"बाहर मत निकलना," हसन बोला, "लोग तुम्हे मार डालेगे। मैं अकेला जाऊगा, खिसकता हुआ।"

किन्तु उसके लिए तो खिसकना भी असम्भव था।

निकीतिन के ओठो पर एक उदास-सी हसी बिखर गयी। वह बासो के उस पार चमचमाती हुई नदी की ओर बढने लगा। आखिर

निकल भागने की उसकी योजना सफल न हुई। अफनासी ने आखिरी वास भी हटाया और एक क्षण के लिए मस्त शरावी की भांति अपने सामने देखने लगा। फिर धीरे से हसा। उसकी आखो से आसू झरने लगे। कृष्णा के सामने का सारा मैदान खाली था। मुसलमानी सेना कूच कर चुकी थी। अफनासी घुटनो के वल वैठा और सलीव का निशान बनाने लगा।

अब दोनो, जैसे घसिटते हुए, उसी रास्ते पर हो लिये, जिससे होकर महमूद गवान की फौज गुजरी थी। लगता था जैसे जमीन पर से कोई ववडर निकल गया हो। सडक के पास पडनेवाले हिन्दुओ के गाव तवाह और वरवाद कर डाले गये थे। रास्ते में राख के ढेर पड रहे थे—एक के वाद एक। और यद्यपि हसन अपने आप चल सकता था, फिर भी भूख से वेदम होने के कारण उनकी चाल वहुत धीमी थी। वास, जगली फल और जडो से भूख नही मिटती थी। पुस्तकों का थैला उनके लिए अलग मुसीवत बन रहा था। कमर में वधी हुई पेटी तक व्यर्थ के सोने और हीरो के कारण वहुत भारी लग रही थी। परन्तु निकीतिन इनमें से कोई भी चीज अलग नहीं करना चाहता था।

तीसरे दिन एक और गाव उनके रास्ते में पडा। यह गाव भी जलाकर राख कर डाला गया था। वहा के नष्ट-भ्रष्ट और वीरान घर बडे दयनीय लग रहे थे।

उन्होने मकानो में झाककर देखा—वहा सिर्फ़ टूटे हुए वर्तन और कुछ अगड-खगड पडे थे। एक मकान में तो उन्हे, एक अधेरे कोने में पडी हुई, कोई पुस्तक भी मिली थी। पुस्तक की लिपि से वे परिचित न थे।

निकीतिन ने पुस्तक ले ली, परन्तु हसन ने उसे वही छोड जाने की सलाह दी।

"कौन जाने यह हिन्दुओ का वेद पुराण हो," वह बोला, "फिर तो इसे साथ रखना खतरनाक होगा। ब्राह्मण उन लोगो से वदला लेते हैं जो उनके सिद्धान्तो में पैठने की हिम्मत करते है।"

"अगर तुम थक गये हो, तो किताव मै खुद ले चलूगा!" रुखाई से अफनासी ने जवाव दिया।

हसन चुप रह गया।

पाचवें दिन वे एक साधारण-से गाव में पहुचे जो तीन ओर से जगलो से घिरा था। यहा वे लोग कुछ दिनो तक ठहरे। उन्होने निश्चय कर लिया था कि वे कुछ आराम करके ही अपने रास्ते पर वढेंगे। दोनो बेहद थक चुके थे। दोनो डर रहे थे कि कही वे किसी वची-खुची फौजी टुकडी के हत्थे न चढ जायें।

गाव में उन्हे दो बूढे बैल और एक जर्जर-सी गाडी मिल गयी। उनकी वाछें खिल गयी। कम से कम पैरो को तो आराम मिलेगा ही। गाव के निवासियो ने दोनो की वडी आवभगत की। निकीतिन की शिष्टता और अपने रीति-रिवाजो के सबध में उसकी जानकारी देखकर सीधे-सादे ग्रामवासी उसपर लट्टू हो गये। मुसाफिरो की सहायता कर वे वडे प्रसन्न हो रहे थे। लग रहा था जैसे वे लडाई की ओर से निश्चिन्त थे। यहा कुछ दिनो तक ठहर चुकने के वाद निकीतिन और हसन आगे वढे।

दो हफ्तो तक वरावर पहाडो से होकर चलते रहे, फिर रायचूर की जमीन पार कर कुलूरी पहुचे। कुलूरी जिरहसाजो और रत्न-तराशो का गढ है। उन्हें रास्ते में किसी ने भी न रोका और न उनसे कुछ पूछा ही। कुलूरी में अफनासी को फिर शीत ज्वर चढा और उसे यहा कोई दो महीने तक चारपाई तोडनी पडी।

कुछ कुछ स्वस्थ होने पर उसे विजयनगर की चढाइयो की पहली

खबरे मिली। महमूद गवान की फौजें वहा का मोर्चा सभाले खडी थी। लौटनेवाले सौदागर काफिरो को बुरा-भला कहकर मालिक-अत-तुजार को उचित ठहराते थे। उन्होने बताया था कि विजयनगर सात दीवालो से घिरा है, नगर के सामने के बडे-से मैदान में पत्थरो के बडे बडे खम्भे हैं जो बढते हुए हाथियो और घोडो के लिए भयकर अवरोध है। नगर के एक ओर तुगभद्रा के ढालू किनारे हैं और दूसरी ओर—जगल।

सौदागर हमलो, चढ़ाइयो और लडाइयो की बातें किया करते। उनका कहना था कि महमूद गवान ने निश्चय कर लिया है कि वह विजयनगर पर क़ब्ज़ा करेगा, भले ही इसके लिए उसे कितना ही मूल्य क्यो न चुकाना पडे।

निकीतिन ने कुलूरी के रत्न-तराशो को, आब रखने के लिए, अपने वे थोडे-से हीरे दिये जिन्हे वह गोलकोडा से लाया था।

उसने रत्न-तराशो के काम को बडे ध्यान से देखा और हीरो पर आब रखनेवाला एक औज़ार खरीद लिया। यह चीज़ उसके काम आयेगी।

"अब तुम कहा जाओगे?" एक बार हसन ने उससे प्रश्न किया।

"कोठूर। मुझे सीता के गाव का पता चलाना है," निकीतिन ने जवाब दिया, "और तुम?"

"मैं आखिर तक तुम्हारे साथ रहूगा • लेकिन अब बारिश शुरू हो गयी है। हमें इन्तज़ार करना होगा।"

"तो क्या हुआ! करेंगे इन्तज़ार!"

और इस प्रकार बरसात खत्म होने तक प्रतीक्षा कर चुकने के बाद अफनासी फिर अपनी यात्रा पर चल दिया, और इस बार पूर्व की दिशा में। यह भारत में उसकी अन्तिम यात्रा थी।

दोनो वजर और कम उपजाऊ जमीन पर आगे बढते रहे। कही कहीं उन्हे कुछ किसान कुम्हडे, मिर्च, मटर और गाजर की क्यारियो के पास मिट्टी गोडते हुए दिखाई पड जाते थे।

अफनासी सोचने लगा—"यही सीता पैदल चली होगी। शायद उस पहाडी के पास सुस्ताने के लिए बैठी होगी, शायद उसने उन कुए का जल पिया होगा "

"हमारा रगू कहा होगा?" कभी कभी निकीतिन को रगू की याद आ जाती और उसका मन भारी हो जाता। "हसन, उससे भेंट तो होगी न? होगी न, हसन?"

"शायद!" हसन ने उत्तर दिया।

परन्तु उनकी फिर भेंट न हुई।

झाकी के दुर्भाग्य की सूचना पाकर रगू अपने साथ दो जवानो को लेकर मुसलमानी पहरेदार-दस्तो मे होता हुआ, किसी प्रकार विजयनगर पहुचा। यहा महाराजा महमूद गवान के आक्रमण की प्रतीक्षा कर रहा था।

नगर में सिर्फ पत्थर के बने मदिर और महल सुरक्षित बचे थे। प्रथानुसार, दुश्मन की चढाई के पूर्व, नगर के सभी मकानो में आग लगा दी गयी थी, इसलिए कि सारी प्रजा अपने राजा की इच्छा पर चलती रहे।

अब, जहा नगर-निवासियो को जगह मिल जाती वहीं जम जाते—झोपडो में, मामूली तम्बुओ में।

नगर में रगू और उसके साथियो की तरह के और भी दूसरे हजारो जवान और बहादुर हिन्दू थे।

ऐसे हिन्दुओ को भरती करके छोटी छोटी पलटनें बना ली गयी थीं और उन्हे किराये के टट्टू मुसलमानो के मातहत रखा गया था।

हिन्दुओ को हथियारो के नाम पर छोटे छोटे भाले और चाकू दिये गये थे। और किराये के मुसलमानो के पास तलवारे, धनुषवाण, ढाल और कटारें थी। वे इन नये रगरूटो को देख देखकर जैसे उनका मज़ाक उडा रहे थे। और, किराये के मुसलमान सिपाहियो की अपेक्षा, हिन्दू किसानो को खाना भी खराव दिया जाता था।

फिर भी ये हिन्दू युद्ध में भाग ले सकते थे। वे दुश्मनो पर टूट पडने का इन्तज़ार कर रहे थे।

रगू ने नगर की चहारदीवारी के सामने एक समतल मैदान देखा। उसकी पलटन, प्रात कालीन धुध को चीरती हुई, वहा पहुच चुकी थी। उसके कानो में हज़ारो पैदलो की पटापट, हाथियो के कदमो की धमाधम और घोडो की दुलकियो की आवाज़ें पड रही थी।

हिन्दुओ को किराये की मुसलमान पैदल टुकडियो के वीच वीच, सवसे आगे, रखा गया था। दूसरी टुकडिया उनके पीछे थी।

रगू ने अपने सामने दुश्मन पर एक निगाह डाली। उनकी व्यूह रचना हो चुकी थी। यद्यपि आखो में सूर्य की सीधी किरणें पड रही थी, फिर भी दुश्मन के चलते-फिरते घोडे और पहाड जैसे हाथी तो दिखाई ही पड रहे थे।

लडाई का विगुल वजा, नगाडो पर चोट पडी और सुलतान की फौज आगे वढने लगी।

रगू की टुकडी के सामने से तीरदाज़ आ रहे थे। हाथियो का वढ़ता हुआ दस्ता जैसे प्रलय की धमकी दे रहा था।

तीर दूर से घ्र रहे थे और प्रतीक्षा करते हुए अरक्षितो को निशाना वना रहे थे। रगू उनकी सरसराहट सुनकर झुक जाता था।

स्थिति कष्टकर थी और खतरनाक भी। इसके माने थे कि जव तक दुश्मन जान नही ले लेते तव तक खडे खडे इन्तज़ार करते रहो।

रगू अधिक न सह सका। उसने होशियारी दिखायी। भाले और चाकू का हाथ दिखाने के लिए कूद कर आगे निकल आया। उसके पीछे कुछ और हिन्दू भी बढ आये। वे तीरन्दाजों के साथ उलझ गये। इसी क्षण रगू को, अपने पास-पडोस के मित्रों और शत्रुओं के अतिरिक्त, न तो कुछ दिखाई दे रहा था, न सुनाई दे रहा था।

रगू यह भी न देख सका कि सुलतान की फौज के हाथियों के पहले ही बडे आक्रमण से राजा की सेना के किराये के सैनिक कैसे डर गये थे—ये लोग राजा के लिए अपनी जान जोखिम में डालने को तैयार न थे।

रगू यह भी न देख सका कि किस प्रकार राजा के घुडसवार, महावत और किराये के पैदल टट्टू मुडे और नगर के फाटकों में घुस गये।

रगू लडाई में जूझ पडा और तब तक भाला चलाता रहा जब तक कि वह किसी की ढाल में न घुस गया। फिर उसने चाकू से काम लेना शुरू किया। आखिर उसने अपना बदला ले लिया। वह वीर सैनिक था। परन्तु यह युद्ध कोई आध घंटे ही में समाप्त हो गया। अब तो अलग अलग टुकडियां ही मुकाबले पर रह गयी थीं।

एक भाला आकर रगू को लगा और वह धराशायी हो गया उसकी आखों के सामने अंधेरा छा गया। परन्तु मरते हुए भी वह उस मिट्टी को पकडे रहा, उस ज़मीन से चिपका रहा, जो उसकी अपनी थी, किसी राव-राजा या सुलतान की नहीं, जिसे वह मरकर भी किसी को देना न चाहता था

अफनासी को यह सब कुछ मालूम न हो सका। हर घंटे वह कुलूरी और बीदर से दूर ही होता जा रहा था। अब कोकन का प्रदेश शुरू हो गया था।

और एक रोज़ उसे मालूम हुआ कि सीता के गाव का रास्ता केवल एक दिन का रह गया है। उसने दो कूवडो वाले ऊट जैसी एक पहाडी देखी जिसके सिरे पर ताड के वन थे। सीता कहा करती थी कि जब वह बच्ची थी, खजूर लेने के लिए प्राय उस वन तक दौडी चली जाती थी। भोर के झुटपुटे में उसे लक्ष्मी का मन्दिर दिखाई दिया। सीता दो बार पिता के साथ इसी मन्दिर में गयी थी। अफ़नासी को लगा जैसे वह मन्दिर के उन वडे वडे पाषाण-स्तम्भो को पहचानता है, जिनपर अद्भुत लिपि में कुछ लेख खुदे थे। इन पत्थरो के बारे में उसकी प्रेयसी ने उसे बहुत कुछ बताया था।

वह हसन का कधा पकडकर गाडी पर खडा हो गया। गाडी पर खडा होना आसान न था। वह डगमगा रहा था। वह हरे हरे वनो से लगे हुए कुछ झोपडो और उनके पास खडे हुए कुछ लोगो को देख रहा था। उसे लगा जैसे वह सीता को देख रहा है। वैलो का धीरे धीरे रेगना उसकी वरदाश्त से बाहर था। वह जमीन पर कूद पडा और लम्बे लम्बे डग भरता हुआ गाव की ओर चलने लगा। शीघ्र ही उसे स्पष्ट दिखाई पडने लगा कि सबसे निकट के मकान की छत वेंत की है। और, अब तो वह मकान के बाडे में लगी हुई सीकें तक गिन सकता था। बाडे के पास कुदाल पर झुका हुआ, एक वृढा हिन्दू खडा था। वह अफनासी की दिशा में देख रहा था। निकीतिन और भी निकट आया और हाथ जोडकर बूढे का अभिवादन करने लगा।

"नमस्ते, जी!"

वृढे ने कुदाल हाथ से छोड दी। उसके चेहरे पर भय के लक्षण दिखाई पड रहे थे। अभिवादन के लिए उठे हुए उसके दोनो हाथ काप रहे थे।

निकीतिन मुस्करा दिया और ऐसी मुद्रा बनायी जिससे पता चलता था कि वह मित्र है, शत्रु नही और उससे डरने की कोई बात नहीं। परन्तु हिन्दू उसे वैसे ही, भयग्रस्त, देखता रहा।

"धनजी के बेटे अण्णू का घर कहा है, जी?" निकीतिन ने पूछा।

हिन्दू ने एक गली की ओर इशारा कर दिया।

"वहा सफेद पत्थर के पास " वह बोला।

अफ़नासी ने बूढे को सिर नवाया और आगे बढा।

एक लडकी कन्धे पर घडा रखे चली जा रही थी। उसने मुस्कराती हुई आखें ऊपर उठायी और सहसा चीख पडी। कधे पर रखा हुआ उसका घडा गिरकर टुकडे हो गया और उसके उछले हुए पानी से अफनासी के पैर भीग गये।

बेंत के छोटे-से बाडे के पीछे से किसी का सिर दिखाई पडा।

दूर पर बातचीत करते हुए लोगो ने अपनी बातें बन्द कर दी और परदेसी की ओर मुड गये।

कोई जोरो से चिल्ला पडा—"अरी ओ, अरी ओ! " और फिर सब कुछ शान्त हो गया। निकीतिन कुछ न समझ सका। वह उस झोपडे के निकट आ गया जिसके पास सफेद पत्थर पडा था।

सीता के मकान के चारो ओर एक ओर झुका हुआ बेंत का एक बाडा था। बेंत से बधा हुआ एक दरवाजा जमीन पर गिरा पडा था। झोपडे तक जाने के लिए सूखी-सी क्यारियो के बीच से होकर, एक पगडडी थी। निकीतिन, हिचकिचाते हुए, घर के उसी दरवाजे पर खडा हो गया जो एक फटा-पुराना परदा डालकर बनाया गया था। परन्तु घर में से कोई न निकला। आखिर उसने हिम्मत कर धीरे से आवाज दी—

"सीता!"

परदा हिला और लगा जैसे किसी जर्जर भूरे हाथ ने उसे ऊपर उठा दिया। एक बूढा वाहर आ गया। निकीतिन ने तुरन्त ही उसे पहचान लिया। वह सीता का पिता था।

अण्णू क्लान्त-सा लग रहा था। उसकी हल्की सफेद दाढी उसकी छाती पर लोट रही थी। बूढे की आखें छलछला रही थी।

"प्रणाम पिता जी!" निकीतिन वोला, "भगवान की कृपा वनी रहे आप पर, अण्णू।"

बूढा उसके सामने अचल खडा रहा। उसके मुह से कोई जवाव न निकला। फिर उसने हाथ जोडे और, कुछ झुककर तथा पीठ सीधी करते हुए, पूछ वैठा—

"तुम कौन हो? मेरा नाम कैसे जानते हो?"

बूढे की निगाहे देखकर ही अफनासी ने समझ लिया था कि उसने उसे अनुमान से पहचान तो लिया है पर अव उस अनुमान की पुष्टि की प्रतीक्षा कर रहा है।

अफनासी ने उसे अधिक इन्तजार न कराया।

"मैं वीदर में आपकी वेटी को जानता था," उसने उत्तर दिया, "मेरा नाम है अफनासी! सीता ने मेरी कभी चर्चा नही की थी क्या?"

"की थी " वूढे ने धीरे से कहा, "हा की थी "

वह उत्सुकता भरी निगाहो से निकीतिन की ओर ताकने लगा। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसकी समझ ही में न आ रहा था कि क्या करे।

आखिर उसने निश्चय कर डाला।

"भीतर चलो!" अण्णू वोला, "घर में थोडा आराम करो "

वाडे के पीछे से कुछ स्त्री-पुरुष निकीतिन को वडे कुतूहल से देख रहे थे और जव वह मुडा तो वे लोग गायव हो गये।

"धन्यवाद," निकीतिन ने सिर झुकाकर कहा।

बूढे ने दरवाज़े पर पडा हुआ परदा उठाया।

छत में धुए के लिए बने हुए सूराख में से सूर्य का छनता हुआ प्रकाश धूल के स्तम्भ जैसा लग रहा था। झोपडे के बीचोबीच एक गड्ढा था, जिसमें ताडी सडायी जाती थी। दरवाजे के दाहिनी ओर कुछ घडे और कुल्हड रखे थे। दीवालो से सटी हुई कुछ चटाइया पडी थी जिनपर मोटी-सी चादरे बिछी थी।

जिस ढग से गुडी-मुडी चादरे बिछी थी, जिस बेतरतीबी से कुल्हड रखे थे उसे देखकर निकीतिन ने तुरन्त ही समझ लिया था कि सीता यहा बहुत अरसे से नही रही है परन्तु कोई ऐसी चीज़ थी जो उसके इस प्रश्न में रुकावट डाल रही थी कि सीता है कहा।

अण्णू अफनासी के सामने उकडू बैठा और धीरे से कहने लगा—

"वह चली गयी "

अफनासी तत्काल कुछ न समझा बल्कि जैसे इस आशा में दरवाज़े की ओर ताकता रहा कि शीघ्र ही सीता घर में आती हुई दिखाई देगी।

बूढे की निगाहो से निकीतिन की नज़रे छिपी न रह सकी।

"वह देवताओ के पास चली गयी!" उसने समझाया। बूढे की निगाहो में याचना थी और लग रहा था मानो वह इस परदेसी के क्रोध से डर रहा है।

सहसा निकीतिन जैसे होश में आ गया। दुख से उसका कलेजा फटा जा रहा था और ठुड्डी फडकने लगी थी। वह धीरे धीरे हाथ उठाकर गले तक ले गया और कालर खोलने लगा। उसे लग रहा था जैसे लोहे की गोलाकार सलाखें उसकी गरदन मरोड रही हैं। वह अण्णू की ओर देखते हुए भी उसे न देख रहा था। उसने कुछ पूछने का प्रयत्न किया परन्तु आवाज़ जैसे उसके गले ही में अटक गयी।

श्रौर जैसे कही दूर से, कही झनझनाते हुए शून्य में से, सीता के पिता के कठिनाई से पहचाने जा सकनेवाले शब्द निकीतिन के कानो में पड रहे थे—

"वह व्याह नही करना चाहती थी   पटेल को प्यार नहीं करती थी   लेकिन उसके साथ तो उसकी सगाई हो चुकी थी   श्रौर मुझे यह यकीन न था कि कोई उसका हाथ भी पकडेगा   पर उसे विश्वास था   श्रौर जब ब्राह्मण रामप्रसाद ने उसका गौना कराया तो वह कही गायब हो गयी   श्रौर श्राखिर पवित्र नाग वृत्त के पास उसकी लाश पडी मिली   वह स्वर्ग जा चुकी थी   "

निकीतिन झोपडे से वाहर निकल गया। धरती पर दिन का चौंधिया देनेवाला प्रकाश छा रहा था। दूरस्थ पहाडियो की तलहटियो श्रौर ताड तथा सदावहार वृक्षो की परछाइयो पर गहरी नीलिमा उतर रही थी। क्यारियो में लगे मटमैले पौधो पर लाल चिउटिया रेंग रही थी। उसने सब कुछ देखा, पर कुछ भी न समझा। उसके कदम लडखडा रहे थे श्रौर वह घवडाये हुए हसन की श्रोर जा रहा था।

"क्या वात है? क्या हुश्रा?" हसन ने पूछा।

निकीतिन रुककर श्रपने मित्र की श्रोर देखने लगा। श्रफ़नासी के चेहरे पर व्यथा के चिह्न साफ साफ दिखाई पड रहे थे। श्राखिर लडखडाते हुए वह किसी प्रकार गाडी तक पहुच गया। परन्तु सहसा रुका, घूमा श्रौर श्रण्णू से श्राखें मिलाता हुश्रा पूछ बैठा—

"कहा?"

उस स्थान पर सारे गाव की लाशें जलायी जाती थी। वहा की जमीन राख से काली हो रही थी। श्रधजली लकडिया श्रव भी वहा पडी थी।

निकीतिन यहा वडी देर तक बैठा रहा और देखता रहा कि कैसे वायु राख को उडा रही है। लग रहा था जैसे उसका सारा शरीर अकड गया है।

फिर उसने आस्तीन से आखें पोंछी और उठ खडा हुआ। हसन ने देखा कि किस प्रकार रूसी उस श्मशान की धरती पर झुका, तेजी से घूमा और उसकी ओर बढ़ आया।

उसी दिन महमूद गवान घोडे पर बैठा हुआ, बायें हाथ से उसकी रास पकडे, सामने अपनी सेनाओं की ओर देख रहा था। हरकारे और पहरेदार चुपचाप खडे थे।

वज़ीरे आज़म अपनी सेनाओं की स्थिति का निरीक्षण कर रहा था—उस दर्शमारे नगर को चारों ओर से घेरे हुए असख्यो तम्बू, खूटों में बधे हुए हाथी, घोडो के दल, शिविराग्नि, दूर से चींटियों की तरह दिखते हुए हजारों आदमी।

पछुवा हवाए चल रही थी। पहले बादल तुगभद्रा के ऊपर से गुजर रहे थे। शीघ्र ही वर्षा आरम्भ होगी। फिर रसद पहुचाने की समस्या और जटिल बन जायेगी। पिछवाडे के हिन्दू फस्लों को तबाह बरबाद किये दे रहे हैं। बीदर से यह समाचार आ रहे थे कि सुलतान नाराज है, दुश्मन साजिश कर रहे हैं।

रूसी सौदागर लोगों की आखों में धूल डालकर निकल भागा है। अब ईसाइयों की दुनिया में भारत की खबरें पहुचेंगी। फिर तो सम्भवत ईसाइयों से भी युद्ध की तैयारिया करनी होगी। मलिक-अत-तुजार के दुश्मन रूसी व्यापारी के भाग जाने से फायदा उठायेंगे। रूसी का तो सिर ही काट लेना था! और अब भी अगर हत्थे चढ जाये तो काट लू। फरहत-खान ने सूचना देने के लिए सारे बन्दरगाहों पर हरकारे भेज ही दिये हैं अपनी गलती का प्रायश्चित तो करना

ही चाहिए। शिविराग्नि, शिविराग्नि, शिविराग्नि तम्बुओ के बीच बीच से मनुष्य नाम के प्राणी आते-जाते दिखाई दे रहे हैं। गये इस दीर्घकालीन युद्ध से थक चुके है। सोचने और अपने विचार व्यक्त करने का भी साहस कर रहे है! महमूद गवान ने रास खीची। घोडे ने सिर उठाया और आगे वढ गया।

"हमले की तैयारिया करो!" महमूद गवान ने आज्ञा दी, "आज रात को!"

उसने घोडे को चावुक लगाया और सेना की ओर आ गया। अव उसकी उदासी कुछ कम हो गयी थी। विजयनगर को घुटने टेकने ही चाहिए! अकेली यही एक वात सारी मुसीवतो के लिए नियामत वन सकती है।

अगरक्षक भी चुपचाप घोडो पर मालिक-अत-तुजार के पीछे चलते रहे। सभी भयभीत-से लग रहे थे। जव वज़ीर की मानसिक स्थिति ठीक न होती तो वह वडा निर्दय हो उठता और छोटी छोटी वातो पर आदमी के प्राण तक ले लेता

गाडियो पर लाद लादकर लम्वे लम्वे लट्ठे किले की दीवाले तोडने के लिए वढाये जा रहे थे। तोपें फाटको को निशाना वनाने के लिए तैयार खडी थी। रात के अघेरे में सिपाही सीढिया, काटे और रस्सिया लगाने का इन्तजाम कर रहे थे। हाथियो में हरकत होने लगी थी और घुडसवार तो मौका ही देख रहे थे कि कव फाटक टूटे और कव वे शहर में प्रवेश करे।

वज़ीरे आज़म अपने खेमे में अकेला वैठा प्रतीक्षा कर रहा था आखिर हरकारे ने खवर दी कि फौज किले के पास जमा हो गयी है।

मालिक-अत-तुजार रात के अघेरे में निकल पडा। सेना की एक एक सास जैसे उसके कानो में पड रही थी। लाखो लोग उसके हुक्म

का इन्तज़ार कर रहे थे। अब वह अपने को पहले ही की तरह शक्तिशाली अनुभव कर रहा था।

"आगे बढो!" उसने साफ साफ और अधिकार के स्वर में कहा।

हुक्म तोपचियो के कानो तक पहुचने में कुछ क्षण अवश्य लग गये थे। और उसे जैसे सहसा किसी भय ने घेर लिया था—ऐसी अनुभूति उसे पहले कभी न हुई थी। उसे लगा जैसे उसका हुक्म अन्धकार में विलीन हो गया, जैसे उसके शब्दो में कोई शक्ति न रह गयी

तोपें गोले उगल रही थी। उसी क्षण आक्रामको की कठध्वनि वातावरण में गूज उठी। जलती हुई मशालो से प्रकाशित किले की दीवारे अन्धकार में से उठती हुई भी दिखाई दे रही थी। तोपें गरज रही थी, गरज रही थी

चारो ओर प्रलय का सा दृश्य था—लोग बतहाशा चीख-चिल्ला रहे थे, तलवारे सिपाहियो के शरीर में घुस घुसकर उनकी आतें तक बाहर निकाले ले रही थी, भाले अपना काम कर रहे थे, कटे हुए सिर ज़मीन पर लोट रहे थे, खून के दरिया बह रहे थे, दीवालो पर लगी हुई सीढियो के गिरने से उनपर चढे हुए सिपाहियो की हड्डी-पसलिया भुरकुस हो रही थी और न जाने कितने निरीह हाथियो के पैरो के नीचे दब दबकर परलोक सिधार रहे थे। महमूद गवान ने अपने सूखे हुए ओठ चाटे। उसे लगा जैसे उसकी निराशा उसका पीछा छोड रही है। उसने चैन की सास ली—उसकी आज्ञा का पालन किया जा रहा था।

फौज सुबह तक लडती रही। उसने पहली और दूसरी दीवाल तोड डाली। लेकिन अभी तो पाच दीवाले और थी। पाच और! फौज मैदान से हट आयी। पैदली सिपाहियो ने सबसे अन्त में मैदान छोडा। शहर पर अधिकार न हो सका। फिर भी, वजीर को क्रोध

न आ रहा था। और अमीरो, खानो और मलिको को यह देख देखकर आश्चर्य हो रहा था कि मालिक-अत-तुजार बडा प्रसन्न है। रसोइये तक से मज़ाक कर रहा है, मजा ले लेकर खा-पी रहा है। फिर उसने सेना-नायको को बुलाया, आखें सिकोडते हुए उन्हें देखा और नये आक्रमण की तैयारी करने की आज्ञा दी। वह वापस बीदर लौटकर नही जा सकता। इस समय उसे राजा की सेना से अधिक तो अपनी राजधानी का डर लग रहा था।

मेंह बरसता है और थम जाता है। बन्दर ताड की चौडी चौडी पत्तिया झकझोरते हैं और उनपर पडी हुई पानी की आखिरी बूदें ज़मीन में ढह पडती हैं। तोते टाय-टाय कर रहे थे। दाहिनी ओर बासो की झाडियो के चिटखने की आवाज़ें सुनाई दे रही हैं। गाडीवान जगली जानवरो को डराने के लिए चिल्लाते हैं और चाबुक फटकारते हैं।

गोलकोडा की खानो का उदास गाना अभी तक जैसे निकीतिन के कानो में गूज रहा है—

हीरे वहा जन्म लेते है
गिरते जहा हमारे आसू
ऊ-ऊ-ऊ!
आ-आ-आ!
ऊ-ऊ-ऊ!

गाने की टेक में दर्द था। लेकिन अब तो सब कुछ बहुत पीछे छूट चुका था—गोलकोडा, बीदर, सीता का गाव। सब कुछ

घासो से भरा हुआ रास्ता, जगलों और पहाडो से होता हुआ, दाभोल बन्दरगाह की ओर जा रहा है।

रास्ते में यदा-कदा कोई गाव भी आ जाते है और प्राय मुसाफिरो को, रास्ता साफ करने के लिए, मार्ग पर उगे घासो और लताओ को काटना पडता है। उनके हथियार हर समय तैयार रहते है।

जगल! रात में तम्बू के पास सियार रेका करते हैं। शिविराग्नि के पीछे झाडिया सरसराया करती है।

गाडी अपने रास्ते बढती है। मुसाफिरो ने सिना नदी पार की, फिर भीमा नदियो पर बत्तखें, हस और कुछ अन्य पक्षी उड रहे थे। शायद ये पक्षी इस गर्म प्रदेश में जाडा बिताते है। भीमा की एक सहायक नदी के किनारे किनारे यात्री पहाडो में प्रवेश कर गये। नदी के किनारे पर, प्रवाह की प्रतिकूल दिशा में, भयभीत तीतर, जगली मोर, बगुले और सारस उड रहे थे। चट्टानों के ऊपर आसमान में चील स्थिर दिखाई दे रहे थे। मखमली फूलो जैसी मुलायम और चमचमाती हुई तितलिया मडरा रही थीं।

रातो में मच्छड काटते है। उनसे आदमी अपनी जान नही बचा सकता। वे कपडो में घुस जाते हैं और उनके काटने से लगता है जैसे शरीर पर अगारा रख दिया गया हो। ऐसे में धुआ भी तो कोई काम नही करता। बैलो की खाल लाल हो जाती है, आदमियो का चेहरा सूज आता है।

दिन हफ्तो में बदले गये और हफ्ते महीनो में। अब, वायु में समुद्री पानी की गन्ध मिलने लगी थी और ताड के पेड दिखाई दिये। दर्रा! अब, उतराई ही करनी है।

"तीन दिनो में हम दामोल पहुच जायेंगे!" गाडीवान बोले।

अफ़नासी न तो सापो से ही डरता और न पहाडी शेरो की दहाड से ही। वह आवश्यकता पडने पर अभी एक महीने तक पहाडो में चलते

बासो के बीच से होकर अपना रास्ता खोजने और बाघो से मोर्चा लेकर अपनी ज़िन्दगी खतरे में डालने को भी तैयार था।

परन्तु निकीतिन को दाभोल जाने में भय लग रहा था। शायद वहा लोगों को उसके निकल भागने की बात मालूम होगी। इस खतरे ने जैसे उसे नयी शक्ति दे रखी थी। सीता के गाव से लेकर दाभोल तक के सारे रास्ते हसन उदास निकीतिन की ओर चिन्तित दृष्टि से देखता रहा। रूसी अपने चारो ओर जिस उदासीन-सी दृष्टि से देखता, उससे हसन को डर लग रहा था। परन्तु अब, दाभोल के निकट आते ही अफनासी फिर पहले जैसा फुर्तीला हो गया। एक पडाव पर तो उसने अपनी गठरिया ठीक कर ली, रेशम और किताबें कायदे से रख दी। हसन ने चन की सास ली। रूसी में जैसे ज़िन्दगी लौट आयी थी।

दाभोल सलतनत का सबसे दक्षिणी बन्दरगाह था – समुद्री तट पर बसा हुआ एक छोटा-सा नगर। खाडी में नावें पहाड पर से ही दिखाई दे रही थी।

धान के खेतो और घने वन से घिरा हुआ दाभोल बन्दरगाह अपने मा-बाप से भाग जाकर समुद्री तट पर लेटे हुए आलसी बच्चे की तरह फैला हुआ था।

अफनासी की नज़र उन उजले वनो पर पडी जो नगर के समीपस्थ पहाडो पर उगे हुए थे।

"ओह!" दात निकालते हुए गाडीवान बोला, "बसन्त की वर्षा इन वनो को साफ कर देती है। यही तो दुख है। कभी कभी तो पानी पत्तियो और शाखाओ की तो बात ही क्या, सारे गाव को बहा ले जाता है।"

अफनासी ने गाडीवान को अच्छी रक़म दी। वह नगर में नही जाना चाहता था। उसने सतर्क रहने का निश्चय कर लिया था।
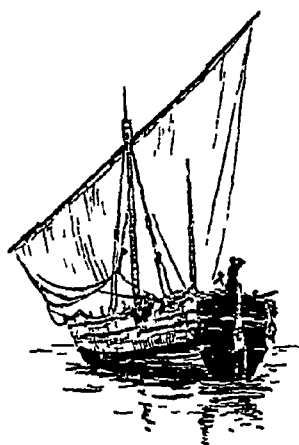
वह हसन के साथ, नगर से दूर की वस्ती में, एक छोटे-से मकान में ठहर गया। अफनासी जानता था कि भारतीय, प्रथानुसार, कभी मुसाफिरो को पनाह देने से इनकार नही करते। उसका मालिक मकान हिन्दू था और किसान लग रहा था। उसकी थोडी-सी अपनी जमीन भी थी।

निकीतिन ने हसन को वैलो के पास भेजा और स्वय मालिक मकान से कहने लगा—

"मैं मुसलमान नही हू। सुलतान के आदमी मेरे पीछे लगे हैं। मेरी सहायता करो।"

हिन्दू को कोई आश्चर्य न हुआ। उसने चुपचाप सिर हिला दिया।

"वताओ, कैसे तुम्हारी सहायता करू?"

"मुझे समुद्री सफर पर जाना है। उधर जानेवाली कोई नाव तो मिल जायेगी न?"

"हा, मिल जायेगी।"

"तो फिर वात करो। मैं इसके लिए अच्छी रकम दूगा।"

"तुम यहा आराम करो।" मालिक मकान ने कहा, "मैं वन्दरगाह तक जाऊगा।"

उसने अफनासी से कुछ भी न पूछा, कुछ भी न जानना चाहा। वह चला गया और जव लौटा तो वताया कि कोई एक हफ्ते वाद नाव जायेगी। उसमें उसे जगह मिल जायेगी

निकीतिन पूरे एक सप्ताह दाभोल में पडा रहा।

मालिक मकान पहले ही की तरह चुप रहा। उसके घरवालो ने भी कुछ न पूछा। अफनासी हिन्दू को अपने बारे में बताना चाहता था परन्तु उसने स्वय ही निकीतिन को मना कर दिया।

"तुमने मुझपर भरोसा किया, यही बहुत बडी बात है!" वह गर्व से बोला।

नाव पर रात में सामान लादा गया। तट और नाव के बीच लगे हुए पटरे के नीचे समुद्र का जल कलकला रहा था। निकीतिन का सन्दूक हाथ से फिसलकर पानी में गिरा और बडी मुश्किल से बाहर निकाला जा सका।

अधेरे में किसी प्रकार निकीतिन ने मालिक मकान को ढूढ ही लिया।

"नमस्ते, भाई!" वह बोला।

"नमस्ते, भाई!" हिन्दू ने उत्तर दिया।

हसन ने अरमूज़ तक जाने का निश्चय किया था। वह डेक पर सहयात्रियो से, जो अभी तक अपरिचित ही थे, धीरे धीरे बाते करता रहा।

निकीतिन झुका, मुट्ठी-भर गीली बालू ली, रूमाल में बाधी और नाव में चला आया। फिर अधेरे में देखते हुए, धीरे धीरे, कहने लगा—

"नमस्ते, सीता!"

कोई आवाज़ सुनकर उसने अनुमान लगा लिया कि किनारे पर से नाव तक लगा हुआ परदा हटाया गया। नाव डगमगायी, चिचियायी और पाल सरसराने लगा।

किनारे पर से कोई अप्रत्याशित-सी आवाज़ सुनाई दी—

"ठहरो! ठहरो!"

नाव के किसी भी व्यक्ति ने कोई उत्तर न दिया।

आवाज़ फिर सुनाई दी, परन्तु इस बार वह मद्धिम हो चुकी थी। कुछ क्षणों में वह बिल्कुल ही विलीन हो गयी।

नाव और भी तेज़ी से डगमगाती रही। हवा और भी तेज़ चलती रही।

"जान बची!" निकीतिन ने सोचा।

और उसे अपनी उदासी का कारण स्वयं समझ में न आया।

प्रातःकाल उसने अपने चारों ओर तटहीन महासागर का एक विशाल प्रदेश देखा। हसन, कोहनी पर सिर रखे, उसके पास ही सो रहा था। दूसरे मुसाफिर भी वैसे ही खर्राटे भर रहे थे। अफनासी उठा और नाव के पिछले भाग में, नाव के मालिक की कोठरी की ओर चल दिया। दरवाज़ा खुला था। खुशदिल जवान हिन्दू पान चबा रहा था।

"खैर, चले तो!" अफनासी बोला।

"हां, चल तो दिये!" हंसती हुई नज़रों से हिन्दू ने हामी भरते हुए कहा, "क्या सुलतान से तुम्हारी नहीं पटी? कोई बात नहीं। यहां किसी की भी उससे नहीं पटी। सबसे पहले—मेरी। हा-हा-हा!"

"तुम मुसाफिरी का ज्यादा पैसा लोगे क्या?"

"बेशक!" नाविक ने खुश होकर कहा।

"और जल्दी चलेंगे न?"

"हां! देखो न, कितनी तेज़ हवा है! जल्दी! अरे, मैंने तो किराया बहुत थोड़ा लिया है। हवा को देखते हुए तो मुझे ज्यादा पैसा लेना था! अच्छा बैठो! पान लो। सोये क्यों नहीं?"

"ऐसे ही ... हूं ... तो हम चार हफ्तों तक चलते रहेंगे?"

"ओह! लड़ने-झगड़ने और फिर सुलह करने के हमें बहुत-से मौके मिलेंगे ... चलो खाना खायें? शतरंज खेलना आता है?"

मालिक वडा जिंदादिल आदमी था। परन्तु इसी मौज के साथ ही साथ सफर के मजे का भी अन्त आ गया था।

वसन्त में हिन्द महासागर पर प्राय तेज तूफान आते है, उत्तरी-पूर्वी हवाए चलती है। अभी एक हफ्ता भी न गुजरा था कि मुसाफिरो को पहले तूफान का सामना करना पडा। पाल हटा लिया गया था और लोग डाड चलाने लगे थे। परन्तु प्रकृति के साथ होनेवाला यह सघर्ष उनकी शक्ति के बाहर था। तूफान चलता रहा, वढता रहा और नाव इधर उधर डगमगाती रही

डेक पर से सारा सामान नीचे रखा जाने लगा। उसे रस्सियो से बाधा भी गया ताकि वह जहाज के कगार से टकराकर उसे तोड-फोड न डाले। डाड ऐसे चल रहे थे कि नाव का सन्तुलन न बिगडे।

नाव अज्ञात प्रदेशो की ओर वढ रही थी। अभी कुछ ही देर पहले खुश दिखाई पडनेवाला नाव का मालिक इस समय सफेद पड रहा था और बराबर भगवान की प्रार्थना कर रहा था।

लोग डरते हुए जैसे अपनी चीजो के साथ चिपक गये थे। वे मुह में जाते हुए नमकीन पानी के कुल्ले करते जा रहे थे।

लहरे हहरा रही थी, चमचमा रही थी और नाव को ऊपर-नीचे चढ़ा उतार रही थी।

निकीतिन को कास्पियन के तूफान की याद हो आयी। परन्तु इस तूफान को देखते हुए वह न के बराबर लगता था।

नाव ऐसे चिनचिना रही थी जैसे अब टूटी, तब टूटी। उसके किनारे लगने का तो सवाल ही क्या! किनारा था कहा? अफनासी, मल्लाहो की बेंच पकडे अपने को जैसे धीरज बधा रहा था।

इस प्रकार सारा दिन बीत गया। सिर्फ चौथे दिन प्रातःकाल तूफान की तेजी कम हुई परन्तु आसमान अब भी साफ़ न हुआ था।

वे लोग पूरे एक हफ्ते तक महासागर पर भटकते रहे। वे समझ ही न पा रहे थे कि वे है कहा।

आखिर उन्हे दिशा का ज्ञान हुआ, पश्चिमी दिशा का, और वे उसी ओर चल दिये। वे किधर जा रहे थे इसका उन्हे कोई पता न था। नाव के मालिक को विश्वास था कि वे किनारे लगेंगे। लेकिन किस मुल्क के किनारे? यह वह निश्चित रूप से न कह सकता था।

तीसरे हफ्ते हवा शान्त हुई। पाल जैसे निष्प्राण-सा लटक आया था। नाव, अनाथ की तरह, लहरो पर डोल रही थी। इस समय वह डाडो के सहारे ही चल रही थी। सभी लोग बारी बारी से डाड चला रहे थे। मुसीबत में सभी हाथ बटाते हैं।

जैसा कि पता चला था, अधिकतर यात्री वे थे जो चोरी चोरी व्यापार करते थे और छिप-छिपाकर आते-जाते थे। वे अपने साथ सोना और जवाहरात ले जाते थे और चुगीवालो को चकमा दे जाते थे।

खुशमिज़ाज मालिक ने खाने और पीने के मामले में बचत करने की सलाह दी। सभी लोग उसकी राय से सहमत थे यद्यपि अब मालिक को जैसे मालिक न समझ रहे थे।

हर व्यक्ति मुसीबत में अपने को किसी से भी घट-बढकर न समझता। वे किधर जा रहे है यह वे न जानते थे। क़िस्मत उन्हे अफ्रीका के तट, इथियोपिया की ओर ले गयी।

हसन प्राय नाव के ऊपरी भाग पर टहलता था। इसी लिए सबसे पहले ज़मीन पर उसी की निगाह पडी। वह ऐसे चिल्ला पडा मानो किसी ने उसे काट डाला हो। सभी लोग नाव की नासिका की ओर दौड पडे। ज़मीन के निकट ही फेन की एक सफेद रेखा-सी चमचमा रही थी।

एक टेढी नाकवाला अरब तो रो ही दिया। दो हिन्दू तुरन्त प्रार्थना करने लगे।

नाव के मालिक ने किनारे की ओर देखा और ओठ भीच लिये।

"क्या?" निकीतिन फुसफुसाया।

हिन्दू ने तुरन्त उसकी ओर देखा।

"अच्छा होता कि हमें यह जमीन दिखाई ही न दी होती हम तो यहा जगलियो के हाथ में पड गये। अगर वे नरभक्षक न हुए तो हमारी खुशक़िस्मती समझो!"

"तो मोड नही सकते?"

"कहा? हमारे पास पानी जो खत्म हो रहा है "

स्थिति वडी निराशाजनक थी। अधिकतर लोग इस मत के थे कि नाव किनारे से लगानी चाहिए। लोग इतने थक चुके थे, इतने परेशान हो चुके थे कि उन्हें जगलियो से भेंट होना, रास्ते पर चलते रहने की अपेक्षा, कम खतरनाक लग रहा था।

"यही तव तक के लिए इन्तज़ार करना चाहिए जव तक हवा अनुकूल न हो जाये!" डेक पर से कुछ लोग चिल्लाये, "अभी नाव खेना आसान नही है! फिर प्यास हमें पता चलाना चाहिए कि हम है कहा!"

मालिक ने नाव रोकने का हुक्म दिया।

अफ्रीका महाद्वीप का समुद्री तट विल्कुल सपाट था। कही भी आरामदेह खाडिया न थी। उनकी नाव किनारे की हरी पट्टी से कोई

पांच सौ क़दम पर खड़ी थी और उनकी समझ में न आ रहा था कि क्या किया जाये। पानी के लिए जाना तो चाहिए, परन्तु इसके लिए नाव ज़मीन के पास रुकनी चाहिए और इस रहस्यपूर्ण देश के किनारे पर उतरना तो बड़ा खतरनाक था।

समुद्र के पानी से ही लगे लगे उष्णकटिबंधीय जलवायु वाले वन आरम्भ हो जाते थे। मुसाफ़िर उन वनों, और नीले पड़ते हुए पहाड़ों की ओर देखते हुए परस्पर बातचीत करते रहे।

सहसा, कंधों पर लम्बी संकरी डोंगियां रखे, कुछ लोग किनारे पर भागते हुए दिखाई दिये। डोंगियां समुद्र में डाली गयीं, लोग उनमें कूदे और तुरन्त ही दसियों डोंगियां दो ओर से नाव की ओर चल पड़ीं। मालिक ज़ोरों से सीटी बजाने लगा।

सौदागरों के हाथों में तीर-कमान दिखाई पड़ने लगे।

"हथियार हटा लो!" मालिक ने आज्ञा दी, "कुछ भी हो उनकी संख्या अधिक है। हमें उनके साथ सुलह करनी चाहिए!"

वह दौड़ता हुआ नाव के पिछले भाग में गया, सिर से पगड़ी उतारकर उसे हिलाने लगा।

डोंगियों के लोगों ने उसे देख लिया। भाले और तीर-कमान से लैस इन लोगों ने अपनी चौकोर और लम्बी लम्बी ढालें नीची कर लीं।

चारों ओर से घिरी हुई नाव पर हबशी लोग चढ़ रहे थे। लम्बे-चौड़े क़द, गुदे हुए भयानक-से शरीर, लाल रंग से रंगे हुए बाल। सभी नंगे थे। उनके भालों और तीरों की नोकें तांबे की थीं और ढालें चमड़े की। जो व्यक्ति सबसे अधिक रंगा-चुना था वह कभी नाव की ओर इशारा करता, कभी किनारे की ओर।

उसकी वात कोई न समझ सका। नाव का मालिक आगे वढा और मुद्राओ से, और छाती पर हाथ फेरते तथा ठढी सासे लेते हुए अपनी वात समझाने का प्रयत्न करने लगा। फिर उसने सकेतो से यह समझा दिया कि उन्हे प्यास के कारण कितना कष्ट है

हवशियो ने उसकी वात समझी, हामी भरते हुए कुछ कहा और खुद यह सकेत करने लगे कि उन्हे खाना दिया जाये। वे जवडे नचा रहे थे, पेट पर हाथ फेर रहे थे और धमकिया दे रहे थे।

"देना ही होगा!" निकीतिन ने साथियो से कहा, "और हम कर ही क्या सकते है? हम सभी को कुछ न कुछ देना चाहिए! चलो खाने का सामान लायें!"

मुसाफिरो ने हवशियो को एक वोरा चावल, एक पोटरी मिर्च और डवलरोटियो की एक टोकरी दी। इसके वदले में उन्होने पानी की माग की। हवशियो ने खाने का सामान और थोडी-सी मसके डोगियो पर रखी। दो डोगिया चल पडी।

वाक़ी हवशी नाव पर ही रह गये। उन्होने हर चीज़ को उलट पुलट कर देखा। सभी चीज़ो में रुचि दिखायी—पाल को मीजा-माजा, रस्सिया हिलायी-डुलायी, लोगो के कपडे खीचं खीचकर देखे। फ़िर निकीतिन के चारो ओर खडे होकर जीभ चटकारते और उसकी सफ़ेद त्वचा में चिकोटिया काटते हुए वरावर इस वात पर आश्चर्य करते रहे कि वह कैसी लाल पड जाती है।

निकीतिन को क्रोध आ गया। आखिर इससे उसे दर्द जो होने लगा था! एक हवशी ने फिर चिकोटी काटने के लिए अपना हाथ वढ़ाया कि निकीतिन ने उसपर एक मुक्का जड दिया।

"शैतानी मत करो! मैं तो तुम्हें नही छूता! चलो रास्ता नापो!"

हवशी नाराज़ हो गया। उसने सीना तान लिया और आखें

तरेरने लगा। अफनासी ने विचार किया कि उसे छेड़ना ठीक नहीं वरना सभी मुसीबत में फस जायेंगे। निकीतिन ने अपनी कटार निकाली और हबशी को देते हुए कहने लगा—"लो, सिर न खाओ।"

इस व्यवहार का बड़ा अच्छा असर हुआ। हबशी ने कटार ले ली और उनकी सराहना करते हुए नाचने लगा। उसके साथी भी इस भेंट को आखें फाड़ फाड़कर देखने लगे।

नाव पर हबशी औरतें और बच्चे भी चढ़ आये थे। सभी नंगे थे, रंगे थे। सभी के शरीरों पर सीपों और घोंघों का शृगार था। वे हर चीज़ को हाथ फैला फैलाकर देखते और जब उन्हें कोई चीज़ न दे दी जाती तो उन्हें बड़ा आश्चर्य होता। डोंगिया वापस आ गयीं, परन्तु हबशियों ने पांच ससकों में से केवल तीन ही लौटायीं और बाक़ी दो ससकों के बारे में बड़े व्यवहारिक ढग से समझा दिया कि उन्हें हमने रोक लिया है।

हबशी शाम होते होते वहां से चले गये। उनके जाने के बाद मुसाफिरों को पता चला कि उनकी बहुत-सी छोटी-मोटी चीजें गायब हो गयी हैं। वे इनको बराबर गालियां देते रहे।

नाव चार दिन तक वहीं खड़ी खड़ी अनुकूल हवा का इन्तज़ार करती रही। कोई भी जान के डर से किनारे पर न गया। परन्तु हबशी रोज़ रोज़ आकर नाव को घेर लेते। चावल और डबलरोटी लेते और मालिकों जैसा व्यवहार करते।

पांचवें दिन, रात से ही, अनुकूल दक्षिणी हवा चलने लगी थी। नाव का मालिक, हसन और दो तीन सौदागर आपस में बातचीत करते दिखाई दे रहे थे।

रोज़ की तरह डोंगिया उस दिन सुबह भी आयी। हसन ने दो तीन हबशियों को नाव पर ले लिया और फिर चिल्ला पड़ा। पाल

उठ गये, डाड चलने लगे और नाँव झटके से आगे बढ गयी। किनारा पीछे छूटने लगा। डोंगिया नाव के चारो ओर वैसे ही नाचती रही जैसे कुत्तो के बच्चे किसी बडे कुत्ते के इर्द-गिर्द नाचते है।

सौदागर उन हतबुद्ध हवशियो पर टूट पडे, उन्हें मारा-पीटा और कुछ दूर जाकर नाव के पीछे फेंक दिया। हसन मुक्का दिखा दिखाकर उन तैरते हुए, घुघराले बालो वाले हवशियो के सिरो को धमकिया दिये जा रहा था।

"तुम्हें ऐसा नही करना था," निकीतिन ने उससे कहा, "बेशक वे शैतान हैं, लेकिन उन्होने तुम्हे मारा-पीटा तो नही, अगरचे चाहते तो हम सब की खबर ले सकते थे।"

"कोई बात नही! वे यह तो याद रखेंगे कि दूसरो की रोटी हडपने की क्या सजा है! दुष्ट कही के।"

अफ्रीकी समुद्रतट बायी ओर था। पहले ही जैसा रहस्यपूर्ण, पराया। कोई भी यह न जान सका कि यह कौन देश है, छोटा है या बडा, और वहा रहता कौन है।

परन्तु नाव का मालिक एक बार फिर प्रसन्न दिखाई पडने लगा।

"अब रास्ता साफ है," वह बोला, "इस तरह समुद्र के किनारे किनारे हम अरब, मस्कत और अरमूज़ तक जा सकते हैं।"

"भारत कहा है?" निकीतिन ने पूछा।

हिन्दू ने दाहिनी ओर हाथ से सकेत किया। अफनासी ने उधर देखा। एक के बाद एक अनन्त लहरे, क्षितिज की ओर बढती चली जा रही थी। उनका नीला-हरा रग मूक और मनुष्य के विचारो और अनुभूतियो के प्रति पूर्णत उदास लग रहा था। एक गगाचिल्ली दिखाई दी और फिर अदृश्य हो गयी।

"नमस्ते   नमस्ते।"

नवा अध्याय

शरद के मौसम के आखिरी दिन। क्राइमीया के समुद्री तटों पर दक्षिणी और दक्षिणी-पश्चिमी हवाए चलती है, समुद्र पर गर्मी रहती है, पहाड़ो पर वर्फ गिरती है।

काफा के गेनोआ नगर की गलियो में मास्को का व्यापारी मत्वेई र्यावोव अपने दोस्तो के पास जा रहा है।

रास्ते में वह सोच रहा है—लौट चलने का वक्त हो गया, आज कल गेनोआवालो के साथ व्यापार चौपट हो रहा है—तुर्कियो ने गेनोआवालो की नाकेवन्दी कर दी है, फिर तातारो से घोड़े भी खरीदने है, आजकल वे सस्ते जो है, और अपने पुराने घोड़े निकालने भी तो है।

अम्तरखान की डकैती को छ वर्ष वीत चुके है। अव तो मत्वेई र्यावोव की उम्र भी ढलने लगी है, वह पहले से अधिक मोटा भी हो गया है, और अव तो पहले से भी अधिक बैल जैसा दिखता है। उसकी काली काली आखें गालो में छिप-सी गयी है, उसकी दाढी पहले से अधिक सफेद हो चली है। वह इधर-उधर न देखते अपने रास्ते चला जा रहा था। इतालवी पत्थर के खूबसूरत मकानो, महलो की सजीली ड्योढियो और छज्जो, आरमीनियाई छोटे गिरजो की गम्भीर सादगी, गेनोआ के गिरजो की विलासिता और रग-विरगी मस्जिदो के सौन्दर्य की ओर से पूर्णत उदासीन लग रहा था।

काफा में वह कोई पहली वार नही आया है। उसे नगर देखने की कोई चिन्ता नही। वेशक नगर अव पहले जैसा नही रहा, यद्यपि सभी चीजें अपनी अपनी जगह वैसी ही वनी है—दुर्ग की

मोटी मोटी दीवालो पर वैसे ही झडे लहरा रहे हैं, झडो की सुनहली पृष्ठभूमि में सेंट जार्ज का घोडा वैसे ही खडा है, कौंसल के लम्बे-चौडे और आलीशान महल में वैसी ही डिजाइनदार गैलरिया हैं, शहर में वही पहले जैसे बाजार   लगता है कि शहर पर कुछ काई-सी चढ गयी है।

"मत्वेई!" किसी ने उसे पुकारा।

र्‌यावोव रुक गया और आखें सिकोडने लगा।

"मैंने नही पहचाना, भाई " उसने कहा। लग रहा था जैसे नवागन्तुक शायद फारसी है, शायद तुर्की। "लगता है कही देखा है, मगर कहा   लेकिन हो सकता है तुम गलती कर रहे हो?"

"र्‌यावोव?" उत्तेजित होकर, आगन्तुक ने मुस्कराते हुए फिर पुकारा।

"र्‌यावोव   ठीक   लेकिन तुम कौन हो?"

"याद तो करो, मेरे दोस्त, मास्को के शैतान! खुद ही याद करो। तुम्हारी बैल जैसी शकल तो मैंने पहले ही पहचान ली थी!"

र्‌यावोव के मस्तिष्क में कुछ धुधली स्मृतिया कौंध गयी—नाव, सराय, अलाव

"नही " उसने अविश्वास से कहा, "लगता है तुम्हे कही देखा है, पर कहा—याद नही आता।"

आगन्तुक ने र्‌यावोव का कधा पकडा और हिलाने लगा—

"मत्वेई, मत्वेई! नोवगोरद की याद है, शेमाखान के राजदूत की याद है? दरबद की याद है?! क्यो?"

र्‌यावोव भौंचक्का-सा रह गया। वह मुह बाकर देखने लगा।

"क्यो? अफ्नासी? नही, नही हो सकता तुम?"

"तो तुमने पहचान लिया!" र्याबोव का कन्धा पकडे हुए, उत्तेजित निकीतिन कहने लगा, "पहचान लिया! लगता है मैं ज्यादा नही बदला हू। ग्राग्रो मिलने की खुशी में तुम्हे चूम लू! मेरे बूटे खूसट!"

दोनो देर तक एक दूसरे की बाहो में लिपटे रहे, इतनी देर तक कि उनकी हड्डिया तक पिराने लगी।

दो बूढे दोस्तो को इस प्रकार ग्रालिगन में लिपटे देखकर एक गेनोग्रावासी युवती मुस्कराने लगी–निकीतिन ने उसे देखकर उगनिया हिलायी, फिर जैसे ग्राखो में चमक भरकर मत्वेई की ग्रोर देखने लगा।

"हा तो तुम ठीक हो? रूस का क्या हाल है?"

"तो तुम किधर से ग्रा रहे हो?"

"ठहरो यहा ग्रौर कौन कौन है?"

"त्वेरवाले कोई नही है।"

"ग्रफसोस' हमारे वजान पर कब्ज़ा हो गया? ठीक है क्या?"

"हा लेकिन तुम्हारी यह तुर्की जैसी पोशाक कैसी?"

"हु-ह मारो गोली इस पोशाक ग्रोशाक को। दूसरी थी ही नही। ठहरो। मुझे 'बडी हैरत हो रही है–कितने दिनो बाद पहली बार एक रूसी को देख रहा हू। ग्राग्रो फिर एक बार तुम्हे गले लगा लू!"

"बस बस तुम तो जैसे बच्चे हो रहे हो! बस भी करो मैं कह रहा हू! बन्द करो यह चपटा-चपटी! चारो ग्रोर ग्रादमी ही ग्रादमी है!"

"धूल डालो उन सब पर! कुछ और सुनाओ। कहो न! शब्द तो रूसी ही है!"

"तुम ऐसे उतावले क्यो हो रहे हो? तुमने क्या आदमी की बोली नही सुनी कभी?"

"मुझे रूस दिखाई पड रहा है! हा, हा, कहो न!"

"यह तुम्हे हो क्या गया!" हसते हुए र्‌याबोव बोला, "मैं क्या सुनाऊ तुझे? अच्छा हो तुम्ही कुछ कहो। कहा से आ रहे हो? अभी हाल ही में मै त्वेर गया था। वहा हमने तुम्हारे बारे में बातें की। लोग समझ रहे है कि तुम कही खो गये। दरबद से कहा गये थे?"

"बडी दूर, भाई। भारत।"

"मज़ाक़ न करो!"

"हा, भारत गया था।"

"क़सम से?"

"कसम सलीब की, भारत गया था!"

र्‌याबोव ने एक गहरी सास ली और टोपी खिसकाकर माथे पर कर ली।

"क्या कह रहे हो! मज़ाक तो नही करते? चलो हमारे साथियो के पास चलो। वे मेरा इन्तज़ार कर रहे है।"

"चलो। लेकिन यह तो बताओ-सेरेगा कपिलोव से भेंट हुई? मिकेशिन से? और भी किसी से?"

"हा, हुई। बताऊगा "

जब तक दोनो मुख्य चौराहे-प्यासेत्ता-तक पहुचे पहुचे तब तक अफनासी को कई बातें मालूम हो चुकी थी। मिकेशिन ने उसके बारे में झूठ बोला था, कपिलोव कुछ मुनाफा कमाकर बाकू

से, कोई एक साल बाद, लौटा था। अब तो ज्यो-त्यो जिन्दगी काट रहा है। जिरहसाज का परिवार गरीबी में बसर कर रहा है। पिछले वसन्त में काशिन भी चल बसा था रूस में भी कई तब्दीलिया हुई थी। बडे राजा ने यूनान की राजकुमारी से व्याह किया था। कज़ान और सराय अब रूसियो के अधिकार में है। अस्तरखानी चुप है—अब वे गरजते-तरजते नही। नोवगोरद की आम सभा भग कर दी गयी। मास्को की ताक्त बढ रही है!

"सुनो," एक ओर देखते और शान्ति से बोलने का प्रयास करते हुए निकीतिन ने पूछा, "अब मैं अपना क़र्ज़ किसे लौटा लू? काशिन के घर में कोई रहा भी या नही? उसकी एक बेटी थी "

"ओ-हो!" र्यावोव बोल उठा, "पाच साल हुई काशिन की बेटी का व्याह बरीकोव परिवार में कर दिया गया था। अब तो उसके तीन बच्चे भी है। यो देखने में खूबसूरत मगर दुष्ट-सी लगती है। भगवान ऐसी बीवी किसी को न दे! हमेशा अपने आदमी से झगडती रहती है। कभी उसके मन की नही करती। उसी के कारण बरीकोव ने पीना भी शुरू कर दिया है। छोड भी दो उसकी बात! और तुम्हारा कर्ज़ कैसा! तुम्हारा घर-बार और सारा सामान तो उन्होने पहले ही हथिया लिया था।"

"तुम कहते हो—तीन बच्चे?" निकीतिन ने पूछा, "बेटे है?"

"एक बेटा और दो बेटिया घर में हमेशा चखचख रहती है।" कदम बढाकर र्यावोव बोला—"अभी हम लोग अपने साथियो से मिलेगे। तो अब मजाक बन्द करो बस मुझे इतना याद है कि तुम एक अच्छे छोकरे थे और कहा गये थे, यह तुम्हारी बात है। नही बताना चाहते तो न बताओ। मगर भारत के बारे में झूठ

न बोलो। हमारे साथी बड़े गम्भीर लोग हैं। उन्हें ज़बान की लपालपी पसंद नहीं।"

"अच्छी बात है," निकीतिन बोला, "चलो! अब चुप रहूंगा। लेकिन, भाई, भारत में गया था—विश्वास करो या न करो। मैं झूठ नहीं बोलता ..."

"... इथियोपिया से हम पानी के रास्ते ओरमुज़ आये। यह पहले से ही हमारा परिचित नगर था। यहां मेरा साथी ठहर गया। उसने किश्ती का काम करने का निश्चय किया। और मैं घर लौटने के लिए चल पड़ा। मेरा विश्वास करो, दोस्तो, मेरी सारी आत्मा तड़प रही थी! धीरज जैसे साथ छोड़ गया था। ऊंट की पीठ पर कभी इधर, कभी उधर झूलता, जलती हुई धूप, ज़बान चिटका देनेवाली प्यास। परन्तु विचार एक ही था—जल्दी, जल्दी, जल्दी! पड़ावों में शोर उठता, पर लड़ने-झगड़ने में खुशी न होती। एक शहर पड़ा शीराज। गुज़र से महराबा और इस्फहानी में रास्ता हुआ। यहां रोकनाबाद नाम की एक नदी है। लेकिन मेरी आंखें तो यहां धूल और नीरसता के सिवा और कुछ देख तक न रही थीं। गुलाब भी मुझे अपनी ओर न खींच रहे थे। मैं जान रहा था—अपनी वोल्गा पर पहुंचूं, अपनी रूस ज़मीन पर पहुंचूं! ओफ! अभी तो न जाने कितने काले कोस पार करने थे ... शीराज से यज्द, यज्द से काशान और वहां से पहाड़ों के रास्ते इस्फहान और फिर पहले रास्ते से होता हुआ कुम तक। यहां कुरा-वोल्गा प्रदेश में तातारों और मास्को में फिर लड़ाई छिड़ गयी। इसके माने थे रास्ता बन्द था। मैंने इधर-उधर हाथ-पांव मारे। फिर पता चला—एक काफिला तबरीज जा रहा है और तबरीज से अरज़न, तुर्की और काले सागर तक जाना मुमकिन है।

मैंने जोखमें उठाने का निश्चय किया। मैंने यही सोचा वलक्लावा जाऊ या काफ़ा—दूसरा कोई रास्ता भी तो नहीं। तो मैं चला गया। तवरीज़ तक का सफर अच्छी तरह निपट गया। उसी समय वहा के खान उजून-हसन ने तुर्कियो पर चढाई करने की तैयारी की। इस तरह वहा से आगे का रास्ता फौज के साथ कट गया। तवरीज़ में मै खान से मिला भी था। वूढा है मगर है घुमक्कड, और उसे गाने-वजाने का भी शौक है। जव कभी पडाव पडता तो दावतो के मुह खुल जाते। उसकी सारी ज़िन्दगी ही दुश्मनो पर चढाइया करने में कटी है। हे भगवान, यह ज़िन्दगी तो तातारो से भी वदतर है। ऐसा कोई शहर भी तो न था जहा खान जमकर रहता। आज यहा—कल वहा हा तो तवरीज़ से मैं उसकी फौज के साथ एर्दजीजान पहाडो तक आ गया। उसके वाद फौज तो दक्षिण में चली गयी और मै अवज़न आ गया। तुर्की कुदरत तो हमारी जैसी लग रही थी—मज़े की ठढक और ढेरो जगल। वस एक वात थी—लग रहा था जैसे घर पहुच रहा हू। हा परन्तु सचमुच अभी इतना खुश होने का अवसर न था। मैं अवज़न पहुचा ही था कि हमें गिरफ्तार कर लिया गया। हमारा सामान छीन लिया गया और हमें किले में वन्द कर दिया गया। वे लोग मुझे उजून-हसन का जासूस समझ रहे थे। उन्होने कागज़ात ढूढने के लिए मेरी तलाशी ली। कागज़ात तो उन्हे न मिले, पर दुष्टो ने मेरे माल पर हाथ साफ कर दिया—मिर्च, रेशम और कुछ और चीज़ें। और किससे क्या कहता? इस वदमाशी में खुद् पाशा का ही तो हाथ था। उस मुटल्ले ने मुझे छ दिन वन्द रखा। फिर मैंने अपने दो ऊट वेच डाले, वाक़ी सामान जहाज़ पर लादा और यहा आ गया और खुशकिस्मती

यह कि पहले ही दिन तुमसे भेंट हो गयी। अब अकेला तो न रहूगा।"

सारे सौदागर मन्त्रमुग्ध निकीतिन की दास्तान सुन रहे थे। आखिर उसने अपनी कहानी समाप्त की और चुप हो गया। रात काफी जा चुकी थी। जिस सराय में मास्को के व्यापारी ठहरे हुए थे और जहा निकीतिन भी अपना सामान ले आया था, वहा सब के सब बहुत पहले ही सो गये थे।

दिया टिमटिमा रहा था। रात में सागर की उदासीन ध्वनि कानो में पड रही थी। मत्वेई र्‌यावोव ने अपने साथियो से निकीतिन का परिचय कराया था और खुद ही उसके भारत जाने का ज़िक्र भी कर दिया था। अफ्नासी को अपनी यात्रा का सारा विवरण सुनाना पडा। पहले तो वे लोग उसकी बातें अविश्वास से सुनते रहे, फिर उन्ही बातो में इतने खो गये कि रात का खाना तक भूल गये। और जब उसने सन्दूक खोलकर उन्हे भारत का रेशम, क़ीमती गहने-ज़ेवरो पर किया हुआ अभूतपूर्व काम दिखाया और फैले हुए एक कपडे पर काले मोती, हीरे और लाल रखे तो सौदागरो के हाथ कांपने लगें और उनकी आखें फटी की फटी रह गयी।

"मगर दोस्तो, यहा तक तो मैं कुल सामान का दसवा भाग ही ला पाया हू।" निकीतिन बोला, "बहुत-सा माल तो भाग निकलने के समय फेंक दिया, कुछ चुगी में दे दिया, कुछ रास्ते में खर्च हो गया और बाकी अबज़न में लुट गया क्या? जवाहरात बढिया हैं न? और ये रही किताबें। ईसाइयो की दुनिया में किसी ने ऐसी किताबें आज तक न देखी होगी "

परन्तु भारत की रहस्यपूर्ण लिखावट, फारसी की शेरोशायरी और निबध-प्रबध सौदागरो को आकृष्ट न कर सके। उन्होने

किताबो के पन्ने पलटे, उनके आश्चर्यजनक अक्षरो पर और छोटे छोटे रेखा-चित्रो पर एक निगाह डाली। कुछ आश्चर्य प्रकट किया और फिर वस्त्रो और जवाहरात पर आखें गडा दी।

"अब तो तुम राजा से भी ज्यादा मालदार हो गये हो!" एक बडे और नीले-से हीरे को उगलियो के बीच पकडकर र्‌याबोव ने भर्राती हुई आवाज़ में कहा। इस हीरे पर कर्ण ने आव रखी थी।

सीता इस हीरे पर मरती थी। कहती थी इसमें चाद का टुकडा छिपा है।

"सचमुच, तुम्हारे जैसा कोई रईस नही!" नाटे और काईदार-से चेहरेवाले सौदागर शिलोव ने सक्षेप में र्‌याबोव की बात की पुष्टि करते हुए कहा। "रूस में तुमसे अधिक सुखी दूसरा होगा कौन! इतना धन! इतनी कामयाबी!"

"क्या यह मुम्किन है कि इतने बडे हीरे का दाम है एक कटोरा चावल?" हट्टे-कट्टे-से सौदागर इवान स्तीर ने विस्मित होकर पूछा, "यह हो कैसे सकता है? मेरी समझ में कुछ नही आता!"

"तो इसके माने हैं कि भारत नाम का कोई देश है ज़रूर," कुछ कुछ बहरे, और शान्त-से दिखनेवाले व्यापारी पेत्रो कज़ेल ने विचारशील मुद्रा में कहा, "है, ज़रूर "

"मास्को जाओगे या त्वेर?" हीरे पर आखें गडाये हुए र्‌याबोव ने पूछा, "अफनासी, अब तुम्हें बहुत होशियारी से सफर करना है। मैं और मेरे साथी तुम्हारी मदद करेंगे। बुरे लोग कहा नही होते। भगवान बचाये रात में उनके बारे में मुह नही खोलना चाहिए। होशियार रहना चाहिए। तुम्हारे पास काफी माल जो है।"

"नही, पहले त्वेर जाऊगा!" अफनासी ने सिर हिलाते हुए

कहा, "मेरा दिल बल्लियों उछल रहा है शायद कोई दिखाई ही पडे। और हा तुम कैसे जाओगे?"

"रास्ता जाना-बूझा है। कीएव होकर स्मोलेस्क और वहा से मास्को!"

"तब ठीक है–स्मोलेस्क तक मैं तुम्ही लोगो के साथ चलूगा।"

सौदागर रात में बहुत देर से सोये। अफनासी को तो बहुत देर तक नीद न आयी। वह आखें खोले पडा रहा। और जैसे ही उसने दिया बुझाया कि शरद के बादलो की भाति उदास विचारो ने उसे आक्रान्त कर डाला। सुख? सफलता? भगवान ऐसा सुख दुश्मन को भी न दे! हा, तो त्वेर जाऊ। ओलेना से आखें मिलाने में डर-सा लगेगा। लेकिन मन तो उसके दर्शन करना चाहता है। दुनिया में वही अकेली तो रह गयी है जिसे कभी उसकी जरूरत थी।

कडाके की सर्दी पड रही थी। बर्फ पड रही थी, जिसे वायु प्राय उडा उडाकर दिकोये पोले में इधर-उधर, ढेरो के रूप में जमा कर रही थी। मुसाफिरो को ठीक रास्ते पर चलना और सास लेना दूभर हो रहा था।

मुसाफिर घोडो पर सफर कर रहे थे। छोटे छोटे अथक तातारी घोडे, फूफू करते हुए, और सिर झुकाये अपने रास्ते चले जा रहे थे। हा, कभी कभी वे हवा से बचने के लिए अपने मुह जरूर एक ओर कर लेते थे।

जाडे-पाले में, और खासकर जब हवा तेज हो, देर तक आदमी घोडे पर बैठ भी तो नही सकता–सर्दी से घुटने जलने लगते है और खून जमकर बर्फ बन जाता है। ऐसे में आदमी उतर पडता है और चल-फिरकर या तीखे मजाक करता हुआ किसी प्रकार बदन को गर्म

रखने का प्रयत्न करता है। दिकोये पोले सचमुच वन्य मैदान है—न कही कोई वाडा, न आगन। कही भेडियो के झुड घूमते है, कही लोमडिया चूहो को पकडती है और कही दूर से जंगली वैल अपने झुड की रक्षा करता हुआ दिखाई दे जाता है।

झबरीला क्रिलोव खासता है। शान्त प्योत्र कज़ेल वडे दुलार से घोडे की पीठ थपथपाता है—स्वय घोडा अपने मालिक की भाति शान्त है। पीछे से र्यावोव की एक जैसी तेज़ सासें और भारी पदचाप सुनाई पड रही है।

चुपचाप चलते जाना ही ठीक होगा—कही फेफडो में ठढ न वैठ जाये। निकीतिन को याद आ रही है—गर्मी का मौसम, ताज़ी ज़मीन की सोधी सोधी खुशवू, पेडो में फुदकते हुए वन्दर, नाचते हुए मोर

कही कोई गाव नही। मुसाफिर पडाव डालते है—खेमे लगाते हैं, सूखी घास और सूखी शाखें वटोर लाते है और आग जलाते है। फिर, लोहे के वरतन में वर्फ पिघलाकर उसका गर्म पानी पीते है और लपसी वनाकर पेट की क्षुधा शान्त करते है।

"'अफनामी, सुनाओ भी," कोई कह वैठता है।

और वह, हमेशा कोई न कोई नयी चीज़ कहने लगता है। वस सीता के वारे में कुछ नही कहता

पसीने से कमीज़ भीग गयी है, शरीर मैला हो गया है, धुए से हाथ और चेहरे काले पड गये हैं। सभी कीएव का स्वप्न देखते हैं। अगरचे तातारो के हमलो, पोलिश रईसो के झगडो और लियुआनिया के आक्रमण ने इस नगर को वहुत कुछ तवाह कर दिया है, फिर भी वहा घर तो हैं और कुछ हम-मजहव ईसाई भी।

निकीतिन के मन में फिर उम्मीदें अगडाइया लेने लगी हैं। वह रूस के लिए कितनी ही चीज़े तो लिये जा रहा है—नई नई वस्तुए,

स्वार्जित ज्ञान्, कुतुबनुमे की कहानी, सितारो और पृथ्वी के नक्शे, जिनमें भारत के बारे में सब कुछ बताया गया है, कीमिया और शिल्प के रहस्य। त्वेर का नही तो मास्को का राजा उसके लिए रास्ता देगा। विदेशी पुस्तको का रूसी में अनुवाद होना चाहिए, भारत या इथियोपिया को लोग भेजने चाहिए

ये विचार उसमें उत्तेजना भर रहे है। उसकी आत्मा थिरक रही है। उसका अग प्रत्यग खुश है। फिर उदासी क्यो ? अभी तो उसने इकतालीसवें वसन्त में ही कदम रखा है। अभी शायद उसे और घुमक्कडी करनी होगी, जिन्दगी आराम से कटेगी। कौन जाने एक बार और उसे भारत जाने का मौका मिल जाये।

पैर वर्फ में धस जाते है। मगर वह घोडे के साथ साथ चलता जा रहा है। उसकी पहली जैसी शक्ति और लगन अब भी बनी हुई है।

कीएव जाते समय दिन में उन्हे द्नेपर नदी पार करनी पडी। वे धीरे धीरे और होशियारी से चल रहे हैं। किनारा पास ही था कि वर्फ चरमरायी, कडकडायी, पानी पर जमी एक पतली-सी पर्त टूटी और काला पानी छपाक की ध्वनि करता हुआ वर्फ पर आ गिरा। जो घोडा पुस्तको और रेशम का गट्ठर लादे था वह हिनहिना उठा। निकीतिन तुरन्त एक ओर हट गया परन्तु यह समझते ही कि वे कितनी मुसीबत में पड गये है वह फिर जैसे स्वत घोडे की ओर बढा।

घोडे के पिछले दोनो पैर पानी में थे और अगले पैरो से वह वर्फ खरोचता हुआ हिनहिना रहा था। वर्फ की पतली पर्त और भी अधिक फट रही थी।

"मेरी मदद करो, दोस्तो।" घोडे की रास पकडकर उसे खीचने का प्रयत्न करते हुए निकीतिन बोला।

"वह तुम्हें भी ले डूबेगा।" र्याबोव चिल्लाया, "हट जाओ।"

"फन्दा बनाओ, जल्दी!"

"बोरा काटो!"

लोग इधर-उधर भाग-दौड रहे थे परन्तु मुसीबत में फसे घोडे के पास तक आने में डरते थे। कज़ेल ने कापते हुए हाथो से फन्दा तैयार किया ताकि उसे घोडे की गर्दन में डाला जा सके। र्‌यावोव चाकू लेकर आगे बढा परन्तु बोरो के पास तक न पहुच सका।

निकीतिन ने दात पीस लिये।

उसने झट से फर कोट के बटन खोले, कोट उतारा, दस्ताने बर्फ पर फेंके और कूदकर घोडे की पीठ पर बैठ गया। घोडे से बधी रस्सिया बर्फ जम जाने के कारण लोहे जैसी हो गयी थी। निकीतिन के पैरो में फेल्ट के बूट थे जो इतने भीग चुके थे कि अब पैरो से चिपक-से गये थे। उसे लगा कि उसके पैर सुन्न पड रहे है, फिर भी उसने सारी ताकत लगाकर रस्सिया काट ही डाली। घोडा अपनी जान बचाने के लिए निकलने का प्रयत्न कर रहा था पर पानी की धार उसे बर्फ के नीचे घसीट रही थी। घोडा मृत्यु भय के कारण लोगो के लिए और भी बाधक सिद्ध हो रहा था

किसी प्रकार निकीतिन ने वोरे काटे और उन्हे बर्फ पर फेंक दिया। फिर उसने फदा हाथो में लिया और घोडे की गरदन में डाल दिया।

"खीचो!" वह चिल्लाया और खुद नीचे कूद पडा। परन्तु इस समय तक उसकी ताकत जवाब दे चुकी थी। फलत वह धुएँले-से पानी में जा गिरा। उसकी टोपी एक ओर गिरी, क्षण भर में वालो और वरौनियो में वरफ की एक परत जम गयी। वह जैसे कुछ भी न देखता हुआ तव तक पानी में हाथ-पैर पटकता रहा जव तक किसी ने उसका कालर पकडकर उसे वाहर न कर लिया और उसके पैरो के नीचे सख्त बर्फ न कडकडाने लगी।

"दौडो!" निकीतिन की भीगी हुई पीठ पर भारी कोट रखते हुए र्‌यावोव चिल्लाया, "दौडो!"

निकीतिन के शरीर से वर्फ से जमे हुए कपडे जैसे सटे हुए थे। वडा कोट उसके वदन पर कछुए की पीठ की तरह पडा था। सर्दी से उसकी हड्डिया तक जम गयी थी। उसके पैर वेकार-से हो रहे थे और घुटनो में जैसे कोई भी हरकत न रह गयी थी। फिर भी उसने भागने का प्रयत्न किया। इस प्रकार भागने में वह गिरता, फिर उठता, फिर गिरता, फिर उठता। आखिर वह ऐसा गिरा कि उठ न सका।

र्‌यावोव और ग्रिनोव ने, वडवडाते हुए, अफनासी को घोडे पर बिठाया और निकीतिन साज पर वोरे की तरह, मुर्दा जैसा, पडा रहा। सर्दी से उसका सारा शरीर इतना दर्द कर रहा था कि लगता था अव दम निकला, तव दम निकला। उसकी सास ठहर ठहरकर चल रही थी।

पहाड की ओर बढ़ते हुए इन मुसाफिरो को देखकर फर-कोटो से लदे-फदे पोलिश घुडसवार पहरेदारो ने कहकहा लगाते हुए उन्हें फाटक के पास रोक दिया। कौन हो? कहा जा रहे हो? क्यो जा रहे हो?

"आदमी मर रहा है!" क्रोध से र्यावोव चिल्लाया।

"चुप रहो, बैल कहीं के! कैसा आदमी? रूमी कुत्ते! वह कभी न मरेगा! तुम तो अच्छे-खासे पट्ठे हो! कहा से जा रहे हो? क्या सामान है तुम्हारे पास?"

पहरेदारो ने पैसे ऐंठे और फिर द्वार खोलकर मुसाफिरो को जाने की अनुमति दी।

रास्ते में जो पहला झोपडा पडा वही मत्वेई र्यावोव ज़ोरो की दस्तक देने लगा। यह एक पुराना साधारण-सा मकान था जिसकी छत बेंत की थी। बूढे उक्रइनी ने अफनासी को कमरे में ले जाने में मदद दी, अगीठी के ऊपर की टाड पर से तीनो बच्चो को भगाया और किसी कोने में छिपाकर रखी हुई कुछ वोदका ले आया।

इसी मकान में र्यावोव का भी सामान लाया गया। बाकी मुसाफिर एक घर के बादवाले मकान में टिक गये। उन्होने इस मकान में अपना सारा सामान रखा कि उलटे पैरो फिर उसी मकान में आ गये जहा निकीतिन को रखा गया था।

"कुछ ठीक है न?" घर में कदम रखते ही कज़ेल ने पूछा, "हे भगवान, दुनिया का चक्कर लगा डाला और कुछ न हुआ, और यहा देखो न किस्मत!"

"यह जिन्दगी है, मेरे दोस्त!" उदास होकर क्रिलोव बोला, "मौत का कुछ बहाना तो चाहिए न।"

अगीठी की टाड पर लेटे लेटे निकीतिन का बदन गर्म हो गया था। वह अब वहा से हटना चाहता था।

"कहा? लेटे रहो जी!" उसपर लोग बरस पडे।

"बोरा काट दो," वह बोला, "नही, मुझे दो—मै खुद ही काटूगा। वह भीग गया है। उसमें किताबें है। उन्हें सुखाओ!"

वह तभी शान्त हुआ जब हस्तलिपियां और रेशम के दो थान अंगीठी की टांड पर फैला दिये गये। वह अधिक देर तक वहां बैठा न रह सका बल्कि कोट लपेटे हुए, आकर एक बेंच पर बैठ गया।

"अब ठीक हूं!" वह बोला, परन्तु सचमुच उसे भीतर ही भीतर अपनी हालत खराब लग रही थी।

शाम होते होते उसकी दशा और भी बिगड गयी। उसे बेहोशी ने घर दबाया और वह पलंग पर करवटें बदलता हुआ, किसी अज्ञात भाषा में किसी को पुकारता और कोई विचित्र गाना गाता रहा। उसका शरीर जल रहा था।

मत्वेई र्‌याबोव ने अपने साथी को पानी दिया और उसके सिर पर पानी से भीगा हुआ कपडा रखने और उसे शान्त करने लगा।

बूढे मालिक, दादा लेल्को ने, मशाल जलायी, उन्मादग्रस्त निकीतिन की बातें सुनी और सिर हिलाने लगा।

"यह कौन है, परदेसी?"

"नहीं, दादा!" दुख से, निकीतिन के सूजे हुए चेहरे और शून्य आंखों को देखते हुए र्‌याबोव बोला, "वह हमारा ही है—रूसी। बडा बहादुर आदमी है। बडा बुद्धिमान। दुनिया में दूर दूर तक हो आया। तीन तो समुद्र पार किये हैं उसने   शायद सारी दुनिया में ऐसा कोई दूसरा आदमी न होगा!"

दादा लेल्को कुछ लडखडाया, फिर घुटनों के बल उठा और निकीतिन के पैर ढक दिये।

"भगवान रक्षा करे   " बूढा बोला, "भगवान रक्षा करे!"

और निकीतिन कहीं दूर, बहुत दूर, जा चुका था। वह सीता का हाथ पकडे कृष्णा के किनारे किनारे घूम रहा है, उसे रूस चलने को मना रहा है, और सीता हंसती हुई उसे मन्दिर में शिव की मूर्ति के

पास खींचे लिये जा रही है। जगली हाथी पानी पीते समय चिग्घाड रहा है। आर्किड के लाल लाल फूल उसके चेहरे के सामने आ जाते हैं।

उसने आखें खोली और धुए से काली पडी हुई छत, छोटी छोटी और वर्फ से जमी खिडकी, मामूली-सी वेंच और द्वार पर रखे हुए पानी के घडे पर नज़रें दौडाने लगा अगीठी के पास गुलावी गालो वाली एक युवती, चिमटे से कुछ कर रही थी।

"क्यो ठीक हो गये न?" उसकी ओर झुकते हुए वूढे ने पूछा।

"मैं हू कहा?" निकीतिन वडवडाया।

"अपने दोस्त के घर में .. लेटे रहो। ठीक हो जाओगे।"

युवती ने चिमटा जहा का तहा रोक दिया। निकीतिन ने उसकी उदास आखो की ओर देखा और एक आह भरी।

"प्यास लगी है!" निकीतिन वोला।

उसे लकडी के प्याले में पानी दिया गया। वह एक वल लेटा, आखें वन्द की और गहरी नीद सो गया।

इस दिन के वाद से वह धीरे धीरे अच्छा होने लगा। उसने खर्च में कोई कजूसी न की और मास, दूध और साग-सब्जिया खरीदने के लिए वूढे लेव्को को वरावर पैसा देता रहा।

ऐसा लग रहा था जैसे वह पूरे तीन हफ्तो तक मौत और जिन्दगी के वीच झूलता रहा था। व्यापारी उसे अधिक समय तक वहा न रखना चाहते थे, परन्तु उनका काम जरूरी था और उन्हें शीघ्र मास्को पहुचना

था। फलत वे तो चले गये परन्तु बूढे लेव्को से अनुरोध करते गये कि वह रोगी की देख-रेख करता रहे। वे गिरजे में पादरी के पास भी गये और उससे निकीतिन के बारे में सब कुछ कह सुनाया। उसने वचन दिया कि वह रोगी के लिए प्रार्थना करेगा और अगर आवश्यकता आ ही पडी तो उसके लिए सारे धार्मिक सस्कार भी करेगा।

मत्वेई र्‌याबोव चलते समय अफनासी के लिए एक पत्र छोड गया—"अफनासी, हम लोगो ने तुम्हारी दो हफ्तो तक प्रतीक्षा की। अब हमें भय है कि रास्ता खराब हो जायेगा, पर हमें जाना तो चाहिए। हमें विश्वास है कि भगवान की दया से तुम स्वस्थ हो जाओगे। मैं तुमसे क्न्यातिनो गाव के किसान फ्योदोर के बारे में कहना भूल गया था। तुमने बहुत दिन पहले उसके लिए कोई अर्ज़ी लिखी थी न? वह राजा इवान का अन्तरग है, सौदागरी करता है और तुम्हें प्राय याद करता है। अच्छा नमस्ते, अफनासी। चगे हो—मास्को आओ। तुम्हारा सारा सामान सुरक्षित है। दादा तुम्हारी मदद करेंगे। अब हम चलते हैं। नमस्ते।"

निकीतिन को बहुत समय तक याद न आ सकी कि मत्वेई र्‌याबोव ने किस फ्योदोर के बारे में लिखा है। आखिर उसे उसका स्मरण हो आया और वह हल्की-सी हसी हस दिया—मैंने उसके लिए किया ही क्या था और वह है कि मुझे याद करता है!

दूसरे दिन अफनासी कुछ होश में आया और उसी दिन एक छोटे-से गिरजे का पादरी उससे मिलने आया। बूढा और दुबला-पतला-सा आदमी। वह खुश था कि उसकी प्रार्थना काम कर गयी थी। उसने जीवन के बारे में निराशा दिखाते हुए एक आह भरी और खाना खाने को तैयार हुआ। वह बेंच पर बैठ गया, उसने मास के टुकडो को छोडकर चुपचाप बन्दगोभी का शोरबा पिया। पादरी को लोग पिता अलेक्सेई के नाम से पुकारते थे।

निकीतिन को स्वस्थ होते हुए देखकर पादरी भारत के वारे में वातचीत करने लगा।

अफनासी ने उसे दूसरे धर्मानुयायियो की वाते वतायी और हाथी, वन्दर, सुलतान के महलो की विलासिता तथा भारतीयो के रीति-रिवाजो के किस्से भी सुनाये। पिता अलेक्सेई साश्चर्य, सव कुछ सुनते रहे।

पुस्तको ने तो उन्हे और भी परेशानी में डाल रखा था। उन्होने हिम्मत जुटाकर पुस्तके छुयीं परन्तु साथ ही साथ वरावर प्रार्थना करते रहे।

"अच्छा हो, मेरे वेटे, तुम इन्हे जला डालो!" उसने सलाह दी, "जिन्हें अपने धर्म में दृढ विश्वास नही उनपर ये पुस्तके प्रभाव डालेगी पुस्तक तो एक ही है—वाइविल। और ये पुस्तके—ये तो जहर है।"

अफनासी ने पुस्तके छिपा ली ताकि वूढा उन्हें इधर-उधर न कर दे।

वह दिन व दिन स्वस्थ होता गया। अव वह प्राय घर के वाहर साफ़ हवा में घूमने निकला करता।

"अव शीघ्र चलूगा!" जाडे के दिनो की ताज़गी में साम लेते हुए उसने सोचा। वह कीएव की गलियो पर निगाह गडाये था। इन गलियो में प्राय 'कोई भी प्राणी न दिखाई पड रहा था। हा, कोई औरत पानी की वाल्टी लिये निकलती थी, कोई डरा हुआ आदमी वाडे के किनारे किनारे चलता था अथवा कोई पोलिश रईस सेवल का फर और लाल ऊनी कपडे डाटे घोडे पर चला जाता था।

दादा लेव्को के परिवार में निकीतिन सगे-सवधी की तरह रह रहा था। लेव्को के वेटे, यानी युवती के पति को तातार लोग कोई एक साल पहले उडा ले गये थे इसी लिए वूढा उदास रहता था और मन में तरह तरह की कल्पना करता हुआ प्राय निकीतिन पर एक भेदभरी दृष्टि डाल लेता था।

निकीतिन को वहा काम ही क्या था। कभी वह मालकिन की मदद करता, कभी उसके बच्चो से खेलता और कभी पडा पडा अपने विगत जीवन और अदृष्ट की कल्पनाए किया करता।

जिन्दगी से उकताकर, और अपने इर्द-गिर्द असत्य का अनुभव कर वह सुख की तलाश में घर से निकल पडा था और दुनिया के उस छोर तक पहुच गया था जहा तक कोई न जा सका था। लेकिन भारत में भी तो आदमी की जिन्दगी फूलो की सेज न थी। वहा भी दुख था, दर्द था। रूस के रईसो की ही भाति दुनिया के दूसरे रईस भी जुल्म करते थे। फिर विदेश में सुख शान्ति कहा! कोई कही भी क्यो न चला जाये मातृभूमि से अधिक प्यारी कोई चीज नही। बेशक समुद्र पार बसनेवाले लोग अच्छे है, सरल है। रूस! रूस! तुम भी वैसे ही देश बनो कि यहा आदमी सुख और चैन की सास ले सकें?

"पिता अलेक्सेई!" एक बार उसने पादरी से कहा, "आज मैंने अपनी कॉपिया पढी है और अब निश्चय किया है कि मै अपनी यात्रा का पूरा पूरा वर्णन करूगा। मुझे आशीर्वाद दें!"

"भगवान तुम्हे चिरायु करे, मेरे बेटे!" पादरी ने उत्तर दिया, "अगर भगवान ने तुम्हें बुद्धि दी है तो ग़ैरमज़हबियो के बारे में जरूर लिखो और बताओ कि वे कितने गहन अधकार में प्रवेश करते जा रहे है। ईसाई ससार तुम्हारी इस रचना का स्वागत करेगा।"

और निकीतिन अपनी कॉपी लेकर बैठ गया। उसने अपनी पुरानी टिप्पणिया निकाली और सामने नक्शा खोल लिया ओफ, उसे कितना लिखना था। बेशक वह उस दूर देश के बारे में, अपने बारे में सब कुछ सच सच लिखेगा, सच सच कहेगा।

उसकी कल्पना के समक्ष अगस्त की एक रगीन सुबह, इवान

लप्शोव का चेहरा, काशिन की चिनचिनाहट, क्लिोव और इल्या की पत्नियो के मुखड़े और वोल्गा की छपाक घूम गयी।

उसने कलम स्याही में डुवोयी और लिखने लगा – "मै तीन समुद्र पार की अपनी पापपूर्ण यात्रा का वर्णन आरम्भ कर रहा हू मैंने १५ अगस्त को वोल्गा पर अपना सफर शुरू किया "

उसने धीरे धीरे लिखना शुरू किया। लिखा, दुहराया और बेकार के ब्योरे काटे-छाटे। मुस्कराया और दात भीच लिये – वह एक बार फिर अतीत के गर्भ में पहुच गया था।

"सुनो," एक दिन दादा लेव्को ने अपने मेहमान से कहा, "अब तुम ठीक हो गये हो, स्वस्थ हो गये हो। तो क्या ख्याल है चले जाओगे?"

"जाऊगा।"

"क्यो, रुक जाओ न?" जैसे अविश्वास से बूढे ने सुझाव दिया, "मेरा बेटा नही लौटा। और यहा तुम्हारे लिए सभी कुछ तो है – घर, स्त्री "

"धन्यवाद, दादा!" बूढे के दुख का अनुभव करते हुए निकीतिन ने उत्तर दिया, "इस कृपा के लिए धन्यवाद। पर आप बुरा न मानें। मैं जाऊगा ही। मुझे जाना है।"

"प्रभु मसीह तुम्हारी रक्षा करे!" लेव्को ने आह भरते हुए कहा, "जैसा चाहो, करो बेचारी कितनी उदास, कितनी अकेली है। फिर तुम भी अकेले हो। इसी लिए मैंने सोचा "

बाल्टी की झनझनाहट सुनाई दी। दोनो चुप हो गये। बूढे की वहू आ रही थी। उसका चेहरा लाल पड गया और आखें झुक गयी। वह विना जरूरत ही चीजें उठाने-धरने लगी। उसका वेटा रो दिया। उसने उसे गोद में उठा लिया और उसे चुप कराने लगी।

"ठहरो, पिता जी आयेंगे और तुम्हे ठीक करेगे," वहू वोली और उसकी आवाज में वेदना की प्रतिध्वनि साकार हो उठी।

प्रस्थान से कोई तीन दिन पहले निकीतिन गिरजे में पादरी अलेक्सेई के यहा गया और दान में सोने का एक मुकुट दिया। मुकुट में तीन लाल और मोती भी लगे थे।

इस वडे दान को देखकर पिता अलेक्सेई गदगद हो गया।

"किसके साथ जा रहे हो?" आखिर उसने पूछा।

"ओर्शा से दो आदमी हैं, उन्ही के साथ।"

"भगवान तुम्हारी मदद करे। भगवान मदद करे।"

नगर में आये हुए इस व्यापारी के रईसाना दान की चर्चा सारे कीएव में विजली की तरह फैल गयी। निकीतिन ने ओर्शा के व्यापारियों से कुछ भी न कहा था, परन्तु उन्हें भी शीघ्र ही मालूम हो गया कि वह भारत होकर लौटा है।

घर के पास निकीतिन ने दो वार कैथालिक पादरी को देखा था। पहली वार वह अकेला आया था और दूसरी वार किसी मुछैल जवान के साथ। वे अफनासी को घूरने लगे थे

निकीतिन के दिल ने जैसे यह भविष्यवाणी कर दी थी कि इन लोगो का आना अकारण नही है, और उसकी धारणा गलत न थी।

गिरजे में जाने के दूसरे ही दिन, भोर के समय, दादा लेव्को के झोपडे के द्वार पर जोरो की दस्तक हुई। अफनासी ने कुहनी के वल

लेटे हुए, अपनी बेंच पर से ही, आगन्तुको पर एक दृष्टि डाली। उसने उनके वस्त्र देखकर ही समझ लिया था कि वे विदेशी हैं। उसका माथा ठनका। पहले आगन्तुक की दाढी सफाचट थी और गाल भरे हुए। हो सकता है कोई पादरी हो, या कोई व्यापारी। वह जैसे चापलूसी की मुद्रा में मुस्कराया और अफनासी के आगे सिर झुकाकर खडा हो गया। अंधेरे झोपडे में उसने अफनासी को बडी मुश्किल से देखा।

"क्या मुझे महाशय निकीतिन से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है?" सफाचट दाढीवाले ने पूछा। उसकी ज़बान लडखडा रही थी, परन्तु आवाज़ मीठी थी।

"मैं हू निकीतिन," अफनासी ने उत्तर दिया, "कहिये, कैसे आना हुआ?"

"मैं अपना परिचय देने की स्वतन्त्रता ले रहा हू। मैं पृथ्वी पर ईसा के पैग़म्बर पोप के दूत का सेक्रेटरी हू।"

"बहुत अच्छा! क्या चाहते है?"

निकीतिन के इस प्रत्यक्ष और रुखे से प्रश्न को सुनकर सेक्रेटरी जैसे घबडा गया। परन्तु वह और भी ज़ोर से मुस्कराने लगा।

"दूत ने मुझे भेजा है यह पता चलाने के लिए कि आपका स्वास्थ्य कैसा है, आपको किसी चीज़ की आवश्यकता तो नही है और यह कहलाया है कि यदि उन्हें रूसी यात्री से बातचीत करने का मौका मिले तो वे बडे खुश होंगे।"

अफनासी ने पोप के दूत के भेजे हुए इन लोगो पर एक दृष्टि डाली और तुरन्त समझ लिया कि क्या करना चाहिए। लगता है उन लोगों ने उसके भारत जाने की बात सुन रखी है। यह तो बुरा हुआ—नगर पोलिश लोगों के हाथों में है। चारो ओर कैथालिक ही कैथालिक हैं। उसे तो ऐसा करना चाहिए कि वह किसी मुसीबत में न पड जाये।

बेशक पोप के दूत से मिलने से कोई लाभ तो होगा नही फिर किया क्या जाये? उसने दो मुसीवतो में से कम खतरनाक मुसीवत चुनने का फैसला किया।

निकीतिन ने हामी भरी।

"दूत ने मेरी याद की इसके लिए उनका शुक्रिया," शान्ति से वह वोला। उसने कुछ ऐसी मुद्रा वनायी जैसे वह इन आगन्तुको की प्रतीक्षा ही कर रहा था, "मेरा स्वास्थ्य ठीक है। मुझे किसी चीज की आवश्यकता नही। रही वात वातचीत की तो समय निकालकर आ जाऊंगा। कहां जाना है?"

सेक्रेटरी ने अफनासी के आगे सिर झुकाया और विना साफ किये हुए फर्श तक हाथ ले जाकर सलाम करते हुए हाथ झुलाने लगा।

"आपको परेशान होने की कोई जरूरत नही। वाहर घोडे खडे है।"

"अच्छा," निकीतिन वोला। "तो फिर ठहरो। जूते पहन लू।"

और निकीतिन ने भेड की ग्वाल के कोट के नीचे से अपना नगा पैर निकाला। दूत के सेक्रेटरी ने वडी शिष्टता से आखें नीची कर ली।

पोप का दूत मठ के एक गर्म और वडे कमरे में वैठा और अपने पर जब्र करता हुआ पादरी की वातें सुन रहा था। पादरी स्वधर्मावलवियो की आवश्यकताओ के सवध में वात कर रहा था। पोप का दूत मास्को से आ रहा था। वह वहा जिस काम से गया था उसमें उसे सफलता न मिली थी। कुछ समय पहले मास्को के राजा का विवाह यूनानी राजकुमारी ज़ोय पलेओलोग से हुआ था और इसके परिणामस्वरूप वैटिकन को यह आशा थी कि रूस का शासक कैथालिक धर्म में आस्था करने लगेगा और पश्चिम के देशो के साथ उसके सवध

मधुर बनेंगे। परन्तु रोम का चेता न हो सका। रूसी शासक ने जोय को पत्नी तो बना लिया किन्तु कैथालिक धर्म में कोई रुचि न दिखायी और कैथालिक गिरजो के बारे में अपने पूर्व विचारो में कोई परिवर्तन न आने दिया। पश्चिमी देशो के साथ भी उसने कोई नया रुख न अपनाया।

पोप के दूत को इसलिए भेजा गया था कि वह मास्को की महारानी को उसके कर्तव्यो की याद दिलाये। कभी पोप ने बाईजंटाइन के अन्तिम शासको को शरण दी थी और अब वह बदले में महारानी की सेवाओं की माग कर रहा था।

परन्तु मास्को में दूत बडी विषम स्थिति में पड गया। उसे महारानी के साथ एकान्त में बातचीत करने की अनुमति न दी गयी, उसकी हर बात का उत्तर कुछ उपहास के साथ दिया गया और यद्यपि दूत की अच्छी कद्र की गयी थी, उसे अच्छे से अच्छा खाने-पीने को दिया गया था, परन्तु एक बात जरूर उसके दिमाग़ में बिठा दी गयी थी—दूत जितना ही शीघ्र मास्को से चला जाये उसके लिए उतना ही अच्छा होगा।

जब दूत मास्को से लौटा तो काफी उदास था। वह कल्पना कर रहा था कि पोप उसपर क्रुद्ध होगा, वैटिकन के दरबारी उसे सारगर्भित कनखियो से देखेंगे। रूस की सर्दी के कारण कीएव के रास्ते-भर वह दातो के दर्द से तडपता रहा था और इस पीडा और अपनी व्यथा से उसका जी रोने रोने को हो उठता था। कीएव में आकर दूत ने दात उखडवा दिया और तब उसे कुछ चैन मिला। और यहा, बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से, उसे ऐसी सम्भावना दिखाई पड रही थी जो रूस में उसके आने की सफलता का कारण बन सकती है। उसे पता चला कि कीएव में एक रूसी यात्री है जो भारत हो आया है।

वह शीघ्र से शीघ्र उस यात्री से मिलकर यह जान लेना चाहता था कि यह सच है या नही कि वह अद्भुत भारत देश में गया था,

उस देश में जिसके स्वप्न यूरोप के राजे-महाराजे देखते है। और यदि यह सच है तो वह उसे अपने साथ ले जायेगा। जो आदमी भारत का रास्ता और स्वयं उस देश को जानता हो वह पोप का अच्छा सेवक बन सकता है।

दूत ने समय नष्ट नही किया और तुरन्त कुछ लोगो को यह पता लगाने भेजा कि रूसी कहा रहता है, कैसे रहता है। साथ ही उसने अपने आदमियो को यह आज्ञा भी दी थी कि वे उसके सबंध में सभी अफवाहो का पता चलायें। दूत को बताया गया कि रूसी एक ईसाई के यहा रहता है, उसकी जिन्दगी मामूली तरह से कटती है और लगता है जैसे वह सचमुच भारत गया था। इसके पश्चात् दूत ने अपने सेक्रेटरी को निकीतिन को बातचीत के लिए निमन्त्रित करने को भेज दिया था।

पादरी अपने स्वधर्मावलंबियो के कष्टो का रोना रो रहा था और दूत अपने विचारो में खोया था। इसके कान स्लेज-गाडी की ओर लगे थे।

सहसा आखो के नीचे नीले गड्ढो वाला उसका गोल और ऐयाशी में पगा झुर्रीदार चेहरा खिल उठा। पादरी ने यह परिवर्तन देखा और खुश हो गया। वह मठवालो के हितो की रक्षा करने में सहायता देने की याचना कर रहा था। परन्तु पोप के दूत ने उसे बीच ही में रोक दिया।

"अच्छा, अच्छा, सोचूगा हम तय करेंगे। इस समय तो मेरा धार्मिक कर्त्तव्य मुझे अपनी ओर आकृष्ट कर रहा है। आमीन भाई।"

पादरी, सिर झुकाये, कमरे से बाहर निकल गया और चुपचाप दरवाज़ा बन्द कर लिया। पोप के दूत के पद को देखते हुए पादरी

अन्यथा व्यवहार भी तो न कर सकता था। और जैसे ही दरवाजा बन्द हुआ कि दूत उठा, हाथ मले और अपने भावहीन मुह पर उदारता के भाव लाने का प्रयास करने लगा। उसने एक कदम आगे रखा ही था कि दरवाजे पर दस्तक हुई। उसके सेक्रेटरी ने झुकते हुए रूसी यात्री को कमरे में जाने का मार्ग कर दिया। दूत मुस्कराया और उसने दोनो हाथ आगे फैला दिये। यात्री उसे अच्छा लगा—वह लम्बा था, मजबूत था और यद्यपि यह स्पष्ट दिखाई पड रहा था कि अभी हाल ही में वह किसी गम्भीर रोग का शिकार हुआ है, फिर भी वह कमजोर नहीं लग रहा था।

"भगवान तुम पर कृपा करे!" दूत ने रूसी में कहा, "भगवान का नाम लेकर अदर आओ!"

"धन्यवाद," निकीतिन ने उत्तर दिया, "प्रभु मसीह आपकी रक्षा करे!"

अफनासी ने शीघ्रता से कमरे पर एक नजर डाली। वह कुछ कुछ मठ जैसा लग रहा था। फर्श पर कालीन पडा था, पलग पर साटन का कम्बल था। पलग के चारो ओर परदे थे। कुरसी की पीठ नक्काशीदार थी और मेज पर लाल मखमली मेजपोश था। दूत के ओठो पर पहले की ही तरह उदार मुस्कान बिखर गयी और उसने इशारा करते हुए रूसी से आराम-कुर्सी पर बैठने को कहा। निकोतिन आगे बढा और बैठ गया। दूत ने फर्श तक लटकती हुई अपनी पोशाक उठायी और अफनासी के सामने ही एक कुर्सी पर बैठ गया।

"आदमी प्रकृति से ही कमजोरियो से मुक्त नही है भले ही वह पृथ्वी पर ईसा के पैगम्बर के कितना ही निकट क्यो न हो!" दूत ने कुछ इस ढग से और इस मुद्रा में कहा कि लगता था जैसे वह अफनासी को बराबर का और अपने मजाक की क़द्र करनेवाला समझ

रहा हो। वह धीरे धीरे आखे मिचियाने लगा। "कुतूहल और जिज्ञासा तो हम मर्त्य पीढियो के पापियो में भी होती है न। पर आज मै उन्हे आशीर्वाद देता हू क्योकि मुझे अपने सामने उस साहसी यात्री को देखकर प्रसन्नता हो रही है जिसके बारे में तरह तरह की अफवाहे सुनाई पड रही हैं।"

अफनासी मुस्करा दिया।

"पिता, मैं वैसा आदमी नही जिसके लिए लोगों के हृदय में कुतूहल उत्पन्न हो। लोग तो जाने क्या क्या कह सकते है।"

"लेकिन ये सारी अफवाहें पुष्ट होती है तुम्हारे उस बडे दान से जो तुमने रूसी गिरजे को दिया है। मगर यह न समझना कि मेरे मन में तुम्हारे लिए कोई गलत विचार उठ रहे है या मैं तुम्हारी भर्त्सना करता हू। नही! नही! धर्म के प्रति किसी की आस्था देखकर भगवान के सभी सेवक खिल उठते है। मै तो तुमसे यही कहना चाहता हू कि लोग तुम्हारी भारत यात्रा के बारे मे जानते है। इसके बारे मे लोग तरह तरह से चर्चा करते है। तो मैं स्वय अपनी आखो से उस व्यक्ति को देखना चाहता था जो वहा तक हो आया है जहा का रास्ता तक हम नही जानते। मुझे तुमसे मिलकर बडी प्रसन्नता हुई।"

अफनासी ने सिर झुका लिया।

"अगर ऐसी बात है तो मै भी बडा खुश हू, मेरे पिता।"

"तो यह ठीक है क्या कि तुम भारत हो आये हो?"

"हा।"

दूत जल्दी जल्दी हाथ मलने लगा।

"मेरे बेटे!" वह गम्भीरता से कहने लगा, "हम भिन्न भिन्न गिरजो के लोग हैं। लेकिन मानते है एक ही भगवान को। धर्म-

भाई की तरह मुझे फिर बताओ, शायद मैंने ठीक न सुना है? तुमने जो कुछ कहा है उसे साबित कर सकते हो?"

"नही, आपने ठीक ही सुना है। मै अपनी बात साबित न करूंगा। मैंने कभी झूठ नहीं बोला और इस समय भी नही बोलता। आप चाहे यकीन करे, न चाहे आपकी मर्जी "

दूत ने, जैसे उदास होकर, नज़र ऊपर उठायी।

"मेरे शब्दो मे तुम्हें दुख नही होना चाहिए। मुझे खेद है कि मैंने तुमसे इस ढग से कहा। जबान ही तो हमारी शत्रु है। उसमें मन की अनुभूतियो और आत्मा की भावनाओ को व्यक्त करने की सामर्थ्य कहा? भारत भारत तो मेरे बेटे, मुझे बताओ यह ठीक है कि यह देश बडा अद्भुत है?"

अफनासी अभी तक खिडकी के उस पार देख रहा था। उसने अपनी निगाहे हटाकर दूत के चेहरे पर गडा दी।

"हा यह ठीक है," आखिर वह बोला।

दूत ऐसा बैठा लग रहा था मानो जलते हुए कोयलो पर बैठा हो। उसे सहसा लगा जैसे उसकी आवाज बैठ गयी। उसने अपनी मुलायम और मोटी उगलिया अपनी गरदन पर फेरी, कुछ घूट निगले, खासा और तब ही पूछने लगा।

"मेरे बेटे! मुझे इस देश का कुछ हाल सुनाओ वहा ईसाई रहते है?"

"नही।"

"तो सिर्फ मूर्ति पूजक ही है वहा?"

"वहा बहुत-से धर्म हैं, मेरे पिता। आपको समझाने में बडा समय लगेगा।"

"लेकिन वहा कोई सच्चा धर्म नही है क्या? नही है न?"

"इस वात का उत्तर मैं एक प्रश्न द्वारा दूगा, मेरे पिता। वताइये, मनुष्य की तृष्णा का अन्त कहा है?"

दूत ने भौहे उठा दी–

"वडा विचित्र है तुम्हारा सवाल। हमारी तृष्णा तो एक व्यर्थ की चीज़ है। हमें तो एक ही चीज़ की तृष्णा करनी चाहिए–हम भगवान की दया प्राप्त करे और स्वर्ग के भागी वने।"

"भारत में वैसे धर्म हैं जिनके माननेवाले आप ही जैसा जवाव देंगे, परन्तु वे दूसरे ही भगवान को मानते हैं। और ऐसे धर्म भी हैं जिनमें ससार दुख की खान माना जाता है परन्तु वे यह सिखाते है कि मनुष्य अपने जीवन में ही परमानन्द प्राप्त कर सकता है। वहा इस्लाम भी है। देख रहे हैं मेरा प्रश्न इतना विचित्र नही था।"

"हा, हा, हा

"और उनमें ज्ञानी-विज्ञानी, महात्मा और वैरागी भी है। जुन्नर नगर में मैंने एक फकीर को देखा था। वह छ साल' से चाद से लौ लगाये खडा था। उसने खाने का तो एक प्रकार से परित्याग ही कर दिया था। उसने इन्द्रियो को वश में कर लिया था, ध्यान-धारणा में लीन रहता था और विश्वशक्ति के साथ एकाकार हो जाना चाहता था। भारतीयो की धारणा है कि ऐसे लोग दीवाल के उस पार देख सकते हैं, दूसरो के विचारो को जान सकते है, विना किसी चीज़ के इच्छित वस्तु का निर्माण कर सकते हैं, सिर्फ मन्त्रो द्वारा वस्तुओ की स्थिति वदल सकते हैं हमारे यहा के महात्माओ की तरह, पिता।"

दूत का मोटा-सा ओठ नीचे लटक आया और जैसे ही उसकी

निगाह ग्रफनासी से मिली कि उसने झट ओठ भींच लिये और ऐसी आवाज़ सुनाई दी मानो थूक निगल रहा हो।

"चाद से लौ लगाये?" जैसे घबड़ाकर उसने पूछा, "वस्तुओं की स्थिति बदल सकते हैं? बड़े कौतूहल की बात है और यह सब करते हैं वे मूर्तिपूजक?। और यह देश बड़ा मालदार है क्या?"

"वहा की मिट्टी सोना उगलती है, सोना। साल में तीन तीन फस्लें होती हैं। जैसे फल, फूल, पशु और पक्षी वहा मिलते हैं वैसे सिर्फ स्वर्ग मे देखने को मिलते होंगे। यह तो तासीर है मिट्टी की। और देश मैं आपसे एक प्रश्न और करूगा। आप किसके बारे में पूछते है? प्रजा के बारे में या राजाओं के बारे में?"

"राजाओं के बारे में और प्रजा के बारे में।"

"तब मैं आपको अलग अलग उत्तर दूगा। राजा तो वहा विलासिता में डूबे हुए हैं और प्रजा नगी है, गरीब है। मेरे उत्तर से आप ख़ुश भी हुए, मेरे पिता?"

"मेरे बेटे!" दूत ने एक बार फिर हाथ ग्रफनासी की दिशा में फैलाये, उसकी ओर ऐसे देखा जैसे कोई अपने सगे-सबधी को देखता है और बोला, "मेरे बेटे, मेरे इस कुतूहल को क्षमा करना। परन्तु यह कुतूहल स्वाभाविक ही है। इस देश के बारे में मुझे विस्तार सहित सब कुछ बताने का कष्ट करो। तुम तो बड़ी बड़ी अद्भुत बातें कह रहे हो"

निकीतिन ने इनकार न किया। उसने उसे सापो, शेरो, लकड़बग्घो, छोटे छोटे किन्तु निर्दयी भारतीय भेड़ियो, घड़ियालो, तेज़ बहनेवाली नदियो, घने जगलो और नहरो के बारे में बहुत कुछ बताया-सुनाया।

परन्तु पोप के दूत की अधिक रुचि तो किसी दूसरी ही चीज में थी। वह भारत की सलतनतो और रजवाडो, उनकी सेना के बारे में जानना चाहता था।

"हा!" निकीतिन ने अनुमान से कहना शुरू किया, "बेशक वहा बहुत-से धर्म है, बहुत से सुलतान है, फिर भी वे एक दूसरे के साथ मित्रो जैसा व्यवहार करते है। सभी के पास बडी बडी फौजें है। और फौजो के पास तोपें हैं, बन्दूकें है उनके हाथी किसी तोप से कम नही। उन्हे कोई मार भी नही सकता। गोले-बारूद तक उनका बाल बाका नहीं कर सकते।"

अफनामी ने दूत के चेहरे पर घबडाहट के लक्षण देखे और बडे सतोष के साथ मुस्करा दिया। वे बडी देर तक बातचीत करते रहे परन्तु अफनामी ने पोप के दूत के बहुत-से प्रश्नो के जो उत्तर दिये वे स्पष्ट न थे। भारत के रास्ते के बारे में उसने केवल यही कहा कि खुद तो वह ढूढ सकता है परन्तु यह नही जानता कि दूसरो को समझाये कैसे। उसने कही कुछ लिखा भी तो नही, और नक्शा भी उसके पास नहीं।

"तो अब तुम रूस लौट जाओगे?" कुतूहल से दूत ने पूछा।

"बेशक!"

"वहा तुम्हे इनाम की आशा है?"

"क्यो, इनाम क्यो? भगवान की दया से वतन पहुचूगा—इससे बडा इनाम मुझे क्या चाहिए?"

"फिर भी!" तर्जनी उठाकर दूत बोला, "तुम्हारे जैसे ज्ञानी आदमी को तो मान सम्मान और इनाम-इकराम मिलना ही चाहिए।"

"मेरे लिए तो यही बहुत है कि भगवान की प्रार्थना करके अपने पापो को काट सकू और किसी प्रकार अपना कर्ज पाट दू।" निकीतिन ने मुस्कराते हुए कहा।

दूत ने रूमी यात्री के चेहरे पर एक भेदती-सी निगाह डाली।

"मेरे बेटे!" शान्ति और गम्भीरता से दूत बोला, "मेरे बेटे, मैंने तुम्हें केवल सयोगवश या कुतूहलवश ही नही बुलाया। मुझे विश्वास है कि हम मिले हैं भगवान की इच्छा से, जो अपने बहुत-से पापी दासो की खबर रखता है। मैं देख रहा हू कि तुम बुद्धिमान और बहादुर आदमी हो। प्रभु मसीह के सेवा-मार्ग पर चलकर तुम्हें यश मिलेगा। मेरे बेटे, मेरी बात ध्यान से सुनो। इस समय तुम्हारे वतन का क्या हाल है? तातार उसे कुचल रहे हैं, उसकी शक्ति नष्ट हो चुकी है, उसमें साम लेने-भर की शक्ति भी नहीं रही। वह हमारे गिरजे के उद्देश्य फैलाने के महान कार्य को अपने कधो 'पर नहीं ले सकता। फिर यूरोप के बहुत-से राजा-महाराजो ने भी ससार में ईसाइयत का झडा गाडने के लिए पूरा ज़ोर लगाया है। स्पेन के बादशाह, पुर्तगाल के सम्राट तथा फ्रास और इगलैंड के शासको ने इस दिशा में काफी कार्य किया है यद्यपि अन्तिम दोनो सम्प्रति पाखण्डी बन रहे हैं। महामान्य पोप अपने धर्म-बालको को मूर्तिपूजको और मुसलमानो के धर्म रूपी अधकार में घमते हुए देखकर बडे व्यथित हो उठे हैं। जब मैं उनसे उस साहसिक ईसाई की वीरता का हाल कहूगा जिसने परायी दुनिया में प्रवेश किया है जिससे हम अभी तक अपरिचित हैं तो वह प्रसन्नता

से फूला न समायेगा। और मैं जानता हू कि वे भारत के रास्ते का पता लगानेवाले व्यक्ति की बडी कद्र करेंगे। मुसाफिर, तुम्हे मान-सम्मान मिलेगा, धन-वैभव प्राप्त होगा। कौन जाने, महामान्य तुम्हें ईसाइयो की किसी ऐसी सेना का नायक बना दें जो तलवार और उपदेशो द्वारा भारत में हमारे धर्म की स्थापना के लिए तुम्हारे पथ-प्रदर्शन में वहा जाये लेकिन तुम्हे हो क्या गया ?"

दूत, भयभीत, आराम-कुर्सी से उठ पडा।

"पिता, मेरी तबीयत ठीक नहीं " मुश्किल से ही निकीतिन इतना और कह सका, "भारतीय ज्वर। इस समय मुझे कपकपी शुरू होगी किसी को पानी लाने का हुक्म दें, मुझे कुछ आराम करने दें, फिर बाते होगी। आपकी बाते तो ऐसी है कि आदमी बरबस उनकी ओर आकृष्ट हो जाता है मुझे माफ करे।"

अफनासी को कपकपी चढ गयी। दूत ने चादी की घटी बजायी, पानी लाने और रूसी के लिए बिस्तर ठीक करने की आज्ञा दी।

"नही, घर जाऊगा, वहा मेरा सामान है, मुझे डर लगता है " निकीतिन ने कहा।

और दूत ने कुछ सोचकर रूसी को उसके झोपडे में छोड आने की आज्ञा दी।

"मैं तुम्हारी सेहत के बारे में पूछ-ताछ करता रहूगा," अफनासी के जाते समय वह मृदुता-से बोला, "जो कुछ तुम्हे चाहिए, माग लेना, हम तुम्हारे लिए सभी चीजें मुहैया करेंगे।"

"धन्यवाद," कठिनाई से ओठ खोलते हुए निकीतिन ने कहा

दादा लेन्को ने भयग्रस्त होकर बीमार को भेड की खाल के कोट उढा दिये और प्रार्थना करने लगा, किन्तु जैसे ही पोलो के

जाने के बाद दरवाजा बन्द हुआ कि निकीतिन पैरो पर उछल खडा हुआ। दादा को हैरत हो रही थी।

"चुप!" अफनासी बोला, "चुप रहे दादा मैं बिल्कुल ठीक हू। मै तो साप के बिल में चला गया था। अब मुझे निकल जाना चाहिए किसी को भी मेरे पास न आने देना। और घोडा तैयार करो "

शीघ्र ही अधेरा छाने लगा। दादा लेक्को ने गट्ठर बाधने में अफनासी की सहायता की और उसपर सलीब का निशान बनाने लगा। वह बिलखने लगी और दादा की आखें भर आयी। निकीतिन भी भारी दिल से विदा हुआ। चलते समय उसने दादा के हाथ में दो रत्न और पाच मोती पकडा दिये और आग्रह करने लगा कि वह उन्हें अस्वीकार न करे।

उसने रकाब में पैर डाला और उछलकर घोडे पर बैठ गया।

"आप लोग सुखी रहे!"

"भगवान तुम्हारी मदद करे, बेटे!"

अफनासी लदे हुए घोडे को रास पकडे ले जा रहा था।

कीएव के फाटको के पहरेदारो को कोई शक न हुआ और उन्होंने निकीतिन को जाने की इजाजत दे दी। शायद उन्होंने सोचा होगा कि वह दूर न जायेगा। अकेले कोई दूर नहीं जाता। निकीतिन ने घोडे को एड लगायी और पीछे मुडकर न देखा। "ओह, शैतान पादरी!" उसने सोचा, "हू-हू! मैं इसलिए तो भारत गया नही था कि तुम्हारे सिपाहियो को वहा का रास्ता दिखाऊगा! नहीं, बिल्कुल नही!"

जनवरी का महीना समाप्त हो रहा था। फर्वरी के आगमन की सूचना मिलने लगी थी। जल्दी करना ज़रूरी था। निकीतिन बराबर घोडा दौडाये जा रहा था। वह रूस पहुचने की जल्दी में था।

दूसरे दिन कीएव के लोगो ने देखा—दादा लेव्को और उसकी बहू को शहर की सडको पर घसीटा गया और सबके सामने उन्हे मारा-पीटा गया, उनपर क्रोध किया गया। उन दुखी लोगो को न जाने क्यो मठ में खीचकर ले जाया गया। फिर लोगो ने एक बात और देखी—कीएव से उत्तर को जानेवाले तीनो रास्तो पर सशस्त्र घुडसवार भेजे गये। क्यो भेजे गये इसे कोई नही जानता। बस यही दिखाई पडता था कि घुडसवार जल्दी में है, मानो किसी का पीछा कर रहे हैं, किसी ऐसे आदमी का जिसे पकड लाने का उन्हे हुक्म मिला है।

उपसहार

तीन वर्ष बीत गये।

१४७५ की जाडे की ऋतु। कडकडाती हुई सर्दी पड रही है और मास्को के क्रेमलिन के उद्यानो के सौ सौ वर्ष पुराने वृक्ष चटाख चटाख चिटख रहे हैं। महलो की खिडकियो पर मढे हुए अभ्रक पर बर्फ की भाति भाति की डिज़ाइनें बन रही हैं। बर्फ सूखी पड चुकी है और किसी के चलने पर वह चरमरा उठती है। चिमनियो से धुआ उठ रहा है। कार्यालय के मुशियो के हाथ सर्दी से ठिठुरते जा रहे हैं। अभी तक अगीठी नही सुलगायी गयी है। वे गर्मी लाने के लिए उगलियो पर गर्म सासे फेंक रहे हैं और खीजते जा रहे हैं। कार्यालय में जल्दी मची हुई है। बडे राजा इवान वसील्येविच के लिए इतिवृत्त लिखा जा रहा है। सभी लोगो ने यह कार्य मुह-अधेरे शुरू किया और सध्या का अधेरा होते होते खत्म किया। उन्हे आदेश दिये गये थे कि खाने के बाद वे अपना हाथ अच्छी तरह धो-

पोंछ लें इसलिए कि कहीं काग़ज़ों पर चर्बी का कोई धब्बा न लगा रह जाये। इस आदेश के अनुसार काम न करनेवालों के लिए दंड की भी व्यवस्था थी।

वसीली ममीरेव. सारे कार्यों की देख-रेख कर रहा था। वह बूढ़ा किन्तु उम्र को देखते हुए बड़ा फुर्तीला, चतुर और ध्यान लगाकर काम करनेवाला मुंशी था।

कमरे में, लिखने में व्यस्त लोगों के पीछे घूमता हुआ, ममीरेव सहसा रुका और एक सींक-सलाई जैसे मुंशी की चपटी चांद पर चपत लगाते हुए कहने लगा—

"सो रहा है, शैतान का बच्चा?"

मुंशी ने सिर कंधों के बीच धंसा दिया और चुप रह गया। वसीली ने हाथों में काग़ज़ ले लिया।

"तुम ऐसा लिखते हो? कहा तो यह गया था कि एक अक्षर का भी हेर-फेर न होना चाहिए। यह हुक्म खुद ज़ार का है! और यह तुमने क्या किया? पता है तुम्हारी इस बेवक़ूफ़ी से कितनी बड़ी हानि हो जायेगी? ये लेख हमारे वारिसों के लिए हैं जो इन्हें पढ़कर इस बात का निश्चय करेंगे कि रूसी का दिमाग़ कितना जिज्ञासु था और रूसी कैसे निडर होते हैं... फिर से लिखो!"

वसीली ममीरेव ने, खीझते और बड़बड़ाते हुए, भागती हुई क़लमों पर एक निगाह डाली और अपनी बेंच तक जाकर, छाती मेज़ से सटाकर बैठ गया। उसका चेहरा सूखा हुआ था, पलकें कांप रही थीं और मुंह पर खीझ के भाव झलक आये थे।

आज मुंशी इतिवृत्त के लिए त्वेर के व्यापारी अफ़नासी निकीतिन की डायरी की नक़ल कर रहे थे। यह रूसी भारत तक गया था। ज़ार इवान वसील्येविच को इन प्रतियों की विशेष चिन्ता थी। उसने

—फनासी की डायरी ममीरेव को देकर, उपहास-सा करते हुए
ा था—

"खुद सौदागर का तो पता न लगा सके और न उसे बचा सके, मगर इस डायरी को तो सही-सलामत रखना!"

कहना आसान है—पता न लगा सके! लेकिन पता लगता ? डायरी पायी गयी थी लितवा के सौदागरो के पास जो ोलेस्क के पास से होकर लितवा आये थे। व्यापारी निकीतिन का ा चलाना वसीली ममीरेव के लिए सिर्फ सिरदर्द था। इससे कुछ ना-हवाना न था। निकीतिन का पता किसी भी को न लगा था।

ऐसा लगता था कि दैव प्रतिकूल था। यह डायरी किसी व्यक्ति , मौत से पहले घटिये को दी थी और घटिये ने लितवा के ापारियो को।

निकीतिन की खोज त्वेर में, सारे नोवगोरद में और दूसरे नी नगरों में की गयी। किन्तु न तो वही मिला, न उसकी कोई ार ही।

यह व्यापारी सचमुच एक महान् व्यक्ति था। बहुत काल से का रास्ता जानने की आवश्यकता प्रतीत हो रही थी और उसने रास्ते का पता चलाया था। विदेशी राजदूतों को उसकी डायरी की गन्ध मिल चुकी थी, उन्होंने उसे पढने की इच्छा प्रकट की थी। उनमें से किसी को उसका दर्शन भी न करने दिया जायेगा!

अफसोस! निकीतिन की तकदीर ही अंधेरे में थी। पता नही उसे बदमाशो ने मारकर उसका सामान हथिया लिया, या अपनी मौत मरा?

इसके बारे में कोई कुछ नहीं जानता। वह एक महान् व्यक्ति था और उसने रूस की सर-ज़मीन को बड़ी खिदमत की थी।

...क़लम बराबर चलते गये, उनकी किर्र-किर्र की आवाज़ बराबर होती गयी। खिड़कियों के उस पार झुटपुटा उतर रहा था।

वसीली ममीरेव दूर भारत के विचारों में इतना खो गया था कि उसे पता ही न चला कि मोमबत्तियां जलाने का वक़्त हो चुका है। परन्तु किसी में साहस न था कि उसके विचारों की शृंखला झनझना दे।

पाठकों से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है

२१, ज़ुबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

Вл ПРИБЫТКОВ

ТВЕРСКОЙ ГОСТЬ